9.5

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

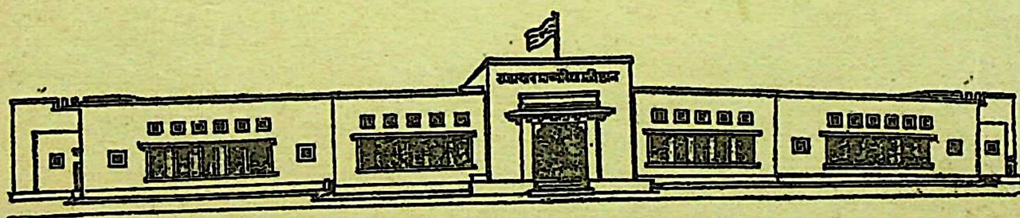
[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची

भाग २



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

944

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,

जोधपुर.

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ प्रथमावृत्ति ५००	भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२	खिस्ताब्द १९६० मूल्य १२.००

मुद्रक—श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, (Punjab); Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujarat Puratattva Mandir Granthavali; Bharatiya Vidya Series; Sinhghi Jain Series etc. etc.

* *.

NO. 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS

IN THE

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

Pt. 2.

* * *

Published
Under the Orders of the Government of Rajasthan
By
Director, Rajasthana Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V.S. 2017] *All Rights Reserved* [*1960* A D.

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमें अप्रैल सन् १९५६ ई० से मार्च सन् १९५८ ई० तक संग्रहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। मार्च सन् १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रन्थोंकी सूची भाग १ के रूपमें प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही मार्च सन् १९५८ तक संगृहीत राजस्थानी ग्रन्थोंकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची, भाग १, के नामसे पृथक प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोंका वर्गीकरण और विषयनिर्द्धारण ये दोनों ही कठिन एवं समय-सापेक्ष्य कार्य हैं। हमारा विचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमें संगृहीत ग्रन्थोंका वर्गीकृत और सविवरण सूचीपत्र तैयार कराकर विज्ञजनोंके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थोंकी संख्या दिनों-दिन बढ़ती रही और आगन्तुक विद्वानों एवं अनुसंधित्सुओं का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमें रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि संगृहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी सामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथासाध्य उपकरणोंको जुटा कर विभागीय कर्मचारियों द्वारा थोड़े से थोड़े समयमें मोटे तौर पर वर्गीकरण एवं विषय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमें प्रकाशित की जा रही हैं। आगे विवरणादि तैयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी सचित्र ग्रन्थोंके सूचीपत्रका काम इस दिशामें श्रीगणेश करनेके लिए हाथ में लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची-प्रकाशन कार्यक्रममें एक तो संगृहीत-ग्रन्थोंकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेंगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनु-रूप रखा गया है, फिर भी इसमें आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये गये हैं। यथा भाषाका कोष्ठक कम करके हिन्दी एवं राजस्थानी ग्रन्थोंके पृथक् विषय बना दिये गये हैं जिससे सुविधानुसार इन दोनों भाषाओंके ग्रन्थोंकी जानकारी मिल सके। विशेष उल्लेखनीय के कोष्ठकमें रचनाकाल, लिपिस्थान, लिपिकर्त्ता, ग्रन्थदशा और विषय-स्पष्टीकरणका संक्षिप्त संसूचन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट १ में कुछ विशिष्ट ग्रन्थोंके आद्यन्त अंश अविकल रूपमें उद्धृत कर दिये गये हैं। साथ ही ग्रन्थके विषयमें यदि कोई विशेष सूचना प्राप्त हुई है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थके स्वरूप एवं दशाको समझनेके लिए संक्षिप्त रूपमें जानकारी देनेका यथाशक्य प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ में ग्रन्थकर्त्ता-नामानुक्रमणिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनों ही सूचियोंमें बहुतसे ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारोंके नाम अद्यावधि अन्यान्य संस्थाओंमें प्रकाशित ग्रन्थसूचियोंमें, विशेषत: राजस्थानी ग्रन्थ-सूचियोंमें नहीं पाये जाते हैं, जो अद्यतन अनुसंधित्सु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एवं उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित समझा गया है कि राज्यमें ततत् स्थानों पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रहोंको भी इसी विभागके आयत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ़ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमें प्राप्त हुए हैं जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ में प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमें भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एवं व्यक्तिगत संग्रहोंकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेंगी।

इस सूचीमें समाविष्ट ग्रन्थोंके आक्रमांक विशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमें ही श्री गोपालनारायण बहुरा एवं श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ में प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमें हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने में ५-६ मासका समय लगा। तदनतर पुन: जांच आदि करके प्रेस कापियाँ तैयार की गईं और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमें विभाग के उप संचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकांकन, प्रेस कॉपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि संकलन और प्रूफ-संशोधनादि कार्यमें सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एवं पुरासाहित्यानुसंधित्सु लाभान्वित होंगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
दि० २९-७-६०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय-तालिका





क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५८	अग्निहोत्रपञ्चाग्नि स्तोत्र		१८२७	११	लि. क.–वैष्णव नृसिंहदास
२	४५०३(१)	अपराजिता विद्या (रुद्रगीता)	विष्णुधर्मोत्तर तृतीयकाण्डगत	१८वीं श.	१–६	गढ़ बधणोर मध्ये
३	७६९८	अपराधनिरसन स्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१८९०	२	लि. क.–रामनारायण
४	६६५२	अपराधसुन्दरस्तोत्र सटीक	शङ्कराचार्य (टी. रामानन्दभिक्षु रामेन्द्रवनशिष्य)	१७६७	७	लि. क.–परमानन्द
५	४४६७	अपामार्जन स्तोत्र	विष्णुरहस्योक्त (दालभ्य-पुलस्त्यसंवाद)	१८०२	८	लि. क.–दवे सदाशिव
६	४४७७	,, ,,	विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त	१९वीं श.	१०	
७	५४३८(६)	अष्टाविंशति नाम	भगवदुक्त	१८९०	६६–६७	
८	४२३४	अहल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणगत	१८वीं श.	६	*
९	४२५४	अज्ञानविमोचनस्तोत्र	नन्दिपुराणगत	१९वीं श.	३	*
१०	४३७०	आदित्यहृदयस्तोत्र (द्वादशावरण)	भविष्योत्तरपुराणगत	१८२०	११	लि. क.–गंगाधर
११	४५१२	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श.	२५	
१२	५०५२	,,	,,	१८९५	१६	लि. क.–जोशी पन्नालाल सवाई जयपुरमध्ये
१३	५०५७	,,	,,	१९२३	१८	
१४	६७८५	आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य	१९०८	२	
१५	४५१३	आपदुद्धारबटुकभैरवकवच स्तोत्र (अष्टोत्तरशतनाम)	रुद्रयामले भैरवतन्त्रोक्त	१८०३	७	लि. क.–दवे सदाशिव
१६	६०७४	आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ	यामुनाचार्य	१८२८	१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६२४३	आलवन्दारस्तोत्र सटीक	यामुनाचार्य	१८२९	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८	६५४७	" "	"	१९वीं श.	१४	
१९	७५८२	" "	"	१८७८	१८	
२०	६३७९	इन्द्राक्षी स्तोत्र		१८वीं श.	५	
२१	४९०४	(१) एकश्लोकी भागवत (२) महाभारत (३) दुर्गा (४) सप्तश्लोकी गीता			६६ से ६९	
२२	५६४७	कर्पूरस्तवराज सटीक	महाकालसंहितोक्त	१९वीं श.	१२	
२३	५४४८	कार्त्तवीर्य्यार्जुन कवच	अमरतन्त्रोक्त	"	३८	
२४	५७०३	कालिका-कवच	तन्त्रोक्त	१९१२	२	लि.क.–ब्रजवासी, अलवर
२५	५७६०	कालिकाखड्गमाला स्तोत्र	महाकालसंहितान्तर्गत	१९वीं श.	३	
२६	५८१७	कालीसहस्रनाम	"	१८वीं श.	३०	
२७	५१९२	काशीमङ्गल स्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१९वीं श.	८	
२८	६२८०(२)	कृष्णकरुणामृत	लीलाशुक	१९०९	७–१९	लि.क.पुजारी हरदेवदास,गोविंदगढ़
२९	७६१९	कृष्णस्तवराज		१९वीं श.	१०	
३०	४२३६	कौसल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणान्तर्गत	१८वीं श.	४	
३१	४२३१	गंगालहरी	जगन्नाथ भट्ट	१९वीं श.	२७	
३२	५४२०(२)	गंगालहरी (सटीक)	जगन्नाथ, टी. बलदेव	१९वीं श.	४८–६५	हिन्दी टीका सहित
३३	५५६९	गंगालहरी बालबोधिनी टीकासहित	टी. दलपतिराम	"	३२	
३४	६०५८	गंगालहरी टीका	टी. चतुर्भुज मिश्र	१९०९	५८	लि. क.–सालग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	४२३७	गंगास्तोत्र	नारायण भट्ट	१८वीं श.	४	
३६	६६३६	,,	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत	१८८१	५	
३७	४२६९	गजेन्द्रमोक्ष	महाभारतोक्त	१८वीं श.	२९	
३८	५२८४	,,	,,	१९वीं श.	१३	
३९	४५०६	,,	,	१८३९	१६	
४०	४४५२(३८)	गणपतिस्तोत्र		१८वीं श.	४१	लि. क.–पं० प्रीतसौभाग्य
४१	४९७०	गायत्रीसहस्रनाम	रुद्रयामलोक्त	१८१२	११	लि.क.-महात्मा नाथूराम शिवपुरीमध्ये
४२	५४५९	गीता पञ्चरत्न सचित्र		१८वीं श.	२१९	चित्र संख्या ५
४३	५५०८	,,		१८३०	३६०	
४४	५८१८	,,		१८७४	१९२	
४५	७१७४	,, सचित्र		१८वीं श.	गुटका	चित्र संख्या ५१
४६	४५०८	गुरुगीता	स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त	१८१६	५	लि.क.–भीकमजी
४७	७६२९	गुरुपादुकास्मृति		१९वीं श.	३	
४८	७१४८	गुरुस्मरणाष्टक		,,	४०	
४९	५३१६	गोपालविंशति	कवितार्किकसिंह वेंकटनाथ शिष्य गोपाल	१८८३	२	गोपालविद्यार्थिना लिखितं नेतरामजी कृते
५०	५२०५(१४)	गोपिकागीत (रासपंचाध्यायी)	भागवतोक्त	१८वीं श.	४९–६४	
५१	४२६१	गोपीनाथाष्टक	विश्वनाथ चक्रवर्ती	१९४७	२	
५२	४५०५	गोविन्दस्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१८४३	३	
५३	७७८९	गोविन्दाष्टकम्	,,	१७५१	२	
५४	५०८३	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१७८६	६१	आद्य चार पत्र अप्राप्त, लि.क.–धवल, चित्र सं. ४६

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	६८	चित्र संख्या १०
५६	५२०५(१२)	चतुःश्लोकी भागवत		,,	४७–४८	
५७	४४५२(५८)	चतुःषष्टियोगिनीस्तव		,,	११६वां	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१९वीं श.	६	लि.क.–भरतदास वैष्णव,भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अगस्त्यसंहितान्तर्गत	,,	६	लि.क.–रामनारायण
६०	६६९७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि.क.–भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वीं श.	७	
६२	४९९९	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१९वीं श.	४	
६३	४२४९	तारा–श्रीरामसंवाद	रामायणोक्त	१८वीं श.	५	वेदान्तपरक
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१९वीं श.	११	
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखंडोक्त	१७४२	४	लि.क.–चतुर्भुज व्यास,अम्बावती
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र		१९वीं श.	१	लि.क.–केशवदास, गढ़बदनोर
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श.	४	
६८	४५४४	,,	,,	१७६४	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८९	१२	लि.क.–हनुमदुपाध्याय
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१९वीं श.	३५	
७१	४४७९	,,		१७७३	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२	५३२८	,,		१८३१	५६	लि.क.–रघुनाथजोशी, स. जयपुर
७३	५४६३	,,		१८८९	५८	लि.क.–हनुमदुपाध्याय
७४	६९२७	,,		१७वीं श.	८४	भोजपत्र पर लिखित
७५	७१५७	,,		१८वीं श.	१६१	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५०६२	देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायान्त)	रुद्रयामलोत्तरखंडोक्त	१९वीं श.	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ त्रुटित
७७	५५२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वासःप्रोक्त	१९१७	२२	लि.क.–व्यास मुकुन्ददास, जोधनगर
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५६	१८	
७९	४२६०	नंदाष्टक, कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विट्ठल?)	१८वीं श.	४	
८०	७७५७(९)	नवश्लोकीस्तोत्र	शंकराचार्य	१८५०	२२८–२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श.	८	
८२	४४६८	,,	,,	१९वीं श.	४	
८३	५४३८(७)	,,	,,	१८९०	६७–७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक		१८वीं श.	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र		१९१७	१–४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच		१८वीं श.	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पंचमुखी हनुमत्कवच		१९वीं श.	१३	
८८	७६५३	पंचायुधस्तोत्र	ब्रह्मांडपुराणोक्त	१८३७	२	
८९	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
९०	६८५८	,,	,,	१८वीं श.	८	आद्यपत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पवनविजयाशनिस्तोत्र (२) रामनवमीसंकल्प		१९वीं श.	१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
९२	४१७८	पीयूषलहरी	जगन्नाथ पंडितराज	१९१०	१४	लि.क.–गोटाराम जोसी
९३	४१७९	पीयूषलहरी	,,	१९१०	१३	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९४	४५१०	पीयूष लहरी	जगन्नाथ पण्डितराज	१६१०	११	
९५	५२५६	"	"	१८वीं श.	२६	
९६	६५८५	ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित)	श्रीनिवासदास	१८४०	२५	
९७	५२४८	बगलामुखीस्तोत्र		२०वीं श.	७	
९८	४१३३	बटुकभैरवकवच		१९वी श.	८	
९९	४१३४	बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र		"	३५	
१००	४१५४	भगवती अर्गला कीलकस्तोत्र		"	३	
१०१	४१६२	भगवती पुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	"	६	लि.क.–रामशंकर, कुबेरलाल, स्थान–ग्राम मधवासना
१०२	६४२३	"	"	१८०७	६	
१०३	७६९४	भवान्यष्टक	शंकराचार्य	१७६४	१	लि.क.–राघव जोशी
१०४	४१२४	(१) भवानी कवच (२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र		१८वीं श.	२२	
१०५	४२५९	भवानीसहस्रनाम		१८६१	३०	लि.क.–गंगाविष्णु, मलारणा
१०६	५२१३	"		१८वीं श.	३०	
१०७	५७९०	भवानीसहस्रनाम एवं कवच		१८९८	९	लि.क.–हरिवल्लभ शर्मा
१०८	५४६७	भावकल्पतरु	मधुर शर्मा	१९वीं श.	३४	
१०९	४२४१	भीष्मस्तवराज	महाभारतोक्त	१८वीं श.	२२	
११०	५२८५	"	"	१९वीं श.	९	
१११	६६९९	"	"	"	१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	४५१८	भीष्मस्तोत्र, अनुस्मृति	शान्तिपर्वोक्त	१८३१	१४	
११३	५२०५(१३)	भुजङ्गप्रयाताष्टकम्			४८–४९	
११४	४२७५	भुवनेश्वरीस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	१६८६	८	
११५	५३८५(६)	मङ्गलाष्टक		१६वीं श.		
११६	६६६०	,,	कालिदास	१८९७	५	
११७	७७०१	मधुरकुञ्जविहार्य्यष्टक		१८वीं श.	१	
११८	५२४३	मल्लारिकवचस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणक्षेत्रखंडोक्त	,,	३	
११९	५०५९	महागणपतिकवच	देवीरहस्योक्त	१९वीं श.	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	४५१४	महागणपतिस्तोत्र	राघवचैतन्य	१८२६	३	लि.क.–तिवाड़ी वखतरामजी
१२१	४५०३(२)	महागणपतिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श.	६–८	
१२२	४२१५	महानारायणस्तोत्रचिन्तामणि		१९वीं श.	१८	
१२३	५०४६	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	,,	११	
१२४	६६८२	महासुदर्शनकवच	सुदर्शनसंहिता	,,	३	
१२५	५२५०	महिम्नस्तोत्र	श्रीविष्णुकृत	१८३१	६	
१२६	५८७०	,,	पुष्पदन्त	१९वीं श.	४	
१२७	६६८३	,,	,,	१७६०	११	लिपि स्थान–काशी
१२८	६६६१	,,	,,	१८८६	१०	लि.क.–नन्दराम
१२९	७४९६	महिम्नस्तोत्रटीका	मधुसूदन सरस्वती	१७९३	४८	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१३०	५५६०	महिम्नस्तोत्र सटीक (त्रिपाठ)		१९वीं श.	१६	
१३१	६७८४	,, ,,		१९१९		लि.क.–रामदास कबीरपंथी
१३२	५७८४	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	रुद्रयामलतंत्रोक्त	१८८३	८	लि.क.–व्रजवासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३	६६६८	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	विश्वसारोद्धृत	१९वीं श.	१२	
१३४	५२७८	यमकाष्टक	पद्मप्रभदेव	२०वीं श.	५	
१३५	४२३८	यमुनाष्टकस्तोत्र		१८वीं श.	३	
१३६	६७०१	यमुनाष्टकादिस्तोत्र	श्रीवल्लभ-विठ्ठल-हरिराय-रघुनाथ	१९वीं श.	५४	(४८ कृतियां)
१३७	६३७६	युगलकिशोर सहस्रनाम	नारदीयपुराण	१८वीं श.	१२	
१३८	४१७३	रघुवरसहस्रनामस्तोत्र	ब्रह्मरहस्यगत	१८११	२१	लि.क.—रामसेवक, चित्रकूट
१३९	६७४९(५)	राधाकवच		१९वीं श.	११७–११९	अंतमें नवग्रहस्तोत्र आदि हैं
१४०	५४५५(२)	राधाकृष्णशतनामस्तोत्र	तंत्रोक्त	"	११	
१४१	७७००	राधाष्टकस्तोत्र	त्रैलोक्यसम्मोहनतंत्रोक्त	१८वीं श.	१	
१४२	६२८०(५)	राधास्तवराज	गौतमीयतन्त्रोक्त	१९०९		लि.क.—पुजारी हरदेवदास
१४३	५४५४	राधासहस्रनामस्तोत्र	रुद्रयामलोक्त	१८१८	३६	
१४४	५५१८	"	"	१९वीं श.	२५	
१४५	५२४७	राधिकाष्टकस्तोत्र		"	२	
१४६	७७०२	राधिकास्तोत्र	बृहद्ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१७६९	१	
१४७	६२८०(७)	राधिकाष्टोत्तरशतनाम		१९०९	२	लि.क.—पुजारी हरदेवदास
१४८	५२८३	रामचन्द्रस्तवराज	नारदप्रोक्त	१९वीं श.	८	
१४९	७७१८	रामचन्द्र स्तुति आदि		"	६	
१५०	६३६९	राम महिम्नः स्तोत्रम्	विजयरामाचार्य	१९०१	११	
१५१	४३३२	रामरक्षाकवच	विश्वामित्र ऋषि	१८वीं श.	९	
१५२	७६४७	रामरक्षाविवरणकारिका	नीलकण्ठ	१९वीं श.	३	
१५३	५०५३	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र	"	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५४	६६७९	(१) रामवज्रकवच (२) विष्णुहृदयस्तोत्र	हिरण्यगर्भसंहितोक्त	१९वीं श.	८	
१५५	६६८०	रामशरणस्तोत्र	बृहद् ब्रह्मसंहितोक्त	१८वीं श.	४	
१५६	६६३०	रामस्तव		१९वीं श.	३	
१५७	४२४७	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	१८वीं श.	१८	
१५८	५२३५	"	"	१७५९	७	
१५९	५४३८(१)	"	"	१८९०	१–१६	
१६०	६६९५	"	"	१८६०	६	लि.क.–जयजयराम
१६१	६७४९(४)	"	"	१९वीं श.	१०५–११६	
१६२	५२३३	"	"	१९०९	३८	किला अमरकोट मालवामें लिखित
१६३	४२४८	रामहृदयस्तोत्र		१८वीं श.	९	
१६४	४५०४	"	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श.	५	
१६५	७७५७(८)	"	अध्यात्मरामायणोक्त	१८५०	२२२–२२७	
१६६	६६३६	रामानुजाष्टोत्तरशतनाम	महात्मा आङ्घ्रिपूर्ण	१८वीं श.	२	
१६७	७६१६	रामाष्टक, रामस्तोत्र	महेश्वर भट्ट	१९वीं श.	१	
१६८	५७१५	रुचिस्तव	मार्कण्डेयपुराणोक्त	"	५	
१६९	७७९६	रूपचिन्तामणिस्तोत्र	चक्रवर्ती	१८९०	४	लि.क.–रामनारायण
१७०	६२८०(६)	"	"	१९०९	२५–२८	लि.क.–पुजारी हरदेवदास
१७१	५१९४	ललितादिव्यनामत्रिशती	ललितोपाख्यानगत	१९वीं श.	२०	
१७२	५८०७	ललितास्तव	दुर्वासा	१९वीं श.	२६	स्तव २११ आर्याओंमें है।
१७३	७६५९	लक्ष्मीपञ्जरस्तोत्र	मन्त्ररहस्योत्तरखण्डोक्त	१९१३	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७४	६६८९	लक्ष्मीस्तव	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	१९वीं श.	३	
१७५	६६८८	लक्ष्मीस्तोत्र		१९०१	४	
१७६	५५१९	लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय	अथर्वणरहस्योक्त	१९२६	१२	
१७७	५३१९	लक्ष्मीसहस्रनाम	ब्रह्माण्डपुराणगत	१८२८	१०	७वां पत्र अप्राप्त
१७८	६४४०(२)	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	१९१७	५-१७	
१७९	७७१३	व्रजविहार	श्रीधर स्वामी	२०वीं श.	२	
१८०	५३३६	वरदगुरुपंचाशत	नारायण	२०वीं श.	६	लि.क.-देवकृष्ण, र.का. १९०१
१८१	५२३४(२)	(१) विंशतिनामस्तोत्र (२) चतुःश्लोकी भागवत (३) एकश्लोकी रामायण (४) सप्तश्लोकी गीता (५) बिहारी सतसई के २३ दोहे		१९११	१०-१४	
१८२	५५११	विलोम सप्तशती	मार्कण्डेयपुराण	१८वीं श.	३२	
१८३	७७२१(१६)	विष्णुपञ्जरस्तोत्र		१८४४	२०३-२०५	लि.क.-व्यास केशा
१८४	७७५०(२)	,,	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८६०	२१-२४	लिपिकर्त्री-किशनी, लिपि स्थान-खारला
१८५	४२५१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	महाभारतोक्त	१८वीं श.	३२	
१८६	४४७८	विष्णुसहस्रनाम (सार्थ)	पद्मपुराणोक्त	१७वीं श.	५३	टीका हिन्दीमें
१८७	५२८२	,,	महाभारतोक्त	१९वीं श.	१३	
१८८	५४३८(२)	,,	,,	१८९०	१६-४०	
१८९	५४६०	,, (गीतापञ्चरत्न)		१८८२	३०१	चित्र संख्या ३

क्रमांङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	६६३५	विष्णुसहस्रनाम	महाभारतोक्त	१७वीं श.	११	
१९१	६३७५	"	"	१७८२	१७	
१९२	४५१५	"	"	१८वीं श.	१६	
१९३	६८६४	विषापहारस्तोत्र व्याख्या	धनञ्जयसूरि	१९वीं श.	१०	लि.क.–पण्डित हरिपाणि
१९४	५२०५(१७)	विक्षिप्त ? (विज्ञप्तिस्तोत्र)	विठ्ठलेश दीक्षित	१८वी श.	८६–८८	
१९५	५१८३	वृन्दावनशतकम्	प्रबोधानन्द सरस्वती	"	२०	
१९६	५४६९	"	"	१८३७	११	
१९७	६४९८	वेदस्तव सटीक	विश्वनाथ	१९वीं श.	२७	
१९८	४२४६	वेदस्तुति	भागवतोक्त	१८वीं श.	१४	
१९९	५४९७	वेदस्तुति (अन्वयबोधिनी टीका)		१८९२	३६	
२००	६४६३	वेदस्तुति सटीक		१६६६	९	लि.क.–शिवनिधानगणि, लि० स्था०–प्रल्हादनपुर
२०१	६४९७	" "	टी. श्रीधर	१८८८	५४	लि.क.–हरिलाल
२०२	६५९३	" "	श्रीनिवासदास	१९वीं श.	२८	
२०३	४१८०	वैशम्पायन सहस्रनाम	वेदव्यास	"	२७	
२०४	४२५३	श्रीदेवीपुष्पाञ्जलि	रामकृष्ण	१८४६	३	
२०५	४१३१	श्रीसूक्त (सभाष्य)	विद्यातीर्थ	१९वीं श.	६	
२०६	७७५७(१०)	श्लोकोपनिषत्	शंकराचार्य	१८५०	२३०–२३२	
२०७	५७५६	शरभसहस्रनाम (सकवच)	आकाशभैरवकल्पोक्त	१९वीं श.	७	
२०८	४१७१	शारभकवच	शंकरप्रोक्त	"	१२	
२०९	६६८७	शालिग्रामस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१०	७७९०	शिवताण्डवस्तोत्र	रावण	१९वीं श.	२	
२११	५५०९	शिवमहिम्नःस्तोत्र	पुष्पदन्त	१८४२	६	जयपुर में लिखित
२१२	४९२१	शिवमहिम्नःस्तोत्र	,,	१९वीं श.	५	
२१३	४१९१	शिवमहिम्नःस्तोत्रटीका	अहोबल शास्त्री	,,	२४	
२१४	६१९८	शिवमहिम्नःस्तोत्र (सटीक)		,,	८	
२१५	६९६७	,, ,,		१९१५	१४	
२१६	५१८६	,, ,,	मधुसूदन सरस्वती	१९वीं श.	५०	लि.क.–ब्रह्मानन्द
२१७	७७७२	शिवस्तोत्र	रावण	१९वीं श.	१	
२१८	४४६६	शिवसहस्रनामस्तोत्र	शिवपुराणोक्त	१८६२	१०	
२१९	५०५६	शिवाष्टक	शंकराचार्य	१८६०	३	लि.क.–गोपीनाथ
२२०	४२१९	शीतलास्तोत्र		१८७१	३	लि.क.–केसोराम कान्यकुब्ज लि० स्था०–नगर बोंली
२२१	७८११(३)	स्तोत्रकवचादि		१८वीं श.		*
२२२	६२८०(४)	स्मरणमंगल		१९०९	२१–२२	लि.क.–पुजारी हरदेवदास
२२३	४५०१	संकटनाशनस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श.	१	
२२४	४१५३	सप्तशती दुर्गापाठ		१९२७	१०८	
२२५	७८३५	सप्तशती दुर्गास्तोत्र		१९वीं श.	११२	चित्र संख्या ११२
२२६	५५१२	सप्तशती टीका	नागोजी भट्ट	१८२४	८१	
२२७	७७९२	सप्तशती भाष्यम्	,,	१९वीं श.	५६	
२२८	४४५२(५९)	(१) सरस्वती मंत्रस्तोत्र (२) गणपतिमन्त्र		१८वीं श.	११७वां	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपी समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२९	६३६६	सहस्रनामस्तोत्र	कृष्णदास पयोहारी	१८०८	३	
२३०	५६२५	साम्बपंचाशिका विवरण	टी.-राजानक क्षेमराज	१९वीं श.	३२	
२३१	६६७७	सुदर्शनस्तोत्र		,,	१	
२३२	५५२७	सुदर्शनसहस्रनाम स्तोत्र	अहिर्बुध्न्य संहितागत	,,	९	
१३३	४४३९	सुधालहर्य्याख्यमिहिरस्तव	पंडितराज जगन्नाथ	,,	१०	
२३४	४५०२	सूर्यस्तोत्र	शंकराचार्य	,,	१	
२३५	७००६	,,	सीताराम पर्वणीकर	२०वीं श.	३	
२३६	७७२१(१५)	सूर्याष्टक		१८४४	२०२	
२३७	४१७७	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य	१९वीं श.	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३८	४४०३	,,	,,	१८५७	७	लि.क.-ऋषि देवचन्द
२३९	४५०७	,,	,,	१८२३	८	लि.क.-ऋषि श्रीकृष्ण
२४०	४५१६	,,	,,	१७३४	१५	लि.क.-पलायथाग्रामस्थ ठाकुरसूरजीपुत्र वल्लभ
२४१	४५२६	,,	,,	१९वीं श.	१०	
२४२	५२४४	,,	,,	१८६३	१६	लि.क.-धनीराम मिश्र
२४३	५५८४	सौन्दर्यलहरी सटीक	,, टी. श्री रंगदास	१९वीं श.	५४	
२४४	५६७९	,,	टी. नरसिंह	,,	४१	
२४५	५७८८	,,	कैवल्याश्रम	१९३६	७५	
२४६	६५२३	सौन्दर्यलहरी व्याख्या	गोरीकान्त	२०वीं श.	३३	
२४७	५२३१	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र	वाल्मीकीय रामायणोक्त	१७५९	१३	लि.क.-शिवदत्त लि०स्था०-अजयदुर्ग

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	७६४६	हनुमन्मधुनामस्तोत्र		२०वीं श.	२	लाङ्गूल शत्रुञ्जयस्तोत्र
२४९	६७०७	हयग्रीवस्तोत्र	वेंकटनाथ वेदान्ताचार्य	१९वीं श.	४	
२५०	७७०६	हरिनाममालास्तोत्र	शंकराचार्य	,,	३	
२५१	७८१२	हरिहरस्तोत्र	हरिवंशपुराणोक्त	,,	६	(८१वां अध्याय)
२५२	७६८८	हरिहरात्मकस्तोत्र		,,	३	
२५१	६८२९(२)	(१) हस्तामलक	शंकराचार्य	१९०२	१–१४	
		(२) यमुनाष्टक	नन्ददास			
		(३) हनुमानाष्टक	तुलसीदास			
२५४	६५८२	हस्तामलक सटीक	शंकराचार्य	१९वीं श.	५	
२५५	६५८४	क्षमाषोडशी	वेदाचार्य	१८९५	७	लि.क.–रामसुख रामनारायण
२५६	६६७८	,,	,,	१९वीं श.	३	
२५७	५१०९	(१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय	वीरमहेश्वरतन्त्रोक्त	१९२५	३१	लि.क.–रामकुमार, कोटा
		(२) त्रिशती				
		(३) कल्याणीस्तोत्र				
		(४) ललितास्तवराज				
२५८	५१९१	त्रिपुराकवच		१९वीं श.	३	
२५९	७७२१(१७)	त्रिपुरास्तोत्र आदि		१८४४	२०५–२७७	
२६०	४१९३	त्रैलोक्यविजयकवच	उत्तरगन्धर्वतन्त्र	१९वीं श.	२४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६४३	अथर्वण निरुक्त		१८६५	१२	लि.क.–सदासुख शुक्ल, जयनगर
२	४६३७	अथर्वणसंहिता अष्टादशकांड		१६०४	११	,, ,,
३	४६२८	अथर्वणसंहिता		१८६२	१३४	
४	४०६५	आपस्तम्ब अग्निष्टोमसूत्र		१८वीं श.	५६	लि.क.–महादेव भट्ट
५	४७०२	ऐतरेयोपनिषत्		१६वीं श.	५	
६	४६४५	ऐतरेयोपनिषद्भाष्य	माधव	,,	३०	
७	६५६२	ऐतरेयोपनिषद्भाष्यटीका	अभिनव नारायणेन्द्र सरस्वती	,,	४४	
८	४५६२	ऋग्विधान		,,	२१	लि.क.–भट्ट मयाराम
६	४६४६	,,		१८०६	१६	लि.क.–सवाईराम
१०	४६४४	ऋग्वेद (चतुर्थाष्टक चतुर्थाध्याय)	माधव	१६वीं श.	६४	
११	५०१०	ऋग्वेद प्रथमाष्टक		१७८१	१०५	लि.क.–वीरेश्वर शुक्ल
१२	५०११	,, द्वितीयाष्टक		१७८४	७५	,, ,,
१३	५०१२	,, तृतीयाष्टक		,,	८७	,, ,,
१४	५०१३	,, चतुर्थाष्टक		१७१६	१२४	,, ,,
१५	५०१४	,, पञ्चमाष्टक		१७८४	७२	,, ,,
१६	५०१५	,, षष्ठाष्टक		१७८२	१११	लि.क.–पंड्या चिन्तामणि
१७	५०१६	,, सप्तमाष्टक		,,	६६	,, ,,
१८	५०१७	,, अष्टमाष्टक		१७८२	६८	लि.क.–वीरेश्वर
१६	५०१८	,, प्रथमाष्टक		१७२६	१३३	पत्र १६, ४६, ४७ अप्राप्त
२०	५०१६	,, द्वितीयाष्टक		१६वीं श.	१२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	५०२०	ऋग्वेद तृतीयाष्टक		१९वीं श.	१११	
२२	५०२१	,, चतुर्थाष्टक		१८५३	१२६	१७वां पत्र अप्राप्त
२३	५०२२	,, पंचमाष्टक		१८५५	९७	
२४	५०२३	,, षष्ठाष्टक		१८५५	१०४	
४५	५०२४	,, सप्तमाष्टक		१८५६	९६	
२६	५०२५	,, अष्टमाष्टक		१८५८	११४	
२७	५५७०	,, तृतीयाष्टक		१८वीं श.	९९	पत्र २७ से ३८ तक अप्राप्त
२८	७६७३	,, प्रथमाष्टक		१७७५	६६	
२९	७६७४	,, द्वितीयाष्टक		१७७३	७४	
३०	७६७५	,, तृतीयाष्टक		१७७५	६९	
३१	७६७६	,, चतुर्थाष्टक		१७७५	७२	
३२	७६७७	,, पञ्चमाष्टक		१७२०	१००	
३३	७६७८	,, षष्ठाष्टक		१७८०	८४	लि.क.–वीरेश्वर शुक्ल
३४	७६७९	,, सप्तमाष्टक		१७७४	७२	
३५	७६८०	,, द्वितीयाष्टक		१६६९	८२	लि.क.–जगन्नाथ, काशी
३६	७६८१	,, नृतीयाष्टक		१७९३	७९	
३७	७६८२	,, ,,		१७०४	१६३	लि,क.–व्यास गोकुल, टोड़ा
३८	७३८३	,, ,,		१७२९	९१	लि.क.–पण्ड्या चिन्तामणि
३९	७६८४	,, पञ्चमाष्टक		१७७४	७१	
४०	७६८५	,, षष्ठाष्टक		,,	७२	
४१	७६८६	,, सप्तमाष्टक		१८५३	११०	लि.क.–मुखजी

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	४९६७	ऋग्वेद प्रातिशाख्य (प्रथमाध्याय)		१८वीं श.	१६	
४३	४९५३	ऋग्वेद संहिता		१७९३	९३	लि.क.–फकीरचन्द
४४	५१९६	,,		१७३०	१५१	
४५	५०२६	ऋग्वेदानुक्रमणिका		१८५२	१२३	स्वरितं देवशंकरेण
४६	५०२७	,, (ढूंढूं)		१७९९	४७	लि.क.–रविदत्त
४७	५०२८	,, परिभाषाभाष्य	रघुनाथ	१७९८	१०	
४८	५०८५	ऋग्वेदानुक्रमणिका विवृति		१८वीं श.	१३	अपूर्ण
४९	४६९९	केनोपनिषत्		१९वीं श.	३	
५०	७५८४	कैवल्योपनिषत्		१९वीं श.	१	
५१	६१२९(२)	कौषीतक ब्राह्मण		१५४३	१३३	
५२	५४४३	गोपालतापिन्युपनिषत् त्रिपाठ सटीक		१९०१	१६	लि.क.–अम्बालाल
५३	४६२८	चरणव्यूह व्याख्या		१७८०	५	लि.क.–पीताम्बर, कान्हाजीसुत
५४	५७००	,,		१९२४	३	
५५	७८२०	धनुर्वेदपरिच्छेद (वीरचिन्तामणिनामा)		१७९९	२९	लि.क.–हरिकृष्ण
५६	४२४५	नारायणोपनिषत्		१८वीं श.	१३	
५७	७७१०	,,		१९वीं श.	४	
५८	५०३०	निघण्टु		१८१२	२२	लि.क.शुभराम,तुलाराम व्याससुत
५९	६७२४	,,	पाणिनीय	१९वीं श.	२९	
६०	५५७३	निरुक्तम्		१७२४	९३	पत्र ८, व २८ से ४२ तक अप्राप्त
६१	५०३४	ब्राह्मण प्रथम पंचिका		१८वीं श.	२३	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५४८२	ब्राह्मण प्रथमपंचिका		१८वीं श.	४६	
६३	७७०४	,, ,,		,,	२२	
६४	५०३५	,, द्वितीयपंचिका		,,	२८	
६५	५५६६	,, ,,		,,	६१	पत्र १, २, ५५ अप्राप्त
६६	५०३६	,, तृतीयपंचिका		,,	३०	
६७	५४८३	,, ,,		,,	५५	
६८	५०३७	,, चतुर्थपंचिका		,,	२४	
६९	५०३८	,, पंचमपंचिका		,,	३०	
७०	५०३९	,, षष्ठपंचिका		,,	२३	
७१	५०४०	,, सप्तमपंचिका		,,	२०	
७२	५०४१	,, अष्टमपंचिका		,,	२०	
७३	६६४४	ब्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त)		१८५४	५२	
७४	४१९४	मण्डल (श्रावणीकर्माङ्गभूत)		१९वीं श.	७	
७५	५१७६	मण्डल प्रकरण		१७९१	१०	
७६	४६३०	मण्डल व्याख्यान	सायणाचार्य	१७वीं श.	६	लि.क.—माधवाश्रम शंकर
७७	५५७१	मन्त्रसंहिता शान्तिसूक्तानि		१८वीं श.	१७१	पत्र २० से ६२ अप्राप्त
७८	५८२३	मन्त्रार्थदीपिका	शत्रुघ्नोपाध्याय	१८२५	१४२	आदिके दो पत्र नहीं हैं लि. क.—मित्रमणि
७९	७७१७	मन्युसूक्त		२०वीं श.	४	
८०	४६०८	मनोज्योतिमंत्र		१९१३	२	
८१	४७००	माण्डूक्योपनिषत्		१९वीं श.	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२	७६६३	माध्यन्दिनी संहिता		१८५९	४	
८३	४७०१	मुण्डकोपनिषत्		१९वीं श.	७	
८४	५५८०	रुद्रजाप्य (रुद्राष्टाध्यायी)		१७८८	३८	लि. क.–रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ अप्राप्त
८५	४४७६	रुद्रांगभूतमंत्रन्यासादि		१९वीं श.	८	
८६	७६६५	रुद्राध्याय		१८६६	१३	
८७	५७२८	वंश-ब्राह्मण		१९वीं श.	११	
८८	४५७६	वाजसनेयी शिक्षा	याज्ञवल्क्य	"	१५	
८९	४२०३	वाजसनेय संहिता		१७९७	१९०	लि. क.–रावल वलभजी
९०	५००७	" "		१८४८	१४९	लि. क.–वल्लभराम दुर्लभराम नागर, विषमनगरा
९१	५२००	" "		१८वीं श.	१५७	
९२	५८०३	" "		१७८२	१८२	लि. क.–जयचंद धनेश्वरसुत
९३	४९३२	" पूर्वार्द्ध		१८७९	१७०	लि.क.–राधाकृष्ण स्थान-अम्बावती
९४	५७७८	" "		१८५२	१४८	
९५	४९३३	" उत्तरार्द्ध		१८७९	१०७	लि. क.–रामकृष्ण
९६	५७७९	" "		१८७३	९३	
९७	५१९७	"		१८२८	१५३	लि. क.–रामशुक्ल
९८	६४६९	वाजसनेयी संहितोपनिषदीशावास्यभाष्य सटिप्पण	भा.–शंकराचार्य, टि.आनन्दगिरि	१८८६	६	
९९	७८३०	वैदिक संहिता (पदसंग्रह)		१५२५	१५५	लि. क.–हरिभाई सूर्यपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५०२९	शिक्षाज्योतिषछन्दांसि		१७२७	२४	लि. क.–अम्बिकेश्वर श्यामजी-शुक्लसुत, टोडावास्तव्य
१०१	५०३१	,, (शांकरीशिक्षा)		१७९७	१५	लि. क.–पुरुषोत्तम
१०२	७५०९	षडङ्गमन्त्राः (मन्त्रार्थदीपिकाख्या-टीकोपेताः)	श्रीशत्रुघ्न	१९वीं श.	७५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०३	५५७४	षष्ठाध्यायः		१७२४	१०३	
१०४	४११६	संहिता		१८६७	१८०	लि. क.–करणीदत्त पालीवाल
१०५	५५७७	,, (द्वितीयाष्टक)		१७५९	१०४	
१०६	५००१	संहितैकादशप्रकाशः		१९वीं श.	१३	घन जटा, मण्डलादि
१०७	४९५६	सर्वानुक्रमणिकावृत्ति		१७९८	६१	लि. क.–दीनानाथ
१०८	४६४१	हव्यकाण्ड	ब्राह्मणोक्त	१६८७	२११	लि. क.–मेदपाटज्ञातीय वासुदेव
१०९	७७७१	त्र्यृचाभाष्य		१९१७	२	
११०	७७७८	त्र्यृचाभाष्य		१९३७	२	

ग्रन्थसंख्या ७८३०

ऋग्वेदसंहिता

(संग्रहके वैदिक ग्रन्थोंमें प्राचीनतम ब्राह्मणलिपिमें संवत् १५२५ में लिखित ग्रन्थ)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४४९	अग्निष्टोमपद्धति	देव याज्ञिक	१८६६	८५	कात्यायनसूत्रोक्त
२	४४५०	,,	,,	१८६५	८२	लि.क.–उमाशंकर शुक्ल
३	४६१०	अनन्तव्रतविधि	भविष्योत्तरे	१८००	११	लि.क.–नन्दराम आचार्य
४	४४५१	अध्वर्युप्रयोग		१८००	५३	लि.क.–दुखभंजन तिवाड़ी औदीच्य
५	४५५८	अधिदेवतादिस्थापनहोमविधि		१९वीं श.	१३	
६	५३४६	अष्टमहादानप्रकरण		१९वीं श.	३	
७	४९८८	आतुरसंन्यासपद्धति	अंगिरोक्त	१७७३	५	लि.क.–लीलाधर ठाकुर, कोटा
८	५१७५	,,	,,	१८वीं श.	१४	
९	४९३६	आरामप्रतिष्ठाविधि		१५६८	२१	
१०	४०९४	आश्वलायनगृह्यपरिशिष्ट		१८वीं श.	२९	
११	४९५०	आश्वलायनगृह्यसूत्रवृत्ति	नारायण	१८०३	१०७	
१२	४९५५	,, ,,	त्रैविध्यवृद्ध	१८००	६४	
१३	४९५४	,, ,,	,,	१७९६	१०७	
१४	५०३३	आश्वलायनश्रौतसूत्र		१७९५	५२	लि.क.–इच्छाराम व्यास
१५	४६१९(२)	आह्निकपद्धति	देवयाज्ञिक	१७९८	४२	लि.क.–यदुराम
१६	६६७४	एकोद्दिष्टश्राद्धविधि		१९०३	६	
१७	४६१३	ऋषिपञ्चमीव्रतविधि	भविष्यत्पुराणोक्त	१८वीं श.	४	लि.क.–छेदालाल, पंडित
१८	४९८३	कर्कभाष्य	कर्काचार्य	१८०७	१९	लि.क.–सुखदेव गोलवाल, सुरतबंदरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४६२५	कर्मप्रदीप		१९वीं श.	३३	१५वां पत्र अप्राप्त
२०	४९८७	,,	गोभिलोक्त	१५६९	३५	लि. क.-कालुआ महन्त, महसाणा
२१	४९४९	कात्यायनश्रौतसूत्र		१७६३	६१	
२२	४४४८	कात्यायनसूत्रपद्धति	देव याज्ञिक	१८६४	१५९	
२३	५४९४	कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी)	,,	१८वीं श.	२०	
२४	६३६८	कार्तिकोद्यापनविधि		१८२२	९	
२५	४९६५	कुण्डकल्पद्रुम	माधव	१८१०	१८	र. का.-१७१२ लि. क.-ऋषीश्वर शुक्ल
२६	५७४९	,,	,,	१९वीं श.	१०	*
२७	४९६०	कुण्डतत्त्वप्रदीप	बलभद्रशुक्ल	१८वीं श.	१५	*
२८	४९७=	कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)	रामचंद्र नैमिषवासी	१८१७	३१	*
२९	५६१=	कुण्डप्रदीपक सटीक	महादेव राजगुरु	१९२९	८	
३०	४६३५	कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक	विट्ठल दीक्षित	१९वीं श.	४२	
३१	४५२७	,, विवृति	,,	१८वीं श.	२५	लि.क.-रुद्रदत्त शुक्ल जम्बूलर
३२	५६४४	कुण्डरत्नटीका	विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदसुत	१९वीं श.	८६	
३३	४१२८	कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)	मू. शंकर भट्ट टी. रघुवीर दीक्षित	१८९४	११	लि. क.-व्रजवासी सिल्लुः
३४	४९९७	कुशकण्डिका		१९वीं श.	६	
३५	४११५	क्रियापद्धति	विश्वनाथ	१८६०	१०६	
३६	४९५१	,,	,,	१८वीं श.	७५	जीर्ण प्रति

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	४९६३	क्रियापद्धति	देवयाज्ञिक प्रजापतिसुत	१७८२	२९	लि. क.–नन्दिकेश्वर
३८	५७४१	,,	देवकीनन्दन जीवानन्दसुत	१९वीं श.	११	
३९	५७२९	ग्रहजपदानविधि		१९१०	२१	लि.क. राधाकिशन,मूंडोता ग्राम
४०	४४८०	ग्रहशान्ति	वृद्ध वशिष्ठ	१ ;वीं श.	१२	
४१	४१८५	ग्रहशान्तिप्रकारः (पद्धतिः)	योद्धराज	१९वीं श.	८३	*पत्र ८ से १६ तक अप्राप्त
४२	४१२५	ग्रहशान्तिपद्धति		१८९३	२८	
४३	५७६५(१)	,,	हेरम्ब शिष्य	१९वीं श.	१-८२	
४४	५०४४	,,		,,	१९	
४५	४६१४	गयापद्धति	नारायणभट्ट रामेश्वरसुत	१७५१	१३	लि. क.--वामदेव
४६	५७१९	,,	,,	१८वीं श.	२२	
४७	४६३६	गृह्यसूत्र		१९वीं श.	३१	
४८	४९६१	गृह्यसूत्रपद्धति	वसुदेव दीक्षित	१८वीं श.	६३	
४९	५७६५(२)	गोदानपद्धति		१९वीं श.	८२-८८	
५०	४१३०	घृततुलादान विधि		१८९३	३	लि. क.–व्रजवासीसिल्लुः, काशी
५१	४५६०	जन्मदिवसकृत्यम्		१८४०	४	लि.क.–भट्टराजा यज्ञदत्त,जयपुर
५२	४६३२	तर्पणविधि		१९वीं श.	५	
५३	४६३४	,,		१८६५	२	
५४	५६८१	तिलादिधेनुदानविधि	विविधपुराणोक्तसंग्रह	१९वीं श.	९	
५५	४६२७	तीर्थयात्राविधि	,,	,,	१४	
५६	४९८०	तीर्थश्राद्धविधि	भट्टोजिदीक्षितकृतत्रिस्थलीसेतुगत	१८७९	२२	लि. क.–सदासुख शुक्ल
५७	५०५१	तुलादानविधि		,,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५४५१	तुलादानविधि		१९९०	६	
५९	६६८६	तुलापुरुषपद्धति		१९वीं श.	८	लि क.–माणिकराम भट्ट
६०	४११२	द्वादशलिंगीमण्डलदेवतापूजनविधि		१९वीं श.	७	
६१	४९७५	दशकर्मपद्धति	गणपति रावल हरिशंकरसुत	१७१८	३६	रचना १७१६ लि. क.–भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर
६२	४१२०	दशरात्र		१९वीं श.	१०३	
६३	६५७३	दशहराकृत्य		१९वीं श.	४	
६४	६७१३	नवग्रहजाप्यविधि		१८३४	७	लि. क.–हरगोविन्द दाधीच, सवाई जयपुर
६५	६७१४	नवग्रहन्यास		१८९३	७	
६६	४६३३	नवान्नेष्टि		१९वीं श.	४	
६७	४९४०	नागबलिप्रयोग		,,	२१	
६८	५८६९	नरदाहकर्त्तव्यता	आश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट	,,	५	
६९	४९३९	नारायणबलि	शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	,,	१०	प्रयोगसारान्तर्गत
७०	४९८९	नीलोद्वाह पद्धति		१७९०	१९	जीर्णप्रति, लि. क.–नन्दिकेश्वर
७१	५००२	,,		१९वीं श.	१५	
७२	४१०६	प्रतिष्ठाकर्म		१८५२	४५	लि. क.–हरिप्रसाद शर्मा
७३	४१११	प्रतिष्ठामयूख	नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज	१८वीं श.	३७	
७४	४९५७	,,	,,	१८८६	३०	लि.क.–सम्पतराम शुक्ल,जयपुर
७५	४९९२	प्रयाणशान्ति		१८८८	९	राजादिजय प्रयाणविधि

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५५६१	प्रयोग	अनन्त भट्ट	१८४१	१६०	यज्ञोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक अप्राप्त
७७	४०९३	प्रयोगदीपिका	मंचनाचार्य	१९वीं श.	९६	आश्वलायन सूत्रोक्त
७८	५५५४	प्रयोगरत्न	नारायण रामेश्वरभट्टात्मज	१८४२	२१४	लि. क.–काशीनाथ, पुस्तकमिदं नारायणभट्टसूनोर्देवभट्टस्य ।
७९	५५७२	प्रयोगरत्नाकर	,,	१९वीं श.	११२	पत्र १, ३९, ४०, ७५, ९४ व ९५ वां अप्राप्त ।
८०	६५९५	प्राणप्रतिष्ठाविधि		१८८१	२	लि.क.रामनारायण, सामरचाग्राम
८१	६४११	प्रायश्चित्तधेनुदानविधि		१९वीं श.	८	अपूर्ण ।
८२	४६०४	प्रायश्चित्तप्रयोग		१८३९	२	लि. क.–करुणाशंकर जोशी
८३	४९७७	प्रासाददेवताप्रतिष्ठा		१८१३	२०	लि. क.–आशाराम व्यास, मालपुरा
८४	४९४२	प्रेतबलि		१९वीं श.	१६	
८५	४९८६	पशुबन्धप्रयोग		१७९४	६	लि. क.–ऋषीश्वर ।
८६	५३३१	पापघटदानविधि		१९वीं श.	८	लि. क.–गोविन्द शर्मा
८७	४१७४	पार्थिवपूजा		,,	९	
८८	६६८४	पार्थिवेश्वरचिन्तामणिपद्धति		१८७३	६	
८९	४११४	पार्थिवेश्वरपूजापद्धति	चन्द्रचूड	१९वीं श.	७	
९०	४२१२	पार्वणश्राद्धविधि		,,	११	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९१	६६७५	पार्वणश्राद्धविधि		१९०३	९	
९२	६७२७	पिण्डप्रमाण		१८०५	७	
९३	४२११	पितृकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग		१९वीं श.	८	
९४	७८११(४)	पुरुषसूक्त (षोडशोपचार)		१८वीं श.	८१–८६	
९५	६५०९	ब्राह्मणसर्वस्व	हलायुध	१८०४	१९६	जीर्ण, खण्डित
९६	६६३३	भगवदाराधनप्रकार		१९वीं श.	७	रामानुजसंप्रदायानुसार
९७	४९४१	भूतबलि		,,	१५	
९८	४९९३	महालक्ष्मीव्रतोद्यापनविधि		,,	१३	
९९	४२१०	मातृकैकोद्दिष्टप्रयोग		,,	७	
१००	४६४९	मूर्तिप्रतिष्ठाविधि		१८१०	५	* लि. क.–गिरिधारी
१०१	७६९७	यजमानपद्धति	गंगाधर रामचंद्रपाठकसुत	१७९४	१७	लि. क.–इच्छाराम व्यास
१०२	४९६२	यजुर्गृह्यसूत्र	पारस्कर	१८५६	४८	लि. क.–गोविन्दराम, आम्बेर
१०३	४९६६	,,	,,	१८वीं श.	४०	
१०४	४९६९	,, (डोढकाण्ड)	,,	१७९८	२४	
१०५	७६०१	यजुर्विधान		१९वीं श.	३५	
१०६	६४०८	यज्ञोपवीतविधि		१८वीं श.	११	अपूर्ण
१०७	४६४२	यात्राविधि		१९वीं श.	३	
१०८	५०६७	योगपट्टविधि		,,	१	सन्यासी छत्र धारणविधि
१०९	४१२१	योगिनीपूजनविधि		,,	१९	लि क.–अम्बाशंकर सामग
११०	६६०२	राधाकृष्णषोडशोपचारपूजा		,,	५	
१११	५८८८	रानोद्यापनपूजाविधि	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९०८	११	

क्रमांङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	७८११(१)	रात्रिसंध्याविधान आदि		१८वीं श.	११८	
११३	४६६२	रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमंजरी)	मालजी त्यगलाभट्टसुत	१७१४	५७	रचना १६६५, लि.क.–बालकृष्ण
११४	४६०७	रुद्राभिषेककर्म		१६१३	१४	व्यासाम्बुक्रम
११५	४६२०	रुद्राभिषेकपद्धति	महानन्द पाठक	१८१४	१८	
११६	६४२७	लघुकारिका	कर्काचार्य	१६४७	१८	लि. क.–जानकीलाल
११७	४६७६	व्यासपूजापद्धति		१६७६	१०	लि.क.–सदासुख शुक्ल, बीकानेर
११८	५७६५(३)	वर्द्धापनविधि		१६वीं श.	८८–६६	
११६	७६६६	वास्तुशांति		,,	२६	
१२०	४६२४	विद्यारत्नसमुच्चय		,,	२७	
१२१	४५१७	विनायकशांति		१८५८	६	
१२२	७१४६	विवाहचतुर्थीकर्म	गर्गोक्त	१६४३	१७+१३=३०	लि. क.–रामचन्द्र
१२३	४८८८	विवाहपद्धति		१७२५	६	लि.क.–सदाफूल
१२४	५७६५(४)	,,		१६वीं श.	६६–११७	
१२५	४५८२	विवाहविधि (यजुर्वेदीय)		१८६१	१५	लि. क.–रत्नेश्वर व्यास, जयपुर
१२६	७१४७	,,		१६४३	२३	राजस्थानी में अर्थ सहित
१२७	४१८६	वेदोक्तस्नानादिकर्म		१६वीं श.	२२	
१२८	४६४१	वैतरण्यादिदान		१८४५	८	
१२६	४६६१	वैधव्यशान्ति		१६वीं श.	५	
१३०	५३२०	श्राद्धप्रयोग	नारायणभट्ट	१८६५	८	लि. क.–चुन्नीलाल
१३१	५५६५	,,	नारायणभट्ट	१६वीं श.	२५	प्रयोगरत्नाकरगत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	४५९५	श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय)		१९वीं श.	२५	
१३३	४६१५	"		१७६७	७	लि. क.–शंकरदत्त
१३४	५५१५	" (सांवत्सरिक)		१९वीं श.	१९	
१३५	५७२६	"		१९१५	७	
१३६	५०५५	श्राद्धविधि		१८२७	३१	लि. स्था.–सवाई जयपुर
१३७	७२९५	श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी)	रत्नेश्वरसूरि	१६वीं श.	१२५	
१३८	५२५२	श्राद्धविवेक	रुद्रधर	१९वीं श.	५१	२० वां पत्र अप्राप्त
१३९	४१८८	श्रावणीविधि (ऋषिपूजन)		१९वीं श.	६१	
१४०	४२२१	"		१८७२	२१	लि. क.–केसोराम, नगर बोंली
१४१	७६९१	श्रौताधानपद्धति	गणपति रावल	१९वीं श.	३३	
१४२	५६३७	शान्तिकर्म	कमलाकर रामकृष्णसुत, नारायणपौत्र	"	१५८	
१४३	४१२३	शान्तिपद्धति	दुर्गाशंकर शुक्ल	१८वीं श.	७०	
१४४	४८७२	शांतिविधान (पल्लीसरटपतन)	गर्गोक्त	१८४४	३	लि क.–रेवादत्त
१४५	५१७०	शान्तिभाष्य	वशिष्ठोक्त	१८०९	९	लि. क –केवलजी, जयपुर, माधवसिंह राज्ये
१४६	५५६४	शान्तिविधि	"	१८वीं श.	९८	३७ वां पत्र अप्राप्त।
१४७	४९५२	शुल्वसूत्र	कात्यायन	१९वीं श.	५	
१४८	४५९६	षट्पिण्डकर्म		"	७	
१४९	५००८	षष्ठीपूजा		१८७०	११	लि. क.–उमाशंकर
१५०	७६१३	षोडशोपचारपूजा		१८४६	६	लि क.–रणछोड़दास, गढ़-बदनोर।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४२०८	स्त्रीकर्तृकश्राद्धप्रयोग		१९१७	५	लि. क.–नारायण शर्मा
१५२	४१६५	स्वस्तिवाचन	दानखण्डोक्त	१९वीं श.	१३	
१५३	५७१६	,,	,,	१७३९	१०	
१५४	६६८१	,,	यजुर्वेदीय	१९वीं श.	९	
१५५	६६९२	,,	,,	१८९२	८	
१५६	५२५५	संध्या (यजुर्वेदीया)		१९वीं श.	११	
१५७	५६९५	संध्या टीका ,,		१८९९	१५	लि. क.–मुरलीधर शरण
१५८	६६००	संध्यापद्धति (सामवेदीया)		१९वीं श.	५	
१५९	६५७२	संध्याभाष्य	नारायणमुनि शठकोपमुनि	१९वीं श.	९	
१६०	७७७५	संध्यामंत्रव्याख्या	भट्टोजिदीक्षित	१९४२	१६	लि. क.–मगनराज जोशी
१६१	७६९५	संध्या सटीका (यजुर्वेदीया)		१९०१	४	
१६२	४५८१	संन्यासपद्धति		१९०८	४	लि. क.–रघुनाथाश्रम, काशी
१६३	६६४८	सपिण्डीकरणविधि		१९वीं श.	४०	लि. क.–वसुदेवराम, मथुरा
१६४	५७४०	सर्वतोभद्रमण्डलपूजाविधि		,,	४	
१६५	५७६५(५)	सर्वदेवतास्थापनपूजाविधि		,,	११७–१३१	
१६६	४५९४	सिद्धिविनायकव्रतपद्धति		,,	४	
१६७	४९८५	सूर्यव्रतविधि		१८१२	४	लि. क.–सदाशिव शुक्ल
१६८	४६३८	हरतालिकाव्रतविधि		१७२८	७	लि. क.–म. सुर
१६९	५१८२	हेमाद्रिप्रयोग		१८वीं श.	१२	
१७०	४७०७	हेमाद्रिविधि (स्नान संकल्प)		१८४४	८	
१७१	४५६८	त्र्यृचाकल्प (अर्घ्यदान)	हंसवतीविधानोक्त	१९वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७२	७७८८	त्र्यृचाविधानम्		१९वीं श.	७	अपूर्ण
१७३	७७७४	त्र्यम्बकमंत्रविधि		१८९३	१९	लि. क.–बालमुकुन्द व्यास
१७४	५०५८	त्रिकालसंध्या (सामवेदीया)		१९२३	१३	
१७५	५७६१	,, (यजुर्वेदीया)		१९२५	१२	
१७६	६४२४	,,		१८२५	८	लि. क.–चैनराम मिश्र, भरतपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५७८१	अमरनाथपटल	भृङ्गीशसंहितान्तर्गत	१९वीं श.	२६	एकादशपटलांत, अमरनाथकी यात्राका फल
२	५२२७	अष्टादशाक्षरमहामंत्रपद्धति		१८वीं श.	१७	गोपालमंत्रपरक
३	५७८३	उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग	रुद्रयामलप्रोक्त	१९वीं श.	१५	आदि में गणपतियंत्र है ।
४	४१५२	उड्डीशकल्प		१९२७	६४	लि. क.–रामनारायणमिश्र लि.स्था.–बयाना
५	५७९३	उद्धारकोश	सकलागमसारोक्त	१९वीं श.	२४	
६	५८२०	,,	,,	,,	२	
७	४४५२(५७)	औषधिकल्प (चक्र)		१८वीं श.	११४–११६	
८	५७६७	कक्षपुटो	सिद्धनागार्जुन	१८७७	५०	लि. क.–कृपाराम
९	५६५०	कामकलाङ्गनाविलास	पुण्यानन्दमुनीन्द्र	१९१६	३३	
१०	५७९९	कार्त्तवीर्यदीपकर्मरहस्य	उड्डामरतंत्रोक्त	१६५१	५	लि. क.–गंदाधर दैवज्ञ, लि. स्था.–वाराणसी
११	६६६२	कार्त्तवीर्यनित्यदीपविधि		१९०३	५	
१२	५२२८	कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत्		१८५०	७	लि. स्था.–पुष्कर
१३	६७५१	कालाग्निरुद्रोपनिषत्	नन्दिकेश्वरपुराणोक्त	१९०६	१०	लि. क.–रामदास
१४	५६१७	कुलार्चनदीपिका	जगदानंद महामहोपाध्याय	१९वीं श.	२४	
१५	५६२३	कुलार्णवतंत्र		,,	७८	
१६	५७६२	,,		,,	८७	
१७	४३२६	कृष्णचरित	सम्मोहनतंत्रगत	१७६२	१६	*
१८	४८८६	कौतुकचिंतामणि	प्रतापरुद्रदेव	१८०९	६८	लि. क –आशाराम ज्ञानी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९३५	कौलरहस्य (शतक)	तरुणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनींद्र-शिष्य	१८८९	१०	लि. क.–रामसुख, जयपुर
२०	७६९०	गणेशपूजा		१८८१	४	लि.क.–शिवनाथव्यास, जयनगर
२१	६७३२	गणपत्युपनिषत्		२०वीं श.	३	
२२	६३४८	गायत्रीपद्धति		१८८७	३५	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३	६७७३	गायत्रीपंचांग	रुद्रयामलोक्त	१९०७	२०	लि. क.–रामदास कबीरपंथी
२४	६२४७	गंधोत्तमानिर्णय	गुरुसेवक (श्रीकाल)	१८वीं श.	२२	* रचना–१७०२
२५	५७१०	गुरुकीलकपटल	(गुप्तवतीरहस्यतंत्रोक्त)	१९वीं श.	२	
२६	७८११(२)	गौरीकल्प		१८वीं श.		
२७	५१९८	घंटाकर्णकल्प		१९वीं श.	२०	आपदुद्धारणमंत्रयुक्त, अपूर्ण
२८	५७०२	चण्डिकार्चनदीपिका	काशीनाथभट्ट जयरामसुत वाराणसीगर्भसंभव	१८९६	२३	लि. क.–व्रजवासी ज्योतिर्वित् लि. स्था.–काशी
२९	५८१४	चंडीप्रयोगविधि	नागोजीभट्ट	१९००	२७	लि. क.–दामोदरदास, सिउखपुर ग्रामवासी
३०	५८८६	चंडीपाठप्रयोगविधि		१९वीं श.	२३	
३१	७५०६	चंडीस्तोत्रव्याख्या	नागोजीभट्ट	१८११	६१	
३२	४८९७	तंत्रलीलावती	कर्णसिंह	१८वीं श.	१९	* तृतीयपटलांत
३३	७७११	तंत्रस्थहृदय (स्वोपज्ञटीकोपेत)	काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य नागपुरवास्तव्य जयरामसुत	,,	१८	* लि. क.–बालमुकुंद
३४	७६०८	तुम्बादिबीजमंत्र		१९वीं श.	१	लि. क.–केशवदास

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	५७२२	तुरीयोपस्थानविधि		१९१५	५	लि. क.–घनश्याम ब्राह्मण लि. स्था.–राजपुर, मेवाड़
३६	५१२६	नवार्णन्यासविधि		१९वीं श.	२	
३७	४६००	नित्ययात्रा (षोडशयात्र)		,,	६	
३८	४६२६	,,	काशीखण्डोक्त	१८४७	१४	
३९	५७९५(२)	नित्यापारायण	बुद्धिराज	१९वीं श.	१-२०	
४०	५५१६	नृसिंहमालामंत्र		,,	२०	
४१	७६४४	प्रत्यंगिरासूक्तमंत्र		१९१२	१६	लि. क.–ब्रजवासी सिल्लू लि. स्था.–अलवर
४२	४४५२(८९)	प्रभातगायत्री तथा त्रिकाल-ब्रह्म-गायत्री		१८वीं श.	१२८वाँ	
४३	५१२३(५)	पंचदशीयंत्रविधान		,	२७-२८	
४४	७७०८	परशुरामकल्पसूत्र		१८वीं श.	४८	* आदिके ११ पत्र कीटविद्ध।
४५	५७५७	पात्रस्थापनविधि		१९वीं श.	६	
४६	५६५४	पुरश्चर्यार्णव	प्रतापशाहदेव	,,	२४	प्रथम तरङ्ग
४७	५६५५	,,	,,	,,	२५२	द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त
४८	५६५६	,,	,,	,,	११७	दशमैकादशद्वादशतरङ्ग रचना सं० १८३१
४९	५६६१	पुरश्चरणचंद्रिका	देवेंद्राश्रम	,,	११२	
५०	५६३८	पूजारत्न	सत्यानन्द	१९२८	२१२	
५१	५७९५(१)	,,	,,	१९वीं श.	१-६	प्रथम मयूख

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२	५१९५	पूर्णाभिषेक षडाम्नाय मंत्रादि		१८वीं श.	स्फुट पत्र	इन पत्रोंमें नृसिहसुन्दरी महामंत्र, दशमहाविद्या, दशावतार दशश्लोक, शिवाबलि विधि नाभिविद्योद्धार और तन्त्रोक्त अपूर्णहवनपद्धति लिखी हुई है।
५३	६८८८	ब्रह्मकल्प (कायाकल्प)		१९वीं श.	६	
५४	५००४	बटुकभैरवपद्धति	मंत्रचिंतामणिप्रोक्त	१९वीं श.	२३	
५५	४१३५	बटुकभैरवपूजापद्धति	विश्वसारोद्धारतंत्रोक्त	१९वीं श.	२७	
५६	६७६०	बालास्तोत्रादि		१७२८	१६–२४	बालास्तोत्र, ईश्वरीस्तुतिपूजा, भारतीस्तोत्र, अन्नपूर्णास्तोत्र, श्रीवार्तिकसंस्कृतपार्श्वनाथ स्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र।
५७	७०५६	भुवनेश्वरीपद्धति (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलतंत्रांतर्गत	१८वीं श.	६९	पत्र ९ से १५ अप्राप्त
५८	५४२९	भूत-भूतिनीसाधनविधि	भूतडामरतंत्रोक्त	१९वीं श.	७४	प्रथमपत्र खंडित।
५९	६४१६	भूतशुद्धि		,,	११	
६०	७००३	,,		,,	७	लि. क.–भट्ट दयादत्तशर्मा
६१	४१८१	भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृकान्यास		,,	२०	
६२	५००५	भैरवपुरश्चरणविधि	शिवागमसारोक्त	,,	६	लि. क.–रामचंद्र शुक्ल
६३	६४४६(१)	भौमपूजाप्रकार		,,	३९–४०	
६४	६७२३	मंगलव्रतपूजाविधि		१९१७	६	लि. क.–विद्याधर
६५	४४४४	मंत्रमहोदधि	महीधर	१८०३	१४९	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	५७४८	मंत्रमहोदधि	महीधर	१८वीं श.	८२	रचना सं० १६४५
६७	५७४४	,,	,,	१९वीं श.	७४	नौकाटीकासहित
६८	६६५६	,,	,,	१८७६	२११	लि. क.–शिवदत्त शुक्ल सनाढ्य माधोपुर काशी
६९	४८५८	मंत्रसिद्धिलक्षण	गौतमतंत्रोक्त	१९वीं श.	३	
७०	५०४९	महागणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलोक्त	,,	३२	
७१	६२६२	महानिर्वाणतंत्र (पूर्वकाण्ड)		१९४२	१४९	
७२	५८३२	महाविद्या		१८वीं श.	५५	४१वां पत्र अप्राप्त
७३	४२९६	महाविद्यादशश्लोकीविवरण		१४९१(?)	४	*लि.स्था.–सिरोही, लि.सं –१८९१ प्रतीत होता है।
७४	५३३६	महाविद्यापारायणविधि		१९००	२७	
७५	५०००	मातृकानिघण्टु	नृंसिह	१९वीं श.	६	
७६	५६११	मानसोल्लास सटीक	टी. रामतीर्थ	१९१६	७७	
७७	६४१३	मायाबीजकल्प (ह्रींकारकल्प)		१९७५	३	लि. क.–भक्तिसुंदर, लि. स्था.–विक्रमपुर
७८	५७८०	मार्तण्डमाहात्म्य	भृंगीशसंहितान्तर्गत	१९वीं श.	१५	
७९	४११८	रामपद्धति (वेदोक्ता)	श्रीरामानुज	१८६७	८	* लि. क.–विप्र जयराम
८०	४२३९	,,	,,	१८वीं श.	२६	
८१	४२५५	,,	,,	,,	३९	
८२	५८७८	,,	लक्ष्मीनिवास नृंसिहाश्रमशिष्य	१७७१	१८	लि. क.–पुरुषोत्तमदास वैष्णव, लि. स्था.— गलता, जयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६७४२	रामपूजापद्धति	श्रीरामोपाध्याय	१६५६	१६१	* पत्र १६०वां अप्राप्त
८४	६८०४	,,	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७६४	२६	
८५	४११७	राममंत्रपटल		१६वीं श.	७	
८६	७७१६	राममंत्रविधिपटल		,,	१७	लि.क.–वैष्णव रामप्रसाद वैष्णव
८७	४१६६	राममंत्रविधिपद्धतिपटल		,,	१५	लि. क.–अमरदास, खेतड़ी
८८	५७६२	रामार्चनदर्पण (त्रिपुरसुंदरीपूजादिविधान)		१६१०	१२२	
८६	४१६७	लक्ष्मीपञ्चाङ्ग	ईश्वरतंत्रोक्त	१८२४	३१	लि. क.–भवानीदत्त
६०	७०५४	ललितोपाख्यान	ब्रह्माण्ड पुराणोक्त	१८वीं श.	४२	अपूर्ण
६१	५१२६	वरदगणेशपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलान्तर्गत	१६वीं श.	२६	
६२	४४५२(५६)	वश्ययंत्रादि		१८वीं श.	११४वां	
६३	५२३६	वसुधारा (आर्यवसुधारा)	बौद्धकल्प	१६वीं श.	७	*
६४	५२२५	वसुधारानाम धारणीकल्प	बौद्धकल्प	१८६६	६	*
६५	५८०६	श्यामापद्धति		१६वीं श.	८	अन्तमें भैरवतन्त्रोक्त जगन्मंगल कवच भी है।
६६	५६२७	श्यामार्चनमंजरी	लालभट्ट अनारगिरिशिष्य	१६१६	६३	
६७	५६०५	श्यामारहस्य	पूर्णानन्दगिरि	१८वीं श.	१०४	
६८	६२२१	,,	,,	,,	२२	पत्र २० से २२की लिखावट अर्वाचीन प्रतीत होती है।
६६	५५६२	,,	,,	,,	६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५८०५	श्रीचक्रार्चनविधि	पृथ्वीधरमिश्र शांडिल्यगोत्रज जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी	१९वीं श.	६	परशुरामकल्पसूत्रानुसार
१०१	५७५५	श्रीविद्यापटल	दक्षिणामूर्तिसंहितोक्त	१९वीं श.	१५	
१०२	७५०२	श्रीविद्यार्चनपद्धति		,,	४७	मंत्रमहोदध्यनुसारिणी
१०३	५४६८	श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धतिः	मंत्रमहोदध्युक्त	,,	३७	
१०४	५७९८	श्रीविद्यामालामंत्र	ललितापरिशिष्टतंत्रोक्त	,,	१०	
१०५	५६६५	श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका	विद्यारण्य	,,	४४	
१०६	४९५८	शतचण्डीविधान		१८९९	५२	लि. क.–सदाशिव शुक्ल
१०७	४९९८	,, ,,		१९वीं श.	११	भट्टविश्वनाथस्य पुस्तकम्
१०८	७१२९	शतचंडी-सहस्रचंडी-प्रयोगपद्धति		,,	५२	(अपूर्ण)
१०९	५६४१	शरभार्चापारिजात	रामकृष्णदैवज्ञ नीलकंठवंशीय आपदेवसुत भवानीगभंज	१९२६	१२२	
११०	५६९७	शिवताण्डवतंत्र	दक्षिणामूर्तिप्रोक्त	१९११	६४	लि. क.–जीवणराम, द्वादश-पटलसेचतुर्दशपटलान्त
१११	६४४४	,, ,,	,,	१९वीं श.	२५	
११२	६४९६	,, ,, (सटीक)	टी० नीलकण्ठ गोविंदसूरिसूनु	१८४०	४२	लि. क.–गंगाधर
११३	४४६९	शिवपंचाक्षरीन्यासविधि		१९वीं श.	६	*
११४	६७३३	शिवाम्बकल्प		,,	१७	
११५	७७४१(२)	स्फुटमंत्र		१७वीं श.	१२-१३	
११६	५००६	सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि		१८६१	१५४	लि. क. सदाशिव शुक्ल।
११७	५५८५	सांख्यायनतंत्र		१९वीं श.	५१	पंचत्रिंशत्पटलांत।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११८	७७७३	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	गोरक्षनाथ	,,	२६	
११९	४२०५	सिंहसिद्धान्तसिंधु	गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट	१८२५	९०२	*रचना सं० १७३१ लि. स्था. जयपुर
१२०	७६९२	सुमुखीविधान	रुद्रयामलोक्त	१७३४	३	लि. क. गंगापुरी लि. स्था. मांगलोर ग्राम हाडौती प्रदेश
१२१	५६५८	सौभाग्यरत्नाकर	श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास-भट्ट गोस्वामी)	१९२७	२७२	
१२२	६३७१	हनुमत्पताकासिद्धि		१८वीं श.	४६	
१२३	५१३८	त्रिकूटारहस्य	रुद्रयामलोक्त	२०वीं श.	६	अपूर्ण
१२४	६१२१	,,	रुद्रयामलगत	१७५०	५६	प्रथमपत्र अप्राप्त लि. क. सुखराम
१२५	५७७७	त्रिपुरार्चनमंजरी	भट्टगदाधर(ज्ञानानन्दापर नामधेय विमर्शशिष्य शिवशंकरसुत अम्बागर्भसंभूत)	१९१९	१	प्रतिके कोण खण्डित हैं
१२६	५८१२	,,	,,	१९वीं श.	२९४	
१२७	५६५९	त्रिपुरारहस्य		१९वीं श.	१०६	
१२८	५६००	त्रिपुरासारसमुच्चय	नागभट्ट	,,	५१	
१२९	५८०६	त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका	शंकराचार्य	१९३४	८६	लि. क. नानूराम ब्राह्मण लि. स्था. जयपुर
१३०	५८२९	ज्ञानार्णवतंत्र		१६वीं श.	११६	८१वां पत्र अप्राप्त
१३१	६६५९	,,		१९वीं श.	८६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३७८	अत्रिस्मृति	स्कन्दपुराणोक्त	१९वीं श.	११	
२	४५३४	,,		१८४०	४	
३	४९२७	अथर्वणशांतिप्रयोग		१८९३	७३	लि. क. देवकृष्ण दाधीच लि. स्था. जयनगरमध्ये सीता-रामजीका मन्दिर
४	४५८६	आचारदीप	नागदेव उपाध्याय	१८वीं श.	६५	
५	४६१६	,,	,,	,,	८८	ज्योतिर्वित्केवलरामजीकस्य पुस्तकमिदम्
६	४६४३	,,	,,	१९वीं श.	६३	पत्र ५८, ५९ अप्राप्त
७	६५५९	आचारप्रदीप	,,	१९१५	४०	लि. क. रामनारायण मिश्र दाधीच
८	५२२९	आचारप्रदीप	कमलाकर कूर्परग्रामवासी	१७६०	६२	पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५वें अप्राप्त। लि. क. किशोरदास लि. स्था. सागवाटकपुर
९	४३८२	आचारमयूख	नीलकण्ठभट्ट शंकरसुत	१८वीं श.	८४	७४वां पत्र अप्राप्त
१०	६५१३	,,	,,	१८३८	७२	
११	४५२९	आशौचत्रिंशच्छ्लोकी		१९वीं श.	५	
१२	५२५८	,,		,,	२३	
१३	४५३०	आशौचनिर्णय		१६७०	६	लि. क. शीवजी केशवसुत
१४	४५३१	,, वृत्ति	श्री भट्टाचार्य ?	१८वीं श.	१६	त्रिंशच्छ्लोकी व्याख्या

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	४११३	आशौचदशक सभाष्य	मू. विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर	१८४२	११	*
१६	७७९१	,,		१९वीं श.	१०	
१७	४६०२	आशौचसंग्रह सटीक (त्रिंशच्छ्लोकी भाष्य)	टी. भट्टाचार्य	१९वीं श.	३७	
१८	४६०३	,,		,,	६	शिवनंदनजीलिखापित, जयपुर
१९	६२२८	,,		१८६९	१६	
२०	५२२०	उत्सवप्रतान	पुरुषोत्तम	१८वीं श.	३८	लि. क. मोरेश्वर
२१	४५५९	कालनिर्णयदीपिका	श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशिष्य	१८१३	२०	लि. क. दयाराम, जयनगर
२२	४९७१	,,	,,	१८११	३०	लि. क. गोविंदराम महाशंकर टोडा मध्ये
२३	६९९५	कालनिर्णयप्रकाश	रामचन्द्रभट्ट विठ्ठलभट्टसुनु बालकृष्णभट्टपौत्र	१८६१	१४१	लि. क. अनिरुद्ध प्रश्नोरा, प्रति अपूर्ण।
२४	४३५१	कालनिर्णयसिद्धांत सटीक	मू. रघुराम, टी. महादेव	१७४०	१४७	*पत्र ४७, ८१ से ८४तक अप्राप्त लि. क. हरिराम हलवद्रवासी रचना सं. १७०९, १० स्थान भुजपुर। ५८वां पत्र अप्राप्त।
२५	६२४६	कृत्यरत्नावली	रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसूनु	१८वीं श.	६२	
२६	६३८०	गोदानविधि:		,,	१६	
२७	६५८७	चैत्रशुक्लप्रतिपन्निर्णय	जयसिंहकल्पद्रुमान्तर्गत	१९वीं श.	८	लि. क. गोपीनाथ।
२८	६६२४	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१८वीं श.	७५५	

ग्रन्थसंख्या ७६१४ तिथिनिर्णय

(त्रिराज्य (ओरछा, जयपुर, बीकानेर) दीक्षागुरु गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-रचित। रचयिता के जीवनकाल में संवत् १७३२ में लिखित प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६९९३	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१९वीं श.	४४१	अपूर्ण, त्रुटित
३०	६६५८	जातिविवेक	विश्वम्भरीयवास्तु शास्त्रान्तर्गत	१९०२	२०	विविध कर्मकार जातियोंका वर्णन
३१	७०४१	जीवत्पितृक कर्त्तव्यनिर्णय	रामकृष्णभट्ट, नारायणसूनु, रामेश्वर पौत्र	१७४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२	४१२९	तिथिनिर्णय (तिथि दीधिति)	अनन्तदेव	१७५७	४८	*स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३३	४६१८(१)	"	भट्टोजी दीक्षित	१८वीं श.	२७	
३४	४९०१	"	गंगाराम भट्ट	१८३४	१२	लि. क. वीरदेव संवत्र (त्) नेपाले ८३४
३५	७५९५	"	शिवानन्द भट्ट	१७३२	३७	कर्ताके जीवनकालमें लिखित प्रति ज्ञात होती है
३६	४५३८	दत्तकदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श.	१४	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३७	४९२९	दानचंद्रिका		१८९८	६८	लि. क. सदासुख शुक्ल
३८	७५९५	दानधर्म प्रकरण	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श.	३०१	आद्य १५ पत्र अप्राप्त
३९	४९४७	" खण्ड	हेमाद्रि	१७६६	३३९	चतुर्वर्गचिंतामणिगत लि. क. भगवतीदास
४०	४९८४	दानवाक्यसमुच्चय	पुरुषोत्तम	१६१९	६७	*लि. क. वामनशुक्ल
४१	४५४०	देवालयगृहादिवास्तुदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श.	४२	
४२	५११३	धर्मप्रवृत्ति	रामेश्वरभट्ट, सूनु श्रीनारायणभट्ट	१८७९	१७५	लि.क वैष्णव रामप्रसाद तक्षकपुर
४३	४६०५	धानतपद्धति (द्वादश्यादिव्रत-निर्णय)		१९वीं श.	९	*

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	६९५७	निर्णयसिंधु	कमलाकरभट्ट	१८८२	३५०	लि. क. हरिदास वैष्णव, जयपुर
४५	४५५३	निर्णयामृत	गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन महीमहेन्द्र	१५३५	२३०	लि. क. पाठक वानरसुत पाठक परमात्मा
४६	४५८३	"	बल्लालदेव	१६७०	१८०	(अपूर्ण)
४७	५१६४	नीतिमयूख	नीलकंठभट्ट शङ्करसूनु	१८वीं श.	५०	
४८	५७०९	प्रायश्चित्तकदम्बनिर्णय	गोपाल न्यायपंचानन भट्टाचार्य	१९०७	५३	
४९	४१८४	प्रायश्चित्तमयूख	नीलकंठ	१९वीं श.	१०९	* पत्र ७,६१,६२,७० से ७३ तथा अन्त्य पत्र अप्राप्त
५०	६४५४	पाराशरस्मृति सविवृतिक	विवृतिकार माधव	१५वीं श.	१५६	६६वाँ पत्र अप्राप्त
५१	४६२६	"	"	१८३३	५०८	लि.क.–रामनारायण मिश्र शाकंभरीवासी
५२	७७७९	"	"	१७७१	१८६	
५३	४५६३	"	"	१७वीं श.	१६०	अपूर्ण
५४	४४४६	मदनपारिजात	भट्ट विश्वेश्वर कौशिक (?)	१७८९	३८४	*लि.क.–वीरेश्वर शुक्ल
५५	६५७५	मलमासनिर्णयादि		१९वीं श.	९	
५६	६००८	महादानपद्धतिः	रूपनारायण	१५७२	१४०	प्रथम पत्र अप्राप्त
५७	४९९०	महाव्रत		१८वीं श.	१२	लि. क.–ऋषीश्वर
५८	६१२९(१)	महाव्रतकथा		१५४३	१३	जीर्ण, फटी हुई
५९	४४४४	महाव्रतभाष्य	गोविन्दपण्डित	१७४१	३४	*
६०	४९८२	महाशान्ति	नीलकंठ	१८९६	६	लि.क.–सदासुख

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६८५	माधवीयकालनिर्णयकारिका	माधव	१८वीं श.	१२	
६२	४५१६	मानवधर्मशास्त्रसंहिता	भृगुप्रोक्त	१८वीं श.	१३१	*
६३	४५३७	यमप्रणीतधर्मशास्त्र		१८वीं श.	४	
६४	४३८३	याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका (मिताक्षरा-प्रथमाध्याय)	विज्ञानेश्वर श्रीपद्मनाभ भट्टोपाध्यायात्ज	१५७८	६२	१ से ६ पत्र अप्राप्त
६५	४३८४	,, द्वितीयाध्याय	,,	,,	१६३	४४ से ५४ पत्र अप्राप्त
६६	४६४५	,,	,,	१८वीं श.	४०	
६७	४३८५	,, तृतीयाध्याय	,,	१८वीं श.	१४१	
६८	५१६३	,,	,,	१८११	१४३	आदितस्तृतीयाध्यायान्त
६९	६४५१	,, प्रथमाध्याय	,,	१७वीं श.	७५	
७०	६४५२	,, द्वितीयाध्याय	,,	,,	१३२	'शुक्लविश्वेश्वरस्येदंपुस्तकम्'
७१	६४५३	,, तृतीयाध्याय	,,	,,	१७६	,, १५०वाँ पत्र अप्राप्त
७२	६५४६	,,	,,	१८६६	८८	लि.क.—वैकुण्ठनाथ, व्यवहार-खण्ड मात्र
७३	४६१६	,, मूल		१७८२	४७	लि. क. उद्धवजी नागोर
७४	४५४१	रजोदर्शनजातकशांतिदीधिति	अनन्तदेव	१९वीं श.	६७	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत प्रथम पत्र तथा पृ. ६७ से आगे पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति
७५	४६३८	रजोदर्शनशांति		१८६५	७	लि. क. सदासुखशुक्ल, जयपुर
७६	४३५०	रत्नसंग्रह	गोविन्दपण्डित	१७१२	५०	*

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	६५०७	लघुपाराशरस्मृति	पराशरमुनि	१८वीं श.	३३	
७८	४५४२	व्यासस्मृतिः		१८वीं श.	५	तृतीयाध्यायपर्यन्त
७९	६६१५	,, ,, गृहस्थाह्निकम्		,,	११	
८०	४९२६	व्रतार्क	शङ्कर नीलकण्ठ (तनय)	१८९२	५८३	लि. क. गङ्गाराम। लि. स्था. जयपुर। पत्र ५२ व ३८९से ३९४ तक अप्राप्त। प्रति में दो तरहके पत्र हैं। ५१४ से ५७० तकके पत्र दूसरी प्रकारके व छोटे हैं तथा इनमें पत्र सं. १७० तक स्वतन्त्र संख्या भी लगी है।
८१	५८२१	वार्षिककृत्य		१९वीं श.	५५२	पत्र ४७, ४८, १८६ व २२०से २२३ तक अप्राप्त
८२	४५८४	विश्वादर्श	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य-सुत	१६७५	२०	११वां पत्र अप्राप्त
८३	६७१९	विश्वेश्वरस्मृति	कैवल्येन्द्र सरस्वतीशिष्य	१८वीं श.	७	
८४	४५३६	वृद्धशातातपधर्मशास्त्र		१८वीं श.	३	
८५	६६१५	वैष्णवचर्चा		१९वीं श.	४	
८६	६१६७	वैष्णवधर्मतत्त्वचिन्तामणि	श्रीनिवासाचार्य	१८वीं श.	४	
८७	६२६६	वैष्णवोपयोगीनिर्णय		१९०५	२०	रामार्चनचंद्रिकादिके आधार पर संगृहीत
८८	४५३३	शङ्खस्मृति (शांखशास्त्र)	शंखप्रोक्त	१८४१	११	*

क्रमांङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	४४४७	शांखायनसूत्रभाष्य	वरदत्तसुत ?	१९०६	१५४	*
९०	४९४८	शान्तिमयूख	नीलकंठ	१७७९	१५८	कीटविद्ध। 'ठाकुर नाथूरामस्य-पुस्तकम्'।
९१	६०७५	"	"	१८७७	८७	पत्र ४६ से ५० व ८१वां अप्राप्त
९२	४९३१	शांतिसार	दिनकरभट्ट रामकृष्णात्मज	१८८७	६१	लि. क. सदासुखशुक्ल, जयनगर
९३	४३८०	"	"	१९वीं श.	१२३	
९४	५००३	शिवरात्रिपूजनविधि		१९वीं श.	१५	जयसिंहकल्पद्रुमोक्त
९५	५१४२	शुद्धिविवेक	रुद्रधरलक्ष्मीधरात्मज हल-धरानुज	१७६९	१४	लि. क. रामभक्त सारस्वत
९६	४९३४	शूद्रधर्मकमलाकर	भट्ट कमलाकर	१८९०	९५	लि. क. सदासुखशुक्ल, जयपुर
९७	५५७८	स्मार्तनिष्कृतिपद्धति	दिवाकर भट्ट	१७०९शक	७१	पत्र ६ से १५, २३, २४ तथा ५२ से ६२ तथा ८७वां पत्र अप्राप्त लि. क. सखारामभट्ट उल्लप नामक भाई भट्ट सूनु
९८	४९६८	स्मृत्यान्हिक (स्मृतिसमुच्चय)		१७५८	२४	लि. क. ठा. लीलाधर लि. स्था. कोटा
९९	४५३९	स्मृतिकौस्तुभ-संस्कारदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं	६७	
१००	४६१७	स्मृतिसार	याज्ञिकदीक्षित	१८१२	२२	लि. क. तिवाड़ी शिवजीराम दायमा, लि. स्था. आमेर
१०१	४६३९	"	"	१७९७	२०	
१०२	६०९३	संस्कारकौस्तुभ	अनन्तदेव	१८वीं	१३५	पत्र ३४, ३५, ३६ अप्राप्त लि. लट्टू गदाधरसुत जयकृष्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७०४४	संस्कारप्रयोगसंग्रह		१८वीं श.	८१	अपूर्ण
१०४	७०४५	संस्कारपद्धतिसंग्रह		,,	२५	
१०५	५२५३	संग्रहश्लोकाः		१९२३	२१	
१०६	४५३५	संवर्त्तस्मृति	संवर्त्तऋषिप्रोक्त	१८४०	८	
१०७	४९७६	सापिड्यविवेक	श्रीशूलपाणि	१७१९	५	लि. क. श्रीरत्नाकर भट्टात्मज भट्ट शंकर। लि. स्था. काशी
१०८	५५४९	हारीतस्मृति	हारीतऋषिप्रोक्त	१८१०	६८	५१वां पत्र अप्राप्त। लि. क. आशानन्द व्यास
१०९	४५८९	हेमाद्रिकालनिर्णय	भट्टोजीदीक्षित	१८वीं श.	४५	लि. क. नाथूराम भालूक
११०	७७७०	त्रिशच्छ्लोकीभाष्य		१८८४	३१	
१११	५३४२	त्रिशच्छ्लोकीसटीक		१८५४	१८	
११२	४९३५	,,		१८९६	१७	लि. क. सम्पतराम
११३	६९०३	ज्ञानभास्कर		१९वीं श.	१३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६२८	अक्षयतृतीयाकथा	पद्मपुराणोक्त	१६३१	२	लि. क. देवकृष्ण दाधीच पुरोहित चक्षुपुरे (चाकसू ?)
२	४४६१	अगस्त्यकथा	पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त	१६वीं श.	८	
३	४६६४	,, (अर्घ्यदानविधिः)	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श.	८	
४	६६७३	,,	,,	१८३१	४	लि. क. रामचन्द्र
५	४२२०	अगस्त्यार्घ्यपूजाकथा	,,	१८१४	८	लि. क. केसोराम कान्यकुब्ज ब्राह्मण नगर बोंली
६	५३७६(१४)	अनन्तनाथकथा	गोतमप्रोक्त	१८वीं श.	१६६ से २०२	
७	४१२२	अनन्तव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श.	१०	
८	६६७०	,,	,,	१८३२	८	
९	६६५४	अर्बुदमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६०५	१३१	
१०	६८११	इतिहाससमुच्चय		१६४३	४६	
११	४१६०	एकलिंगमाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१६१३	१०४	लि. स्था.–उदयपुर
१२	४०४४	एकादशीमाहात्म्यकथा सार्थ	विविधपुराणसंकलित	१८१३	२८	अर्थ राजस्थानीमें है लि. क. रामचन्द ग्राम कांगणी मेवाड़देशे
१३	५५५२	एकादशीकथासंग्रह	,,	१६०८	६१	लि. क. यज्ञेश्वरदेव, आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४	६४०६	,, (अपूर्ण)	,,	१६वीं श.	१६	भाद्रपद से फाल्गुन कृ. एकादशी कथापर्यन्त
१५	६७२६	ऋषिपञ्चमीकथा	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१६	७	
१६	६६६६	ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापन	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श.	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६५६६	कमलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श.	४	
१८	६७०४	कामदैकादशीकथा	भविष्योत्तरपुराणोक्त	,,	४	कामदा एकादशी पुरुषोत्तममास की एकादशी होती है
१९	५४४४	कार्तिककृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४५	८	'रमा' एकादशी लि. क. धनश्याम
२०	४०९७	कार्तिकमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६७७	४७	लि. क. गोविन्दव्यास गुर्जरगौड़ अजयपुर
२१	४१०७	,,	पद्मपुराणोक्त	१८५९	४५	लि. क. नन्दूभाटू विद्यार्थी
२२	४२०९	,,	,,	१८५१	५१	लि. क. गंगाविष्णु कान्यकुब्ज, बोंली नगर
२३	४५५४	,, (एकादशी कथा संग्रह)	मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत	१८६१	७१	२०वां पत्र अप्राप्त लि. क. रत्नेश्वरव्यास, जयपुर
२४	६५४८	,,	पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त	१९वीं श.	३८	
२५	६५९७	,,	,,	,,	५१	
२६	६६०७	,,	ब्रह्मनारदीयपुराणोक्त	१८७९	५७	
२७	६६०८	,,	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श.	२२	
२८	६५७८	कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य	,,	१९वीं श.	६	अक्षयनवमीमाहात्म्य
२९	४४४१	कूर्मपुराण	वेदव्यास	१८४८	२००	१९५वां पत्र अप्राप्त लि. क. मोतीराम
३०	४४४३	केदारखण्ड	स्कन्दपुराणोक्त	१७९९	९७	शैवप्रकरण
३१	४६०१	गङ्गामाहात्म्य	,,	१९वीं श.	७	जागेश्वरस्यपुस्तकम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४६०	गणेशचतुर्थीकथा	स्कन्द०	१९०४	५	लि क. नन्दरामव्यास
३२	४२५४	गयामाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१७४१	२८	लि. क. नृसिंह भट्ट तर्ककेक्षरी
३३	४५५५	गरुड़पुराण	वेदव्यास	१९वीं श.	८१	
३४	६६०६	गरुड़पुराणसारोद्धार	,,	,,	९६	प्रेतमञ्जरी
३५	६४१०	,,	,,	१९१९	३६	,
३६	६६१०	गोपाष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१९वीं श.	१	
३७	६६८५	गोत्रिरात्रव्रतकथा	स्कन्द०	१८९९	४	
३८	५५०	चातुर्मासमाहात्म्य (अपूर्ण)	,,	१९वीं श.	३३	
३९	६६१८	चान्द्रायणव्रतकथा	भविष्योत्तर०	,,	२	
४०	६७०८	ज्येष्ठकृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्ड०	,,	२	
४१	४४८६	जन्माष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१८५७	७	लि. क. व्यास रतनेश्वर, श्रीभिनमालमध्ये
४२	५४४२	जन्माष्टमीजयन्तीनिर्णय	,,	१९०७	६	लि. क. रामनारायण, हरिवल्लभजीभट्टस्य
४३	६५८०	जन्माष्टमीव्रतकथा	,,	१८६४	४	लि. क. देवकृष्णभट्ट
४४	५९९१	तत्त्वदीपभागवतम् (पूर्वखण्ड)	वल्लभ (विष्णुस्वामिमतवर्ती)	१७६४	११०	नवानगरे लिखितम्
४५	५९९२	,, (उत्तरखण्ड)	,,	,,	८९	,,
४६	७११९	तुलसीमाहात्म्य	पद्म०स्कन्द०विष्णुधर्मोत्तर०	१९वीं श.	३१	
४७	६७२२	तुलसीविवाहमहिमा	विष्णुपुराणोक्त	१९वीं श.	६	
४८	६६२६	द्वादशीमाहात्म्य	गरुड़०	१७७६	५	
४९	६६१२	दशादित्यव्रतकथा	स्कन्द०	१९वीं श.	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	६४८९	दानभागवत	कुबेरानन्दवर्णि	१९वीं श.	११२	
५१	४२१८	देवप्रबोधिनीएकादशीव्रतकथा	विष्णु०	१८५३	१२	लि. क. गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज बौंलीनगर(जयपुरराज्यान्तर्गत)
५२	५२०५(१५)	धरणीशेषसंवाद	ब्रह्माण्ड०	१८वीं श.	६४–६६	
५३	६८३६	नासिकेतपुराण		१८६५	९२	गुटका–जिसमें रामगीता, राम-स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता भी हैं
५४	५९५२	नित्यविहारलीला	लक्ष्मीधरपुत्र रामशिष्य ?	१६४५	१०१	माथुरराजद्वारकादास कारायित टिप्पणी
५५	६७०९	निर्जलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्त्त०	१८६१	४	
५६	४४८७	नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श.	७	
५७	६६०१	,,	,,	१८७७	४	लि. क. रामलाल
५८	६६७१	प्रदोषव्रतकथा	स्कन्द०	२०वीं श.	११	
५९	४५४८	पञ्चपर्वमाहात्म्य	गरुड़०वराह०नारदीय०	१९२३	११	लि.क. घनश्याम ब्राह्मण पाराशर
६०	५५४२	पद्मपुराण (पातालखण्ड)		१८३८	४३	१४वाँ पत्र अप्राप्त
६१	६५९०	पुरुषोत्तममासमाहात्म्य	स्कन्द०	१८९६	४१	लि. क. रामनारायण मिश्र
६२	६८०७	पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण)	शङ्कराचार्य	१९वीं श.	४३	विष्णुसहस्रनाम
६३	७७७७	पुष्करणोपाख्यान	स्कन्द०	,,	६	
६४	४६२२	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)	टी. विश्वेश्वर	१७६५	८३	'गौड़ज्ञातीयभट्टरामनन्दनात्मजेन वीरनन्दनेन लिखितं व्यास क्षेत्रे' ३६वाँ ६२वाँ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५	६५८६	पुष्करमाहात्म्य	पद्म०	१७९९	६६	
६६	७०१७	,,	,,	१८३७	५६	लि. क. मोतीराम मथ, रूपनगरमध्ये लालदासजीपठनार्थं सलेमाबाद
६७	७०३३	,,	,,	१८वीं श.	२१	आद्यपत्र अप्राप्त
६८	७६०६	,,	,,	१७६५	६०	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६९	४१०१	ब्रह्मवैवर्त्तपुराण (गणपतिखण्ड)		१८६१	९६	
७०	६९६०	,,		१९वीं श.	१०१	
७१	६९६३	,,		,,	६६	
७२	६९५९	,, (प्रकृतिखण्ड)		,,	१७४	
७३	६९६१	,, (ब्रह्मखण्ड)		,,	७७	
७४	६५१२	बृहन्नारदीयपुराण		१७९८	१३३	लि. क. जतीलालजी सवाई जयपुरे महाराजाधिराज सवाई जयसिंहराज्ये
७५	५२१२	भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त) सचित्र		१८वीं श.		चित्र सं० ६
७६	५४९५	भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध)		,,	९७	
७७	४२३०	,, (द्वादशस्कन्ध)		१८७१	११३	*लि. क. घनश्यामपल्लीवाल
७८	४३१७(१)	,, सजिल्द सटीक (प्रथम-द्वितीयस्कन्ध)	श्रीधर स्वामी	१९वीं श.	५२	लिपि सुन्दर,आद्यन्त पत्रोंपर चित्र
७९	४३१७(२)	,, (तृतीयस्कन्ध)		,,	१४०	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	४३१७(३)	भागवत (चतुर्थस्कन्ध)		१९वीं श.	१–१२१	लिपि सुन्दर. आद्यन्तपत्रों पर चित्र
		(पञ्चम ,,)			१–९४	,,
८१	४३१७(४)	,, (षष्ठस्कन्ध)	टी. श्रीधरस्वामी	,,	१–७८	आद्यन्त पत्र सचित्र; लिपि
		(सप्तमस्कन्ध)			१–७८	सुन्दर एक जिल्दमें
८२	४३१७(५)	,, (अष्टमस्कन्ध)	,,	,,	१–७२	,,
		(नवमस्कन्ध)	,,		१–६२	
८३	४३१७(६)	,, (दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध)		,,	१७७	,,
८४	४३१७(७)	,, (दशम उत्तरार्द्ध)	,,	,,	१६१	,,
८५	७०२१	,, सटीक	टी०श्रीधरस्वामी	१७९८	११	लि. स्था. मालपुरा
८६	७०३२	,, ,,	,,	१८वीं श.	९५	प्रथम स्कन्ध (अपूर्ण)
८७	७०२७	,, (दशम पूर्वार्द्ध)		१८२९	८८	प्रति कीटभुग्न
८८	७०२८	,, (दशम उत्तरार्द्ध)		,	८६	
८९	६४७७	,, क्रमसन्दर्भटीका (प्रथमस्कन्ध)		१८वीं श.	२४	"तौ सन्तोषयता सन्तौ श्रीलरूप-सनातनौ । दाक्षिणात्येन भट्टेन पुनरेतद्विविच्यते ,,
९०	६४७८	,, क्रमसन्दर्भटीका (द्वितीयस्कन्ध)		,,	१७	,,
९१	६४८९	,, (चतुर्थस्कन्ध)		,,	२१	,,
९२	६४८०	,, (सप्तम ,,)		,,	६	,,
९३	६४८१	,, (अष्टम ,,)		.,	६	,,
९४	६४८२	,, (नवम ,,)		,,	९	,,
९५	६४८३	,, (दशम ,,)		१७९८	१०९	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९६	६४८४	भागवत (एकादशस्कन्ध)		१८वीं श.	३६	
९७	६४८५	भागवतक्रमसन्दर्भटीका द्वादशस्कन्ध		,,	८	*
९८	७८२२	भागवतके सचित्र पत्र		१९वीं श.	१४०–१४६	चित्र सं० १२
९९	६९२५	भागवत सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श.		
१००	६९६४	,, ,,	,,	१९वीं श.	५९९	
१०१	६७०६	,, मूल		,,	१५३	पञ्चमस्कंधके चतुर्थ अध्याय तक
१०२	६४७४	,, (प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका	टी० वल्लभाचार्य	१७९७	११६	
१०३	६४७५	,, द्वितीयस्कन्ध ,,	,,	१७९८	९०	
१०४	६४७२	,, सटीक द्वितीयस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श.	५७	४८वां पत्र अप्राप्त
१०५	६५४९	,, तृतीयस्कन्ध	,,	१९वीं श.	११८	
१०६	६५५०	,, चतुर्थस्कन्ध	,,	१८०६	९७	लि. क. भूधरमहाजन भानपुर-मध्ये
१०७	६५५१	,, पञ्चमस्कन्ध	,,	१७८९	८३	लि. क. खुश्यालचन्द बधवाड़ा-ग्रामे राजश्री बेदला डूंगरसिंहजी राज्ये
१०८	६५५२	,, षष्ठस्कन्ध	,,	वीं श.	६२	पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त
१०९	६५५३	,, सप्तमस्कन्ध	,,	१८१०	६७	२१वां पत्र अप्राप्त लि. क. गोवर्द्धनदास जती सवाई जयपुर मध्ये
११०	६५५४	,, अष्टम स्कन्ध	,,	१९वीं श.	५८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	६५५५	भागवत नवमस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१९वीं श.	५१	
११२	७८३४	,, दशमस्कन्धके सचित्रपत्र		,,	६	६ पत्रोंमें ११ चित्र
११३	५१७८	भागवत दशमस्कन्ध		१६६८	४०	जीर्ण
११४	६४५०	,, ,,		१६८५	२६२	लि. क. देवजी रूपपुरनिवासी
११५	५१७९	,, ,,		१९वीं श.	३	३१वां अध्यायमात्र लि. क. दुर्लभराय जगन्नाथभट्ट सुत
११६	५१८४	,, ,,		१८वीं श.	३६२	अन्तमें श्रीकृष्णसहस्रनाम और अष्टकादि भी हैं
११७	६४७३	भागवत दशमस्कन्ध रासपञ्चाध्यायी वैष्णवनन्दिनीटीका	टिप्पणिकार विद्याभूषण	१९वीं श.	५०	
११८	६४९०	,, दशमस्क धप्रकरणद्वयविवृति-प्रकाश	विठ्ठलदीक्षित	,,	३९	
११९	६४७६	,, दशमस्कन्ध सुबोधिनीटीका	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	१८२	
१२०	६८१५	,, भागवत दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१९वीं श.	१११	
१२१	६८१६	,, उत्तरार्द्ध	,,	१९४५	६८	लि. क. लक्ष्मीनारायण
१२२	६४४९	,, दशमस्कन्ध (उत्तरार्द्ध) सटीक	टी० परमानन्द	१७५८	१३०	बुन्देलखण्डे कोंचसमीपे
१२३	६५५६	,, ,, (उत्तरार्द्ध)		१९वीं श.	९८	
१२४	६५५७	,, एकादशस्कन्धसटीक	टी० श्रीधरस्वामी	,,	१५५	
१२५	६५५८	,, द्वादश ,, ,,	,,	१८वीं श.	४८	
१२६	६४९५	,, दशमस्कन्धे जन्माद्यस्यार्थ-प्रकाश		१९वीं श.	११	"जन्माद्यस्य"—इस एकही श्लोकके अनेक प्रकारसे अर्थ किए गये हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७	६६१७	भागवतपुराणविषयशंकानिरास	पुरुषोत्तम(वल्लभाचार्यचरणानुचर)	१९वीं श.	४	
१२८	४१०२	भागवतमाहात्म्य	पद्मपुराणोक्त	,,	१८	लि. क. व्रजलालगौड़, ब्राह्मण गुर्जरगौड़, ग्राम खंडारी
१२९	५५४१	भागवत माहात्म्य	पद्म०	१८वीं श.	६	
१३०	५५५७	,,	,,	१९वीं श.	२८	पत्र १० से १३ तक अप्राप्त
१३१	६५९८	,,	,,	१८५५	१५	लि. क. कंवर कालूराम जयपुर मध्ये
१३२	७५८१	,,	,,	१८४५	२५	३रा पत्र अप्राप्त लि. क. लिषमीराम जोसी नेवटा नगरमध्ये
१३३	६४८८	भागवतसन्दर्भे तत्वसन्दर्भः (प्रथम)	जीवक	१८२५	१३	*
१३४	६४८७	,, ,, भगवत्सन्दर्भः (द्वितीयः)	,,	१९वीं श.	७८	
१३५	६४८६	,, ,, कृष्णसन्दर्भः (तृतीयः)	,,	,,	८०	
१३६	५२०५(११)	भागवतानुक्रमणिका		१८वीं श.	४२–४७	
१३७	५७३७	भौमव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१८९९	३	लि. क. व्रजवासी ज्योतिर्विद सारस्वतकुलोत्पन्न रीमा (रीवां)
१३८	६७३९	मत्स्यदेशमाहात्म्य	,,	१९वीं श.	१७	
१३९	७५९३	मथुरामाहात्म्य	आदिवराहपुराण०	१८६९	५०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४०	७३०७	,, (अपूर्ण)	,,	१९वीं श.	४९	
१४१	६६११	महालक्ष्मीव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१९१९	९	
१४२	४५४९	माघमाहात्म्य	पद्म०	१८६२	६४	वसिष्ठ दिलीपसंवाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३	६५६३	माघमाहात्म्य	पद्म०	१९वीं श.	३९	
१४४	६५६९	,,	,,	१८८६	४१	लि. क. रामसुख रामनारायण सवाईजयपुरमध्ये
१४५	५५७५	मार्गशीर्षमाहात्म्य	स्कन्द०	१८३१	३८	पत्र ३५, ३६ अप्राप्त लि. क. लालबिहारी
१४६	६५६७	,,	,,	१९वीं श.	५४	
१४७	६७११	यमद्वितीयाकथा		१८८७	१	लि. क. गिरिधारी
१४८	५८७२	रामनवमीव्रतकथा	लिङ्गपुराणोक्त	१८८६	६	लि. क. शंकरप्रधान खण्डेला
१४९	६६६७	,,	अगस्त्यसंहितोक्त	१८९२	४	लि. क. रामनारायण
१५०	६५६५	रामायणमाहात्म्य	स्कंद०	१८८६	८	लि. क. रामसुखरामनारायण
१५१	६७७८	रासक्रीड़ा	भागवतोक्त	१९१६	२	
१५२	५१७३	रासपञ्चाध्यायी	,,	१८वीं श.	३४	
१५३	४६३७	लिङ्गपुराण	वेदव्यास	१८१४	३७	लि. क. कृपाराम
१५४	६४६६	,,	,,	१९वीं श.	१८९	
१५५	६७४०	लोहार्गलमाहात्म्य	वराहपुराण	२०वीं श.	३	
१५६	६६६८	वटत्रिरात्रिकथा	भविष्योत्तर०	१७९६	९	
१५७	५४६५	विष्णुपुराण (६ खण्ड)	वेदव्यास	१९वीं श.	१८१	
१५८	६५६४	वैशाखमाहात्म्य	स्कंद०	१९१५	४६	लि. क. रामनारायणमिश्र
१५९	६६४७	,,	पद्म०	१८४२	६३	लि. क. जैंजैराम सवाई जयपुर-मध्ये सवाई प्रतापसिंह राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	५४८५	शिवपुराण	वेदव्यास	१८१७	२०६	ग्राम खाचरोद में लिखित
१६१	४४८८	शिवरात्रिकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१८वीं श.	४	लि. क. संभूकचन्द
१६२	६६०९	"	स्कन्दपुराणान्तर्गत	१९वीं श.	२	लि. क. कँवर कालूराम
१६३	५४४५	शिवरात्रिव्रतकथा	लिंगपुराणोक्त	१८१६	१४	लिखित जयपुर मध्ये
१६४	६६१४	संक्रान्तिमाहात्म्य		१८९०	१	लि. क. कँवर कालूराम
१६५	६६४९	संकष्टचतुर्थीकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१९३७	४	लि. क. जोशी मोडराम पाटोद्यो बूंदी मध्ये
१६६	६७१२	संकटचतुर्थीव्रतकथा	नारदीयपुराणोक्त	१७३०	५	
१६७	५२५७	सत्यनारायणव्रतकथा	स्कंदपुराणोक्त	१९३४	१२	
१६८	४१००	सत्योपाख्यान	श्रीव्यास	१९वीं श.	६५	
१६९	५६७८	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्यरोत्तरपुराणान्तर्गत	१८९५	४	लि. क. व्रजवासी सिल्लुः काश्याम्
१७०	६४०३	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत	१९वीं श.	३	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७१	४६३८	हरिवंशपुराणरसकुल्याख्याव्याख्या	हितहरिवंशगोस्वामी	१८३५	५२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४५४५	अध्यात्मविद्योपदेशविधि(गीतागूढार्थ-दीपिका)	शंकराचार्य	१७६०	९	लि. क. मयाराम लि. स्था. मालपुरा
२	४५६४	अन्तःकरणबोधसविवृत्तिकविवृति	वल्लभ	१८वीं श.	१६	
३	४२४४	अनुस्मृति	महाभारतगत	,,	१३	
४	४६४६	अनुस्मृति	महाभारतशान्तिपर्वाक्त	१९वीं श.	९	
५	४५८८	अपरोक्षानुभूति	शंकराचार्य	१८वीं श.	७	
६	५२३२	,,	,,	,,	१०	
७	६७१०	,,	,,	२०वीं श.	९	
८	७७५७(४)	,,	,,	१८५०	१७०–१८९	
९	५३५१	अभयप्रदानसार	वरदाचार्य वेंकटनाथाचार्यशिष्य	१८६१	१५	
१०	६९४२	अर्जुनगीता		१८९६	१२	लि. क. शिवराजगिरि
११	५५४७	अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य)	गोपदास	१८३७	१०	लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुष्कर मध्ये
१२	५५४३	अष्टावक्रटीका	विश्वेश्वर	१७१४	७४	लि. क. गोकुल वैरागी शाहगंज
१३	५२१४(२)	अष्टावक्रटीका (अवधूतानुभूति)	विश्वेश्वर	१८९०	३२	लि, क. हरिदेव
१४	६५९९	अष्टावक्रटीका (वाक्यसुधाख्या)	,,	१९वीं	४४	
१५	४६०४	अष्टावक्रसूक्त	अष्टावक्र	,,	४३	
१६	४६०९	अष्टावक्रसूक्तसटीक (त्रिपाठ)	टीका—विश्वेश्वर	१८०५	२७	लि. क. रामेश्वर शिवात्मज
१७	७७५७(७)	आत्मनिरूपण	शंकराचार्य	१८५०	२२०–२२२	
१८	४५९१	आत्मबोध	,,	१७६६	७	
१९	४६११	,,	,,	१८वीं श.	६	लि. क. दयादत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०	७७५७(६)	आत्मबोध	शंकराचार्य	१८५०	२१०–२१९	
२१	६६७६	आत्मबोधप्रकरण	,,	१९वीं श.	१७	
२२	६६२७	आत्मबोधव्याख्या (विद्वज्जनानन्ददा-यिनी, बालबोधिनी	शंकराचार्यनारायणतीर्थ	१७७४	२३	लि. क. रामकृष्ण
२३	४१४१	आत्मबोधसटीक	शंकराचार्य	१८वीं श.	१७	
२४	४६१२	आत्मबोधसटीक (प्रकाशिकाख्या)	टीका गोविन्दाचार्य	,,	१६	
२५	५६१२	आत्मबोधसटीक	शंकराचार्य	१९वीं श.	१२	
२६	६३५४	आत्मानात्मविवेक		१८वीं श.	९	
२७	६१५४(२)	उज्ज्वलनीलमणिविवृतिः	रूपसनातन	१८१४	१७६	
२८	४५७८	उत्तरगीता	अश्वमेधपर्वगत	१९वीं श.	१४	
२९	५६१६	उपदेशपञ्चकव्याख्या	शंकराचार्य, टीका–भूधर	,,	४	
३०	५५०३	कर्णानन्दसटीक (अर्थकौमुदीनाम्नी)	कृष्णदास, टीका–प्रबोधानन्द सरस्वती	१८०६	९३	रचनाकाल सं. १६३५
३१	४५७७	कुम्भकपद्धति	रघुराम शिवरामसुत	१९वीं श.	२१	
३२	७०६९	कृष्णसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२४३	लि. क. व्यास हरिलाल जूनिया-वासी; पत्र २१, २२ अप्राप्त
३३	५९८५	,,	,,	१८वीं श.	१५६	
३४	४५९७	गर्भगीता	ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार	,,	९	
३५	७६१०	गीतासारोपनिसत्		१९वीं श.	४	लि. क. केशवदास
३६	६७८२	गोरक्षशतक		,,	१२	
३७	५४०४	गोविन्दगुणानुवादसटीक	कृष्णदास	१९४९	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	४५८७	चन्द्रोदयविलास	चन्द्रसिंह	१८वीं श.	६४	रचनाकाल १६६५
३९	६२०१	चित्रदीपव्याख्यान	रामकृष्ण	,,	३०	प्रति जीर्ण व कीटविद्ध है
४०	६०६६	चित्रदीपसटीक	,,	१९वीं श.	३०	
४१	६५६०	चैतन्यचरितामृत		१९०१	४१	
४२	५२०५(८)	जलभेदः	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४०–४१	
४३	६५०६	जलभेदटीका	कल्याणराम	१७२८	८	
४४	४३८१	तत्त्वभागवत		१८वीं श.	१२७	अपूर्ण
४५	५५२६	तत्त्वमुक्तावली	पूर्णानन्द श्रीगौड़	१८४६	६	
४६	५५९९	तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम्	गणेशदीक्षित	१९वीं श.	२३	
४७	७१६१	तत्त्वसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८वीं श.	१८	
४८	७७५७(५)	तत्त्वसार	ब्रह्मचैतन्यमुनि	१८५०	१८९–२०९	
४९	५३८५(१)	,,	,,	१९वीं श.		
५०	६०५९	तत्त्वत्रयचूलिका	वरदार्यः	१८४७	१३	
५१	४५४६	तत्त्वानुसंधान	महादेव सरस्वती मुनि	१७६५	१५	लि. क. मयाराम
५२	६०७०	,,	,,	१९०१	३६	
५३	६१७३	,,	,,	१८वीं श.	४६	
५४	६४९२	,,	,,	१८८६	७०	
५५	६७०५	द्वादशमहावाक्यविवरण		१८७५	३८	लि. क. हरीराम दवे, भावनगर
५६	७७५७(२)	द्वादशमहावाक्यसिद्धांत		१८५०	५६–१४०	
५७	६८०६	दशश्लोकीटीका (तत्वसारप्रकाशिनी)	नन्ददास	१८२१	८	लि. क. हरचन्द्र, जयपुर
५८	६०६१	नाटकद्वीपाख्याव्याख्या	रामकृष्ण विद्वान्	१९वीं श.	५	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९	७११७	नारदगीता		१९वीं श.	२	
६०	५२०५(१०)	निरोधलक्षण	वल्लभाचार्य		४२वां	
६१	७५७६	निरोधलक्षणटीका	,, टी० हरिराय	१७७९	२७	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
६२	५२०५(४)	प्रब धः	विट्ठलदीक्षित	१८वीं श.	३६–३७	
६३	५६५२	प्रश्नावली	जड़भरत (माधवानंदशिष्य)	१९वीं श.	८	
६४	५७२५	प्रस्थानभेद	मधुसूदनसरस्वती	,,	१८	
६५	५४७२	प्रीतिसन्दर्भ (षष्ठः)	जीवगोस्वामी	१८२१	७१	लि. क. मोतीरामजोशी, जयनगर
६६	५४९६	प्रेमपतनाख्यसन्दर्भसटीक	रसिकोत्तंस	१८वीं श.	८०	
६७	६७१६	पञ्चधाटीव्याख्या		१९वीं श.	१२	
६८	७०३१	पञ्चदशीटीका	टी० रामकृष्ण	१८९०	४१	
६९	७७८७	पञ्चदशीसटीक	,,	१८वीं श.	१२५	
७०	५२९४(१)	पञ्चीकरणप्रकरण (अवधूतानुभूतिः)	टी० विश्वेश्वर	१८९०	१५	लि. क. हरिदेव
७१	५७८२	पञ्चीकरणसटीक	टी० आनन्दगिरि	१९१६	१६	
७२	६१५५	पद्यावली	योगेश्वर	१८८८	४२	
७३	५३८५(२)	परमात्मप्रकाश		१६वीं श.		
७४	७०६८	परमात्मसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२७	लि. क. हरिलाल व्यास
७५	६१३४	परिभाषावृत्तिः	विद्याविलास	१७२४	१३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
७६	४२१४	पाण्डवगीता		१९वीं श.	१७	
७७	४२४०	,,		१८वीं श.	१७	
७८	४५५६	,,		१९वीं श.	८	लि. क. जयकृष्ण
७९	५११२	,,		,,	११	

क्रमांङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	७७०९	पाण्डवगीता		१८०४	९	लि क. परशुराम व्यास
८१	७८१६(४)	,,		१८३३		लि. क. बाबा कृपाराम
८२	५२०५(५)	पुष्टिप्रवाहमर्यादा	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३७–३८	
८३	५४७०	ब्रह्मसंहितासटीक (पञ्चमाध्याय)	रूपगोस्वामी	१८२८	१६	लि. क. हरिलाल व्यास
८४	४५९८	ब्रह्मज्ञान	महादेव	१९वीं श.	१३	
८५	५२०५(३)	भक्तिप्रकरण	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३३–३६	
८६	४२६६	भक्तिरत्नावली	परमहंस विष्णुपुरी	,,	६४	
८७	४२८९	,, सटीक	,,	१७५४	१२३	रचना १५५१ लि० स्था० जोधपुर
८८	६१५०	,,	,,	१८२८	३०	
८९	४२६८	भगवद्गीता		१८वीं श.	१२६	आद्यन्त पत्र सचित्र
९०	४२९५	,, सचित्र		,,	६७	चित्र संख्या ९
९१	५०८९	,,		१८०५	६९	
९२	५११०	,		१७११	८३	काशीमें लिखित
९३	६२६४	,, (सभाष्य)	रामानुजाचार्य	१८वीं श.	१०२	अंतिम अध्याय के ३९वें श्लोक तक है
९४	४५८५	,, सटीक		१५३८	८३	पत्र १, २८, ३३, ३४ अप्राप्त
९५	४५४३	,, गूढार्थदीपिकासहित	विश्वेश्वर सरस्वती	१७६०	२०५	लि. क. वैष्णव मयाराम
९६	५४८०	,, सुबोधिनीटीका	श्रीधरस्वामी	१९२७	१०६	लि. स्था. श्री द्रव्यपुर लि. क. गौरीशंकर पत्र ३, ४, ६, ८, ४६ अप्राप्त
९७	६३५६	,, ,,	,,	१७६६	१२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९८	७०६६	भगवद्गीता (पञ्चोली)		१९वीं श.	१४१	
९९	४३१०	भगवद्गीता (भाषापद्यानुवाद सहित)	हरिवल्लभ	१८२०	१८८	लि. क. पिरागदास स्था० नटवाड़ा
१००	६०७७	" सुबोधिनी व्याख्या	श्रीधर	१८४९	११३	लि. क. काशीनाथ भरतपुर
१०१	६०६५	भगवद्भक्तिरत्नावलीसटीकत्रिपाठ	विष्णुपुरी	१८३४	६७	पत्र ६६वां अप्राप्त लि. क. नरोत्तमदास वैष्णव
१०२	६३२४	"	"	१८७६	२९	लि. क. मनुलाल
१०३	६६१६	"	"	१८८०	३५	लि. क. जमुनादास, नाथद्वारा
१०४	७५२०	"	"	१९वीं श.	७४	लि. क. वैष्णव गंगादास, पलसरा ग्रामे
१०५	६५९२	" सटीक	"	१९वीं श.	७४	
१०६	७०१९	"	"	१८वीं श.	६७	प्रथमपत्रसचित्र
१०७	६१५४(१)	भक्तिरसामृतसिन्धुटीका (दुर्गम संगमनी)	रूप सनातन	१८१५	१४७	
१०८	६२३१	भक्तिरसामृतसिन्धुसटीकपूर्वविभाग	"	१९२४	३३	
१०९	६४९४	भक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु		१९वीं श.	८	
११०	६७९७	भक्तिरहस्य	मल्लिनाथ	१७७९	३४	लि. क. सहजरामवैष्णव साहिपुरा
१११	७०७०	भक्तिसन्दर्भ	जीवगोस्वाम	१८२०	६३	लि. क. व्यास हरिलाल
११२	७०६७	भगवत्सन्दर्भ	"	"	५०	" "
११३	५२८१	भगवद्गीता		१८११	५६	लि. क. गोविन्द लश्करी
११४	६६६६	"		१७७९	७२	लि. क. शिवनाथ

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५	६७५७	भगवद्गीता		१८८९	५४	लि. स्था. डेरावसी
११६	७६०२	,,		१८५७	३५	लि. क. गोडजी शोभजी
११७	७८०५	,,		१८वीं श.	११७	
११८	७७८५	,, (पंचोली टीका)		१९४१	४४	एकादश अध्यायपर्यन्त
११९	५७०७	भगवद्गीतासभाष्य	शंकराचार्य	१८वीं श.	११७	
१२०	४५५१	,,	,,	,,	११	अपूर्ण
१२१	४३७२	भगवद्गीतासटीक	श्रीधर	१८७५	११३	
१२२	६६४०	,,	,,	१८७३	१०९	लि. क. रामचन्द्र
१२३	६९५८	,, (अर्थसंग्रहटीक)			११२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६९६२	,, सुबोधिनीटीका	श्रीधर	१८वीं श.	११२	
१२५	६५०५	भगवद्भक्तिविलासटीका	गोपालभट्ट	१८६७	६७१	लि. क. गोविन्दराम, जयनगर
१२६	६५२०	महावाक्यार्थविवरण		१९वीं श.	८१	अन्तिम पत्र खण्डित
१२७	६०६६	मीमांसा परिभाषा	कृष्णयाजी	१९१७	१७	लि. श्यामदास, मथुरा
१२८	६२८०(१)	मूलसूत्र	ब्रह्मसंहितान्तर्गत	१९०९	१–६	लि. पुजारी हरदेवदास
१२९	६२६५	यतीन्द्रमतदीपिका	श्रीनिवासदास	१८वीं श.	२१	
	५२९३	,,	,,	१८२३	५५	
१३१	५६५१	याज्ञवल्क्योपनिष		१९वीं श.	२८	
१३२	५५५१	युगलचरितामृतकथा	वंशीधर	१९वीं श.	५८	पत्र २५, ४५, ४९वां अप्राप्त
१३३	७३३६	योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रश्वेतभिक्षु	१७१९	२३	
१३४	७७५७(३)	योगवासिष्ठसार		१८५०	१४०–१७०	
१३५	४५५२	,, (सटीक त्रिपाठ)	महीधर, टी० विश्वेश्वर	१७८८	२७	लि. क. नारायणदास वैष्णव

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४४३०	योगशास्त्र	श्री पतञ्जलि	१८११	१२०	
१३७	७३४६	योगशास्त्रप्रकाश	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	१०	
१३८	५६०१	योगशास्त्र (वृत्ति)	,,	१६वीं श.	२८	
१३९	७३२८	योगशास्त्र (चतुर्थ प्रकाशपर्यन्त)	,,	१७वीं श.	२९	
१४०	४३५३	योगशास्त्रद्वादशप्रकाश	,,	१५३९	२४	
१४१	४३८६	,,	,,	१५६७	२०	
१४२	७४०६	योगशास्त्रप्रकाश (चतुर्थ)	,,	१६७७	१४	लि. स्था. इलदुर्ग
१४३	५५९५	योगसूत्र (अभिनवभाष्य)	भवदेवमहोपाध्याय	१९१६	३६	
१४४	५५९८	योगसूत्रभाष्य	पतञ्जलि	,,	४३	
१४५	५६२०	योगसूत्रभाष्यवृत्ति	वाचस्पति	१९२३	०	लि. क. साधु श्रीराम, जयनगर
१४६	५५९६	योगसूत्रवृत्ति	धारेश्वर	१९१६	३५	
१४७	४४२९	योगाख्यान (योगतत्व)	याज्ञवल्क्य	१९वीं श.	४८	
१४८	४२५२	रामगीता		१८वीं श.	१५	
१४९	६६६५	,,		१८३६	६	लि. पुरोधा देवकृष्ण
१५०	६२२४	रामगीताविवृति	महीधर	१९००	१७	लि. रामचरण
१५१	६५०३	,,	,,	१८१८	१७	लि. शुभराम
१५२	७७५७(१२)	वज्रसूची	शंकराचार्य	१८५०	२३३–२४४	लि. भट्ट भास्कर काश्मीरनिवासी
१५३	६२८०(३)	,,		१९०९	१९–२०	लि. पुजारी हरदेवदास
१५४	५३००	वज्रसूचीसंदर्शिनी	श्रीनिवासदास	१८५१	३	लि. घासीराम
१५५	५७३३	वाक्यसुधाप्रकरण		१९वीं श.	२७	
१५६	४५८०	,, सटीक	शंकराचार्य	१८३९	१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	५३२३	वाक्यार्थसंग्रह (प्रमाणसार)	शठारि ?	१९वीं श.	५७	
१५८	५३६३	वार्तामाला			३१	
१५९	५२१४	विद्वच्चित्तप्रसादिनीषट्पदीटीका	कविराज भिक्षु	१८वीं श.	१७	
१६०	५४०५	विद्वन्मण्डन	श्रीविट्ठल	१९०८	६४	लि. माखनलाल
१६१	६०७९	,,	,,	१९००	४९	लि. शालिग्राम
१६२	४१०९	विद्वन्मोदतरंगिणी	श्रीचिरंजीव भट्टाचार्य	१८४६	३४	लि. जोशी जीवणराम
१६३	५५९७	,,	,,	१९वीं श.	४०	
१६४	५९५३	विरोधिपरिहार	लक्ष्मणाचार्य	१८४३	३२	
१६५	५८८९	विवेकत्रयरत्न	श्रीरामानुजदास	१८वीं श.	२२	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१६६	५६१५	विज्ञाननौका	शंकराचार्य	१९वीं श.	६	
१६७	५५४५	वेदान्ततत्त्वबोध	अनन्तराम	१९२१	३२	लि. ललिताप्रसाद पारीक
१६८	७५८०	वेदान्ततत्त्वसार	रामानुजाचार्य	१९वीं श.	२५	
१६९	७७०७	वेदान्तप्रश्नोत्तररत्नमाला	शंकराचार्य	,,	४	
१७०	४६३१	वेदान्तपरिभाषा	धर्मराजाध्वरीन्द्र	,,	४७	
१७१	६४९३	वेदान्तरत्नावली	परमानन्ददेव	१८८८	२५	लि. रामनारायण
१७२	७७५७(११)	वेदान्तषट्पदी	शंकराचार्य	१८५०	२३२–२३३	
१७३	४१०३	वेदान्तसार	सदानन्द	१९वीं श.	१४	
१७४	४११९	,,	,,	१८वीं श.	१७	
१७५	४५७५	,,	कृष्णानन्द	१९वीं श.	११	पत्र २, ३ अप्राप्त
१७६	४५९९	,,	सद.नन्द	,,	१६	
१७७	४६२३	,,	,,	१८४१	११	लि. दुर्गादत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	५७०१	वेदान्तसार	सदानन्द	१९वीं श.	१३	लि. ठक्कुर नरहरवल्लाल
१७९	६२५१	,,	,,	१८३६	२३	लि. रूपराममिश्र वल्लभगढ़
१८०	६२८३	,,	,,	१८वीं श.	१३	
१८१	६५१८	,,	,,	१७९७	२४	लि. पण्डा शिवदत्त
१८२	७६१७	,,	,,	१९वीं श.	१४	
१८३	४६२१	,,	शंकराचार्य	१८वीं श.	१४	
१८४	४६४०	,,	,,	१९वीं श.	२५	
१८५	४२७८	,, (सुबोधिनीटीकायुक्त)	नरसिंहसरस्वती	१७२६		लि. श्यामदास स्थान उरपत्तनग्राम
१८६	६१७२	वेदान्तसारटीका (सुबोधिनी)	,,	१७४०	५१	
१८७	६५७९	वेदान्तसारटीका	,,	१८८६	२९	लि. रामसुख रामनारायण
१८८	६१५९	वेदान्तसिद्धांतसंग्रह (सटीक)	वनमाली	१८वीं श.	१२३	
१८९	४५७९	वेदान्तसूत्र		१९वीं श.	१९	
१९०	४५९३	वेदार्थसारसंग्रह	ब्रह्मानन्द	,,	४३	
१९१	६१६५	वैकुण्ठगद्य		१८९०	१६	
१९२	५७७३	वैराग्यप्रकरणम् (रामायणान्तर्गत)	वाल्मीकि	१८वीं श.	१२९	
१९३	४५५०	शतसूत्रीयभाष्य	मू०शाण्डिल्यभाष्यस्वप्नेश्वराचार्य	१८३९	३१	लि. व्यास रामरतन
१९४	७६००	शारीरकमीमांसा		१८४८	१३	
१९५	५९६४	शारीरकमीमांसाभाष्य(प्रथमअध्याय)	शंकराचार्य	१९वीं श.	१४२	
१९६	५९६५	,, (द्वितीय अध्याय)	,,	,,	१२८	
१९७	५९६६	,, (तृतीय अध्याय)	,,	,,	१३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८	५९६७	शारीरकमीमांसाभाष्य(चतु.अध्याय)	शंकराचार्य	१८७४	५३	
१९९	६२२३	,,	,,	१७३१	२१८	
२००	६२३८	,,	,,	१८५१	२३७	लि. गिरधारीरामशर्म्मा गौड़
२०१	६७८३	स्वयम्बोध	ईश्वरप्रोक्त	१९वीं श.	१०	
२०२	६५८१	स्वरूपप्रकरण	शंकराचार्य	,,	३	लि. रामनारायण
२०३	६३६७	स्वरोदय	तन्त्रोक्त	१९१३	९	लि. बलूराम, दीर्घपुर
२०४	६७३०	स्वात्मनिरूपण	नारदपांचरात्रतन्त्रोक्त	१९वीं श.	२०	
२०५	५७८६	स्वात्मनिरूपणप्रकरणार्याशतक	शंकराचार्य	,,	११	इस ग्रन्थमें १५६ आर्या छंद हैं
२०६	४६४४	स्वात्मबोध		,	२१	
२०७	५२०५(६)	सन्न्यासनिर्णयः	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३८–३९	
२०८	७५७७	सन्न्यासनिर्णयविवरण	पुरुषोत्तम	१९१३	२४	
२०९	७५८३	सन्न्यासनिर्णयविवृति	गोपेश्वर	१९वीं श.	२३	
२१०	५२०५(७)	सर्वसिद्धान्तबालबोध	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३९वां	
२११	६२९६	सर्वोत्तमविवृति	श्रीवल्लभ	१९३६	४९	
२१२	५९२९	समाधितन्त्र (बालावबोधिनीटीका)	पर्वतधर्मार्थीकुन्दकुंदाचार्यशिष्य	१७४९	७०	
२१३	४४९८	सांख्यवृत्ति	कपिलोक्त	१८वीं श.	१५	
२१४	६७९९	सामवेदरहस्योपनिषत्		१८०३		पत्र १–३ अप्राप्त
२१५	६५६१	सिद्धांतदर्पण	विद्याभूषण टी० नन्दमिश्र	१९वीं श.	२१	
२१६	४५४७	सिद्धांतबिन्दुः	मधुसूदनसरस्वती	१७६५	१२	लि. साधरामदास स्था. मारोठ
२१७	७३७०	,,	,,	१७७६	५५	
२१८	५२०५(२)	सिद्धांतमुक्तावली	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३२–३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१९	७०७१	सेवाप्रकाशशतकव्याख्या	गोस्वामी श्रीव्रजलाल	१८२४	६३	रचनाकाल १७५५, लि. क. श्वेताम्बर नानिगराम पत्र ७ से २६ तक अप्राप्त
२२०	५२०५(९)	सेवाफलम्	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४१–४२	
२२१	४५६७	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम योगीन्द्र	१९वीं श.	२२	
२२२	५८७३	,,	,,	१८९४	२६	
२२३	६०७६	,,	,,	१८९७	२७	
२२४	६७५६	,,	,,	१७६५	१७१	लि. तुलाराम
२२५	७७५७(१)	,,	,,	१८५०	१–५६	लि. काश्मीरनिवासीभास्करभट्ट
२२६	५८३३	हठरत्नावली	भट्ट श्रीनिवास	१९०४	३१	पत्र ३०वां अप्राप्त लि. व्रजवासी रीमापुरे

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६४०	अनुमानमणिदीधिति	रघुनाथ	१६०८	२१५	लि. मथुरानाथ शर्मा
२	६५१५	अनुमितिपरामर्श	रघुदेवभट्टाचार्य	१८४६	३४	
३	६१५२	आप्तपरीक्षा	विद्यानन्द	१६७८	१३३	लि. जीवेश्वर
४	४४६६	कारिकानिबन्ध	विश्वनाथ	१८वीं श.	१३	
५	५६२२	किरणावलीसूत्र	उदयनाचार्य	१७०५	५२	
६	५६५६	खण्डनखण्डकाव्य	श्रीहर्ष	१६वीं श.	३४१	अपूर्ण
७	५६८६	,,	,,	,,	२३२	
८	६६३६	जागदीशीन्यायव्याख्या		१६०६	११६	लि. मथुरानाथशर्मा
९	४३४३	तत्त्वचिन्तामणि शब्दखण्ड	श्रीगंगेश्वर	१७वीं श.	१४५	
१०	६१८१	तत्वदीपिका	अमृतचन्द	१८वीं श.	१०२	
११	४४६६	तर्कचन्द्रिका	विश्वेश्वराश्रम	१८१४	२१	लि. शम्भूराम
१२	६८७४	तर्कप्रदीप	भवदेव	१६वीं श.	६	
१३	६०२१	तर्कभाषा	केशवमिश्र	१८११	२६	पत्र १६वां अप्राप्त
१४	६०४२	तर्कभाषाटीका(भावार्थदीपिका)	गौरीकान्तभट्टाचार्य	१८वीं श.	६२	
१५	४४६५	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट	१६वीं श.	६	
१६	४५००	,,	,,	१८०५	११	लि. चैनराम, गीजगढ़
१७	५३२५	,,	,,	१८३६	३	
१८	६०३७	,,	,,	१८वीं श.	७	
१९	६३६५	,,	,,	१६००	८	पत्र ६ठा अप्राप्त
२०	८	,,	,,	१६००	२३	लि. पं. पन्नालाल, लश्कर
२१	६६६४	,,	,,	७३२	६	लि. श्रीगोविन्दभट्ट

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	७७१२	तर्कसंग्रह	अन्नंभट्ट	१८९२	६	लि. व्रजवासी सिल्लु:
२३	६१७१	तर्कसंग्रहतत्वदीपिका	मदनभट्टोपाध्याय	१८९४	२४	लि. गोस्वामी बलदेव
२४	६८६२	तर्कसंग्रहन्यायबोधिनीटीका	गोवर्द्धनसुधी	१८९१	२३	
२५	४४३६	तर्कामृत	जगदीशभट्टाचार्य	१०१५	१३	लि. रामनारायण मिश्र
२६	४३४१	न्यायरत्नप्रकरण	शशधर	१६वीं श.	३८	
२७	६९६६	न्यायसिद्धांतमञ्जरी	चूड़ामणिभट्टाचार्य	१८८४	३१	
२८	५३३५	न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतर्कप्रकाशाख्य-दीपिका	टी० शितिकंठशर्म्मा	१८वीं श.	६२	
२९	५९०४	न्यायार्थमंजूषा (न्यायब्रहद्वृत्ति)	हेमहंस	१५१५	६७	
३०	७२४५	नयचक्र	देवसेनपण्डित	१८१५	११	पथम पत्र अप्राप्त लि. साधु सुखरामदास शहर बेथममध्ये
३१	७३५७	नयचक्र (सुखबोधार्थमालापद्धति)	देवसेन	१८१३	६	लि. सुज्ञानसागर
३२	७५८९	नयचक्र	,,	१९०३	४	लि. हमीरविजय
३३	७४१४	,,	सिद्धसेन	१७८६	५	लि. ऋषिसुखदेव
३४	६५१६	निश्चयतत्वनिरुक्ति	रघुदेव तर्कालंकार	१९वीं श.	८	
३५	५९२६	प्रमाणमंजरी	सर्वदेव	१७वीं श.	७	
३६	५९२३	प्रमाणमंजरीटीका	टी० अद्वयारण्य	१६वीं श.	७	
३७	४४३१	पदार्थमाला	जयराम न्यायपंचानन	१९९६	१५९	
३८	५१७२	भाषापरिच्छेद	भट्टाचार्य सिद्धान्तपंचानन	१८२३	२८	
३९	६६५१	,,	सिद्धान्तवागीश	१९वीं श.	८	
४०	६७१८	भाषारत्न	श्रीकणाद	,,	४७	११वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१	७७१४	मुक्तावलीकारिका	पंचानन भट्टाचार्य	१८९२	६	लि. व्रजवासी सिल्लुः
४२	५९३९	रत्नाकरावतारिकापंजिका	देवसूरि	१७००	२५	लि. तीर्थचन्द्रगणि
४३	४४३८	शब्दनिरूपण पूर्वार्द्ध		१७वीं श.	१३१	
४४	७२५५	षडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रसूरि	१६१२	२०	
४५	७३६०	षड्दर्शनसमुच्चयटीका	हरिभद्रसूरि	१७वीं श.	२६	
४६	४३५०	षड्दर्शनसमुच्चयसावधूरि	हरिभद्र	१७१०	६	लि. मुनिप्रकाशपाल स्थान- सिरोही
४७	७४८६	स्याद्वादमंजरी	हेमचन्द्राचार्य	१५२१	६९	
४८	७३४८	,,	,,	१५वीं श.	५३	
४९	४४१६	सन्देहदोलावलीसटीक	जिनदत्तसूरि	१६वीं श.	२०	लि. नयनसुन्दरगणि
५०	४३४२	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	७व श.	७	
५१	५२८८	,,	,,	,,	६	
५२	५९००	सप्तपदार्थीटीका	शेषानन्तपण्डित	१७०४	२५	प्रथम पृष्ठ शोभन
५३	७१६०	सप्तपदार्थीवृत्ति	बलभद्र	१७वीं श.	९	प्रथम पत्र अप्राप्त
५४	५४४६	समासवाद	जयराम भट्टाचार्य	१९वीं श.	११	
५५	५१३३	सिद्धान्तचन्द्रोदय (तर्कसंग्रहटीका)		१८वीं श.	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
५६	४४३७	सिद्धान्तमुक्तावली	विश्वनाथ पंचाननभट्टाचार्य	१९वीं श.	१२०	
५७	६९५५	,,	,,	१८८४	७३	
५८	५६६४	,,	प्रकाशानंद	१८१०	५७	
५९	६६३८	,,	विश्वनाथ	१८६४	९५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१०२	अनिट्कारिका		२०वीं श.	३	
२	६११७	,,		१९वीं श.	३	
३	६११२	,,		,,	३	
४	५९८१	अनुबन्धफलसावचूरिपंचपाठ	हेमचन्द्र	१८वीं श.	१	
५	६६१९	अव्ययव्याख्या			५	लि.नन्दराम ब्राह्मण सवाईजयनगर
६	४३९३	अव्ययव्याख्यान		१९वीं श.	४	
७	६७००	अव्ययार्थप्रकाश	पतञ्जलि	१८४०	७	लि. गंगाविष्णु
८	५०३२	अष्टाध्यायी व्याकरण	पाणिनि	१७९९	११२	लि. महता नागेश्वर औदीच्य
९	४३७३	आख्यातवादटीका	रघुदेव	१८८३	३५	लि. रामलाल
१०	४३७७	आख्यातविवेक	भट्टाचार्य शिरोमणि	१९वीं श.	७	
११	७४३१	उणादिगणसूत्रविवरण	हेमचन्द्र	१५वीं श.	४०	
१२	५२१६	उणादिवृत्ति (पंचमपादान्त)	उज्ज्वलदत्त	१७वीं श.	३२	
१३	७४७१	उणादिसूत्रसटीक		१७६२	१२	लि. रत्नसुन्दर
१४	४३९६	ऊष्मभेद	महेश्वर कवि	१८४७	१७	लि. चिमनराम तेरापंथी
१५	५३८५(४)	कातन्त्रव्याख्या (दौर्गसिंहवृत्ति)		१६वीं श.	१७७–१८६	
१६	५९५८	कातन्त्रविभ्रम		१७वीं श.	९	
१७	५८७१	कारकखण्डनमण्डन	तर्कसिंह भट्टाचार्य	१९वीं श.	९	लि. शालिग्राम
१८	६१६८	,,	,,	१७१९	४	लि. ज्ञानकल्लोल
१९	७४५६	,,	मणिकण्ठ भट्टाचार्य	१८४७	८	लि. दीपचन्द्र
२०	६१६१	कारकचक्रम्	वररुचि	१८वीं श.	१३	
२१	६०३१	कारकपरीक्षा	पशुपति राढीय	१८वीं श.	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	४२८१	कारकविलास		१९२०	५४	
२३	७४७३	कारकविवेचन		१८वीं श.	४	
२४	५४६२	कृदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका)	रामचन्द्राश्रम	१८९६	२४	लि. बलदेव
२५	४३९४	गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक	वर्द्धमान सूरि	१७वीं श.	९६	१ से ९ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल सं० ११९७
२६	६५८३	गणपाठ (पाणिनीय)		१८६६	१४	
२७	५०८६	दशबलकारिकारूपोधातुपाठः		१७५९	२	
२८	७३११	धातुतरंगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ-विवरण)	हर्षकीर्ति सूरि	१७वीं श.	८५	
२९	६१००	धातुपाठ		१८६०	२१	
३०	६२७०	धातुरूपावली		१९वीं श.	६	
३१	५४८६	प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग)	रामचन्द्र	१७वीं श.	९३	पत्र ६३,८७,८८,९०, ९१, ९२ अप्राप्त
३२	७४९२	,,	,,	१७०१	१६०	
३३	५१४५	,, सटीक (द्विरुक्तप्रक्रियान्त)	श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु	१८वीं श.	३२१	
३४	५४८९	,, सुवन्तप्रकरण	रामचन्द्र	१७वीं श.	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
३५	५४८८	,, तद्धितप्रक्रिया	रामचन्द्र	,,	११४	पत्र ४२,४६,६१,७३,८१ से ८९ तक, ९३ वां अप्राप्त
३६	५४८७	,, कृदन्तप्रक्रिया	,,	,,	८८	पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त
३७	५००९	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१९०६	४२	
३८	५२५१	,,	,,	१९२०	४५	लि. श्री नृसिंह गुसांई

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९	६५७०	प्रबोधचन्द्रिका	वैंजलभूपति	१९वीं श.	१६	
४०	५१५३	प्रौढमनोरमा (पूर्वार्द्धवृत्ति	भट्टोजी दीक्षित	,,	४४६	
४१	५१५४	,, (तिङ्न्तकाण्ड)	,,	,,	१५३	
४२	५१४७	,,	,,	,,	१४४	अपूर्ण
४३	४४७१	परिभाषासूत्र (सिद्धान्तकौमुद्याः)		,,	२	
४४	६६६४	परिभाषासूत्राणि		१९१९	८	लि. गोपीनाथ
४५	५१५५	परिभाषेन्दुशेखर	नागेश भट्ट	१८००	१०३	
४६	५९२४	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठः	पाणिनि	१७वीं श.	२१	
४७	५५७९	पाणिनीयशिक्षा	,,	१८वीं श.	२७	अपूर्ण
४८	६१६९	भाष्यप्रदीपव्याख्यान (प्रथमखण्ड)	नागोजी भट्ट	१८५५	१८९	
४९	६१७०	,, (द्वितीयखण्ड)	,,	,,	११२	
५०	६०५१	भीमसेनधातुपाठः	भीमसेन	१९३०	६	
५१	५९६९	भूधातुवृत्ति	क्षमा कल्याण	१८२९	३४	राजनगरे लिखितम्
५२	५१५०	मध्यकौमुदी (पूर्वभाग)	वरदराज	१८वीं श.	६८	
५३	५१५१	,, (उत्तरभाग)	,,	१८१२	९३	
५४	६४५९	,, (विलासनाम्नीटीकासहित) अव्ययपर्यन्त	,, टी. जयकृष्ण	१९वीं श.	११३	
५५	६४६०	,, (आख्यातप्रक्रिया)	,,	,,	८९	
५६	६४६१	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	,,	१८३४	६८	पत्र ६६,६७वां अप्राप्त लि. जती चैनसागर, जैनगर
५७	५१४६	महाभाष्य (तृतीयचतुर्थाध्यायौ	पतञ्जलि	१८वीं श.	१९८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५५४८	लघुकौमुदी (उत्तरार्द्ध)	वरदराज	१६१२	५७	लि. नन्दलाल
५६	६६७०	लघुशब्देन्दुशेखर	नागेश	१८वीं श.	१६५	
६०	५१४८	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६१०	७६	
६१	६१०३	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६०४	६८	
६२	७६८६	"	"	१८७४	६०	लि. उमाशंकर
६३	६८६५	लिङ्गानुशासन	हेमचन्द्र सूरि	१८वीं श.	८	
६४	७२०५	लिंगानुशासनविवरण (स्वोपज्ञ)	हेमचन्द्राचार्य	१६४५	७४	लि. ओझा रुद्र
६५	६५२१	व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड)		१६वीं श.	२८२	
६६	५३१०	वाक्यप्रदीप		१७वीं श.	२५	अपूर्ण
६७	६३३२	विदग्धबोध	भूपतिमिश्र	१८६०	१४	वैरिनगरमध्ये लिखितम्
६८	६११५	विपरीतग्रहणप्रकरण		१६वीं श.	२	
६६	७४५७	वैयाकरणभूषणटीका	कृष्णमिश्र	१८वीं श.	१७	
७०	५१५२	वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद)	कौण्डिभट्ट	"	५०	
७१	५१७४	वैयाकरणसार (शक्तिनिर्णय)		"	७	
७२	७४५१	शब्दप्रभेदटीका	मू. महेश्वर टी. ज्ञानविमल	"	११०	
७३	६०१४	शब्दभेदप्रकाश	पुरुषोत्तमदेव	१८७६	२	
७४	५६२८	शब्दशोभा	नीलकंठ शुक्ल	१७२१	२६	रचनाकाल १६८६ सांगानेर-मध्ये लिखितं
७५	५२१७	शब्दसंचयः	केनचिज्जैनमुनिना संकलितः	१७वीं श.	१६	अपूर्ण
७६	७५१८	शब्दार्थसंग्रह		१८६१	३	लि. व्रजवासी सिल्लूः
७७	६५०८	षट्कारकव्याख्यान	भेवानन्द	१८५२	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७८	७४४४(१८)	सारस्वत (पञ्चसन्ध्यन्त)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८६	३०३–३१०	लि. ऋषिचतुर्भुज उदैपुरमेंलिखित
७९	५१४४	सारस्वतसूत्रपाठ	,,	१९वीं श.	८	
८०	६७८०	,,	,,	१९२५	८	लि. किसोरदास हमीरगढ़मध्ये
८१	७६६४	,,	,,	१८५६	११	
८२	४४७०	,, (क्रम)	,,	१९वीं श.	८	
८३	४३९५	सारस्वत प्रथमावृत्ति (तद्धित प्रक्रियान्त)	माधव	१८४२	६६	लि. मथेरण सरूपचन्द मेड़तानगर
८४	६६४१	सारस्वत (द्वितीयावृत्ति)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१७वीं श.	४६	लि. रघुनाथ
८५	६६४२	,, (तृतीयावृत्ति)	,,	१६९८	१२	
८६	७६४९	,, प्रथमसन्धिभाषाटीका	,,	१९वीं श.	४	अपूर्ण
८७	४४७२	सारस्वतप्रक्रिया	,,	१७६१	५६	लि. स्था.-सुदामापुर
८८	५२४१	,, (पंचसन्ध्यन्त)	,,	१९वीं श.	२३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८९	५०४५	,, (विसर्गसन्ध्यन्त)	,,	,,	१२	
९०	६११६	,,		,,	७३	अपूर्ण
९१	६८२३	सारस्वतप्रक्रिया (सार्थ)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८वीं श.	९	अपूर्ण
९२	६९२३	,,	,,	१७वीं	१४	
९३	६५०४	सारस्वत (आख्यातप्रक्रिया)	महीदास	१८५७	५६	लि. महात्मा रामलाल नेवटा निवासी
९४	६९६५	,, ,,	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८८	५८	
९५	६८९३	,, तद्धितप्रक्रियान्त	,,	१७४२	४४	
९६	७५६९	,, तद्धितप्रक्रिया	,,	१९वीं श.	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९७	६८८९	सारस्वत (कृत्प्रक्रिया)	अनुभूस्तिवरूपाचार्य	१७४७	४९	लि. मुनि तेजपाल सिलीवदग्रामे
९८	७५८८	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	,,	१८५७		लि. महात्मा रामलाल नेवटा
९९	७५९८	,, ,,	,,	१८१९	५५	
१००	७६३६	,, ,,	,,	१९वीं श.	२७	
१०१	६००४	सारस्वतमाधवीवृत्तिः (सिद्धान्तरत्नावली)	माधव भट्ट	१८२५	११२	लि. देवचन्द्र
१०२	४१९५	सारस्वतसटीक	अनुभूति स्वरूपाचार्य टी. पुञ्जराजनरेन्द्र	१६५४	९२	
१०३	४९५९	,, पूर्वार्द्ध	,,	१७वीं श.	५१	पत्र सं० ३६ से ४२ तक अप्राप्त
१०४	६८६८	सारस्वतटीका	पुञ्जराज	१८वीं श.	१००	
१०५	५५०२	सारस्वतचन्द्रिका	चन्द्रकीर्ति	,,	२०८	आद्य २ पत्र अप्राप्त लि.भैरवबकस व्यास केकड़ी में लिखित
१०६	६६५५	सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७वीं श.	१८४	पत्र ९३, ९४, ९५ अप्राप्त
१०७	६८८३	सारस्वतटीका	चन्द्रकीर्ति	१७४५	१७०	
१०८	६८८७	,,	,,	१८वीं श.	२४६	आद्य पत्र १ से १० तक, ११८, १३३वां अप्राप्त
१०९	७४२२	सारस्वतसटीक	,,	१७वीं श.	१८७	
११०	७२३६	,,	,,		१२८	
१११	७५११	सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि	१६४४	९५	
११२	४१९६	सारस्वत (प्रसादटीकोपेत)	वासुदेवभट्ट	१८वीं श.	७६	
११३	७४६०	सारस्वतवृत्ति (आख्यातपर्यन्त)	गोपाल	,,	११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	६०४७	सारस्वत (पूर्वार्द्ध) भाषाटीकासह	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१९वीं श.	५२	
११५	६०४८	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	,,	,,	६०	
११६	५१४९	सारस्वतधातुपाठ	हर्षकीर्तिसूरि	१८०४	४२	
११७	५९५१	,,	,,	१६९३	६२	लि. स्था.-मौलत्राण
११८	५९८७	,,	,,	१७४५	४१	लि. मंगलपुर
११९	६०२३	सारस्वतरूपमाला	पद्मसुन्दर	१८६०	९	लि. द्यानतमुनि सावतगंजमध्ये लोहमण्डवी
१२०	६७९३	सारस्वतीप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८वीं श.	५३	
१२१	६९६८	सारस्वतीप्रक्रिया (कृदन्त)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८८८	१७	लि. रामदास
१२२	६७५८	,, तृतीयावृत्ति	नरेन्द्रपुरी	१९०७	६३	लि. ,,
१२३	४२०१	सारसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१८६९	२१	
१२४	४२०२	,,	,,	१८वीं श.	४९	
१२५	७२०८	सिद्धहैमशब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	२५	
१२६	४३६८	,, (दुर्गपदव्याख्या)	,,	,,	८	
१२७	५९१७	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति (अष्टमोऽध्याय)	,,	१६४५	३४	लि. पं. सुखनिधानमुनि
१२८	५९२०	सिद्धहैमशब्दानुशासनाध्याय चतुष्कावचूरि	,,	१६वीं श.	२०	
१२९	५९१९	सिद्धहैमशब्दानुशासनषट्पादावचूरि	,,	,,	२७	
१३०	५९२१	सिद्धहैमशब्दानुशासनधातुपाठः	,,	१८वीं श.	८	
१३१	५९७९	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	,,	,,	११३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	५६१४	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	१८	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्तम्
१३३	५६१८	,, ,,	,,	१६वीं श.	१५	
१३४	५६१५	,, ,, पंचमाध्याय:	,,	,,	२९	
१३५	५६१६	,, ,, षष्ठसप्तमाध्यायौ	,,	,,	२५	
१३६	५८९८	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्र	१५वीं श.	३९	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्ता
१३७	५८९७	,, ,,	,,	,,	४७	तृतीयाध्यायद्वितीयपादान्त
१३८	७१९०	,, ,,	,,	,,	२५	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त
१३९	७१९४	सिद्धहैमशब्दानुशासनसूत्रपाठ	,,	१५३३	१०	लि. पं. धर्ममंगलगणि देलुलिग्राम
१४०	७१९८	,, ,,	,,	१६वीं श.	५	
१४१	५४६६	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	१८३४	३१२	
१४२	७०७४	,,	,,	१८वीं श.	३५	
१४३	४३७५	,,	,,	,,	१२३	द्विरुक्तप्रक्रियान्त
१४४	५५३९	,,	,,	,,	७३	तिङन्तप्रकरण
१४५	४३२१	,,	,,	,,	३०८	कृदन्तपर्यन्त
१४६	६७९०	,,	,,	१८५४	४१	कृतप्रक्रिया
१४७	६८०८	,,	,,	१९वीं श.	२०६	
१४८	४२७९	,, तत्वबोधिनीव्याख्या	ज्ञानेन्द्रसरस्वती	,,	१२९	तिङन्तकाण्ड
१४९	६४६२	,, ,,	,,	१८३०	८७	कृदन्तमात्र
१५०	७१२४	,, व्याख्या	भट्टोजीदीक्षित	१९वीं श.	३-९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४३७४	सिद्धान्तकौमुदी लघुशब्देन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागेश	१९वीं श.	३१२	समासाश्रयविधिपर्यन्त
१५२	४३७६	सिद्धान्तकौमुदी लघुपरिभाषेन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागोजी	,,	१२९	तद्धितप्रक्रिया द्विरुक्तप्रक्रिया
१५३	६८९५	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	१७८०	९५	लि. क. पं. नरसिंह
१५४	६८९९	,,	,,	१९२३	१४५	लि. क. लक्ष्मीचन्द्र बलदेव
१५५	७०९२	,,	,,	१९वीं श.	५९	
१५६	६७९८	,, चुरादिप्रकरण	चन्द्रकीर्ति	१८वीं श.	२५	
१५७	६८८८	,, (कृत्प्रक्रियान्त)	रामचन्द्राश्रम	१९२५	११२	लि. लक्ष्मीचन्द्र
१५८	५८८२	,, सटिप्पण	,,	१८७९	१४०	लि. चक्रपाणि
१५९	५८८३	,, पूर्वार्द्ध	,,	१९वीं श.	६४	
१६०	७३५०	,, सटीक	,,	१८वीं श.	३०३	अपूर्ण
१६१	६५२२	,, सुबोधनाम्नीव्याख्यापूर्वार्द्धं	सदानन्दगणि	१९वीं श.	१४२	
१६२	६२९५	,, ,,	,,	१८८३	९	
१६३	५९७१	सिद्धान्तरत्नशब्दानुशासन	जिनचन्द्र	१८८३	४३	
१६४	५३८५(५)	'सिद्धोसूत्र' (पंचसंधिपर्यन्त)		१६वीं श.		
१६५	५८९९	हैमधातुपारायण	हेमचन्द्र	१७वीं श.	१००	
१६६	५९०८	हैमलिंगानुशासनम् (दुर्गपदप्रबोध)	श्रीवल्लभगणि	,,	४४	संवत् १६६१ में जोधपुरमें श्री सूरसिंहके राज्यमें रचित

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४८३	अनेकार्थध्वनिमञ्जरी		१९वीं श.	१३	
२	४४८४	,,		१७१४	२१	
३	६३२५	,,	काश्मीरक महाक्षणक	१८२५	१३	
४	६३३३	,,	,,	१९वीं श.	१६	
५	६२२६	,,	,,	१८४७	१७	लि. क. कन्हीराम मिश्र
६	७००२	,,	अमरसिंह ?	१८७४	१७	लि. क. नाथूराम अवाड़ी पल्लीवाल
७	६५९६	,,		१८८१	९	लि. क. रामनारायण
८	४३०५	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्र	१७वीं श.	७०	
९	४३२२	,,	,,	१५३८	८१	आद्य पत्र नहीं। तृतीयसे षष्ठकाण्ड तक
१०	४३२३	,, टीका	टी. वल्लभगणि	१७वीं श.	२१४	सारोद्धार टीका
११	४४८१	,,	हेमचन्द्र	१८वीं श.	३१	तृतीय काण्डान्त
१२	६११८	,, सटीक	,,	१६२७	१४८	स्वोपज्ञ टीका
१३	७२१०	,,	,,	१६०२	२०७	श्री पत्तनमें लिखित
१४	५७३४	,, (शेषसंग्रह)	,,	१८५२	५९	लि. यशोविजय
१५	७१९५	,, (सशेषसटिप्पण)	,,	१८वीं श.	४७	
१६	७२३७	,, (बीजकसह)	,,	१७८०	७०	लि. क. रामकृष्ण ज्योतिर्वित् विष्णुदुर्ग (कृष्णगढ़ ?)
१७	७३३५	अभिधानचिन्तामणिटीका	,,	१६वीं श.	१९६	स्वोपज्ञ टीका
१८	७४५९	,, (व्युत्पत्तिरत्नाकर-नाम्नीवृत्ति)	टी. देवसागर रविचन्द्रशिष्य	१९वीं श.	४०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२४	अमरकोश (अमरचन्द्रिकाटीका)	टी. परमानन्द विष्णुपुरी दण्डिपुत्र	१७८३	८७	
२०	४४७३	अमरकोश (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह	१८२९	३८	
२१	४४७४	,, (द्वितीयकाण्डान्त)	,,	१९वीं श.	६३	
२२	४४७५	,, (तीनों काण्ड)	,,	१८६३	२६	
२३	५४४९	,, सटीक	टी. क्षीरस्वामी	१६५६	८१	मधुपुरीमध्ये केशवराज्ये कालिन्दीतटे
२४	५४९३	,,	अमरसिंह	१९वीं श.	१६७	१५२ वां पत्र अप्राप्त
२५	६१२६	,, द्वितीयकाण्डान्त	,,	१८वीं श.	३९	
२६	६०२९	,, सुधाख्याटीका	टी. भानुजी दीक्षित	१९वीं श.	२७७	
२७	६२६८	,, ,,	,,	१८९५	११४	लि. बलदेव गोस्वामी
२८	६४५६	,, अमरविवेकाख्या	टी. महेश्वर शर्मा	१९वीं श.	४८	प्रथमकाण्ड
२९	६४५७	,, ,,	,,	,,	१४२	द्वितीयकाण्ड
३०	६४५८	,, ,,	,,	,,	१०८	"पुण्यपत्तने पाठशालायां शिलाक्षरयन्त्रे मुद्रितम् १७७३ शाके" ऐसा अन्तमें लिखा है
३१	६५१७	,, तृतीयकाण्ड	अमरसिंह	१८९८	६६	लि. क. वंशीधर कवीश्वर
३२	६६१३	,,	,,	१९वीं श.	४४	
३३	६७४४	अमरकोषटीका (द्वितीयकाण्डान्त)	टी. ?	१७वीं श.	४२१	५२वां व ९५ वां पत्र अप्राप्त जीर्ण प्रति
३४	६८८१	,, सटिप्पण ,,		१७वीं श.	६९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	६८८६	अमरकोषटीका सटिप्पण (द्वितीयकाण्डान्त)	अमरसिंह	१८वीं श.	५३	पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त
३६	६८९१	,, (अव्ययवर्ग, सविवरण)	,,	१७४२(?)	३३	
३७	७००४	,,	,,	१९वीं श.	७९से१०६	अपूर्ण
३८	७००५	,, (द्वितीयकाण्ड)	,,	१८६४	११९	
३९	७१३०	,,	,,	१८९३	११२	
४०	७७६९(३)	अमरकोश	अमरसिंह	१८५६	९७	चित्र सं० २
४१	७४६१	अमरकोशोद्घाटन	क्षीरस्वामी	१६वीं श.	१५१	
४२	५९६८(१)	एकाक्षरनामकोश	क्षपणक	१९वीं श.	१-३	
४३	५४१४(१)	एकाक्षरीकोष		१९वीं श.	१-४५	
४४	५९४८	धनञ्जयनाममाला	धनंजय	१६१५	१७	
४५	५३८५(३)	,,	,,	१६वीं श.	१६६-१७७	
४६	६११४	शारदीया नाममाला	हर्षकीर्ति	१८वीं श.	२३	प्रदर्शनीय; चित्र २
४७	६७५४	,,	,,	१८९९	२८	लि क. मोतीगरु गांव लाभूड़ामध्ये
४८	७३७०	,,	,,	१८९४	१९	लि. क. ज्ञानसागर उदयपुरमध्ये
४९	५९५०	शिलोञ्छनाममाला	हेमचन्द्र	१६४५	३	लि. क. कुशलगणि वाचनाचार्य
५०	५९१०	शेषनाममाला	,,	१६वीं श.	६	
५१	५९३७	हैमलिङ्गानुशासन सविवरण	,,	१७वीं श.	८०	स्वोपज्ञ
५२	६१७९	हैमलिङ्गानुशासन	,,	१८वीं श.	९	
५३	६९८३	हैमीनाममाला	,,	१७६३	६०	लि. मोहणमुनि बाडोलीग्रामे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७१(२)	अङ्कनिघण्टु	दैवज्ञविलासगत		४५–४६	
२	६८३३(९)	अक्षतजोवानाश्लोक		१८५०	५०–५१	
३	६२८१	अक्षरचिन्तामणि		१८३०	८	
४	४४५२(७२)	अग्न्यादिचतुर्मण्डलफल		१-वीं श.	१२२ वां	
५	४४४२	अद्भुतसागर	वल्लालसेन	१७८७	१७६	* प्रथम पत्र अप्राप्त लि. क. पुरोहित सदाराम लि. स्था. शिवपुरी
६	४९३०	अद्भुतसागर प्रथमखंड	,,	१९वीं	१८४	
७	४३१४	अयनांशादिकरणविधि		१७३३	२४	
८	४७६६(१)	अर्घकाण्ड (साठसंवत्सरीफल)	दुर्गदेव	१७७५	१०(११)	
९	५०६६	अर्घकाण्डम्		१९४२	२	
१०	५३१५	अष्टमलग्नपरिसर		१९वीं श.	५	
११	७०९६	अष्टादशयोगाः		१८वीं श.	५	
१२	४८५२	अष्टोत्तरीदशाफल	गौरीजातकगत	,,	९	लि. क. जीवन
१३	४८७८	,,		१९५८	११	
१४	७०६१	आकाशपुरुषचित्र	हर्षसौभाग्य सूर्यसौभाग्यशिष्य	१८९३	१	
१५	४८६१	आयप्रश्नग्रन्थ	विघ्नराज	१९वीं श.	५	
१६	५९३८	आरम्भसिद्धिवार्तिक	उदयप्रभ वार्तिककारहेमहंसगणि वाचनाचार्य	१७वीं श.	९७	
१७	५९२७	आरम्भसिद्धि सावचरि	उदयप्रभ	१६वीं श.	१४	
१८	५२६२	इष्टशोधनप्रकार		१९वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	५८२७	उडुदायप्रदीप (लघुपाराशरी)	टी.–लक्ष्मीपति कृष्णानन्दसुत	१९२१	५५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२०	४७५३	उपदशाकोष्ठकानि	गौरीजातकान्तर्गत	१९८०	१०	लि. क. नरहरि
२१	७१०२	उपदशाफलम्		१८वीं श.	२	
२२	६२८५	कर्मप्रकाशिकावृत्ति	समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात	१८६३	१३	
२३	७६११	कर्मविपाक (भर्तृहरिराजेश्वरसंवाद)		१८४४	४	लि. क. केशवदास गढ बदनोरमध्ये
२४	७६१५	कर्मविपाक (सूर्यार्णवगत)	ब्रह्मनारदसंवाद	१८०९	५१	लि. क. शिवशङ्करव्यास हरिदुर्गमध्ये
२५	६२३५	कर्मविपाक	”	१८३२	४१	
२६	४६९०	करणकुतूहल सस्तबक		१८५०	२१	लि. क. चतुरविजयगणि पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त
२७	४८७३	करणकुतूहल	भास्कराचार्य	१७७८	११	लि. क. औदुम्बरज्ञातीय विश्वेश्वरात्मज केवल
२८	४८८४	”	”	१७०२	२२	श्रीपाटणनगरे हरजीसुत सुरजीलिखितम्
२९	५७०५	”	”	१९वीं श.	१९	
३०	६४३५	” (मूल)	”	१८४४	१०	लि. क. अजबसुंदर खेरवामध्ये
३१	६८२४	करणसारिणी (ब्रह्मतुल्य)		१८वीं श.	१९	प्रथमपत्रअप्राप्त
३२	५७११	कल्पवल्लीहोरा	विट्ठल	१८९४	५	लि. क. व्रजवासी सिल्लुः, ललिताघट्टे काश्याम्
३३	४८५९	किरणावली	सूर्यसिद्धान्तगत	१९वीं श.	३९	प्रथम ४ पत्र खंडित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	६०६४	कामधेनुपद्धति (कामधेनुजातक)	जयराम भट्ट	१८७६	७६	लि. क. जगन्नाथ व्यास पत्र ६६, ६७ अप्राप्त
३५	४६६२	कामधेनुसारिणी		१८४४	१६	लि. क. चतुरविजयगणि पोहकरणमध्ये
३६	५२४६	कालज्ञान		१६वीं श.	५	
३७	५५२६	केरलजातकरत्नावली		१६२५	२१	
३८	५७५८	केरलप्रश्न		१८वीं श.	५	
३६	६३७७	केरलप्रश्नशास्त्र	नन्दराम	१८२४	२७	
४०	७०३५	केशवीयजातकपद्धत्युदाहरण	विश्वनाथ दैवज्ञ	१८वीं श.	२६	रचनाकाल १५४०
४१	६५४०	केशवीयपद्धत्युदाहरण	"	१७६०	२५	लि. क. उदयविजय
४२	५३१४	केशवीयपद्धतिः	केशव	१८२८	२२	लि.क. स्वामीबालचन्द्र ग्वालियरमध्ये
४३	७१००	केशवीयसूत्राणि (जातकपद्धतिः)	"	१८वीं श.	४	
४४	६०६५	कोष्ठक (नरपतिजयचर्यागत)	नरपति कवि चन्द्र	१६वीं श.	२	
४५	४८८०	खेटकर्म (करणकुतूहलान्तर्गत)	भास्कराचार्य	१७६८	६	लि.क. गणि भाग्य सौभाग्य
४६	५७६६	खेटकुतूहलोदाहृति	विश्वनाथ	१६वीं श.	६६	रचनाकाल १५३४ शाके
४७	६३८४	खेटकौतूहलम्	सूरविप्र	१८वीं श.	२	रचनाकाल सं० १६७६
४८	४७३१	खेटसिद्धि	दिनकर	१६वीं श.	३०	रचनाकाल संवत् १६३५
४६	५७१२	ग्रहगोचरफल		१६वीं श.	३	
५०	४१०४	ग्रहणपद्धति	मिश्र नन्दराम	१८३२	५	* रचनाकाल संवत् १८२० स्थान-काम्यकवन

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	४७६१	ग्रहणपद्धति	मिश्रनन्दराम	१९वीं श.	६	
५२	५३२४	ग्रहभावविचार		१८वीं श.	१०	
५३	४८५४	ग्रहलाघवटीका	विश्वनाथ	,,	५०	
५४	४६७७	ग्रहलाघवटीकोदाहरण	गणेशदैवज्ञ टी. विश्वनाथ	१८४२	४१	लि.क. ऋषि भाणजी
५५	७६६३	ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९३०	१४१	
५६	५२१९	ग्रहलाघवविवरण	,,	१९२४	६२	पत्र १७वां अप्राप्त
५७	५५३८	ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तरहस्योदाहृति	विश्वनाथ दैवज्ञ	१८००	३८	लि.क. कल्हा केसोराय श्री रूपनगरमें लिखित
५८	४८९२	ग्रहसिद्धि	महादेव	१८वीं श.	३	
५९	७६७१	ग्रहान्तर्विचारतत्व	दुर्गाशङ्कर पाठक	१९वीं श.	१	
६०	५१७१	गणकमण्डन	नन्दिकेश्वर	१७९४	५२	
६१	४३९२	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श.	४	* लि.क. जीवकीर्तिगणि लि. स्था.–तलवाड़ा
६२	४७२०	गणितकौमुदी	नारायणपंडित (नृसिंह दैवज्ञसुत)	१९वीं श.	३७	
६३	४७७१(१)	गणितलीलावती आदि	भास्कराचार्य	१८०५	५४१–४५	*
६४	७१११	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श.	६	
६५	६७६४	,,	,,	१९०६	८	
६६	७६१८	गर्गमनोरमा	गर्गऋषि	१९वीं श.	१०	
६७	६६०४	गर्गमनोरमा टीका	,,	,,	१४	लि.क. गोपीनाथ
६८	७०७८	गुरुचार		१८८०	३७	,, भगवानदास विक्रमपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	५६३९	गूढार्थप्रकाश पूर्वखण्ड (सूर्यसिद्धान्तकी टीका)	रङ्गनाथ	१९०६	१८६	
७०	५७७५	गृहप्रवेशप्रकरण (अमिताक्षरा व्याख्यासहित, मुहूर्तचिन्तामण्यन्तर्गत)	रामदैवज्ञ	१९वीं श.	१२	र. का. भुज-भुजेषुचन्द्रैर्मिते शके (१५२२)
७१	६७६१	गोचरग्रहप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१९वीं श.	४	
७२	५६४९	गौतमीयजातक सटीक (त्रिपाठ)	गौतम मुनि टीका-लक्ष्मीपति	१८८४	९	
७३	५८०८	चन्द्रसूर्यग्रहणविधि		१९वीं श.	१९	
७४	४७४५	चन्द्रार्की		१८वीं श.	१४	
७५	४८७०	,,	दिनकर	१८३९	३	लि.क. औदुम्बर शिवानंद वाटेजाख्ये ग्रामे रचना
७६	४८९३	चन्द्रार्की पद्धति		१८वीं श.	३	
७७	५२६३	चन्द्रोन्मीलनदीपिका		१९२१	४३	
७८	४६७२	चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	१९००	७	
७९	६८३३(८)	,,		१८५०	४०–५०	गोस्वामी भोलानाथजीकी पोथीसूं लिखी
८०	५५४४	,, (त्रुटित)		१८३०	८	कृष्णगढ मध्ये लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
८१	४६६८	चमत्कारचिन्तामणिटीका अन्वयार्थदीपिका	नारायण, टी० धर्मेश्वरमालवीय	१९०१	२८	लि.क. सायलापुर वास्तव्य औदीच्यज्ञातीय व्यास श्रीकेशवजी यादवजी, सरधर मध्ये
८२	५७७१	चमत्कारचिन्तामणिव्याख्या	मू० नारायण	१८४०	१६	लि.क. चन्द्र मिश्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६६२९	चमत्कारचिन्तामणि सटीक	नारायण	१८२८	३०	लि.क. कंवर विजयलालराम
८४	४६६४	,, सस्तवक		१८२४	१२	,, प्रमोद विजय
८५	४६७२	,, सार्थ	राजर्षिभट्ट	१८२१	२१	प्रति कीटविद्ध है
८६	५०५१	चौरयोगप्रकरण		१९०६	११	लि.क. महात्मा जोशी पन्नालाल
८७	६७७७	चौरासीदोषनामानि		१९वीं श.	१	
८८	५६२४	ज्योतिर्विदाभरण	कालिदास	१९०३	१००	रचनाकाल सं० २४ (?)
८९	६९०४	ज्योतिर्विदाभरणटीका	,, टीका-भावमुनि	१९वीं श.	२१८	अपूर्ण
९०	५७२१	ज्योतिश्शास्त्रभाष्य	शेषनाग	१८७५	३२	
९१	६८३३(७)	ज्यौतिष के स्फुट श्लोक		१९वीं श.	३७-३९	
९२	४६६९	ज्योतिश्चन्द्रार्क	महादेव (हीरामणिसुत, हेरम्बपौत्र)	१८३६	५१	रचनाकाल सं० १७८३ लि.क. नन्दराम
९३	५२९९	ज्यौतिषनिबन्ध		१८वीं श.	४५-७५	अपूर्ण
९४	४८९६	ज्यौतिषमकरन्द	अमरसिंहसूनुनन्दन	,,	६	
९५	७०९७	ज्यौतिषमाला		१८वीं श.	२	लि.क. यति भवानीराम आमझरा मध्ये
९६	४२८६	ज्यौतिषरत्नमाला	श्री श्रीपति	१७वीं श.	१९	*
९७	४४०५	,,	,,	१६४६	३३	* प्रथम पत्र अप्राप्त
९८	४७६८	,,	टीका-बैजापंडित	१७५७	१०७	
९९	६८७७	,,	श्रीपतिभट्ट	१७५५	१७	लि क. राजसोम
१००	७०४९	,,	,,	१७४९	५७	,, व्यास चतुर्भुज
१०१	७०९९	ज्यौतिषरत्नमाला (वृन्दावनशास्त्र)		१८वीं श.	३	विवाह सम्बन्धी लग्नदोषादि का वर्णन

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	६३५०	ज्यौतिषरत्नमाला षट्पंचाशिका ज्यौतिषसार भुवनदीपक आदि		१६२०	८२	योगिनीपुरमध्ये लिखित
१०३	६२७८	ज्यौतिषरत्नमालाव्याख्या	श्रीपति	१९वीं श.	४४	
१०४	७८२५	ज्यौतिषरत्नमाला	,,	१८७१	६४	लि.क. गम्भीरचन्द खिलचीपुर
१०५	६९७२	ज्यौतिषसंग्रह गुटका		१९वीं श.	१५५	
१०६	५८१३	ज्यौतिषसार		१९वीं श.	९८	अपूर्ण
१०७	४८९१	,, सस्तबक		१८वीं श.	२०	
१०८	४४०७	ज्यौतिषसारसंग्रह (सस्तबक)	अज्ञात	१७८९	२५	* लि.क. पं० श्री खुसालसागर गुणविजय स्थान–नरायणानगर
१०९	४४१०	,, (सार्थ)		१८वीं श.	२६	*
११०	६५३७	,, (सस्तबक)		१८१७	३३	लि.क. नवनिधविजय महिमापुरमध्ये
१११	५६३१	ज्यौतिषसिद्धान्तसार	मथुरानाथ मालवीय शुक्ल			रचनाकाल शके १७०४
११२	४८९४	जगद्भूषण	हरिदत्त भट्ट	१७वीं श.	४	डालचन्द्र नृपाज्ञया ग्रन्थ रचना महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित जगद्भूषण।
११३	४७१०	जगद्भूषणसारिणी		१८२९	६५	रचनाकाल–सं० १६९५
११४	४७२७	,,		१९वीं श.	६०	
११५	४७८७	,,		१८वीं श.	५५	रचनाकाल सं० १७६८
११६	४८८२	,,		१७३७	५३	लि.क. माणिक्यविजय ज्ञान–विजयशिष्य चन्देलाग्राममध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७	४४५२(३७)	जन्मग्रहफल		१८वीं श.	४०-४१वां	लि.क. प्रीतसौभाग्य
११८	६३९६	जन्मपत्रीप्रकार	जयगणि	१९वीं श.	५१	* प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	४६९५	जन्मपत्रीपद्धति	गोपाल ?	१८२०	८	लि.क. चतुरविजय
१२०	५२१५	,,		१८वीं श.	८	*
१२१	५६७७	,,				
१२२	६४२९	,, (स्त्रीजातक) (अन्तर्दशाध्याय)	लब्धिचंद्र	१७५१	१०	आद्य के ४ पत्र खंडित स्त्रीजातक ६ पत्र अन्तर्दशाध्याय ४ पत्र अपूर्ण
१२३	७०३९	जन्मपत्रीपद्धति		१८वीं श.	९८	कीटविद्ध प्रति है। इसमें सभी विषय संगृहीत हैं।
१२४	७०८२	,,	हर्षकीर्तिसूरि	,,	४५	अपूर्ण
१२५	४७५१	जन्मपत्रीपद्धतिसारोद्धार		१९वीं श.	१४६	
१२६	६३८६	जन्मपत्रीविचारेकालदंष्ट्राचक्रादि		१८वीं श.	३२	
१२७	४४४०	जातककर्मपद्धति	श्रीपति	१४८७	१६	लि.क. विश्वनाथ
१२८	४६७४	,,	,,	१९००	७	,, लीलाधर देराश्री पुरुषोत्तमसुत
१२९	४७०४	,,	,,	१८३७	१५	
१३०	४८६९	,,	,,	१६९१	९	
१३१	५५१३	,,	,,	१८वीं श.	४४	अपूर्ण
१३२	६४३०	,, (सव्याख्या)	,,	१७४१	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.स्था. बीकानेर
१३३	५८२५	,, (प्रौढमनोरमाटीकासहित)	केशवदैवज्ञ टी. दिवाकर नृसिंहगणकसुत	१९वीं श.	१४१	आद्य २ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३४	५५०६	जातकग्रहफल (जातकपद्धति)	महादेवदैवज्ञ	१७५२	२४	लि.क. कल्याणहंसगणि अवंरगाबाद
१३५	४६६१	जातकदीपिका	हर्षविजय	१८८६	७	लि.क. नरेन्द्रविजय राजस्थानी भाषार्थसहित
१३६	४६६६	,,	,,	१८४९	६	
१३७	४८४२	,, (सस्तबक)		१८२२	१८	लि.क. त्रीकमजोशिष्य
१३८	४५२२	जातकदीपिकाभिधानपद्धति (सस्तबक)	,,	१८६२	११	रचनाकाल सं० १७६५ रचनास्थान नराकरपत्तन लि.क. ऋषि मेघजी स्थान पीचुमंदपुर
१३९	४७०५	जातकपद्धति	केशव	१८१४	५	लि.क. शिवलाल
१४०	४६६३	,,	,,	१८६६	९	
१४१	७१६२	,, (उदाहरण)	विश्वनाथ	१८३६	३७	
१४२	५४३३(२)	जातकरत्न (जैमिनीयसूत्रसार)		१९वीं श.	५५–५६	अपूर्ण
१४३	५६१३	जातकसंग्रह	मदनस्वामी	१९वीं श.	२१३	रचनाकाल सं० १९००
१४४	५०४७	जातकसार		१८वीं श.	३ से १६४	अपूर्ण
१४५	६३९१	,, (चमत्कारचिन्तामणिभाषाटीका)	विद्वन्नारायण	१८१७	११	राजस्थानी भाषासहित श्रीकृष्णगढ में लिखित
१४६	६३९३	,, ,,	,,	१८२७	१७	राजस्थानी भाषासहित
१४७	६७९४	जातकाभरण	ढुण्ढिराज	१८७८	९०	लि. कल्याणपुरीमध्ये लि.क. रामवल्लभ
१४८	५३०६	जातकालङ्कार	गणेशदैवज्ञ	१९०६	३७	अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४९	६८३३(३)	जातकालङ्कार	गणेशदैवज्ञ	१८८१	७–२५	लि.क. अमृतरामजी
१५०	६८३३(५)	जातकत्रिशती	हिल्लाज	१९वीं श.	३३–३५	
१५१	५५३३	जैमिनीयसूत्रव्याख्या	नीलकण्ठ	१९२४	४२	लि.क. पुरुषोत्तममिश्र
१५२	६२९०	,,	,,	१९११	२७	लि.क. गुसांई बालमुकुन्द
१५३	७५१०	जैमिनीसूत्रवृत्ति	वृ० बालकृष्णानन्दसरस्वती	१८२१	५९	लि.क. रामनारायण ब्राह्मण
१५४	६३९५	जोतिकरा छुटकसिळोक		१९वीं श.	६	राजस्थानी भाषासहित
१५५	५२९०	तत्वप्रदीपजातक	श्रीपतिपण्डित	१८७१		लि.क. बालमुकुन्द
१५६	५३४०	,,	,,	१९१७	६	लि.क. रघुनाथ द्योसावासी स्था. भरथपुर
१५७	५५२२	,,	,,	१९१४	६	लि.क. रामगोपाल दाधीच मनोहरपुर
१५८	६९०५	,,	,,	१८५३	७	
१५९	५८८४	ताजिककल्पलता	जयराम	१८२६	३५	लि.क. व्यास मन्नूलाल
१६०	६२३७	ताजिकतन्त्रसार	समरसिंह	१७१०शाके	१०	लि.क. मनसाराम शर्मा
१६१	४७३८	ताजिकनीलकण्ठी	नीलकण्ठ	१८३७	३४	लि.क. चिमनलाल ब्राह्मण, सवाई जयपुर
१६२	५१२८	,,	,,	१८३५	२६	लि.क. ज्ञानसुन्दर ऊर्जपुर रचनाकाल सं० १६४४
१६३	७६५७	ताजिकपद्मकोश		१९वीं श.	६	लि.क. आशानन्द
१६४	५२६५	ताजिकफलतन्त्र	नीलकण्ठ	१७६८	५–५८	लि.क. किशोरीलाल
१६५	६१०१	ताजिकभूषण	गणेशगणक ढुंढिराजात्मज	१८९५	२६	लि.क. विहारी सढोरानगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	६२४२	ताजिकभूषण	गणेशगणक ढुंढिराजात्मज	१८२१	३१	लि. मनसाराम उपाध्याय
१६७	७०५३	"	"	१७४३	४२	लि. चतुर्भुज व्यास कृष्णगढमध्ये
१६८	७१२७	"	"	१८६१	४३	लि. आत्माराम तिवाड़ी पत्र ९ से १३ अप्राप्त
१६९	५४५३	ताजिकभूषणटीका बालबोधिकाख्या	मुञ्जादित्य	१९वीं श.	४२	
१७०	४७७०	ताजिकसार जिणरस	हरिभट्ट	१८७१	६४	भाषार्थसहित अपूर्ण
१७१	४८४६	ताजिकसार	"	१८०५	१९	लि.क. मुनि गांगजी मुनिजी धनजीशिष्य
१७२	६०५५	"	"	१७३९	२६	
१७३	६८७८	"	"	१७९५	२३	
१७४	६४२०	ताजिकसारवृत्ति	सामन्तहर्षरत्नशिष्य	१८वीं श.	२३	*
१७५	७४५५	ताजिकसिद्धान्तसार	समरसिंह	१८६४	२५	लि. फतेहचन्द मारोठ स्था. सीकर
१७६	४६६०	ताजिकालंकार	सूर्यकवि	१८४१	१०	लि. उदयराम ब्राह्मण
१७७	७०९५	ताजिकालङ्कार	"	१८४६		लि. क. शिवशङ्कर
१७८	५३५०	ताजिकोदाहरण	नीलकण्ठ	१९वीं श.	२३	अपूर्ण
१७९	५१२७	तात्कालिकऋजुचक्रविवरण		१९००	१२	लि. अखैराम
१८०	७५७९	ताराविलास	शाम्भववैद्यनाथ	१९वीं श.	२	लि. रामगोपाल
१८१	४७४४	तिथिकल्पद्रुम		१८वीं श.	१५	राजस्थानी भाषासहित
१८२	४७६२	तिथिचिन्तामणि	गणेशदैवज्ञ	"	१८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	४७४२	तिथिमञ्जरी		१८वीं श.	२२	राजस्थानी भाषासहित १६०३ शाके का उदाहरण है।
१८४	७५९६	द्वादशभावफल		१८२३	३९	
१८५	४७७२	द्वादशभावश्लोक		१९वीं श.	१४	लि.क. सीताराम चांदसेणमध्ये
१८६	४७१३	दशाफल	(ताजिकरत्नान्तर्गत)	,,	३	
१८७	४८६७	दीपप्रकाश (वृद्धपाराशरीय)		१९२६	४५	लि.क. बाछूराम व्यास जाट का कूवा जयपुर
१८८	७३८०	दोषपृच्छा		१८वीं श.	१	राजस्थानी अर्थ सहित
१८९	५७५१	ध्रुवभ्रमयन्त्र	नर्मदाप्रसादसुत	१९१४	९	लि.क. व्रजवासी, जयपुर
१९०	५५५५	नरपतिजयचर्या (जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित)	नरपतिकवि	१८वीं श.	१७७	प्रथम पत्र अप्राप्त
१९१	५८३०	नरपतिजयचर्या	,,	१८९९	१२६	* ७३वां पत्र अप्राप्त
१९२	५९४०	,,	,,	१७५८	९०	लि. परमानन्द मिश्र चित्रयन्त्रयुक्त
१९३	६०९१	,, (भूत्रलयपर्यन्त)	,,	१९वीं श.	४३	
१९४	६९१०	,,	,,	१८वीं श.	९१	१ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त
१९५	७१३२	,,	,,	१८वीं श.	३९–८०	अपूर्ण
१९६	७८३६	,,	,,	१८४९	१२४	अपूर्ण, रचना १२३२ (?)
१९७	७५८७	नरपतिजयचर्याटीका		१९वीं श.	९७	पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त
१९८	४७७१ (३)	नवग्रहयन्त्रविधि	महाभारतान्तर्गत	१८०५	४६–५२	
१९९	४८५१	नवरोजप्रकाश	शिवलालपाठक	१९वीं श.	३	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२००	७८१८	नष्टजातक	(रुद्रसंहितान्तर्गत)	१८वीं श.	७६	
२०१	७०८८	नष्टोद्दिष्टविधिः		,,	२	*
२०२	४७७१(४)	नक्षत्रनिघंटु, ग्रहनिघंटु		१८०५	५३–५४	
२०३	७६५२	नाडीसमुच्चय		१९वीं श.	३	
२०४	७६६६	नारचन्द्र	नारचन्द्र	१८९६	१८	लि.क. अमृतविजय
२०५	६८२१	,, प्रथम प्रकरण	,,	१७५९	११	लि.क. रतना तिलकधीरशिष्या जैतारणमध्ये
२०६	४७४७	,, ,,	,,	१८वीं श.	१४	
२०७	७०१०	,, य प्रकरण	,,	१८०९	२७	*
२०८	४३५२	नारचन्द्रयंत्रकोद्धार सटिप्पण	,, टी. श्रीसागरचन्द्रसूरि	१६५१	३०	लि. स्था. कोरंटानगर
२०९	६६५०	नारचन्द्र सटिप्पण (प्रथम प्रकरण)	टी. सागरचन्द्रसूरि	१८वीं श.	२६	
२१०	६७७६	नारचन्द्रसूत्र	नारचन्द्र	१७९६	१९	राजस्थानी भाषासहित
२११	५३३९	निबन्धचूड़ामणि	मिश्र यशोधर फंसारिमिश्रात्मज	१९वीं श.	६६	अपूर्ण
२१२	६२५२	,,	,,	१७५१	२०	
२१३	६७०३	प्रश्नकौमुदी (ताजिकमतानुसार)		१९२५	४८	
२१४	४८९८	प्रश्नग्रन्थ		१८वीं श.	२२	
२१५	५०६३	प्रश्नचूड़ामणि		१९वीं श.	२३	
२१६	४६८३	प्रश्नचूड़ामणिसार		१९४३	७	लि. बुद्धिसागरगणि वाच्छदेशमध्ये
२१७	५८११	प्रश्नतत्व	चक्रपाणि सत्यधरात्मज	१९वीं श.	१६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१८	५५६७	प्रश्नतन्त्र	दुर्योधन	१८३८	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१९	५२६०	प्रश्नप्रकरण		१९वीं श.	५	
२२०	५७६८	,, (ज्योतिषकौमुदीगत)	नीलकण्ठ	१८८८ से पूर्व	२८	
२२१	४८६४	,, ,,	,,	१९वीं श.	४४	आद्य पत्र खंडित
२२२	४७१४	प्रश्नप्रदीपक	काशीनाथ	,,	११	
२२३	५२६७	,,	,,	१८वीं श.	८	
२२४	४७५५	प्रश्नमनोरमा	गर्ग	,,	२	
२२५	५२६१	,,	,,	१९वीं श.	४	
२२६	५७२४	,, सटीक	,,	१८वीं श.	५	लि.क. विद्यार्थी लोकमणि, काश्याम्
२२७	७५०१	प्रश्नमाणिक्यमाला	परमानंद शर्मा	१९वीं श.	१७८	अपूर्ण
२२८	४१८३	प्रश्नमार्ग	अज्ञात	,,	१९६	* अपूर्ण
२२९	५६३५	प्रश्नरत्न (सटिप्पण) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ)	नन्दराम कामानिवासी	,,	४९	रचनाकाल १८२४ टीका रचना १८२७
२३०	५३३८	प्रश्नरत्न (केरलीय)	नंदराम मिश्र	१८३७	८	
२३१	५२३९	न वद्या		१९वीं श.	८	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३२	४७१९	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत	१९१५	४७	लि.क. केवलचन्द्र गोविन्दजी
२३३	५२६९	,,	,,	१८वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३४	६४३२	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत	१९वीं श.	२६	
२३५	७०५०	,,	,,	१८वीं श.	२७	
२३६	५५३४	,,	,,	१९वीं श.	३४	अपूर्ण
२३७	४९००	प्रश्नशत		१७९७	२३	
२३८	४७३६	,, (प्रश्नज्ञान)	भट्टोत्पल	१७९४	४	यह ग्रन्थ ७० आर्या छन्दोंमें आबद्ध है।
२३९	६५११	प्रश्नशास्त्र (बादरायण) टीका चिन्तामणिनाम्नी	उत्पल भट्ट	१८५३	६	
२४०	४७४०	प्रश्नशास्त्रटीका		१७१०	७	
२४१	५५०५	प्रश्नशिरोमणि	रुद्रमणि	१९२४	१५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२४२	४९९५	प्रश्नसंग्रह		१९वीं श.	८	
२४३	४८८३	प्रश्नसंग्रहसार, हंसचक्र-अवधिविचार		१८८१	८	
२४४	५२६६	प्रश्नसंग्रह		१९वीं श.	१७	
२४५	५५३२	प्रश्नसप्तति	भट्टोत्पल		१७	लि.क. पुरुषोत्तम मिश्र
२४६	७७१५	प्रश्नसार	जीवा गुर्जर याज्ञिक नरहरिसुत	१९०६	३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
२४७	६४६५	प्रश्नसार (सटीक)	गोविन्ददैवज्ञ विष्णुदैवज्ञसुत	१८९२	१३	राजस्थानी भाषा सहित
२४८	४६७०	प्रश्नसुधाकर	लालमणि (जगद्रामात्मज)	१९२७	८१	
२४९	५७४३	प्रश्नज्ञान (आर्यासप्तति)	भट्टोत्पल	१९वीं श.	४	
२५०	५४६४(२)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला		१८७०	४	
२५१	५७३१	प्रासादमण्डन	सूत्रधार मण्डन	१९२८	२८	लि.क. गोपाल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०९६	पञ्चतत्वविचार		१९वीं श.	४	राजस्थानी भाषा सहित
२५३	५५३५	पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ	रुद्रोक्त	१९२४	१५	लि.क. पुरुषोत्तम
२५४	५७६३	पञ्चपक्षीसटिप्पण	टी. कल्याणकर	१९०८	२	लि क. व्रजवासी, मथुरा
२५५	४४५२(३९)	पञ्चपक्षीप्रश्न	महादेव	१८वीं श.	४२–४३	* लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य स्था. वणहेड़ा ग्राम
२५६	४५२३	पञ्चपक्षीशकुन		१८३१	२	लि.क. नागेश्वर
२५७	६५२४	,,		१९२४	११	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५८	७६७२	पञ्चश्लोकीताजिक टीका	बालकृष्ण	१८९३	५	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः वाराणस्यां ललिताघट्टे
२५९	६५२४	पञ्चशर (पञ्चस्वरा)	परमसुखोपाध्याय	१९वीं श.	६	
२६०	५७५३	पञ्चशरनिर्णय (पञ्चस्वर)	प्रजापतिदास	,,	५	
२६१	५६४०	पञ्चशरविवृत्ति (पंचस्वरा)	,, अप्पय दीक्षित	१६७६ शाके	१४	
२६२	५७३०	पञ्चस्वरा (द्वितीयाध्याय)	परमसुखोपाध्याय	१९वीं श.	६	
२६३	५६८३	पञ्चसिद्धान्तमत (भास्वत्युदाहरण टीका)	शतानन्द गंगाधर	१८९२	१२	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः मण्डीमध्ये
२६४	५७९६	पञ्चाङ्गसिद्धि	बाबादैवज्ञ, रामपुत्र, शिवानुज	१९०७	५	सुज्ञजागेश्वरप्रीत्यै रचित लि.क. व्रजवासी काश्याम्
२६५	६७५९	पञ्चाङ्गाभिधपत्र (लग्नसाधनविधि)		१९वीं श.	७	राजस्थानी सहित
२६६	७७१९	पञ्चाशत्प्रश्न	शङ्कराचार्य	१९वीं श.	६	
२६७	४७४८	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१८६२	९	लि.क. जोशी आशाराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४८६३	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१९वीं श.	८	*
२६९	४८६६	पद्धतिप्रकाशोदाहरण (गणिततत्वचिन्तामणेः)	,,	,,	४९	
२७०	४६६५	पद्मकोश		,,	१०	
२७१	७६९६	,,	गोवर्द्धन कण्डोलक द्विजरामसुत	१८७२	६	रचनाकाल १६०१ लि.क. धीरा, रूपनगर
२७२	६३०९	पद्मताजिक		१९वीं श.	१६	
२७३	५८१५	पवनविजयग्रन्थ	ईश्वरप्रोक्त	१९०५	१८	
२७४	५७७६	पवनविजयस्वरोदय	शिवप्रोक्त	१९वीं श.	१२	
२७५	७०९१	पत्रीमार्गदर्शन, योगसंग्रह		१८वीं श.	८४	अपूर्ण/राजस्थानीअर्थसहित/पत्र १-१४ व १६वां. अप्राप्त
२७६	६२८४	पाराशरीहोरा		१९वीं श.	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२७७	४७३६	पाशाकेवली	गर्गाचार्य	१७९१	१०	लि.क. आ. नागरेण द्वारा लिखित हरिदत्तजी पठनार्थ
२७८	४७५२	,,	,,	१९वीं श.	६	
२७९	६२५७	,,	,,	,,	१६	
२८०	६४३१	,,	,,	,,	६	लि.क. अमरचन्द्र
२८१	६६२०	,,	,,	१९२७	११	,, गुरुदयाल सौदावादवासी
२८२	४६७८	पैतामहीसारिणी	मधुसूदन दैवज्ञ श्रीपतिशिष्य	१९वीं श.	३	*
२८३	६४२८	फलकल्पलता (वार्षिक)		१७७४	५	लि.क. पुण्यविजय श्रीमत्पत्तनपत्तने
२८४	४७३५	ब्रह्मतुल्यगणितक्रम	करणकुतूहलगत	१८८४	३५	लि.क. हेमसागरशिष्य गुमानसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८५	५६४२	ब्रह्मतुल्योदाहरण (कुलभाष्य)		१९वीं श.	५२	
२८६	५८२६	ब्रह्मसिद्धान्त	शाकल्यसंहितागत	,,	४५	आद्यपत्र अप्राप्त। लिपिस्थान काशी
२८७	६१७८	,, सटीक	टी. पद्मनाभ नर्मदात्मज	१७००	७८	लि.स्था.मथुरा। लि.क. जटमल गौड़
२८८	४८६५	बानबोणिनी	श्रीलाल्हिदत्तद्विज	१९वीं श.	७	श्रीपतिपादपद्ममधुप: श्रीलाल्हिदत्तोद्विज:
२८९	४२७७	बालावबोध	मुञ्जादित्य	१७६९	१७	* लि.क. खरतरगच्छीय बालचन्द्र स्थान. पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त
२९०	४२५८	बालबोध	,,	१८४७	३४	लि.क. गंगाविष्णुकान्यकुब्ज स्थान नगर बोंली
२९१	४७२८	,,	,,	१९वीं श.	१२	
२९२	४८७६	,,	,,	१८७६	४८	बंकपुरमध्ये लिखितम्
२९३	७०३४	,,		१९वीं श.	२१	अपूर्ण
२९४	७११२	,,	हरिकर्ण	१८वीं श.	२	*
२९५	५६२६	बीजगणितबालबोधिनीटीका	भास्कराचार्य टी. कृपाराममिश्र	१८९४	९६	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु: काशी रचनाकाल शाके १७१४
२९६	६२१२	बीजवासनाभाष्य	ब्रजनाथसूनु	१७७६	१५४	* आद्य १९ पत्र अप्राप्त
२९७	५७४७	बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र)	मू. गणेश दैवज्ञ टी. विष्णु दैवज्ञ दिवाकरसुत	१९वीं श.	२१	
२९८	४१८६	बृहज्जातक	वराहमिहिर	१९वीं श.	९६	* पत्र ४३,४४,४५ अप्राप्त लि.क. जोसी जीवणराम
२९९	४६५८	,,	,,	१८६५	५८	
३००	४६६७	,,	,,	१८०१	२१	,, सारङ्ग नरपति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०१	४६९७	बृहज्जातक	वराहमिहि	१८३७	४९	लि.क. महाराजा प्रतापसिंहज राज्ये
३०२	४८८९	,,	,,	१७२३	५०	आद्यन्तपत्र खंडित
३०३	४९७४	,,	,,	१८६६	७२	लि.क. सदासुख
३०४	६१०५	,,	,,	१८३५	१९	लि.क. स्वामीबालचन्द्र स्थान—नरवर
३०५	६२०९	,,	,,	१८६३	१८९	
३०६	७०५५	,,	,,	१८४१	५५	
३०७	७०१३	,, (उपसंहाराध्याय)	,,	१७८५	१६	लि.क. स्थान–कृष्णगढ़
३०८	५३२६	बृहज्जातकटीका	भट्टोत्पल	१९वीं श.	६९	१, २, ३४, ४४ पत्र अप्राप्त
३०९	६२३९	बृहज्जातकविवरण	महीधर	१८५१	८४	
३१०	५५३१	बृहज्जातक (सटिप्पण)	वराहमिहिर	१९२२	३४	
३११	५८२८	,,	,,	१९वीं श.	४९	अन्तिम पत्र अप्राप्त
३१२	७६२२	बृहत्संहिता	,,	१९वीं श.	१७४	
३१३	५५३६	बृहन्नारचन्द्रसारोद्धार	नारचन्द्र	१८वीं श.	१०	
३१४	५५४०	,,	,,	१७वीं श.	१८	
३१५	५६९८	बृहस्पतिकाण्ड	शिवपार्वती संवाद	१९वीं श.	९	
३१६	४६८१	भ्रमणसारिणी		१९वीं श.	१३८	
३१७	५६४८	भावविवृति	माधव	१८६०	१८	लि. शिवदास वाराणसी
३१८	४७६४	भावाध्याय	ताजिकभूषणगत	१९वीं श.	५	
३१९	४७१८	,,	रत्नसारान्तर्गत	१८१०	१९	लि.क. ऋषि नागजी
३२०	४८५३	भावेशफल		१९वीं श.	१३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	५७३५	भावेशफलाध्याय	जातककामधेनुगत	१९०२		लि.क. ब्रजवासीसिल्लु:रीमापुरे
३२२	६८९६	भास्वती	शतानन्द	१९०२	१५	,, ऋषि लाला लक्ष्मीचन्द्र
३२३	४६९३	भुवनदीपक		१७०२	४	,, मुनि दामाख्य
३२४	५७०८	,,	पद्मप्रभसूरि	१९वीं श.	६४	रचनाकाल—शाके पंचरसाधनैः
३२५	४७५०	,, सस्तबक	,,	१८वीं श.	१०	राजस्थानी भाषा सहित
३२६	४४११	,, सटीक	,, टी. सिंहतिलक	१९वीं श.	५३	* टीका रचनाकाल–१३२६ स्थान—बीजापुर
३२७	४४५२(८१)	भैरवीचक्र		१८वीं श.	१२३वां	इस चक्रमें दिशानुसार भैरवीके बोलने पर शुभाशुभ फलका निर्णय किया गया है
३२८	६३०१	मकरन्दकारिका	कृपाराम	१९२२	९	लि.क. आनंदसिंह
३२९	७५१९	मकरन्दभावविवृति	नीलकण्ठ	२०वीं श.	५	
३३०	५७३२	मकरन्दविवरण	दिवाकर नृसिंहसुत	१८९४	९	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः मणिकर्णिकातीरे
३३१	७५१५	,,	श्रीपतिभट्ट	१९३६	१२	
३३२	७५१६	,,	दिवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य	१९३६	२१	
३३३	६२७५	मकरन्दसाधनप्रक्रिया	चूडामणिचक्रवर्ती	१८९०	१२	
३३४	५७६४	मकरन्दोदाहरण (सूर्यसिद्धांतमतानुसार)	विश्वनाथ	१९वीं श.	१९	
३३५	५८२२	मकरन्दोदाहरण	,,	१८६७	२७	पत्र १ व ८वां अप्राप्त
३३६	५८१०	मकरन्दोदाहृति	,,	१९३६	५७	
३३७	६८५९	मकरसंक्रान्तिपत्रक (खरड़ा)		१९वीं श.	१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३८	६६४३	मयूरचित्र		१८९८	२०	लि.क. मिश्र भवानीदास, जयनगर
३३९	४२८४	,, (मयूरपदपूर्वक)	नारदप्रोक्त	१८९७	१९	* लि.क. शीरपाणिपुत्रः
३४०	६२२२	मयूरचित्रक	,,	१८वीं श.	१०	
३४१	५७७२	मयूरचित्रकादि	वराहमिहिर	१९वीं श.	२९	
३४२	४८४९	महादशाफल		,,	७	
३४३	७१३६	महादेवीवृत्तिदीपिका	धनराजगणि भुवनराजगणींद्रशिष्य	१८वीं श.	९ से ३२	
३४४	४६८०	महादेवीसारिणी		१९वीं श.	६१	
३४५	४७४१	,,		१८१४	१२६	आद्य न्तपृष्ठ सचित्र शोभन
३४६	४७८६	,,		१८४९	१५२	रचनाकाल अनुमानतः १२३८ शक लि.क. खरतरगच्छीय शोभाचन्द्रजीशिष्य चन्द्रभाण स्थान—सुभटपुर
३४७	७४७०	मानसागरीपद्धति	नानाग्रन्थोद्धृत	१९वीं श.	७७	राजस्थानी भाषा सहित
३४८	६७१५	मासभावाध्याय	ताजिककल्पलतोक्त	१७६८	८	लि.क. आचार्य किशोरदास औदुम्बर मोढासावासी
३४९	४२८३	माससारिणी		१८वीं श.	१५	*
३५०	६४३९	मासेश–मासभावफल	ताजिकमतानुसार	१७८७	१०	लि.क. लब्धिसुन्दर कल्याणसुन्दरशिष्य, फतेपुर
३५१	४७२३	मुन्थाफल		१९वीं श.	१	
३५२	७८२८	मुष्टिज्ञान		१८वीं श.	२	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३५३	४९७३	मुहूर्त्तगणपतिसार	गणपतिदैवज्ञ (रावल हरिशंकर सूरिसूनु)	१८७३	५१	२४ वां पत्र अप्राप्त रचनाकाल १७५०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	४८४३	मुहूर्त्तचिन्तामणि	रामदैवज्ञ	१८००	४०	रचनाकाल–१५२२ शाके लि.क. रूपनारायण गौड़
३५५	७०११	,,	,,	१७६२	२९	रचनाकाल–१५२२ शाके लि.क. पं० गुणमूर्ति
३५६	४११०	,, (प्रमिताक्षराटीकोपेता)	,,	१८९६	१५९	लि.क. रामसुख, जयपुर
३५७	६२५८	,, ,,	,,	१८३२	८२	पत्र ११ से १६,७५,७६,८१वां अप्राप्त लि.क. व्यास बालकृष्ण नरवर-मध्ये
३५८	४६४८	,, सटीक	,,	१९०३	२१५	
३५९	५६८६	,, (पीयूषधारा सहित)	,,	१९वीं श.	३६	शुभाशुभप्रकरण मात्र
३६०	५६८७	,, ,,	,,	,,	३६	नक्षत्रप्रकरण मात्र
३६१	५६८८	,, ,,	,,	,,	११	संक्रान्तिप्रकरण मात्र
३६२	५६८९	मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक (पीयूषधारा टीकोपेत)	,,	,,	८	गोचरप्रकरण मात्र
३६३	५६९०	,, ,,	,,	,,	३६	संस्कारप्रकरण मात्र
३६४	५६९१	,, ,,	,,	,,	६३	राज्याभिषेकप्रकरण मात्र
३६५	५६९२	,, ,,	,,	१९२०	८२	यात्राप्रकरण
३६६	५६९३	,, ,,	,,	१९२१	२४	गृहारम्भप्रकरण मात्र
३६७	५६९४	,, ,,	,,	१९२०	१७	गृहप्रवेशप्रकरण लि.क. झण्डाराम प्रश्नोरा (मधपुर्या)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६८	६२९३	मुहूर्त्तचिन्तामणिः सटबार्थ	रामदैवज्ञ, टी. चतुरविजयगणि	१८३०	१०२	रचनाकाल सं० १७५७ पत्र १ से ८ तक अप्राप्त
३६९	४७११	„ सस्तबक	रामदैवज्ञ	१८२७	५०	लि.क. जीवनविजयगणि
३७०	५६९९	मुहूर्त्ततत्व दीपिकाटीकोपेत	केशवदैवज्ञ टी. गणेशदैवज्ञ	१७६३	१०८	
३७१	४६४७	मुहूर्त्तदर्पण	ज्योतिर्विल्लालमणि जगद्रामसुत गंगाराम पौत्र	१८२२		ओरछाग्रामवास्तव्यश्यामजू-लिखितम्
३७२	४८७९	मुहूर्त्तदीपक	महादेव कान्हजीबाड़वसुत	१६९२	१०	लि.क. परमानन्द
३७३	५७७०	मुहूर्त्तमञ्जरी	यदुनन्दन	१९०५		लि.क. अर्जुन पण्डित रचनाकाल १७०६ (?)
३७४	५३४८	„ सटीक	„ टी. मनसाराम रामकृष्णसुत	१८५९	२१	„ १७२६ * लि.क. बूचाराम गढ़ भरतपुर मध्ये
३७५	४६६४	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड	नारायणदैवज्ञ अनन्ताख्य चातुर्मास्य पुत्र	१९००	२०	लि.क. औदीच्यज्ञातीय देराश्री पुरुषोत्तमसुत लीलाधर
३७६	४७३२	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड (मूल)	नारायण	१८३७	२६	रचनाकाल १४९३ शाके
३७७	४८८७	„	„	१८९०	२३	लि.क. विजयलाल औदुम्बरज्ञातीय
३७८	५२४६	„	„	१८५५	२७	संक्रान्तिप्रकरणान्त
३७९	६७६५	„	„	१९०३	३५	लि.क. मोती
३८०	७०४८	„	„	१८६२	२७	लि.क. दयाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	४६७१	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	नारायण	१७८९	८२	लि.क. महाजन नरसिंह, जयपुर रचनाकाल सं० १६२९
३८२	४७०९	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड टीका	"	१९वीं श.	७८	किंचिदपूर्ण
३८३	४७२६	"	"	"	१२१	रचनाकाल १६२९
३८४	६१३०	"	"	१८३७	५६	" १४९३ शाके
३८५	५५२५	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड (वल्लभाख्या टीका सहित)	"	१९वीं श.	४७	अपूर्ण
३८६	७३७१	मुहूर्त्तमुक्तावली (सटबार्थ)		१८४९	१०	लछमनपठनार्थ करहेड़ा मध्ये
३८७	६३९४	" (सटिप्पण)		१९वीं श.	८	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३८८	४७१७	" (सस्तबक)	हरिभट्ट	१९६७	९	लि.क. ऋषि नानजी
३८९	४८७४	" (मुहूर्त्तप्रदीप)		१७०२	११	लि.क. मेदपाटज्ञातीय जोशी सुरजीकेन लिखितम्
३९०	७६५१	" (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)		१८४७	८	घोड़ेलावग्राम मध्ये लि क. रत्नसागर समेणमध्ये
३९१	५७१४	मुहूर्त्तसर्वस्व	रघुवीर	१८वीं श.	१६	रचनाकाल १५५७ शाके
३९२	७१०४	मूलजातकविधान		"	२	
३९३	६३९२	मेघमाला		१९वीं श.	१९	
३९४	५६४६	यन्त्रचिन्तामणि	दामोदर	१९१८	६१	
३९५	५३१७	" सटीक	जगद्दैवज्ञ (?) टी. रामदैवज्ञ	१८४५	१६	लि.क. मनसाराम
३९६	५६१९	यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिकाख्या)	"	१८९५	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. व्रजवासी मिश्र, ललिताघट्टे काश्यां

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९७	६१०८	यन्त्रचिन्तामणि सटीक	चक्रधर वामनात्मज टी. रामदैवज्ञ मधुसूदनात्मज	१८५४	२९	
३९८	६८८५	,, सटाक	,,	१९०३	३६	लि.क. लाला लक्ष्मीचंद
३९९	४१३२	यन्त्रराज	महेन्द्रसूरि	१८४७	१९	*
४००	५६८२	,, सटीक	,, टी. मलयेन्द्रसूरि	१९३९	५०	
४०१	६२५४	यन्त्रराज टीका	,,	१९०१	४७	लि.क. सर्वेश्वर
४०२	७०१२	यवनजातक (जातकाभरण)	ढुण्ढिराज	१९१९	१०५	वृद्धयवनजातक
४०३	४४०९	यानयोगार्णव	शिवोदित	१८२५	२३	* लि.क. पं. लिखमीराम स्थान नेवय मध्ये (निवाई)
४०४	६५१०	युद्धकौशल		१९वीं श.	७	
४०५	७६४२	,,	श्रीरुद्रः	,,	१६	
४०६	६७७५	युद्धजयोत्सव	गंगाराम	१८९९	१७	लि.क. मोतीगरू
४०७	६८६१	योगचिन्तामणि (सबालावबोध)	हर्षकीर्त्तिसूरि बा. नरसिंह रतनराज गणिशिष्य	१७२४	७३	लि.क. रङ्गविमल कालूग्रामे
४०८	५७४९	योगशतक	बलभद्र	१९वीं श.	१२	
४०९	४८६३	योगार्णव	वेंकटेश	,,	१८	
४१०	५७३६	,,	,,	१९२१	१३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
४११	५७६६	योगावली		१९-२०वीं श.	२०	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४१२	६०४०	योगिनीदशाकरण	राजऋषि	१८११	१२	लि.क. भैरवदास
४१३	४८९५	योगिनीदशान्तर्दशाफल		१८वीं श.	७	
४१४	४६५४	योगिनीदशाफल	रुद्रयामलोक्त	,,	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१५	७६४५	रत्नप्रदीप		१८०९	१९	लि.क .हरवल्लभ पारीक जोसी भूधरजीसुत, ढाण्यां
४१६	५६०९	रत्नमाला	महादेव	१८६८	२३	लि.क. भागीरथ ब्राह्मण
४१७	५८३१	रत्नमाला (विवरणनाम्नी टीका)	श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र	१९वीं श.	२१४	रचनाकाल ११८५ शाके ४६,४७,९१,२०८वां पत्र अप्राप्त
४१८	७५७२	रमलग्रन्थ (रमलेन्दुप्रकाशसम्मत)		१८वीं श.	२०	
४१९	७५७५	,, (बिन्दुरमलाख्य)		१९वीं श.	११	ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिदत्त
४२०	४७५९	रमलचिन्तामणि संज्ञातंत्र (प्रथम)	चिन्तामणि पंडित	१८वीं श.	१०	
४२१	४७६०	,, (प्रश्नतन्त्र) द्वितीय	,,	,,	१०	
४२२	५१६५	रमलनवरत्न	परमसुख उपाध्याय	,,	३७	*
४२३	५३०४	रमलनवरत्नम्	परमसुखोपाध्याय	१८८८	२६	
४२४	५६०८	,,	,,	१९वीं श.	३५	रचनाकाल–१८६७
४२५	५७९७	रमलबिन्दु		,,	११	प्रति के कोण खंडित हैं
४२६	४४५३	रमलशास्त्र	राम	१७८०	१२	भुजद्रंगमध्ये लिखितं
४२७	५३२१	,,	रामरुद्र	१७१५	७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४२८	५४७९	,,	रामदैवज्ञ	१९वीं श.	४९	
४२९	६८३३(२)	,,		१८४८	६–७	लि.क. लाला अमृतराम
४३०	७५७४	,,	,,	१९वीं श.	१७	
४३१	६८३३(११)	,,		१८५२	५५–६९	
४३२	४७६९	रमलसार	श्रीपति	१८४२	१६	*
४३३	४६५१	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१९वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३४	७५७३	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१८३८	२८	
४३५	५६०७	राजवल्लभ वास्तुशास्त्र	मण्डन सूत्रधार	१९०६	४४	
४३६	७५१२	रामविनोद	रामभट्ट	१७५५	१३	लिपिस्थान-नरायणा कूर्मवंशोद्भव महाराजाधिराज श्री रामदास की आज्ञा से रचित।
४३७	५५९४	रेखागणित	जगन्नाथ सम्राट्	१९२०	२६४	सवाईजयसिंहतुष्ट्यै
४३८	७०९३	लग्नचंद्रिका		१८वीं श.	३४	प्रथम पत्र शोभन
४३९	५५६८	,, (जन्मपत्रीलेखोदाहरण)	काशीनाथ	१९वीं श.	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
४४०	७६०५	लग्नवाद	श्री गिरधारी मिश्र मैथिल	,,	१	
४४१	४६८२	लग्नसाधनविधि		,,	८	
४४२	६४२६	,,		१८६८	६	
४४३	४७३०	लग्नोदाहरण		१९वीं श.	४	नागोर मध्ये लिखितम्
४४४	६४६४	लघुकामधेनुसारिणी	केशव	१८वीं श.	१०	लि.क. धर्मविजयगणि रूपनगर रचनास्थान-काशी
४४५	५५२३	लघुजातक	वराहमिहिर	१९१६	१७	लि.क. विप्र रामगोपाल, केकड़ी
४४६	६३८२	,,	,,	१८१२	७	,, पं. उदयसुन्दर श्रीवीकानगरे द्वितीय पत्र अप्राप्त
४४७	६८२२	,,	,,	१७वीं श.	९	
४४८	६९०७	,,	,,	१८४४		लि.क. उदयसुन्दर क्षमासुन्दर-शिष्य
४४९	७०९८	,, (अरिष्टाध्यायान्त)	,,	१८वीं श.	३	आर्यापद्यबद्ध ग्रन्थ है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५०	४१८७	लघुजातक सटीक	वराहमिहिर	१६५४	५६	*
४५१	४६८४	,, सवृत्तिक	,, टी.-मतिसागर उपाध्याय	१८८५	३०	
४५२	४७४६	,, सटीक (त्रिपाट)	वराहमिहिर, टी.-उत्पलभट्ट	१७२३	१६	
४५३	४७५४	,, ,,	,,	१८४२	१८	लि.क. सन्तोषदास वष्णव
४५४	७१०१	,, सटिप्पण		१८वीं श.	२	
४५५	५६८५	लघुपाराशरी (योगाध्यायमात्र)	पाराशर ऋषि	१६३२	२	
४५६	७६४३	लघुपाराशरी (उडुदायप्रदीपोद्योत)	भैरवदत्त पं. हरिरामशर्मपुत्र	१६वीं श.	२६	पत्र १,२,३, अप्राप्त
४५७	५७४६	लघुपाराशरी सटीक (राजयोगाध्यायान्त)	पाराशर ऋषि	१८६४	६	लि.क. व्रजवासी सिल्लु:मणिकर्णिका तीरे अमृतपातालदेवालये
४५८	४७५८	लघुमातंण्ड, मुहूर्त्तदीपक	नारायण दैवज्ञ कौशिक	१६वीं श.	१४	*
४५६	५६१३	लघुक्षेत्र समास विवरण	चंद्रशेखर	१४८८	३२	लि. स्था.चित्रकूट दुर्ग
४६०	५७४२	लम्पाकशास्त्र	पद्मनाभ	१८६७	८	लि.क. देवीचन्द्र ग्राम सल्हड़ी काश्याम्
४६१	५६३४	,, सटीक (त्रिपाठ)	,,	१६०५	३४	लि. व्रजवासी सिल्लु: काश्याम्
४६२	६३७२	लल्लवाराही	लल्ल	१८वीं श.	३	
४६३	५७२३	लीलावती	भास्कराचार्य	१६वीं श.	४२	
४६४	५७०४	लीलावती विवरण	,, टीका-रामकृष्ण		६३	*
४६५	४७६७	वर्षगणितपद्धति (दिवाकरीपद्धति)	दिवाकर नृसिंहसुत	१८४७	५	
४६६	६३११	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८३२	३०	लि. मनरूप व्यास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६५४५	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८७२	४७	लि.क. रतनविजय
४६८	४७०६	,, सटीक	,, टी-विश्वनाथ	१७५२	३१	२७,२८ २९वां पत्र अप्राप्त
४६९	७१४२	वर्षसारिणी (वर्षफलपद्धतिसार्थ)		१८०२	१६	लि.क. चिरञ्जी सीतर
४७०	४३५५	वसन्तराज शाकुन	वसन्तराज भट्ट	१७७१	३७	* लि.क. विद्याविलास पाठक लि.स्था. श्री बेनातट नगर
४७१	६२०८	,,	,,	१८२३	६३	
४७२	६७८८	,,	,,	१९१२	१५७	
४७३	७८२९	,,	,,	१८४२	८२	लि.क. गङ्गाराम
४७४	५५९३	वसिष्ठसंहिता	वसिष्ठप्रोक्त	१९१९	१३३	
४७५	६४२१	वामवेधफल		१७९९	८	लि.क. देवचन्द्र, मण्डोवरमध्ये
४७६	५१३२	वास्तुशास्त्र	विश्वकर्माप्रकाशगत	१९०६	७२	
४७७	४८७७	विंशोत्तरीदशाफल		१९५८	१०	
४७८	४६५६	विजयप्रशस्ति	स्वच्छन्द शङ्कराचार्य	१८२४	१३	* लि.स्था. जयपुर, रचनाकाल सं० १७४२
४७९	५६३३	विरोधप्रकाश	यज्ञेश्वर	१८९३	३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
४८०	४७१२	विवाहपटल		१८५६	६	राजस्थानी भाषार्थ सहित
४८१	५५३७	विवाहपटलटीका		१९१२	१२	काशिनाथकृत शीघ्रबोधानुसार लि.क. इन्द्रसुन्दर
४८२	६३५२	विवाहपटलसस्तबक		१९वीं श.	१९	
४८३	७६५०	विवाहपटल		१८१८	१७	राजस्थानी भाषार्थ सहित लि.क. नवनिधिविजय
४८४	७६५८	,,		१७८४	२०	राजस्थानी भाषार्थ सहित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८५	६४२२	विवाहमासनिर्णयादि		१८वीं श.	२	
४८६	४८५७	विवाहवृन्दावन	केशव	१६वीं श.	२८	
४८७	६०६६	,,		१७१२	२०	लि.क. कल्याण
४८८	६३३६	विवाहवृन्दावन टीका	गणेश दैवज्ञ	१८६०	६२	
४८६	७०५१	विवाहवृन्दावनभाष्य	केशवार्क, भाष्य-शिवशंकर	१८२१	५७	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४६०	६८३४	वेगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक)		१८७८	३८	लि.क. सुमतिसागर
४६१	४६५७	शकुनप्रदीपचूड़ामणि	उपेन्द्र	१७६६	१२	लि.क. छबीलाराम अर्गलपुरमध्ये
४६२	६३३०	शकुनसार		१६वीं श.	३	
४६३	५४५२	शकुनावली		१६१०	८	
४६४	७६३७	शरत्पद्धति	रङ्गनाथ	१७५३	५	लि.क. व्यास पुरुषोत्तम स्थान-मथुरा
४६५	५२२२	शिवालिखित मुहूर्त	रुद्रयामलोक्त	१८वीं श.	४	
४६६	४६५३	शिवालिखित ,,		,,	६	
४६७	६४३६	शिवालिखित मुहूर्तमालिका	शिवोक्त	,,	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४६८	४१५५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१६वीं श.	४०	लि.क. रामचन्द्र ब्राह्मण
४६६	४७५६	,,	,,	१७६७	२६	
५००	५०५०	,,	,,	१८६६	३१	
५०१	५७३८	,,	,,	१८८५	४६	लि.क. देवीदयाल कायस्थ, काशी
५०२	६३६७	,,	,,	१८५१	३४	
५०३	७१५२	शीघ्रबोध, भड्डुली के दोहे	,, भड्डुली	१८६१	६३	लि.क. यति प्रेमचन्द, हीरापुरीमध्ये
५०४	७६२५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१८७३	७	,, धीरविजय, कृष्णगढ़, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०५	४८७१	शुकजातक	शुकमुखोक्त	१८४२	३	लि.क. मुरुजित्सुत दुर्गादत्त
५०६	४४०६	शेषवासना	कमलाकर	१७८६	४४	,, रामकृष्ण कायस्थ
५०७	५१०६	षट्पंचाशिका	भट्टोत्पल	१८१८	६	,, हरिकृष्ण ब्राह्मण, दशपुर-ग्राममध्ये
५०८	४६५०	षट्पंचाशिका सटीक	पृथुयशाः, टी. उत्पल भट्ट	१९वीं श.	२१	
५०९	४६८७	,, (सबालावबोध)	पृथुयशाः	१८वीं श.	१४	लि.क. जीवनविजय, बालीमध्ये
५१०	४६९२	,, सटीक	,,	१८१९	२२	,, ज्योतिर्विच्छंभुराम
५११	४८४१	,, ,,	,,	१८२२	१०	राजस्थानी भाषार्थ सहित
५१२	५७१३	षट्पञ्चाशिकावृत्ति	उत्पल भट्ट	१८३९	२२	लि.क. कृष्णचन्द्र विजयराम
५१३	६५९४	,,	,,	१८८४	१७	,, रामनारायण ब्राह्मण
५१४	६८१९	,,	,,	१६४५	१९	,, ऊदा
५१५	७५७८	षट्पञ्चाशिकाटीका	मनीराम	१७६९	११	
५१६	४६७३	,, सस्तबक	भट्टोत्पल	१९०१	९	,,पुरुषोत्तमसुत लीलाधर देराश्री
५१७	४८००	,, (होराध्यायान्त)	पृथुयशाः	१९वीं श.	४	
५१८	७६२७	,, सबालावबोध		१८१९	९	,, दानसौभाग्यगणि
५१९	६८३३(१०)	षष्टिसंवत्सरफलम्		१८५२	५०–५५	
५२०	४८९९	स्त्रीजातक	श्यामल	१७९७	१०	
५२१	५७९१	,,	यवनजातकान्तर्गत	१८९५	११	लि. व्रजवासी सिल्लुः, काश्याम्
५२२	४७६३	स्त्रीजातकपद्धति	,,	१८५८	१२	,, रावल जीवा सुत अंबाराम
५२३	६७४८	स्त्रीजातक (कुण्डलीफल)		१९वीं श.	१	
५२४	४५२५	स्वप्नाध्याय	प्रस्तावरत्नाकरोक्त	१८वीं श.	३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२५	४६५५	स्वप्नाध्याय		१८०८	३	लि.क. बैजनाथ
५२६	५६१४	,,		१९१६	७	लि.क. रामगोपाल
५२७	५६०६	स्वप्नाद्भुतावर्तप्रकरण	अद्भुतसागरगत	१९वीं श.	११	
५२८	४१०५	स्वरपञ्चाशिका	मिश्र नन्दराम	१८३२	३	रचनाकाल १८२२ स्थान–काम्यकवन
५२९	५३१८	,,	,,	१८६५	४	लि.क. हरदेवलाल
५३०	५३२२	,,	,,	१७१५	७	
५३१	७१२३	स्वरोदय (सटीक)	शिवप्रोक्त	२०वीं श.	४०	लि.क. नरहरिदास
५३२	४६७९	स्वरोदय शास्त्र	,,	१९वीं श.	२१	
५३३	४८६८	,,	,,	१८३३	१०	लि.क. बखतराम तिवाड़ी, देवगढ
५३४	४८९०	,,	जीवनाथ	२०वीं श.	२४	
५३५	५५१७	,, विश्वम्भरी	उमामहेश्वरसंवादगत(प्रश्नोत्तरी)	१९१६	३६	
५३६	५४३३(१)	संकेतकौमुदी	हरिनाथ		१–५४	
५३७	५८०२	,,	,,	१९वीं श.	१८	
५३८	४९९६	संज्ञातन्त्र	नीलकण्ठ	,,	२१	
५३९	५८०४	,,	,,	१८६६	२५	
५४०	६६६०	,,	,,	१९वीं श.	२०	
५४१	५१८५	,,	,,	१९१०	५४	
५४२	५५३०	,,	,,	१९वीं श.	८९	
५४३	६०४६	संज्ञातन्त्रोदाहरणम्	,,	१८२२	१०१	लि.क. काशीनाथ
५४४	५४७३	संज्ञाविवेकविवृतिः (रसालाभिधा)	नीलकण्ठसुत गोविन्द दैवज्ञ	१८६२	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४५	५५८२	संज्ञाविवेकविवृत्ति (पूर्वार्द्ध)	नीलकण्ठसुत गोविन्ददैवज्ञ	१९वीं श.	१४४	
५४६	५५८३	,, (उत्तरार्द्ध)	,,	,,	१२३	रचनाकाल १५४४
५४७	६०४९	संज्ञाविवेक टीका	,,	१८वीं श.	३६	
५४८	५७९४	सन्तानदीपिका	भावचिन्तामणिगत	१८९४	५	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
५४९	४४५२(८८)	सप्तनाड़ीचक्र		१८वीं श.	१२८वां	इसमें वर्षा सम्बन्धी योगों का वर्णन किया गया है लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य स्थान--बरणहेड़ा ग्राम
५५०	५७२७	सर्वतोभद्रचक्र		१८९७	१२	
५५१	५६७५	सर्वार्थचिन्तामणि (पूर्वार्द्ध)	श्री वेंकटेशशिष्य अप्पय (?)	१९वीं श.	४९	
५५२	५६७६	,, (उत्तरार्द्ध)	,,	१९०६	५१	
५५३	५२८८	सर्वार्थचिन्तामणि	,,	१८वीं श.	६२	
५५४	४१०८	समरसार	राम	१९वीं श.	७	*
५५५	४२७४	,,		१७९७	११	* लि.क. हरिचयन सवाई जयपुर
५५६	४६९८	,,	रामचन्द्राचार्य सोमयाजी	१९वीं श.	१०	
५५७	४८५६	,,	रामवाजपेयी	,,	१०	
५५८	५७७४	,,	रामचन्द्र	,,	१७	
५५९	६२४१	,,	,,	१८६२	७	
५६०	६३०८	,,	,,	१८वीं श.	४	
५६१	४७०३	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८९१	३२	
५६२	५८१९	,, ,,	,,	१८९३	२३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः, ८वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६३	५३८८	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८५७	३१	
५६४	६१०७	,,	,,	१८४०	४१	
५६५	७५०३	,,	,,	१९१३	३०	लि.क. व्रजवासी, आद्य पत्र त्रुटित
५६६	७८२१	साधितग्रह कुण्डली संग्रह		१९वीं श.	गुटका	
५६७	४३६४	सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण)	समुद्र	१६६४	९	लि.क. ऋषि मति कीर्ति, स्थान–नांदसमा ग्राम
५६८	४४०८	(१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय		१७८६	१७	(१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि.क. वैरागी राजपाल स्थान–पाल्हणपुर
५६९	५९६८(२)	सामुद्रिक		१९वीं श.	३–१९	
५७०	५३७३(३)	,, सटीक		१८०९	७४–९७	
५७१	४६५९	,, सार्थ	नृपति भूपति	१७०८	१३	लि.क. मिश्र रघुनाथ
५७२	७५१४	सारमञ्जरी पद्धति		१८वीं श.	३३	,, जयकृष्ण
५७३	४७३४	सारसंग्रह	महादेव राजगुरु राजगुरु	१८८४	१२	,, गुमानसागर, र.का. १७१८, स्थान–भुजपत्तन
५७४	६०१२	सारावली	कल्याण वर्मा	१८वीं श.	११८	
५७५	५३१३	सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपत्राणि		१९वीं श.	१४–३९	
५७६	५६२२	सिद्धान्ततत्त्व	त्रिविक्रमाचार्य	१८९५	७	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
५७७	५०४३	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९वीं श.	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७८	६२२६	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१८२२	५५	
५७६	५८०१	,,	,,	१७वीं श.	७६	
५८०	५२६१	सिद्धान्तशिरोमणि	भास्कराचार्य	१८२८	३३	कुम्भेर क्षेत्रे लिखितम्
५८१	५२६२	,,	,,	१६वीं श.	३०	
५८२	५३३७	,,	,,	१८७७	५५	
५८३	५६६६	सिद्धान्तशिरोमणि मरीचि	श्री रंगनाथ	१७वीं श.	१८३	
५८४	५६२६	सिद्धान्तशिरोमणि वार्तिक (पूर्वार्द्ध)	भास्कराचार्य	१६वीं श.	८१	
५८५	५६३०	,, (उत्तरार्द्ध)	,,	,,	५०	रचनाकाल–शाके १५४३
५८६	५७८७	सिद्धान्तशिरोमणि वासनाभाष्य	,,	१८८२	१७६	लि. स्था० कलकत्ता
५८७	४७३३	सिद्धान्तसुन्दर	ज्ञानराज	१८४३	३१	लि क. हरिसुख ब्राह्मण प्रथम आठ पत्र अप्राप्त
५८८	५५४६	सुदर्शनचक्रम्		१६वीं श.	७	लि.क. रामनारायण
२८६	५७५०	सुश्लोकशतक	मिट्ठन शुक्ल	१६०३	२	आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं
५६०	४४५२(८७)	सूतिकाज्ञान		१८वीं श.	१२६–१२७	
५६१	५२५६	सूर्यचंद्रग्रहणसारिणी		१६वीं श.	५	
५६२	५६५३	सूर्यग्रहादिसाधनसिद्धान्त	दुर्गाशंकर	१८६३	६०५	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
५६३	४४५२(८)	सूर्यपुरुषचक्रादि	अज्ञात	१८वीं श.	१२वां	*
५६४	६३७४	सूर्यसिद्धान्त	मयासुर	१६२६	४७	लि.क. डालचन्द
५६५	६८६२	,,	,,	१८वीं श.	१०	,, देवसुन्दर
५६६	४५२८	,,	,,	१६वीं श.	३४	
५६७	५८७६	,,	,,	१८५५	१०	,, बालचन्द्र स्वामी, ग्वालियर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९८	४६५२	सूर्यसिद्धान्त टीका	नृसिंह दैवज्ञ	१८वीं श.	६१	
५९९	५५९२	सूर्यसिद्धान्तोदाहरणव्याख्या	विश्वनाथ दैवज्ञ	१९१२	१५०	लि.क. रामजीवन
६००	४७५७	सौरवासना	कमलाकर	१८००	४९	,, हेमराजाचार्य, सवाईजयपुर
६०१	६५७४	हस्तरेखाप्रकरण		१९वीं श.	२	
६०२	६२१०	हस्तसंजीवन		१९२३	१७	
६०३	५७८९	,,		१९वीं श.	३३	
६०४	४१८२	हायनरत्न	बलभद्र	१८३१	१०७	* लि.क. हरिप्रसाद
६०५	६८३३(४)	हायनसुन्दर		१९वीं श.	२६–३२	
६०६	४८६०	हिल्लाजदीपिका	नृसिंह	१९वीं श.	१०	
६०७	५७१८	,,	,,	१८६५	१४	
६०८	४८८५	होराप्रदीप (कर्मविपाकोक्त)	उमामहेश्वर संवाद	१९३६	११	
६०९	४७६५	होरामकरन्द	गुणाकर	१८२४	२४	
६१०	५६७४	होरारत्न	बलभद्र	१९वीं श.	४६८	रचनाकाल–१७१०
६११	४६११	त्रिपताकीचक्रादि	जातकार्णवान्तर्गत	१८२८	५	लि.क. चतुरविजयगणि,पालीनगरे
६१२	४२८५	त्रिकालज्ञानमनश्चितामणि	शिवोक्त	१९वीं श.	८	*
६१३	४२८०	त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण)	हेमप्रभ सूरि	१७७२	२३	* लि.क. धीरसुन्दर गणि
६१४	४३५४	,, (अर्घ्यकाण्ड)	,,	१७१५	२६	* आद्य दो पत्र अप्राप्त लि.क. पं. विजयसोमगणि
६१५	७०३७	,,	,,	१७७५	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. सुखविजय,शाकम्भरीनगरे
६१६	५७५४	ज्ञानप्रदीप (प्रश्नादर्श)		१९वीं श.	१६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१७	४७७३	ज्ञानप्रदीप प्रश्नाधिकार		१९वीं श.	२	
६१८	७६२४	ज्ञानप्रदीपिका		१९०९	३४	लि.क. बालमुकुन्द
६१९	४४६४	ज्ञानमंजरी (प्रश्नविषयक)	महर्षि ऋषिशर्माचार्य	१८७८	२६	लि.क. गोवर्द्धननाथ, जयपुर
६२०	५६२१	ज्ञानमंजरी	सोमनाथ (रीवां निवासी)	१९०४	१७	रींवाभिधाने नगरे चतुर्वर्णसमाकुले। तत्रावसन् सोमनाथः करोमि ज्ञानमंजरीम्॥
६२१	७१३१	क्षेत्रसमासवृत्ति (अपूर्ण)		१७वीं	३३	२५,२६,३१वां अप्राप्त
६२२	५०८८	,,		१७५३	१३	लि.क. दुर्गादास यति
६२३	४४२७	क्षेत्रसमासावचूरि	मू. सोमतिलकसूरि, अवचूरि-गुणरत्नसूरि	१६वीं	३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६२२५	छन्दःकौस्तुभ (सभाष्य)	राधादामोदरदास भा. विद्याभूषण	१९०६	२७	लि.क. बलदेव गोस्वामी
२	५६६०	छन्दःपीयूष	जगन्नाथ मिश्र	१९०९	४४	लि स्था. वृन्दावने आनन्दघट्टे
३	५५८१	छन्दोमञ्जरी	गङ्गादास	१९वीं श.	३०	
४	४४३२	वृत्तमुक्तावली	धुरन्धरमल्लारि	१८वीं	१२	*लि.क. कालिंग बम्मणभट्टात्मज वराहग्रामस्थ
५	४३००	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट	१८२१	६	लि.स्था. कर्णपुरग्राम
६	४४९४	,,	,,	१९वीं श.	१५	लि.क. लक्ष्मण, पहार
७	६९५६	,,	,,	१९२०	१०	लि.क. गुणाकर विद्यार्थी
८	४३३९	,, (सटीक)	,, टी. सोमचन्द्र	१५८२	३८	प्रति जीर्ण, दीमक खाई हुई
९	४४३३	,, ,,	टी. भास्कर शर्मा	१८१३	३६	टीका का रचनाकाल चै.शु.१ सं. १७३१
१०	४०३२	,, सबालावबोध	टी. मेरुसुन्दर	१८वीं	११	टी. गुर्ज्जर भाषा में
११	५१४१	,, सटीक त्रिपाठ		,,	२०	अपूर्ण, त्रुटक
१२	५५५८	,, सटीक	टी. श्रीकण्ठ	१९वीं श.	१५	
१३	६४४७	,, (सेतु टीका सहित)	टी. भास्कर शर्मा दायाजिभट्टसुत	१९०३	३२	अक्षवह्निहयभूमितवर्षे टी. रचना लि.क. कन्हैयाराम
१४	७४८२	,, सटीक पञ्चपाठ	टी. सोमचन्द्र	१७वीं	२०	
१५	७५१३	,, वृत्ति	वृ. समयसुन्दर सकलचन्द्रशिष्य	१७५५	३४	*
१६	४३५९	,, सटिप्पण	टी. क्षेमहंस	१७वीं	१३	पत्र जीर्ण एवं कीटविद्ध
१७	६०४३	वृत्तरत्नाकर सटिप्पण		१८वीं	६	
१८	४४९२	श्रुतबोध	कालिदास	१७६२	२	लि.क. मुरलीधर औदुम्बर,काश्याम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४४९३	श्रुतबोध	कालिदास	१८वीं	५	
२०	५१८०	,,	,,	,,	७	
२१	६९७१	,,	,,	१९११	४	
२२	६०२६	,,	,,	१९वीं	३	
२३	५२१८	,, (ज्योत्स्नाभिधटीकासहित)	टी. माधव दैवज्ञ गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र गार्ग्यवंशोद्भव	,,	१४	टीका का रचनाकाल–भूतर्क-बाणेन्दुमितेशकाब्दे १५६० शाके (१६९५ वि०)
२४	५६६३	सुवृत्ततिलक	क्षेमेन्द्र	२०वीं	२३	अनन्तराजस्य राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७४१	अनूपसंगीतरत्नाकर (द्वितीय-रागाध्यायः)	भाव भट्ट जनार्दनसूनु	१८वीं	२५६	जीर्ण प्रति *
२	४१६६	रागमाला	व्रजनाथदीक्षित पञ्चनदीय (गोकुलस्थ)	१८६४	१०	*
३	५०६४	,,		१६वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७४	कोकशास्त्र भाषार्थ सहित	कोक	१६वीं	१५	
२	५७२०	पञ्चसायक	कवि शेखर	१८वीं	३२	
३	४४२६	रतिरहस्य	कुक्कोक पण्डित	१६वीं	२८	
४	४७७५	,,	,,	१६८३	४२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०२६	अद्भुतरामायण	वाल्मीकिमुनि	१८६०	४३	लि.क. हरिलाल
२	४३७६	अध्यात्मरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक)	टी. श्रीराम वर्मा हिम्मतवर्मणः पुत्र	१६२७	१७	लि.क. व्यास घासीराम
३	४५२०	अध्यात्मरामायण सटीक त्रिपाठ	"	१८वीं श.	१७६	
४	५५८६	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकाण्ड)		१६०४	३५	
५	५५८७	,, ,, (बालकाण्ड)		,,	२४	
६	५५८८	,, ,, (सुन्दरकाण्ड)		,,	१७	
७	५५८६	,, ,, (किष्किन्धाकाण्ड)		,,	२८	
८	५५६०	,, ,, (अरण्यकाण्ड)		,,	२६	
६	५५६१	,, ,, (युद्धकाण्ड)		,,	५२	
१०	४३३१	अनर्घराघव	मुरारि	१७वीं श.	२०	
११	६६६८	,, ,, टीका	मू. मुरारि, टी. महोपाध्याय रुचिपति	१८वीं श.	४१से१८६	टी. खौग्रालकुलोद्भव वंजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि-नारायण-पद-समलंकृत महाराजाधिराज श्रीमद्भैरवसिंहदेव-प्रोत्साहित
१२	६४०२	अन्यापदेशशतक	मधुसूदन	१८वीं श.	६	लि.क. दवे विश्वेवर गोलवाल जयपुरमध्ये
१३	७५१७	अभिज्ञानशाकुन्तल	कालिदास	,,	२१	पञ्चमांकपर्यन्त
१४	४३२५	अमरुशतक सटिप्पण	श्रीशङ्कराचार्य (अमरुक)	१८६१	३६	
१५	५६६५	अमरुशतकम्	अमरुक	१८२७	६	लिखितं पंडितदेवदत्तेन नाहटा जसरूपपठनार्थम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६८१	अमरुशतक (भावचिन्तामणि व्याख्यासहित)	अमरुक, टी. चतुर्भुज मिश्र	१८६०	६२	लि.क. नैणसागर
१७	५१६८	उद्धवसन्देश	श्रीरूप गोस्वामी	१८वीं	८	खण्डित। ६ से ८ तक पत्र कीटविद्ध
१८	४३३०	ऋतुसंहार	कालिदास	१७६८	८	लि क. मुनि श्रीराघव लि.स्था. हिसार
१९	७४९९	कर्णामृत सटीक	मू. लीलाशुक, टी. चैतन्यदास	१८वीं	१८	१२वां पत्र अप्राप्त
२०	५१६७	कादम्बरी (पूर्वभाग)	बाण भट्ट	,,	१८५	प्रति सुन्दर है
२१	६१७४	,, उत्तरार्द्ध	बाण भट्ट तनय (पुलिन्द)	१८१५	८२	लि.क. लालविहारी माथुर
२२	६९२९	,, ,,	,,	१८८०	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. वैष्णव हरिदास जयपुरमध्ये
२३	६९७४	,, पूर्वखण्ड	बाण भट्ट	१८व	१५९	
२४	४२०४	किरातार्जुनीयम्	भारवि	१८११	११८	
२५	५१२५	,, सटीक	मू. भारवि, टी. मल्लिनाथ	१८२५	१३४	लि.क. चूड़ामणि सलावदनगरे
२६	६००१	,, ,,	टी. अज्ञात	१७वीं	४३	आदितः अष्टमसर्गपर्यन्त, प्रथम पत्र अप्राप्त
२७	६३१३	,, ,,	,,	,,	१३	पञ्चदशसर्गपर्यन्त
२८	६७९१	,, सावचूरि	भारवि	१८वीं	५४	आद्य ८ पत्र अप्राप्त
२९	६९८२	,, मूल	,,	१७७१	९०	लि.क. 'साकवाटा (सागवाड़ा?) ग्रामस्थितेन रणावस्वौरस वसदादसात्मजेन देवकृष्णेन-लिखितमिदम्, लवणपुरे'
३०	४३६५	कुमारविहारशतक	रामचन्द्र	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४३९७	कुमारसम्भव सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१६८४ १७५४	५०	लि.क. उदयनिधान मुनि लि.स्था. योधपुर, आदि के २ प्रत्र अप्राप्त, सप्तम सर्गपर्यन्त
३२	७५८६	,,	,,	१८३१	६६	लि.क. राधाकृष्ण, लि.स्था.कृष्णगढ़ १०वाँ पत्र अप्राप्त
३३	४१९७(१)	,, मूल	कालिदास	१८४२	५४	सप्तम सर्ग पर्यन्त, लि क. पुरुषोत्तम आचार्य
३४	६००५	,, ,,	,,	१७वीं श.	३८	सप्तमसर्गपर्यन्त, ३७वाँ पत्र अप्राप्त
३५	६८७०	,, सवृत्तिक	,,	१८वीं श.	७०	सप्तसर्गात्मक
३६	५५१०	,, सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१७१२	१११	
३७	४१६३	,, अष्टम सर्ग	कालिदास	१६१४	५	लि.क. अलवेश्वर नागर ब्राह्मण
३८	४४८५	,, अष्टमसर्गपर्यन्त	,,	१८६१	४६	लि.क. व्यास रतनेश्वर लि.स्था. जयपुर
३९	७००१	,, सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१८वीं श.	१३३	षष्टसर्ग के ७४वें श्लोकपर्यन्त
४०	५१०७	,, ,,	मू. कालिदास, टी. परमहंस परिव्राजकाचार्य सरस्वतीतीर्थ	१७वीं श.	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, प्रथम सर्ग के छठे श्लोक से पञ्चमसर्ग के २०वें श्लोक तक टीका है
४१	७७९४	कृष्णगणोद्देशदीपिका		१९वीं श.	६	
४२	५२७१	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१७५९	२८	लि.क. धर्मेश्वर अम्बावतीवास्तव्य
४३	४३३८	,,	,,	१८वीं श.	३०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	५९९८	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१६वीं श.	६	जीर्ण और प्राचीन प्रति
४५	४२७६	खण्डप्रशस्तिवृत्ति	वृत्तिकार गुणविनय	१८वीं श.	२०	
४६	५०६०	गीतगोविन्द	जयदेव	१९वीं श.	३४	
४७	५२०५(१६)	,,	,,	१८वीं श.	६६सेद६	
४८	६०६०	,, (सटीक त्रिपाठ)	,, टी. चैतन्यदास	१९वीं श.	४६	
४९	६७३४	,,	जयदेव	१८१८	३४	
५०	६०६८	,, सटीक	मू. ,, टी. चैतन्यदास	१८७७	५१	वालबोधिनी टीका, लि. मथुरामध्ये
५१	६७८६	,,	जयदेव	१९वीं श.	६५	१ २,११,१२,१३,१४.६१,६२ ६३ वाँ पत्र अप्राप्त
५२	६८५७	,,	,,	,,	७२	अपूर्ण, प्रथम पत्र शोभन
५३	७६२८	,,	,,	१८वीं श.	१०	
५४	७७५१	,, सार्थ, पदसंग्रह	,,	१६८३	१७७	गुटके के अंतमें सूरदास, हरदास परमानन्ददास, कृष्णजीवनी, लच्छीराम आदिके पद व परशु-राम कविके दोहे तथा तुलसी बीजमंत्रादि लिखे हुए हैं।
५५	७७५५	,,	,,	१९वीं श.	५७	
५६	५१५७	,, सटीक	जयदेव, टी. शेष कमलाकर	१८३०	९२	साहित्यरत्नमालाख्या टीका लि.क. हरिचंद मथेन (मथेरी) रूप नगरमध्ये
५७	६९८०	गोवर्द्धनसप्तशती सटीक	मू. गोवर्द्धन, टी. अनन्तपण्डित	१८१२	३०५	टीका नाम'व्यङ्ग्यार्थसदायन'है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	४४८९	घटखर्पर	कालिदास	१८०५	२	लि.क. भवानीशङ्कुरात्मज उदयशङ्कर
५९	५१६९	,,	,,	१८वीं श.	४	
६०	६३०६	,, सटीक	मू. ,, टी. अज्ञात	१८१६	६	
६१	५६४५	चौरपञ्चाशिका	चौर कवि	१८वीं श.	३	
६२	६९२८	जयवंशमहाकाव्य	सीताराम पर्वणीकर	१९४१	१३३	जयपुर के इतिहास से सम्बद्ध काव्य
६३	७७९३	दुर्जनमुखचपेटिका	रामाश्रम	१९वीं श.	४	
६४	४४०१	द्रौपदीवस्त्रदानप्रबन्ध	गोवर्द्धन	१८१४	८	
६५	५९०२	धर्म्मशर्म्माभ्युदय	हरिश्चन्द्र (आर्द्रदेव कायस्थसुत)	१८२३	३९	
६६	५८७७	नलोदयकाव्य	कालिदास	१८५७	२०	चतुर्थाश्वासपर्यन्त
६७	४०९२	नलोदयटीका	मू. ,, टी. मनोरथ कवि	१८वीं श.	३८	विबुधचन्द्रिका टीका
६८	७४५८	,,	मू. ,, टी. कविशेखर केशव	१८३५	३२	साहित्यदीपिकानाम्नी विदुषा वषतरामेण लिपीकृतम्
६९	६१६३	,, सटीक त्रिपाठ	मू. ,, केशव नृसिंहाश्रम-कृत टीका सहित	१८५५	४८	लिखितं भरतपुरमध्ये तृतीयोच्छ्वास के अन्त में कर्ता केशव लिखा है
७०	५९४५	नेमिदूतम् (विक्रमकाव्यम्)	विक्रम	१७वीं श.	५	कालिदासकृत मेघदूत काव्य के श्लोकों के अन्त्यपादपूर्तियुक्त
७१	५१६२	नैषधीयचरित	श्रीहर्ष	१८वीं श.	२२०	अन्त्य पत्र अप्राप्त
७२	७०४२	,,	श्रीहर्ष	,,	६९से१९०	पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक से नवमसर्गान्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३	६२९१	नैषधीयचरित टीका (पञ्चमसर्ग)	टी. विद्यारण्य योगी	१८वीं श.	१९	
७४	४३८८	नृसिंहचम्पू	केशव भट्ट	१९वीं श.	१५	
७५	५१५८	प्रसन्नराघव	जयदेव	१८१५	७३	लि.क. जोशी रघुनाथ, जयपुर सवाईमाधोसिंहजीराज्ये
७६	५३६४	,,	,,	१८५०	३८	लि.क. चतुर्भुज मिश्र
७७	७२९८	परिशिष्टपर्व (स्थविरावली-चरित्र)	हेमचन्द्र	१८वीं श.	१२०	
७८	७२१९	पाण्डवचरित्र	देवप्रभ सूरि	१६४१	२४१	लि.क. राव श्री दुर्गभाणजी विजयराज्ये, रामपुरामध्ये
७९	५९४२	ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरित्र	हेमचन्द्र	१६६९	१३	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रान्तर्गत। लि.क. पं० विद्याकीर्ति-पुण्यतिलकशिष्य
८०	७७८६	भट्टिकाव्य (तृतीयसर्गपर्यन्त)		१९वीं श.	८	
८१	५१६०	भामिनीविलास	जगन्नाथ पण्डितराज	१८११	३६	अति सुन्दर प्रति
८२	५२४०	भावशतक	नागराज टाकवंशीय	१८वीं श.	६	प्रथम पत्ररहित
८३	६६५३	,,	,,	१९वीं श.	१५	
८४	७१३५	मधुकेलिवल्ली	गोवर्द्धन	१९वीं श.	३७	पत्र ३ से १० अप्राप्त
८५	७०२२	महाभारत	श्रीवेदव्यास	१८३७	१७१७	लि.क. हरिदत्तनागर सावरमध्ये
८६	६८१०	,, आदिपर्व	,,	१९वीं श.	२१५	अपूर्ण, खाण्डववनदाहपर्यन्त
८७	७४९५	,, ,,	,,	१७वीं श.	३५९	
८८	७८३२	,, ,,	,,	१७७३	३७१	लि.क. हीरानन्द औदीच्यजातीय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	६२४४	महाभारत सभापर्व	श्रीवेदव्यास	१६९४	१४२	लि.क. गोवर्धन
९०	६०६७	,, ,,	,,	१८१०	९९	लि.क. मनोहरदास
९१	६१८५	,, ,,	,,	१८वीं श.	१६	
९२	६९११	महाभारत सभापर्व	,,	१६४५	१५१	लि.क. हरिदास व्यास गागात्मज मांडलमध्ये
९३	७४९४	,, ,,	,,	१६वीं श.	६२	
९४	६१८६	,, मौशलपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं श.	१	
९५	५४७५	,, ऐषिक, आश्रमवासिक, मौशलपर्व	श्रीवेदव्यास	,,	ऐषिक ९ आश्रम ३५ मौशल १२	
९६	७४५८	,, मौशलपर्व	,,	१६वीं श.	१३	
९७	६१८८	,, आश्रमवासिकपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं श.	१	
९८	६१८९	,, सौप्तिकपर्व सटीक	,,	,,	१	
९९	६४७०	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	,,	१५	
१००	७१२०	,, ,,	,,	१८२९	३२	रायचन्द्र ब्राह्मण को शक्तिसिंह-सुत भोपतिसिंह द्वारा प्रदत्त प्रति
१०१	६१८७	,, आरण्यक पर्व सटीक	मू. ,, टी. नीलकंठ	१८वीं श.	३९	अन्त में लिखित 'जयश्री चतुर्भुज-रायजी', स्थान-सावर
१०२	५४९८	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	,,	३४७	
१०३	६१९०	,, विराटपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	,,	९	
१०४	६१९१	,, उद्योगपर्व ,,	,,	,,	३५	
१०५	७४५३	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	१५३१	१७६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	५४८१	महाभारत कर्णपर्व	श्रीवेदव्यास	१८२८	२२५	लि.क. विद्याधर गुर्जरगौड़ पंचोली लिखायित भोपालसिंह शक्तावत, ३रा पत्र अप्राप्त
१०७	६१९२	,, कर्णपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं	६	
१०८	६४७१	,, ,, मूल	श्रीवेदव्यास	१७६३	११६	
१०९	५४७७	,, भीष्मपर्व ,,	,,	१९वीं	३१९	२४वाँ पत्र अप्राप्त
११०	७४९३	,, ,,	,,	१५वीं	१५४	पत्र ५९ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक सं० १७५८ में लिखित, शेष १५वीं शती के हैं
१११	५५०१	,, द्रोणपर्व	,,	१९वीं	५५१	
११२	५४९२	,, विशोकपर्व	,,	१८२९	१२	
११३	५१९५	,, आश्वमेधिकपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं	१२	
११४	६१९३	,, शान्तिपर्व राजधर्म सटीक	,,	,,	१९	
११५	६१९४	,, ,, आपद्धर्म ,,	,,	,,	६	
११६	६८९७	,, ,, राजधर्म	श्रीवेदव्यास	१९वीं	११०	लि.क. साधु निरंजनी उत्तमराम
११७	७१२१	,, स्त्रीपर्व	,,	१८२९	३५	लि.स्था. सावर
११८	६१९६	,, मोक्षपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं (?)	८४	
११९	७४५२	,, हरिवंश	श्रीवेदव्यास	१६३०	७०९	
१२०	६७००	महारामायण सटीक त्रिपाठ		१८वीं	१०९	त्रुटित
१२१	६५८८	महारामायणान्तर्गत (सीतारामांघ्रिलक्षणानुवर्णन)		१९वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२२	५६७३	महारासोत्सव	हनुमत्संहितान्तर्गत	१८३६	१८	भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी रासलीला वर्णनपरक
१२३	६२३६	,,	,,	१८वीं	१४	,,
१२४	५१६१	मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक)	रविदास	,,	१७	श्रीद्वारकापतेःप्रसादार्थ-रचितमिदन्नाटकम्
१२५	४३६१	मुद्राराक्षस सटीक त्रिपाठ	मू. विशाखदत्त, टी. ढुंढ़ियज्वा	१६वीं	८०	
१२६	६६०६	मूलरामायण	वाल्मीकि	१७६७	१३	
१२७	५०६७	मेघदूत	कालिदास	१६७४	१८	लि. स्था. जोधपुर, व्यास माधव-सुत परमानन्द पठनार्थम्
१२८	५१६३	,,	,,	१६वीं	२ से १७	प्रथम पत्र रहित, लि.क. हरिकृष्ण
१२६	५७०६	,,	,,	१८६४	२१	
१३०	६१२३	,,	,,	१८वीं	११	लि.क. मुनि विनीतसागर भाव-सागरशिष्य सूरतमध्येलिखितं
१३१	६२४८	,,	,,	,,	१८	
१३२	६१३७	,, टीका		,,	२२	लि.क. मुनिवीरविजय संघ-विजयगणिशिष्य
१३३	७२३५	,, वृत्ति		१६८३	४१	
१३४	४३८६	,, सटीक		१८०१	२७	लि.क. चतुरविजय गणि लि. स्था. श्री कर्णपुर
१३५	४३६०	,,	टी. धनेश्वर	१७६३	२६	लि.क. श्री दर्याव
१३६	५१५६	,, ,	टी. पूर्णानन्द यतीन्द्र	१७वीं	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३७	५९२५	मेघदूत सटीक	मू. कालिदास, टी. अज्ञात	१७वीं	३०	
१३८	६०५३	,,	,,	१९वीं	२४	
१३९	६१९९	,,	,,	,,	३९	
१४०	६८६६	,,	,,	१७५२	३१	लि.क. मुनि लालचंद पाटलिपुत्र पत्तने
१४१	५९४१	,, सावचूरि त्रिपाठ		१७८९	२४	लि.क. फतेविजय गणि रंगविजय-शिष्य, बिलाड़ास्थाने लिखितम्
१४२	६००३	,, ,, पंचपाठ		१६वीं	६	विशिष्ट प्रति
१४३	७२९९	,, सावचूरि	अवचूरिकर्त्ता श्री लक्ष्मीनिवास	१८०७	२२	लि.क. अमरहंसगणि कल्याण-हंसगणिशिष्य, विशिष्ट प्रति
१४४	५१८१	,, सटिप्पण		१७वीं	१६	
१४५	६६९३	मोहमुद्‌गर	श्री शङ्कराचार्य	१७४३	३	लि.क. राघव शर्मा
१४६	५७५९	रघुनाथार्यारत्नमाला	महामुद्‌गल भट्ट	१९१२	५	लि.क. ब्रजवासी अलवरमध्ये
१४७	४१९८	रघुवंश	कालिदास	१८४९	१४२	लि क. पुरुषोत्तम आचार्य स्था. जयनगर
१४८	५१२४	,,	,,	१८३९	११६	लि.क. लाला मयाराम कृपाराम-सुत। लि. स्था. हिडिम्बानगर यति सुखानन्दपठनार्थं
१४९	६२११	,,	,,	१८४५	१२२	आरम्भ के कुछ पत्रों में टिप्पणियां हैं।
१५०	६५९१	,,	,,	१८९८	८७	लि.क. मनीराम पण्डित कश्मीरनगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	६७८९	रघुवंश	श्री कालिदास	१९वीं	८३	द्वादशसर्गपर्यन्त
१५२	६८४७	,,	,,	,,	५	प्रथम सर्ग मात्र
१५३	६८६९	,,	,,	,,	७४	
१५४	७०५२	,,	,,	१६३३	११६	पत्र १ से ६ अप्राप्त। लि.क. गोपाल व्यास, श्री रङ्गस्यात्मज नरसिंहदास, मान्धातुःपुरमध्ये, श्रीमदकबर पातसाहिराज्ये
१५५		,, सटीक (सुगमान्वयबोधिका टीका)	टी. सुमतिविजय	१९०१	१९९ से ३४७	सर्ग १२वें से १९ तक लि.क. बिरधीचंद बीकानेरमध्ये
१५६	५४९९	रघुवंश सटीक	टी. मल्लिनाथ	१८वीं	२२१	पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त
१५७	६७९२	,,	,,	१७वीं	१४२	चतुर्दशसर्ग के ७२वें श्लोकपर्यंत
१५८	६८१४	,,	टी. समयसुन्दर	१९वीं	९१	नवम सर्ग पर्यन्त
१५९	७३०२	,,	टी. धर्ममेरु गणि	१८३५	२०३	
१६०	५४९१	,, सटिप्पण पाठान्तरसहित		१८वीं	३८ से १८२	८१वां पत्र अप्राप्त
१६१	६९७९	,, सटिप्पण		१५४७	१०९	लि.क. वाचक तिहुणकीर्ति चारुचंद्र शिष्य श्री मरुस्थलदेशे शुद्धदन्ती श्रीश्रीनगरे सातलविजयराज्ये मंत्रीश्वर बणवीर दूला श्रीचैत्रगच्छे
१६२	४३२९	,, साक्चूरि पंचपाठ		१६२६	११४	लि क. वीरहंस, आद्यपत्र त्रुटित
१६३	७०८३	राधाकृष्ण प्रेमसम्पुट काव्य		१८वीं	१७	
१६४	७५८५	राधामाधवलीला	राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमणशिष्य नवनन्दशर्मासुत	२०वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	५२७६	रामकृष्ण काव्य		१९वीं श.	२	
१६६	५६५७	,, सटीक	सूर्यकवि	१९२३	२९	लि.क. घनश्याम व्यास पाराशर सवाईजयपुरमध्ये
१६७	५६८४	रामकृष्णकाव्य सटीक त्रिपाठ	,,	१९१९	१८	
१६८	५९०६	,, सटीक	,,	१६वीं श.	९	अव्ययदीपिकानाम्नी स्वोपज्ञ टीका
१६९	५९०७	,,	,,	१७वीं श.	७	लिपिकार ने भूल से सम्भवतः टीका का नाम 'अनूपदीपिका' लिख दिया है
१७०	६२७३	रामरास क्रीड़न (सुदर्शनसंहितान्तर्गत)		२०वीं श.	२४	
१७१	४४००	रामहनुमन्नाटक		१७वीं श.	८	लि.क. हर्षहंसमुनि
१७२	७८३३	रामानुजचरित्र (प्रपन्नामृताभिधान काव्य)		१८३२	१४६	लि.क. जोशी रघुनाथ सवाईजयपुरमध्ये
१७३	७०२०	रामायण	वाल्मीकि	१७९९	८३३	
१७४	५४७१	,, बालकाण्ड	,,	१८वीं श.	६०	
१७५	५५१४	,, ,, (मूलरामायण मात्र)	,,	,,	१५	
१७६	४२५०	,, ,,	,,	,,	२०	आद्य पत्र सचित्र
१७७	५६६७	,, ,,	,,	,,	१२३	आद्यन्त शोभन
१७८	६२६१	,, ,,	,,	१८६०	७४	
१७९	७०२५	,, ,,	,,	१८वीं श.	६३	,,

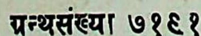
क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८०	६१४२	रामायण बालकाण्ड	वाल्मीकि	१९ वीं	२०३	तिलकव्याख्यायुक्त
१८१	६५००	,, ,,	,,	,,	१५५	,,
१८२	५६६९	रामायण अयोध्याकाण्ड	,,	१८व	२२५	
१८३	७०२६	,, ,,	वाल्मीकिमुनि	१८०८	११५	
१८४	६४९९	,, ,,	,,	१९वीं	३३०	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८५	५४४७	,, ,,	,,	१८वीं	२३१	अपूर्ण
१८६	६१४४	,, अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड	मू. वाल्मीकि, टी. महेश्वर	१९वीं	३४+२६	दोनों काण्ड एक ही जिल्द में हैं
१८७	५६७०	,, आरण्यकाण्ड	वाल्मीकि	१८वीं	१२३	
१८८	६१४३	,, ,,	,,	१९वीं	१७८	तिलकव्याख्या सहित
१८९	६५०१	,, ,,	,,	,,	११७	,,
१९०	५०४२	,, किष्किन्धाकाण्ड	,,	१७६२	७९	पत्र ६, ६९वां अप्राप्त, पत्र २६ से ८० तक प्राय: त्रुटित, प्रति जीर्णशीर्ण, लि.स्था. तुंगानगर
१९१	५६६८	,, ,,	,,	१८वीं	२७	आद्यन्तपत्र शोभन
१९२	६०१८	,, ,,	,,	१८६६	१२२	
१९३	६२६०	,, ,,	,,	१९वीं	१२१	प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भीगे हुए हैं
१९४	६५०२	,, ,,	,,	,,	१५२	तिलकव्याख्या सहित
१९५	६२०४	,, सुन्दरकाण्ड	,,	,,	१००	
१९६	६०१७	,, ,,	,,	१७६६	१३७	भीकाजीलक्ष्मणस्येदं पुस्तकम्
१९७	६१८४	,, ,,	,,	१८वीं	१२८	पत्र सं० ११६ तक पत्र प्राचीन हैं और १८वीं श. के प्रतीत होते हैं, सं० ११७ से १२८ तक नये पत्र हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९८	५६७१	रामायण युद्धकाण्ड	वाल्मीकि मुनि	१८वीं श.	२८८	
१९९	६०१९	रामायण युद्धकाण्ड	,,	,,	२८६	
२००	७८०७	,, ,,	,,	,,	१९६	
२०१	५६७२	,, उत्तरकाण्ड	,,	,,	१९६	अमृतसरे लिखितम्
२०२	६०२०	,, ,,	,,	१८६७	१८६	लि.क. लक्ष्मण
२०३	४५२१	रामायणसार	श्रीअग्निवेशमुनि	१९वीं श.	१२	
२०४	५३६६	राक्षसकाव्य सटीक त्रिपाठ		१८वीं श.	६	विद्वज्जनविनोदिनी टीका प्रति सुन्दर है
२०५	५९६२	,,	टी. सूरदेव भट्ट गोपीनाथसुत	,,	२	अपूर्ण
२०६	६००६	वासवदत्ता	सुबन्धु	१७५३	६९	गोकुलचंद्र गोस्वामिना लिपीकृतम्
२०७	५३०२	विदग्धमाधव		१७५८	१००	लि.क. हृदयराम कायस्थ
२०८	५२३०	विप्रमुखचपेटासस्तबक		९ वीं श.	२९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०९	६०६२	विश्वगुणादर्शचम्पू	वेंकटाचार्ययाजी काञ्चीनगर–वास्तव्य	१९१८	६०	
२१०	४३३७	वेणीसंहार	नारायण भट्ट	१७वीं श.	५४	
२११	६७१७	शतश्लोकी रामायण	अग्निवेश्यमुनि	२०वीं श.	११	लि.क. गोपीनाथ
२१२	५९१२	शत्रुञ्जय माहात्म्य	धनेश्वर	१५११	१८५	आशापल्ली में लिखित
२१३	७२५३	,,	,,	१६७१	२२५	
२१४	७०४०	शिशुपालवधम्	माघकवि	१६८३	१३८	आद्य २० पत्र अप्राप्त
२१५	६००९	शिशुपालवध टीका	टी. वल्लभ (आनन्ददेवायनि)	१८वीं श.	२४३	प्रति सुन्दर है
२१६	७०८७	,, सटिप्पण	माघ वणिक् (?)	१५५२	१२८	* विशिष्टतम प्रति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१७	७६६०	शिशुपालबध टीका	टी. मल्लिनाथ	१८वीं	१३१	नवमसर्गान्त, दो लिपियां मिल गई हैं
२१८	५१११	,, सटीक	,,	,,	३३	
२१९	७८०६	, ,,	,,	,,	१२	प्रथम सर्ग मात्र
२२०	६५६८	शृङ्गारतिलक	कालिदास	१९वीं	२	
२२१	६१७६	शृङ्गारमाला	सुखलाल	,,	७	रचनाकाल १८०१
२२२	४२९७	शृङ्गारवैराग्यमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	१७वीं	६	
२२३	५३०३	संवित्प्रकाश	गोविन्द कवीश्वर	१९२२	२५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२२४	४१२६	सप्तशती (आर्यावृत्तबद्धा)	गोवर्द्धन	१८०७	५३	लि.क. जोसी परसराम
२२५	६०६३	सुन्दरमणि सन्दर्भ	मधुराचार्य	१७७९	४०	
२२६	४७१५	सूर्यशतक	मयूर कवि	१९वीं	१६	
२२७	५९५४	हंसदूत सटीक	रूप गोस्वामी	,,	२४	
२२८	५१६६	हनुमन्नाटक सटीक	टी. मोहनदास मिश्र, कमलापति-माथुरचतुर्वेदसुत	१८५९	१११	लि.क. पुजारी राघोदास
२२९	५५५३	,, मूल		१८वीं	४०	३९वां पत्र अप्राप्त
२३०	७५०५	हरिलीला सटीक (भागवतानुक्रमणिका)	मू. बोपदेव मधुसूदन	१७९२	३६	३५वां पत्र अप्राप्त
२३१	६१९७	हरिवंश टीका	टी. नीलकंठ	१८वीं	५३	भावार्थप्रकाशाभिधान व्याख्यान
२३२	६९९९	हरिविलास प्रथम सर्ग	लोलिम्बराज	,,	४	
२३३	५९४३	त्रिषष्टिशलाका-पुरुष-चरित्र (परिशिष्ट पर्व)	हेमचन्द्राचार्य	१४८६	७०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६११३	अलङ्कारकौस्तुभ सटीक	मू. लक्ष्मीधर, टी. विश्वेश्वर	१९वीं	१२५	
२	४३९९	अलङ्कारचन्द्रिका(कुवलयानन्दटीका)	वैद्यनाथ	,,	१२३	
३	७७८३	,,	,,	१९०२	१५७	
४	५९८३	काव्यकल्पलतावृत्ति (कवि शिक्षा)	अमरचंद्र	१६४८	१०२	सेरपुरामध्ये लिखितम्
५	५९९९	,,	,,	१७वीं	१२०	रायद्धनपुरे लिखितम् लि.क. श्रीहर्षसोमगणि
६	५२७५	काव्यचंद्रिका (समस्यापूरणोपाय)	न्यायवागीश भट्टाचार्य	१८वीं	९	
७	५८७९	,,	,,	१८११	११	
८	६००७	काव्यप्रकाश श्लोकार्थदीपिका	गोविन्द ठक्कुर	१६५६	२५	
९	५९५५	कुवलयानन्द	अप्पय्य दीक्षित	१८९५	४८	लि.क. गोस्वामी नंदात्मजबलदेव
१०	६२४६	,,	,,	१८६७	४६	लि.क. केशवराम
११	४७०८	कुवलयानन्दकारिका		१८१५	१८	लि.क. लक्ष्मीचंद ब्राह्मण
१२	५१४०	कुवलयानन्द (अलंकारचंद्रिका)		१८वीं	२१ से ५९	
१३	६०७३	चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)	मू. जयदेव, टी. प्रद्योत्तम भट्टाचार्य	१८९९	३९	लि.क. सालगराम
१४	६१६४	रसगङ्गाधर	जगन्नाथ पण्डितराज	१८वीं	२७९	किंचिदपूर्ण
१५	६१२४	रसचंद्रिका	विश्वेश्वर लक्ष्मीधरपुत्र	१८३३	३६	
१६	६३०५	रसतरङ्गिणी	भानुदत्त	१९३१	५१	लि.क. चुन्नीलाल
१७	७७८०	,,	,,	१९वीं	३९	यह पुस्तक गुजरात पाटण वास्तव्य राव कान्हजी उमेद-सिंहजी ने अपने पढ़ने के लिये जोधपुर में लिखाई
१८	७७८१	रसतरङ्गिणीनौका टीका	जड्युपनामक गङ्गाराम कवि	१९०२	१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२७	रसदीर्घिका	विद्याराम	१८वीं	४८	र.का. सं. १७०६, लि.स्था. कोटा
२०	६२९४	रसमञ्जरी	भानुदत्त मिश्र	१९०४	२४	लिखितं रामचरणेन
२१	६३१४	,,	,,	१८५३	३२	
२२	६४०४	,,	,,	१७०५	५	लि.क. मेघराज ऋषि
२३	६६३१	,,	,,	१९वीं	१७	
२४	६४६८	रसमञ्जरी टीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	मू. भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित त्र्यम्बकपण्डितात्मज	१९०९ (?)	४९	काशिराज श्रीचंद्रभानु-कुतूहलार्थं निर्मित
२५	७५००	रसमञ्जरी सटीक	मू. भानु कवि, टी. शेषचिंतामणि	१६२१	२४	पत्र १–२ अप्राप्त
२६	७७८२	,, रसिकरञ्जिनी टीका	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वीं	७२	
२७	६९९७	,, सटिप्पण	भानु कवि	,,	४४	अपूर्ण
२८	७५०७	रसमञ्जरीप्रकाशस्वोपज्ञ टीकासहित	नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक शिव भट्टसुत	१८३८	४२	लि.स्था. कृष्णगढ़ व्यास मोतीराम पठनार्थम्
२९	७७८४	रसमञ्जरीव्याख्या व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	अनन्त पण्डित त्र्यम्बकात्मज	१९०२	१७४	लि क. साधु प्रभुदास बारहठ पंच कान्हजी उमेदसिंहजी पाटणवासी वाचनार्थं जोधपुरे लिखितम्
३०	६२६३	रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वीं	३९	
३१	६००२	वाग्भटालंकार टीका		१७वीं	१९	
३२	६८७२	वाग्भटालंकार (पञ्चपाठ) पदभंजिका व्याख्या	मू० वाग्भट	,,	२०	
३३	७१९१	वाग्भटालंकारसावचूरि	,,	१६वीं	८	



ग्रन्थसंख्या ७१६१

वाग्भटालङ्कार (सटीक)

(पन्द्रहवीं शताब्दीमें लिखित पंचपाठ पुस्तक)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	४३०६	वाग्भटालंकारवृत्ति		१६वीं	१५	२,६,७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं
३५	६६४५	विदग्धमुखमण्डन	धर्मदास	१६५७	२८	
३६	६६४६	"	"	१८१२	२४	सूर्याष्टमहीभिर्युते विक्रमे
३७	७६८७	"	"	१८४२	३६	लि.क. राधाकृष्ण गुरजी शिवरामसुत
३८	७६६२	" सटिप्पण	"	१६८२	१५	लि.क. गङ्गदास हीरानन्द-सूरीश्वर शिष्य पल्लीवरपुरे (पाली—मारवाड़)
३९	६५१९	" सावचूरि	अवचूरिकर्ता अज्ञात	१८३९	४५	लि.क. शिवनाथ शिवजीरामसुत
४०	६३१०	वृत्तिवार्तिक	अप्पय्य दीक्षित	१७वीं	१६	
४१	६६९६	"	"	१८वीं	१७	
४२	५९०३	श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डन टीका)	नरहरिभट्ट हरिरल्लालनन्दनः	१६वीं	८	
४३	५३११	साहित्यरत्नाकर (प्रथम तरङ्ग)	श्रीधर्मसुधी पर्वतनाथसुत पल्लमाम्बागर्भज हारीत गोत्रज	१९वीं	१६	वाराणसी में रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५६६२	उपदेशशतक (चारुचर्याख्य)	क्षेमेन्द्र	१६३६	६	रसाग्न्यङ्कन्दुहायने लिखितं गोपरामेण शुक्लकृष्णेग्निभूतिथौ
२	७२७२	एकषष्ट्युतप्रश्नशत	जिनवल्लभ	१७४१	७	
३	४३४७	कर्पूरप्रकरसावचूरि	मू. हरिकवीश्वर टी. जिनसागर सूरि	१६वीं	२५	
४	५६४७	„	सोमचंद्र रत्नशेखरशिष्य	१५६७	२८	रचनाकाल १५०४ लि.क. संघमाणिक्यगणि लि.स्था. चम्पकनेर महानगर
५	५६५६	„	हरिमुनि वज्रसेनशिष्य	१५५८	५४	अणहिलपुरमध्ये लिखित
६	७३६५	दृष्टान्तशतक (राज. भाषार्थ सह)	तेजसिंघ गणि	१७६६	१६	लि.क. सोमचंद्रगणि लि.स्था. पत्तननगर (पाटण गुजरात)
७	७३६७	„ मूल	„ लूंकागच्छीय	१८वीं	१८	
८	७५४८	„	„ „	„	६	लि.क. कान्हजी मुनि
९	४५३२	नीतिशतक सटीक	मू. भर्तृहरि, टी. धनसार	१८२२	२५	लि.क. गंगाधर
१०	४४५२(३४)	„ सस्तबक	भर्तृहरि	१८०७	१-१३	
११	४५६५	प्रश्नोत्तरमणिमाला	श्रीशङ्कराचार्य	१८वीं	५	
१२	७३७८	प्रश्नोत्तरमाला	विमलसूरि	१७५७	१	लि.क. विनोदसागर लि.स्था. श्रीकृष्णगढ़मध्ये
१३	७४३२	प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण	देवेंद्रसूरि	१६वीं	१३८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१४	४४१५	प्रश्नोत्तरषष्टिशतक सटीक	जिनवल्लभसूरि	„	२३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५०५४	पद्यावली	विल्वमंगलश्रावित	१६७६	४५	त्रुटित
१६	५१५६	भर्तृहरिशतक (वैराग्य शृंगार)	भर्तृहरि	१६वीं	२२	अपूर्ण
१७	४४८२	रत्नकोश	वैशम्पायनोक्त	१७४६	६	
१८	४६०७(२)	लघुचाणक्य	चाणक्य	१८३७	२३-३४	
१६	४५७१	,,	,,	१८०५	४	लि.क. सामन्त ऋषि स्था. राजपुर
२०	६७५०	वृद्धचाणक्य	,,	१६वीं	१६	लि.क. बालकदास कबीरपंथी
२१	६७७२	वैराग्यशतक	भर्तृहरि	,,	६	
२२	४५६१	,, सटीक	मू. भर्तृहरि, टी. धनसार	१८६०	५१	
२३	४४५२(३६)	,, मूल		१८०७	२५ से ३६	लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि स्था. बणेडा ग्राम
२४	५४३७	शतकत्रय	भर्तृहरि	१८वीं	६२	
२५	६१२७	,,	मू. भर्तृहरि, टी. रूपचंद	,,	६३ नीतिशतक १-२० शृं.श.२०-३६ वै.श.३६-६३	
२६	७०८०	शृंगारशतक	भर्तृहरि	१७५६	२०	लि.क. किशोरदास मुरलीदास-शिष्य
२७	४४५२(३५)	,,	,,	१८०७	१३ से २५	लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि स्था. बणेडा ग्राम
२८	६६६४	सभारंजन सुभाषित		१६१४	१७	१३वां पत्र अप्राप्त लि'क. रामनारायण
२६	४५७२	सभाशृंगार		१७५१	१४	लि.क. ऋषि धनजी स्था. राजपुर नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०	५२७७	संस्कृतमंजरी	अनन्तपण्डित	१८वीं	२४	
३१	५२७९	"	"	"	४	
३२	५५२१	"	"	१९१७	६	लि.क. रामगोपाल, स्था. बूंदी
३३	६५७७	"	"	१९वीं	३	
३४	५९७७	"	"	"	३	
३५	६२५३	"	"	"	१६	
३६	६४०५	संस्कृतविधि (ज्ञानक्रिया संवाद पत्र)		१७६८	३	लि.क. पं. सुखानन्द
३७	४५७४	सिंदूरप्रकर	सोमप्रभ	१७वीं	५	
३८	६३८७	"	"	१६६४	५	लि.क. वीरसुन्दरगणि
३९	७३१९	"	"	१५वीं	५	
४०	४४०४	" सबालावबोध	मू. सोमप्रभ, टी. पाठकवर राजशील	१८५२	६१	लि.क. क्षमासौभाग्य लि.स्था. श्रीबांतानगर
४१	४४५६	" सटीक	मू. सोमप्रभ, टी. हर्षकीर्ति	१८वीं	१७	
४२	६२७६	" "	"	१८७२	४३	लि.क. ऋषि नगराज गोपाचल मध्ये
४३	७३२९	" "	मू. सोमप्रभ, टी. पाठक राजशील	१८३०	५०	लि.क. दौलतसौभाग्य श्रीबिलाड़ानगरे
४४	७२६२	" " मूल	सोमप्रभ	१७५९	२२	लि.क. लक्ष्मीचंद्र जादवनगरे
४५	४३६७	" सावचूरि	"	१७६२	१४	१३वां पत्र अप्राप्त लि.क. ऋषि भावशेखर
४६	४४१७	" "	"	१७वीं	१२	
४७	४५७०	" सस्तबक	मू. सोमप्रभ, स्त. वीरसागरगणि	१८४७	१९	लि.क. चोखाजी, बांकानेरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८	७१४९	सिन्दूरप्रकरसूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभ	१८६०	७	लि.क. प्रमाणविजय स्था. पोहकरण
४९	७४४४(१९)	,, ,,	,,	१८८६	३१०–३२४	
५०	५३५२	,, सूक्तिरत्नकोश	,,	१९०१	६	
५१	४८११	सुभाषित (प्रास्ताविक)		१८३३	१८	
५२	४४५२(१०१)	सुभाषितश्लोकाः		१८वीं	१३६वाँ	
५३	४५६६	,,		१६वीं	८	
५४	७१५३	,,		१९वीं		प्रतिलिपि योग्य, जीर्ण खरड़ा
५५	४३४९	सुभाषितसंग्रह		१४०८	२५*	लि.क. मुनिदाम शिष्य, राणपुर एक हजार से अधिक सुभाषितों का संग्रह, महत्वपूर्ण, विशिष्ट और प्राचीन प्रति
५६	७१०३	,,		१८वीं	२	
५७	४३४८	सुभाषितसूक्तावली		१६८२	२७	लि.क. विमलहर्ष भीमजी-पठनार्थम्
५८	५९८४	सुभाषितार्णव		१७३६	६१	लि.क. सांवल पण्डित
५९	६३२२	,,		१८१०	२२	
६०	७७४१(६)	सुभाषितावली		१७वीं	४३–७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	४४१४	सूक्तावली		१५वीं	३५	
६२	६३६०	सूक्तिमुक्तावली (सिंदूरप्रकरबालावबोध)		१८वीं	७६	
६३	५१३५	सूक्तिरत्नावलीव्याख्या		१६वीं	११	६२ श्लोकों की व्याख्यापर्यन्त, अपूर्ण
६४	७५६०	ज्ञानप्रकाश सस्तबक	तेजसिंघ	१८४२	४	लि.क. ऋ. मेघजी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३३२	अंबड़चरित्र	मुनिरत्नसूरि	१६४९	३१	
२	६१३२	अजापुत्रकथा	माणिक्यसुन्दर	१७१४	७	
३	७२५०	अमरसेन वज्रसेनकथा		१७६३	२१	लि.क. लक्ष्मण, जिहानाबादनगरे
४	७२७०	आदिनाथचरित्र		१८वीं	७	लि.क. रंगहर्ष, बाहड़मेर
५	७३३७	आमराजा बप्प-भट्ट-सूरि-धर्मकथा		"	३	प्रतिलिपि योग्य, अन्त में राजस्थानी भाषा में स्तवन आदि लिखे हैं। (लिपिकर्ता का नाम मिटाया हुआ है)
६	५९४४	उत्तमकुमारचरित्र		१६६७	१०	
७	४३३५	उत्तराध्ययनकथा (प्राकृत उत्तराध्ययनसूत्रगता)	पद्मसागरगणि	१७वीं	११६	रचनाकाल १६५७
८	५९९३	" "	"	१७२३	८४	पीपाड़ग्रामे,सं. १६५७ मध्ये रचित
९	७२८१	" "	"	१८५९	८२	लि.क. कुशलकल्याणगणि रचनाकाल १६५७ रचनास्थान पीपाड़ग्रामे
१०	७८५२	कालककथा	नेमिप्रभ	१६वीं	८	चित्र सं० ७
११	५९६३	कालकाचार्यकथा		१७६२	१३	
१२	७८५३	" "		१६वीं	९	चित्र सं० ५
१३	७८५४	" "		"	१ से १० तक	चित्र सं० ७
१४	७०८१	चतुर्दानशीलादिकथा (मेघनादराज्ञः)		१८वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५३७६(९)	चन्दनषष्ठिविधानकथा		१८वीं	१०७–११०	
१६	४३८७	चित्रसेन पद्मावतीकथा	बुद्धिविजय	१८५३	२३	लि.क. रामविजय गणि लि.स्था. श्रीराधनपुरनगर (गुर्जरप्रांत)
१७	७२९२	,,	राजवल्लभ पाठक	१८वीं	१३	
१८	६९२०	,, सटिप्पण	,, महिमानिधान शिष्य	१८४६	५०	लि.क. ऋषिचंद्रभाण, बीदासर-मध्ये, रचनाकाल १७२२
१९	४३९८	,, चरित्रसस्तवक	मू. राजवल्लभ, स्तबककार भक्तिविजय	१८५३	१५४	
२०	७?४५	दीपमालिकाव्याख्यान		१९वीं	६	
२१	५३७६(१०)	दुग्धरसकथा		१८वीं	११०–१११	
२२	४४३५	देवकुमारकथा		१५३४	७	विशिष्ट प्रति
२३	७३९६	धर्मदत्तकथा		१६१२	१८	मलाणाग्रामे लिखित
२४	७३६३	धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा		१७००	१४	लिखितं नन्दरवारनगरे
२५	४४३४	धर्मबुद्धिमंत्रिकथा		१६७४	६	लि.क. जयविजय गणि स्था. भाहरजा ग्राम
२६	६४०७	धर्मदत्तकथा	माणिक्यसुन्दरसूरि मेरुतुंग सूरींद्रशिष्य	१६३३	१०	
२७	६८२०	धर्मसंवाद (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत)		१७८६	१७	आद्य पत्रद्वय अप्राप्त
२८	५३७६(८)	निशल्यकथा		१८वीं	१०५–१०७	लि.क. ऊधोदास, हिंडोलीमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६१५३	पापबुद्धिमंत्रीकथा		१९वीं	९	
३०	७२१३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेव	१७५९	१३९	लि.क. दाणाऋषि समाणेनगरमध्ये
३१	५९३३	पार्श्वनाथचरित्र	भावदेवसूरि	१५०४	१४७	प्राचीन प्रति
३२	६३१८	मणिमंजीराख्यान (वाल्मीकि-रामायण बालकाण्डान्तर्गत)		१९३०	२२	
३३	४५९०	मथुरामाहात्म्य संग्रह (गोपालोत्तरतापिन्यादिगत)		१९०८	३३	
३४	६१४९	मल्लिनाथचरित्र	सकलकीर्ति	१८१३	५२	लिखापित श्रीनथमलजी खण्डेलवाल, विलाला
३५	७७७६	माधवनाटककथा		१९१५	२९	लि क. नानूराम जोशी जोधपुरमध्ये
३६	५९९४	मुनिपतिचरित्र		१९वीं	२२	लि.क. भावप्रमोद, जिनरत्नसूरि-शिष्य
३७	४३३३	युवराजऋषिचरित्र		१९६३	७	
३८	५३७६(७)	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्ति	१८वीं श.	९४,९५ १००–१०५	
३९	४४०२	रूपसेनकथा		१७वीं	२६	
४०	५३७६(४)	रोहिणीकथा गोतमोक्त		१८वीं	८०–८७	
४१	४४६०	वत्सराजकथा		१९४०	११	लि.क. पंकवर्धनशिष्य लाल-वर्धन, लि.स्था. पाडलाग्राम
४२	४४५८	वरदत्तगुणमंजरीकथा	कनककुशल	१८वीं	३	लि.स्था. मेड़ता नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३	६७९६	वैतालपञ्चविंशिका		१८वीं	६८	२५वीं कथा अपूर्ण
४४	६१८२	श्रीपालचरित्र	सकलकीर्ति	,,	२५	पत्र ११, २१ और २३वां अप्राप्त
४५	४३३४	शांतिनाथचरित्र	अजितप्रभ सूरि	१६५१	६५	
४६	५९८०	,, ,,	,,	१६५४	६२	
४७	७२७९	,, ,,	,,	१६३३	१५३	प्रथम पत्र अप्राप्त
४८	७३२२	,,	भावचंद्र (?)	१८वीं	१३३	
४९	७२६६	शालिभद्रचरित्र	धर्मकुमार	१६०५	२९	झोटापलीवासी हुम्बड़ज्ञातीय शाहादेवसंहेन श्रीगुरूणामुपदेशेन मंत्री चांपाकेत लिखितं कल्पमेरुषु, प्रथमपत्र अप्राप्त (विशिष्ट प्रति)
५०	७३८८	,,	,,	१६वीं	१७	
५१	४३३६	,, सावचूरि	,,	,,	१९	
५२	७३८३	सम्यक्त्वकौमुदी		१७०५	३२	लि.क. शिवचंद्रगणि, माणिक्यचंद्रसूरिशिष्य
५३	७३५४	,,		१४९९	३१	प्राचीन प्रति
५४	७३४२	,,		१६वीं	३७	
५५	७४३०	,,		१५वीं	४९	
५६	७०८६	,,		१८वीं	२८	अपूर्ण
५७	४३२८	सागरचन्द्रकथादि		१७वीं	१–१२	इस प्रति में तीन कथाएँ हैं पृ. १ से ३ तक (१) सागरचन्द्रकथा पृ. ३ से ६ तक (२) मङ्गलकलशकथा पृ. ६ से पृ. १२ तक (३) सुदर्शनश्रेष्ठिकथा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	६४०६	सिंहासनद्वात्रिंशतिका	बल्लालसेन	१७७५	१४६	प्रथम पत्र अप्राप्त, जीर्ण प्रति
५९	५३४४	सौभाग्यपंचमीकथा	कनककुशल विजयसेनसूरिशिष्य	१८वीं	५	रचनाकाल सं० १६५५ भूतेषुरसेन्दुवत्सरे
६०	७२६३	हरिश्चन्द्रचरित्र	भावदेवाचार्य	१६वीं	३२	
६१	६७८७	हितोपदेश	विष्णु शर्मा	१८वीं		पत्र १, २, २०, २१, २३, २४ और २७ से ३५ तक अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६०६४	अञ्जननिदान	अग्निवेश	१८८८	६७	लि.क. चतुर्भुज
२	५२६८	अग्निवेशनिदान (सटीक)	,,	१८५६	२६	स्थान–नेनवा
३	५८४२	अनुपानमञ्जरी	पीताम्बर	१९०७	११	
४	५८५४	,,	,,	१९२८	४	लि.क. लक्ष्मीनारायण
५	४१६२	,, सस्तबक	,,	१९वीं	९	लि.क. खीमचन्द
६	५८६०	अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी)	काशिनाथ	,,	३	
७	५११५	अर्कचिकित्सा	रावण	१८वीं	६३	रावण मन्दोदरीसंवाद, इसमें गर्भ-रक्षण के उपाय बतलाये गये हैं
८	५८५०	अर्कप्रकाश	,,	१८३९	३८	
९	५८५१	,,	,,	१९२६	२१	लि.क. लक्ष्मीनारायण
१०	५४९०	अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय)		१९वीं	५४	
११	५६१०	ऋतुचर्या	त्रिमल्ल	१८९५	५	लि.क. सिल्लु व्रजवासी
१२	६५१४	कल्पस्थान	वाग्भट	१७३५	१९	
१३	५७५२	कालज्ञान	शिवप्रोक्त	१९४३	१६	लि.क. रामविलास नायलावास्तव्य
१४	६८९०	,,	,,	१९०४	३६	लि.क. लक्ष्मीचन्द्र
१५	५८६८	कालज्ञानवैद्यक (सस्तबक)	,,	१८४३	४६	लि.क. ब्राह्मण चतुर्भुज
१६	४१५०	,, मूत्रपरीक्षा आदि	अनेक	१८५१	१६२	लि.क. परसराम
१७	५८५२	कूटमुद्गर (सटीक)	माधवपण्डित	१९२५	५	लि.क. भक्तावर
१८	६८७९	गणपाठचिकित्साकलिका		१८वीं	२	
१९	७५०४	गोपालविनोद	गोपालदास	,,	७२	प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त
२०	५८६२	चमत्कारचिन्तामणि	लोलिम्बराज	१९३४	९	लि.क. लक्ष्मीनारायण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	६८९४	चिकित्सामहार्णव	वंगसेन	१८११	३९०	
२२	७४९८	ज्वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामुण्ड	१७४३	५४	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३	४७८०	ज्वरप्रतीकार (ज्वरघटमहिमा)		१८०५	३	
२४	४७८२	द्रव्यगुणशतश्लोकी	त्रिमल्ल	१८वीं	६	लि.क. वैष्णव नारायणदास
२५	७६६१	,,	,,	१९५१	१६	,, रामनारायण, कृष्णगढ़
२६	६६६३	धातुरत्नमालाव्याख्या		१९वीं	१५	
२७	५२४५	नागार्जुनवैद्यक	नागार्जुन	१८वीं	६४	पत्र ८, २०, ३५, ६१ अप्राप्त
२८	७७२२(११)	नाड़ीपरीक्षा		,,	११५–११६	
२९	५४७८	निघण्टु	मदनपाल भूपति	१९०६	१२५	
३०	५८४९	निघण्ट (धन्वन्तरीय)	त्रिमल्ल	१९वीं	३३	
३१	६८१२	,,		१८७०	५१	लि.क. भागीरथराम
३२	६८८२	,,	मदनपाल	१७२५	११६	लि.क. रामचन्द्र
३३	७०३६	,,		१८वीं	४७	पत्र ४, ५, ६ अप्राप्त
३४	५६५८	पथ्यनिर्णयलंघन	वाचक दीपचन्द्र	१९वीं	१०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
३५	५८५७	पथ्यनिर्णय	,,	१९२७	२	लि.क. भक्तावर
३६	७००८	पथ्यलङ्घननिर्णय	,,	१९३७	२०	
३७	६९८७	पथ्यापथ्यविचार		१८वीं	२५	
३८	५६०४	पथ्यापथ्यविनिश्चय		१९१५	४६	
३९	५८४४	,,		१९वीं	१६	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४०	४०९६	पथ्यापथ्यविबोधक	केयदेव	१८८७	१६९	
४१	६८७१	,,	,,	१८वीं	१०३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	५८४०	बालग्रहचिकित्सा	रावण	१९वीं	२१	
४३	५८६४	,,	,,	१९२८	२१	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४४	४२००	बालतन्त्र	कल्याण	१८वीं	३८	
४५	५८४१	,,	,,	१९वीं	२३	
४६	५८६३	,,	,,	१९२८	१२	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४७	६६५७	,,	,,	१८९४	६०	लि.क. पोकरमल ब्राह्मण झालरापाटण
४८	५८३४	भावप्रकाश	भावदेव	१९वीं	२३४	
४९	६८०५	भावप्रकाश (मध्यमखण्ड)	भावसिंह	१८७२	१७९	लि.क. भागीरथ
५०	६८०९	,, ,,	,,	१९वीं	३५०	
५१	७८०८	भावप्रकाश उत्तरकाण्ड	,,	२०वीं	५७४	
५२	७०२३	मदनपालनिघण्टु	मदनपाल	१८८२	६८	लि.क. पं.मतिमंदिर, विक्रमपुरनगर
५३	५८३७	मदनविनोद (निघण्टु)	मदननृपति	१९०५	११५	
५४	६८०३	मदनविनोदनिघण्टु	मदनपाल	१९वीं	२–८१	प्रथम पत्र अप्राप्त
५५	६१२०	मधुकोश	वैद्य महामहोपाध्याय जयपारदीक्षित	१८५९	५१–९५	
५६	५८३८	माधवनिदान	माधव कवि	१८९०	११०	
५७	६७४३	,,	,,	१५६२	६८	
५८	७०२४	,,	,,	१७५३	३९	लि.क. महेश सूरि, बीकानेर
५९	५२८९	,,	,,	१७३६	१२२–१८४	
६०	६८१३	,,	,,	१८वीं	१७०	
६१	६०१३	,, सटीक	,, टी. वाचस्पति	१८७३	२३७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५६२८	माधवनिदान सटीक	टी. वाचस्पति	१९११	२२९	लि.क. भगवान विप्र
६३	६८९८	,, ,,	,,	१८७४	२१६	लि.क. रामवुल मिश्र
६४	४०९८	योगचिन्तामणीवैद्यकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति सूरि	१६६६	४७	लि.क. जगजीवन
६५	४७६६(३)	योगचिन्तामणि	हर्षकीर्ति	१७७५	१–१६८	
६६	५८४३	,,	,,	१९२०	५०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
६७	६४४१	,,	,,	१८व	४३	७वां पत्र अप्राप्त
६८	६८७३	योगचिन्तामणि सटीक	हर्षकीर्ति	१८३१	१३७	
६९	४२९०	,, गुर्जरभाषा टीकायुक्त	,,	१८९६	४६	
७०	६८१७	योगतरंगिणी		१९वीं	४–२४	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
७१	५८५९	योगशत		१९२३	६	लि.क. भक्तावर शर्मा
७२	४७७९	योगशतक		१७१२	१६	
७३	६६०३	,,		१८५६	९	
७४	५८७५	,, सबालावबोध	वैद्यनाथ	१८४२	२७	लि.क. चतुर्भुज गोपाल
७५	६३१२	योगसार (योगमालिका)		१८वीं	५	
७६	६८१८	रत्नसागर		१९वीं	२–६२	आद्य पत्र अप्राप्त
७७	६८३२	,,		१८८१	३१८	लि.क. चौधरी खूबकृष्ण
७८	७५९७	रसचिन्तामणि	अनंतदेवसूरि	१८०३		प्रथम पत्र अप्राप्त, १५५ व १५६वां पत्र भी अप्राप्त लि.क. ब्रह्मजैनसागर, नागपुर
७९	५६४३	रसमञ्जरी	शालिनाथ	१९वीं	५२	
८०	६०८७	रसमंजरी तन्त्र	,,	,,	५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८१	७६४१	रसरत्नाकर तन्त्र	नित्यनाथ	१९वीं	३७	
८२	५८५३	राजमार्तण्ड	भोजनरेश	१९४२	१६	लि.क. लक्ष्मीनारायण
८३	५५७६	रामनिदान	राम	१८वीं	१८	
८४	६८०२	रोगविनिश्चय		,,	१–६९	
८५	४१६१	व्याधिनिग्रह सस्तबक	विश्राम	१८५३	४९	
८६	५८६१	विश्ववल्लभ	मिश्र चक्रपाणि	१९२५	११	लि.क. लक्ष्मीनारायण
८७	६४५५	विश्वप्रकाश कोश	श्रीमहेश्वर	१७वीं	५५	
८८	५४७४	विषरोगपथ्यापथ्यविचार		१९वीं	३९	
८९	७३८६	वैद्यकउद्धार	राजमार्तण्ड	१६३४	१५	लि.क. शिवदास
९०	४७७६	वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	१८१६	१०	
९१	४८४४	,,	,,	१७००	१६	
९२	५२६४	,,	,,	१८७९	२७	
९३	५८३५	,,	,	१८९३	१५	लि.क. लक्ष्मीनारायण
९४	५८८०	,,	,,	१८४८	५३	लि.क. ठण्डीराम
९५	५५५९	,,	,,	१६वीं	१२	
९६	६०८१	,, सटीक	,,	१९०५	४१	पत्र १ से ३ तक अप्राप्त
९७	६२८८	वैद्यजीवन टीका	टी. हरिनाथ गोस्वामी	१९२२	५०	लि.क. मिश्र कल्याण शर्म्मा
९८	६३२६	वैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ		१८८९	५७	३२वां पत्र नहीं है
९९	४७७८	,, सस्तबक	लोलिम्बराज	१७३४	२७	लि. स्था. बगड़ी
१००	५८८१	,, ,,	,,	१९वीं	१७	
१०१	६९००	,, ,,	,,	१८६८	२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	५२७३	वैद्यरत्न	शिवानंद भट्ट	१८वीं	४४	
१०३	७८२६	वैद्यवल्लभ (सटबार्थ)	हस्तिरुचि	१७६८	२१	लि.क. राजविजयगणि विवोरा नगरे
१०४	५३०८	वैद्यविनोद	शंकर भट्ट	१८वीं	६९	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१०५	५८३६	,,	,,	१९वीं	४७	लि.क. लक्ष्मीनारायण
१०६	५८४८	,,	,,	१९०४ १९१२	८०	,, ,, गोपालमहात्मा
१०७	६६०५	,,	,,	१८५७	७४	
१०८	७८१३	,,	,,	१९वीं	२४	प्रतापसिंहसुत रामसिंहाज्ञयारचित
१०९	७८१४	,,	,,	,,	३८–११५	,,
११०	५८५८	वैद्यामृत	मोरेश्वर	१९२६	७	लि.क. भक्तावर रचनाकाल (१६०३)
१११	५८४६	शतश्लोकी (सटिप्पण)	त्रिमल्ल भट्ट	१९१२	१०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
११२	५८५५	,, ,,	बोपदेव	१९२३	७	लि.क. भक्तावर
११३	६९०१	,,	,,	१९वीं	३८	
११४	६६३२	,,		१८वीं	७	
११५	६०८०	,,	त्रिमल्ल, टी. कृष्णदत्त	१९०३	६१	पत्र १ से ४ व ६, १०, २१, २२, ३१, ३३, ३४ अप्राप्त
११६	६५८६	शतश्लोकी टीका	,,	१९वीं	१०	
११७	४३०३	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर	,,	१३१	
११८	५५६३	,,	,,	१९०६	१७३	पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अप्राप्त
११९	५८४७	,,	,,	१८९१	१०१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	६०३०	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर	१६७८	४७	राजलदेसरे लिखितं
१२१	६७९५	,,	,,	१८६४	१२७	लि.क. रूपचन्द्र
१२२	६८६०	,,	,,	१७वीं	९६	
१२३	५८२४	,,	,,	१९१०	४७१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६०८४	,, सटीक (प्रथमखंड)	,, टी. काशीराम	१९वीं	७५	
१२५	६०८५	,, ,, (द्वितीय)	,,	,	१४०	पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त
१२६	७७९५	,, (षष्ठाध्यायपर्यन्ता)	टी. आढमल्ल	,,	५७	
१२७	७०३८	,, (अपूर्ण)		,,	१२०	
१२८	५४१४(२)	शारीरनिबन्धसंग्रह		,,	१–७१	
१२९	४७८३	शोथनिदानचिकित्सा		१८वीं	३	
१३०	६६७२	सन्निपातचिकित्सा		१९वीं	११	
१३१	६३००	सन्निपातप्रकरण		,,	१२	लि.क. फतेचंद, जयपुर
१३२	५७४५	सिद्धमन्त्रप्रकाश	बोपदेव	१८वीं	२८	आद्य पत्र शोभन
१३३	४१३७	,, (सटीक)	,,	१८४५	८२	लि.क. सेठ आदित्यराम
१३४	६०८२	हिकमतप्रकाश (द्वितीयखंड)		१९वीं	५५	पत्र २१ से २३ व ३०वां अप्राप्त
१३५	६०८३	,, (तृतीयखंड)		,,	४४	
१३६	६८०१	हितोपदेश	शिव पण्डित	१८७०	६२	
१३७	५६३२	क्षेमकुतूहल	क्षेम शर्म्मा	१९वीं	६९	
१३८	७४९२	,,	,,	१८वीं	३६	
१३९	६९३८	त्रिशतिका	दास पण्डित	१८५९	१८	लि.क. देवीदत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४०	५८४५	त्रिशती	शार्ङ्गधर	१९वीं श.	१३	
१४१	६६६१	,, (सटिप्पण)	,,	१७७०	५०	लि.क. मनसाराम
१४२	६०८६	त्रिशत्श्लोकी सटीक	,,	१९वीं श.	११०	पत्र ६, १२, १३, १९, २८ से ३१, ६९, ७६, ८३, ८५ व ८६वां अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५३ (१-१५)	अंकपाटी		१८३७	१३-२९	* पाटियों के नीचे नीति विषयक "दूहा" हैं
२	४९०७(१)	अंकपाटी		,,	१८-२२	
३	४९१६(५)	अंकपाटी		१८७५		
४	४४५२(५२)	अंगफुरकणविचार	हीररतन	१८वीं	१०८वाँ	
५	५८९३	अञ्जनाचौपई (सचित्र)		१९वीं	४३	चित्र सं० ४३, प्रारम्भ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रतियों से मिलते हैं
६	६५२५	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१८६८	२४	* सं० १६८७ में रचित। लिपि-कर्ता ऋषि नोलचन्द, पीही ग्राम, ऊदावत राज्ये
७	४८१८	अंजनाचौपई	पुण्यसागर	१७०२	२०	
८	४१६४(१)	अंजनासतीरास		१९२९	१३	अन्तिम पत्र त्रुटित
९	४०४०	अंजनारास		१८४९	१७	
१०	५०९३	अंजनासतीनो रास		१८वीं	२१	
११	४०३९	अंजनासुन्दरीचौपई	भुवनकीर्ति	१९वीं	१८	अपर नाम पवनंजयप्रिया अंजनासुंदरी हनुमंत चरित्र
१२	४३१९	अंजनासुन्दरीचौपई (सचित्र)	भुवनकीर्ति	१८६१	३४	चित्र सं० ४०
१३	७०४३	अञ्जनासुन्दरीचौपई		१८वीं	१४	लि.क. आर्या हीरां
१४	७२१९	अञ्जनासुन्दरीचौपई	पुण्यसागर	१८५०		बीकानेर में लिखित
१५	६३६२	अञ्जनासुन्दरीरास		१८६५	२५	पोरबंदर में लिखित। बाई साकर पठनार्थं
१६	५२०२(१)	अकबरनामा		१८८५	४-८७	जयपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	४६२०	अकबरनामो		१६वीं	१४	
१८	४२८७ (१०)	अदीतवारकी कथा	भाव कवियण (?) गर्गगोत्रीय अग्रवाल मल्लपुत्र	१८वीं	४६–७७	
१६	५३१२	अध्यात्मगीता		१८८३	८५	अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त। पाली में लिखित
२०	७७४३(१)	अध्यात्मरामायण भाषा	राजसिंघ	१७८४	१–३२	* बाई सिरेकंवरीलिखित, सावर मध्ये
२१	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	श्रीगारियाधामध्ये लिखित
२२	५४१८(१६)	अनन्तचतुर्दशी कथा		१६वीं	१२१–१२४	
२३	४६१४(१८)	अनन्तव्रतरास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	२१२–२१८	
२४	४०३६	अनाथीसंधि	खेमो	१८वीं	६	गीत दूहाबद्ध
२५	५१०८	अब्जदीप्रश्न		२०वीं	८	अपूर्ण
२६	५४१८(३६)	अबजदीपाशावली			१–१०	जैन विनतिसहित
२७	४४५२(१६)	अभिसारिकावर्णन गीत आदि		१८वीं	१८वां	
२८	७१४१	अमरदत्त मित्रानन्दचरित्ररास	देवगुप्त चन्द्रसूरीश्वर	१७००	२८	१६०६ (?) में रचित। सारण-मध्ये ऋषि कचरा भाभण-शिष्यलिखित
२६	४३६१	अमरदत्तमित्रानन्दरास	,,	१६१७	१६	सं० १६०७ वै. कृ. ६ रवि-रचना काल
३०	५११७	अमरसेनवीरसेनचौपाई	विजयहर्ष	१८४६	२०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६६०२	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१९वीं	२२८	पत्र २,३,४,५ अप्राप्त
३२	६८३१	अमृतसागर	"	"	४६७	*
३३	५८३९	अमृतसागर	"	"	३३८	अपूर्ण
३४	४२०६	अमृतसागर	"	१८७६	२७८	
३५	७१३७	अयवंतीसुकुमाल चौपई		१९वीं	५	रचनाकाल १७४१
३६	४०४८(२)	अयवंतीसुकमाल स्वाध्याय	शान्तिहर्ष	१८९२	१६–२०	लि.क. धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे
३७	७७४४(२)	अर्जुणगीता	रुघनदास	१७५८	३–८	
३८	४४६१	अर्बुदाचलश्लोक	विनीतविमल	१८वीं	२	
३९	४०३४	अरहन्नकमुनिचरित्र	जिनहर्ष सूरि (?) (सुमतहंस)	१९वीं	६	
४०	७७२४	अवतारचरित	नरहरिदास बारहठ	१७८६	२९७	*
४१	७७२९	अवतारचरित	"	१९१८	६४६	
४२	७७३३	अवतारचरित	"	१९१४	४४५	बदनोर में हरिदास कबीरपंथी द्वारा लिखित
४३	७३८७	अवन्तिगजसुकमाल चौपाई	जिनहर्ष	१९वीं	६	रचनाकाल १७४१
४४	७७४५	अश्वपरीक्षा		१९४३	३६	लि.क. वजेसिंह, पहला लश्या सो ब्रह्म रामगोपालजी का
४५	४७८४	अष्टप्रकारपूजारास	उदयरत्न	१८२९	६१	
४६	५४१८(१९)	अष्टमीकथा		१९वीं	१४०–१४३	
४७	४९१४(२४)	अष्टाणीवरतनोरास (ऊठाई)	शुभचन्द्र	१८७१	२३१–२३२	
४८	४८२३(१)	आणंदश्रावकसंधि	श्रीसार.	१८१९	१–९	
४९	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२३	रचनाकाल १७४२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	५४१८(४)	आत्मसंबोधरास	बनारसी	१८वीं	८८-९१	
५१	४६१४(२०)	आदित्यकथाव्रत	सूरजी शाह	१८७१	२२२-२२६	
५२	५३७६(२)	आदित्यवारकथा			३१-४२	
५३	५३७६(१३)	आदित्यवारकथा छोटी			१६७-१६६	
५४	४४२०	आनन्दमन्दिररास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	ढाल दूहाबद्ध। अन्तिमपत्र अप्राप्त
५५	७०६४	आनन्दश्रावक	मुनि श्रीसार	१८७०	२२	लि.क. साध्वी रतन बावड़ीनगर मध्ये
५६	४०४२	आनन्दसंधि (अनाथीसंधि)	,,	१७५४	१५	लि.क. आर्या रुषमा
५७	५४१८(३२)	आनन्दाके दोहे		१९वीं	१७१-१७३	४१ दोहे
५८	४६११(२)	आभूषगहणा चिन्तावणी		१८७६	४१-४२	लि.क. भागचन्द
५९	४०३५	आर्द्रकुमारचऊढालिया	समुद्र मुनि	,,	३	
६०	४८२३(२)	आर्द्रकुमाररास	मान कवि	१८१९	९-११	
६१	६०४५	आराधना प्रकरण	सोम सूरि	१८वीं	६	सुलिखित प्रति
६२	४४५२(९)	आवड़ीजी आदिके छन्द	अनेक कवि	१८वीं	१३ वां	
६३	७३४४	आवश्यक विधिप्रकरण	जिनवल्लभ गणि	१५वीं	६	
६४	४०५१	आषाढाभूत चतुष्पदिका	भावप्रभ	१९वीं	२	ढाळ गीतबद्ध
६५	५४१८(७)	आषाढाभूति चौपई		,,	९७-१०७	
६६	५१२१	आषाढाभूति धमाल	कनकसोम	१८वीं	५	रचनाकाल १६३८
६७	४५७३	इन्द्रियपराजय शतक		सं. १६२८	६	
६८	७२७३	इन्द्रियपराजय शतक		१७वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	४०४३	इलाकुमर चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रत्नाकाल १७१९ आसोज सुदि २ बुधवार
७०	६५३०	इलाकुमार चोपाई	"	१८वीं	७	
७१	४९१४(२८)	उणतीसी भावना		सं. १८७७	२४६–२४७	
७२	५६७४	उत्तमकुमार चोपाई	तत्त्वहंस	१७९५	३१	जोधपुर में लिखित
७३	५०९८	उत्तराध्ययन गीत		१७२२	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
७४	४२८७(१३)	उपदेश को रासो	रामचन्द्र	१८वीं	९८–११४	स्वयं कवि द्वारा लिखित। रचनाकाल १७२९
७५	६१०६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७२२	२१	
७६	६१६६	ऋषिदत्ता चौपाई	चौथमल	१८७९	२५	बील मध्ये लिखितम्
७७	७३३३	ऋषिभाषित कुलक		१८वीं	२	
७८	४९१५(६)	एकलगिड दाढाळारी वात		१८८७	१३६–१३९	
७९	४४५२(५५)	एकलगर वाराहरी वारता			१११–११३	अपूर्ण
८०	७२६१	एकविंशति स्थान प्रकरण	सिद्धसेन सूरि	सं. १७६६	१०	लि.क. सुमति हंस
८१	७७४६	एकादशीकथा भाषा (गद्य)		१९१३	५१	२६ कथाओं का संग्रह
८२	४२९३(२)	एकादशीकथा संग्रह			१८	२० कथाओं का संग्रह
८३	४०५५	एकांतरा तावरी वात		१८७६	३	
८४	७४४४(२०)	कका सज्झाय	श्रावक चोयो		३२४–३२६	
८५	५२११	कछवाहोंकी वंशावली		१८८४	११४	*
८६	४०४६	कनकावती चोपई	जिनहर्ष	१९वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	७७२०(२२)	कपड़कुतूहल		१८वीं	६	*
८८	४०४७	कपोतकपोतणीरी वारता		१८५४	१२	*
८९	६६३७(२)	कबीरजीकी बाणी	कबीर	१८११–१८१६	१०६–१८७	लि क. रामदास, टीकोदासशिष्य निराणा ग्राम
९०	६७३६	कयवन्ना चोपई	गुणसागर	१७१६	१०	लि.क. ऋषि भरथ
९१	४०४८(१)	कयवन्ना चौपाई	जयरंग	१८९२	२२	रचनाकाल १७४१ वै. शु. ८ शनिवार
९२	४०४९	कयवन्ना रास	सुन्दरसूरिचन्द्र (?)	१८वीं	५	आर्या हीरां, श्रीमानाजीनी शिष्यणी द्वारा लिखित
९३	५६७६	कर्मग्रन्थ पंचक बालावबोध	मतिचन्द्र	१८वीं	११२	
९४	४६१४(३३)	कर्मविपाक कांड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१–२५५	
९५	४४२५	कलावतीचरित्र	विजयचन्द्र	१६७६	४	चौपाईबद्ध, दूसरा पत्र अप्राप्त
९६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	९	* रचनाकाल सं. १६८९
९७	४४५२(२६)	कवित्तबावनी	उदयराज	१८वीं	२४ से २६	
९८	४४५२(६५)	कवित्त	उदैराज	,,	१३१ वाँ	
९९	४४५२(४५)	कवित्त सवैया	गंग, वृन्द	१८वीं	६१ वाँ	
१००	४४५२(५४)	कवित्त	अनेक कवि	,,	१०९–११०	५० कवित्त
१०१	४४५२(१०३)	कवित्त दूहा आदि	केसरसिंघ आदि	,,	१३६–१४१	
१०२	४६१५(२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२०–४१	जगदम्बा आदि के छन्द हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	४४५२(७३)	कवित्त गीत आदि		१८वीं	१२२वां	दाडिम-फल, मुहम्मद स्तुति आदि
१०४	४४५२(९६)	कष्टावलीचक्र		,,	१२६वां	वार और नक्षत्रों से बने योगों का फल-निरूपण
१०५	४९१५(१६)	कागदरी नकल		१८८७	३९८–४०६	* स्त्री, पुरुष आदि के प्रति पत्र
१०६	४०५१	कानड कठियारा री चौपई	मानसागर	१८वीं	८	रचनाकाल १७४७
१०७	४०५०	कान्हण विवाहलो		१७०२	८	लि.क. आर्या हीरां
१०८	७३७७	कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१९वीं	७	
१०९	४०५२	कालीनागदमण पवाड़ो		१८वीं	७	
११०	५४३०	काव्यविधान		१९वीं	३३–४०	मंत्र-साधनों को काव्य कहा गया है
१११	७७२२(७)	कुतुबशतरी वात		१७२०	९६–१०४	लि.क. मथेन माधा
११२	७७२१(१०)	कुबदीन शाहजादारी वात		१८२५	१६६–१७७	
११३	५९६१	कुमतिविध्वंसण चौपाई	हीरकलश	१७वीं	७	रचनाकाल १६७७ कनकपुरी मध्ये
११४	६४२५	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो		१९वीं	४	
११५	७०३०	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो	पदम कवि	,,	६४	
११६	४८३८	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	म. पृथ्वीराज	१७४५	२४	लि.क. भाग्यविजय, तेजविजय-शिष्य, खीमेल नगरे
११७	४४५२(४७)	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	,,	१८१७	८५–१००	लि.क. प्रीत सौभाग्य गणि बोहला ग्रामे मही उपकंठे
११८	७७९९(४)	श्रीकृष्णलीला वर्णन		१८५६	२–७	चित्र—१
११९	४९०४(१)	केरडावाली चौथ माताजीरी कथा		१८६१	१–३४	लि.क. कल्याण सौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	७१७२(१)	केवाटराजाकी कथा		१९३६	२७	
१२१	५४१८(३०)	खिचड़ीरासा		१९वीं	१६८–१७०	
१२२	४०९०	खीची अचलदासकी वात		१८वीं	६	
१२३	४६८८	खेटसिद्धि		१८४८	६	लि.क. चतुरविजय गणि पोहकर मध्ये
१२४	४६८९	खेटसिद्धि	महिमोदय	१८४८	६	लि.क. ज्ञानविजय, रचनाकाल सं. १७३१
१२५	४४५२(१३)	खेजड़ला माताजीरी नीसाणी	मान कवेसर	१८०८	१६ वाँ	
१२६	४४५२(८४)	खेतरपालजीरो छन्द	कवि देद	१८वीं	१२५ वाँ	
१२७	५२७९	ग्रहणविचार टीका		,,	३	
१२८	६४३७(२)	गर्जासिहकुंवर कथा		,,	२४–४८	अपूर्ण
१२९	४०५६	गजसुकुमाल चरित्र		,,	१८	त्रुटित
१३०	६५४१	गजसुकमाल रास		१८८७	८	लि.वा. सरूपचंद
१३१	४९१४(१४)	गजमुनिवीनती		१८७१	२०८ वाँ	
१३२	४४५२(६९)	गणेशजी छन्द अमृतध्वनि		१८वीं	१२०	
१३३	६०४१	गर्भोत्पत्तिस्तवन	श्रीसार	,,	३	
१३४	४९१५(५)	गीत		१८८७	१३४–१३५	
१३५	४१३६	गीतगोविन्द सटीक	टी. चैतन्यदास	१८वीं	४७	अन्त का पत्र अप्राप्त
१३६	४९१५(१५)	गीतकवित्त		१८८७	३९५–३९७	
१३७	७५५९	गीतसज्झाय		१८वीं	४	
१३८	४४५२(९०)	गीत, सवैया आदि		१८वीं	१२८वाँ	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३९	४९०४(३)	गीतामाहात्म्य			६५वाँ	
१४०	५४५८(४)	गींदोलीकी वारता	जगमाल मालावत	१८५६	१–२७	
१४१	४०२२	गुणकरंडगुणावली चौपई	ऋषि दीप	१८२१	२२	
१४२	४०५३	गुणकरंडगुणावली चौपई	,,	१९वीं	२७	लि क. आर्या नाथी
१४३	४८२०	गुणकरंडगुणावली रास	दीप (?)	१८७४	२०	रचनाकाल सं. १७५७
१४४	६०२७	गुणकरंडगुणावली		१८३९	१५	,,
१४५	६५४२	गुणकरंडगुणावली चौपाई	दीप ऋषि	१८३३	३६	लि.क. पं. नवनिधविजय, सणाणा नगरे
१४६	४०१३	गुणहरिरस		१७९६	७	राबडियास ग्रामे लिखितम्
१४७	५०६४	गुणावली रास	गजकुशल	१९वीं	२६	पत्र २ से ९ और अन्त्य अप्राप्त रचनाकाल सं. १७१४
१४८	४०५५	गुणावलीचरित्र चौपई	शान्तिहर्ष	१८७४	२१	रचनाकाल सं. १५१३ आश्विन कृ. ३, बडलू ग्रामे लिखितम्
१४९	५१०३	गुरुचेलारी कथा		१७वीं	२	त्रुटित
१५०	७१८०	गुरुपरंपरा ढाळ	ज्ञानविमल	१९वीं	१२	
१५१	५४५८(३)	गोतमरासा		१८३८	४	
१५२	७५६७	गोतमपृच्छा चौपाई		१७५६	१३	लि.क. मुनि गङ्गजी
१५३	६१२८	गोतमपृच्छा बालावबोध	जिनसूरि	१८८३	६८	
१५४	५४३६(७)	गोतमलघुस्तवन	समयसुन्दर		३८–४०	
१५५	५०६९(२)	गोतमस्वामीरास	उदयवन्त	१९०६	३–८	
१५६	५४३६(३)	गोतमस्वामीरास			१७–२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	४४५२(५)	गोरखपतड़ा	गोरखजी	१८वीं	१० वाँ	
१५८	४१५१	गोराबादलकथा आदि गुटका		,,	९०	१४ कृतियों का संग्रह
१५९	७७२२(६)	गोराबादल चौपई	हेमरतन	,,	५७–९५	सादड़ीमें रचित
१६०	४९२४(२)	गोराबादलरी बात	जटमल	१७८७	९–१५	लि.क. जयसौभाग्य सिरियारी मध्ये
१६१	७४४४(११)	गौतमरासो		१८८५	२०५–२१२	
१६२	४४५२(७६)	घूघूचक्र		१८वीं	१२३ वाँ	उलूकके सम्बन्धमें शकुन-विचार
१६३	४९२४(१०)	घोड़ांरा बषाण		१७९३	११–१२	अन्तमें 'नाहरखान राजसिंघोतरो छंद' है
१६४	४४५२(९३)	घोड़ांरा बणाव		१८वीं	१३० वाँ	
१६५	४७२९	घटीज्ञान		१९वीं	१	
१६६	५१२३(२)	चक्रकेवली		१८वीं	२–११	
१६७	६९१२	चर्चासमाधान		१८१८	२३६	र.का. सं. १७८१
१६८	७१५४	चतुर्मुकुटचन्द्रकिरणरी कथा		१८७७	३१	जीर्ण प्रति
१६९	५३०६(२१)	चतुर्विंशतिस्थानकसूची			२४३–२४८	
१७०	४९१५(१०)	चंदकंवररी वात		१८८७	३४८–३६०	रचनाकाल सं. १७४०
१७१	५३४१(२)	चंदकंवररी वात तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८–६७	
१७२	७७५३(११)	चंदकंवररी वात	कलश कवि	१८३७	४७–६०	
१७३	५४५८(१)	चंदकंवररी वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	चित्र सं. १ लि.क. पं. मनरङ्गसागर
१७४	४९१६(३)	चंदकुमररी वार्ता	हंस कवि	१८७५	४७–५४	लि.क. पं. हुकमसौभाग्य

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	४१४८	चंदकुंवरकी वात		१८१६	१८	*
१७६	४९११(३)	चंदकुंवरकी वारता	कवि राय	१८३० से १८३२	१–६	
१७७	७३७९	चंदनबालाभगवती गीत	भक्तिलाभ	१८वीं	१	
१७८	४०५८	चंदनमलयागिरिकी चौपई	भद्रसेन मुनि शिष्य (?)	१८९५	१०	लि.क. ऋषि उमेदचंद, स्थान-औरंगाबाद, लसकर मुगजादे मध्ये
१७९	४४२१	चंदनमलयागिरि चौपई	यशोवर्द्धन	१७८९	११	रचनाकाल सं. १७४७ आ.कृ. ६
१८०	४४५२(४८)	चंदनमलयागिरिरी वारता	भद्रसेन	१८०६	१०१–१०२	
१८१	६३३६	चंदनमलयागिरि चौपई	भद्रसेन	१८३४	८	
१८२	७०७६	चंदनमलयागिरि चौपई		१८वीं	५	
१८३	५०८४(२)	चंदनमलयागिरिरी वात (सचित्र)		१८३६	२६–३५	३४वां पत्र अप्राप्त, बीकानेर–कलमके चित्र
१८४	५४१८(२४)	चन्द्रगुप्तस्वप्न		१९वीं	१५०–१५२	
१८५	४९१४(३५)	चन्द्रप्रभविवाहलानी ढाळ		१८७७	२५६–२५७	
१८६	४९१८(१)	चंद्रराजाकुमरकी कथा		१७९९	४–२०	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
१८७	७०७२	चंद्रराजाचरित्र	मोहनविजय	१९वीं	१८५	अपूर्ण, प्रथम व अन्तिम पत्र अप्राप्त
१८८	६८५०	चंद्रराजाचौपई	विद्यारुचि	१८०९	४१	रचनाकाल सं. १७७७, सिरोही नगरे
१८९	४०५९	चंद्रराजा रास	मोहनविजय	१८१०	८२	रचनास्थान–राजनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९०	६३४९(२)	चंदराजानो रास	मोहनविजय	१९०६	७०-३५४	लि.क. हरकचंद पाण्डे
१९१	७२४९	चंदराजानो रास	,,	१८४७	६८	रचनाकाल सं. १७८३
१९२	७४२०	चंदराजानो रास	,,	१८४९	१२३	लि.क. पृथीराज
१९३	७४०७	चंद्रलेखाचौपाई	मतिकुशल	१७७८	१८	
१९४	४०६०	चंद्रलेहाचरित्र चौपई	,,	१८०५	१९	रचनाकाल सं. १७२८
१९५	४७९५	चंद्रलेहारास	,,	१८वीं	२९	
१९६	४७८९	चंद्रलेहारास	,,	१९वीं	२४	
१९७	५०९६	चंद्रायण कथा	ऋषि कर्मचंद	१८वीं	२	
१९८	५३७६(१८)	चंद्रायण कथा	मलयकीर्ति		२११-२१३	
१९९	४७४६	चंद्रार्की		१८वीं	११	
२००	४९१४(५७)	चरित्ररत्नत्रयगीत		१८७७	३१२-३१३	
२०१	६३६३	चातुर्मासिक व्याख्यानपद्धति		१९११	२४	लि.क. टेकचंद
२०२	५१०५	चार जणांरी वात		१९वीं	३	
२०३	७२३१	चार भावना (गद्य)		१७वीं	११	
२०४	६२९२	चारिप्रत्येकबुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०५	४४५३(३)	चित्तोड़गढ़की गजल	खेतल	१८वीं	६	रचनाकाल सं. १७४८
२०६	४८०६	चित्तोड़गजल	,,	१९वीं	२	
२०७	४८२२	चित्तोड़गजल	,,	१७८३	५	तीसरा पत्र अप्राप्त
२०८	४४५२(१००)	चित्रबंधकाक		१८वीं	१३४-१३५	
२०९	४७९७	चित्रसंभूति चौपई	ज्ञानसागर	,,	३५	
२१०	४२८७(१४)	चेतनगीत	मनराम	,,	११५-११६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	७८१०(३)	चेतनदासकी वाणी	चेतनदास	१८वीं	२३०–२९८	
२१२	४४५२(६१)	चौबोलीराणीरी कथा	जिनहर्ष	,,	११८वाँ	
२१३	७४४४(१३)	चौढालियो (दानशील तप संवाद)	समयसुंदर	१८८५	२४५–२५३	
२१४	४०६१	चौथमाताजीरी कथा		१८वीं	३	बीलाड़ामें लिखित
२१५	६०९७	चौबीसचौक	अमृत कवि	१८५३	७	लि.क. भानुकीर्ति, जयनगरे
२१६	६६१८	चौबीस तीर्थंकरोंकी पूजाविधि		१९वीं	६९	
२१७	७४२५	चौसठमार्गणाविचार		,,	१३	
२१८	५०६१	छत्तीस अध्ययनगान	सागरचंद	१६४२	१५	लि.क. पं. हर्ष, मुलतानमध्ये
२१९	४४५२(७८)	छींकचक्र		१८वीं	१२३वाँ	छींकके संबंधमें शुभाशुभ फलका परिचय
२२०	४३०८(३)	छीतरदासजीका सवैया	छीतरदासजी	,,	४४७–४५५	३५ छंद
२२१	४८४७	ज्योतिषबर्त्तारो		१८४३	३०	लि.क. ऋषि भाणजी
२२२	५५२८	ज्योतिषसार	कवि कृपाराम	१९०७	४७	लि.क. रामकुंवार
२२३	४४५२(६४)	जगदेवपमाररा कवित्त	कंकाळी भाटण (?)	१८वीं	११९वाँ	
२२४	७१७२(२)	जगदेवपरमाररी वात		१९३६	१–३५	
२२५	७७५२३(१४)	जगदेवपुंवाररी वात		१८३७	७१–८८	अपूर्ण
२२६	४९१६(१)	जगदेवरी वात		१८७५	४४	अन्त में ५ अन्य वार्ताएँ हैं।
२२७	४४५२(७१)	जड़ भरथरा कह्या श्लोक आदि		१८वीं	१२१ वाँ	सवाई कूरम नरेश (जयपुर) की पराजय और मारवाड़के बखतसिंहकी विजयका वर्णन, बुधसिंह हाडाका वर्णन भी है।
२२८	४८४८	जन्मपत्रीगणित		१९वीं	२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२९	४५२४	जन्मपत्रीगणितक्रम (ब्रह्मतुल्य)		१९वीं	२५	
२३०	६४३४	जन्मपत्रीप्रकार		१७५९	६	
२३१	७४२७	जम्बूअज्झयण		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३२	६२९८	जम्बूगुणरत्नमाल		२०वीं	३६	
२३३	४२७३	जम्बूगुणरत्नमाल	आणंद जेठूमल	१९वीं	४३	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३४	४१५७	चम्बूचरित्र रास	पदमचंद मुनि	,,	३३	लि.क. परताबाई, स्थान–अजमेर
२३५	७०४६	जम्बूचरित्र		१८७२	५५	
२३६	७५३३	जम्बूचरित्र		१७९६	६०	
२३७	७६०३	जम्बूचरित्र		१८९१	११३	
२३८	५३७६(३)	जम्बस्वामी कथा			४२–८०	विहारी विप्रेण लिखित
२३९	६७३५	जम्बूस्वामी कथा		१८५६		लि.क. ऋषि माणकचंद
२४०	६७८१	जम्बूसरकी कथा		१९वीं	४	
२४१	४०६३	जम्बूस्वामीचरित्र चौपई	पद्मचंद	१८५६	३३	लि.क. जीवनराम ऋषि, स्थान–नागोर
२४२	७३५२	जम्बूस्वामीकथा		१८६६	२०	चुरू मध्ये लिखित
२४३	६८८४	जयसुखवैद्यक		१७३३	८	लि.क. मतिविमल
२४४	५४१८(१३)	जलगालणविधि		१९वीं	११४–११६	
२४५	४४५२(३२)	जलाल गहाणीरी वात		१८०७	३५ से ४०	लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य गणि
२४६	४०६२	जलाल गहाणीरी वारता		१८६०	२०	लि.क. ऋषि टेकचंद सरियारीग्रामे
२४७	७७६९(५)	जलाल गहाणीरी वारता		१८५६	२–४२	
२४८	५८९५	जलालबूबनावारता सचित्र		१८वीं	३२	चित्र सं. १२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४६	४०६४	जांमवतीचौपई	सूरसागर	१८४७	७	बीकानेरमें लिखित
२५०	४८१७	जिणरस	वेणीराम	१८४१	१७	
२५१	७१०७	जिनेश्वरपूजापद्धति		१८वीं	१९८	र.का. सं. १६५१
२५२	५०७३	जीवदयासज्झाय	सोमसुन्दर सूरिशिष्य	,,	१	
२५३	७४४४(३)	जीवविचार		१८८५	१२१–१२६	
२५४	४६१४(२६)	जीवसिखामण रास	प्रभुचंद्र	१८७७	२४२–२४४	,, सं. १८५८
२५५	४६०५ (७-६)	जुवानीरा दूहा आदि			३१–३६	अर्थ सहित पहेलियाँ भी हैं।
२५६	५४५३	जैनबोलसंग्रह		१९वीं	५३	
२५७	४६१४(५४)	जोगीरास	जिनदास	१८७७	३००–३०२	*
२५८	५४१८(२०)	जोगीरासा	,,	१९वीं	१४३–१४५	
२५९	५४१८(२५)	जोगीरासा	भगोतीदास	,,	१५२–१५४	
२६०	४२८७(४)	जोगीरासो	जिणदास	१७२६	१४–१८	लि.क. रामचन्द्र
२६१	५४१८(३१)	टण्डाणा गीत		१९वीं	१७०–१७१	*
२६२	६८४१	ढाल, पट्ट आदि		,,	६६	
२६३	४०६७	ढालसार	चोथमल	,,	१६	रचनाकाल सं. १८५६
२६४	६७३७	ढालसागर		१८६७	११६	लि.क. ऋषि खुशालचंद
२६५	६१२२	,,	केशराज	१८वीं	१०१	देशी रागोमें पद
२६६	७२२४	,,	गुणसागर	,,	७७	रचनाकाल सं. १६७६ हरिवंश-गाथा
२६७	७३७५	,,	,,	१७९८	७६	
२६८	४०३३	ढालसागरप्रबन्ध	,,	१७४०	१०४	ढाल १५१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६९	४०६६	ढालसागरप्रबन्ध	गुणसागर	१७५६	८६	लि.क. ऋषि जोधनजी स्थान–मेदपाट श्रीसाहबा नगर
·७०	५०८४(१)	ढोलामारू, सचित्र, अपूर्ण, त्रुटित		१८३६	१४	चित्र सं. ३६ बीकानेर में लिखित पत्र सं. ४० पर ग्रन्थ का अन्तिम अंश है
२७१	७७२०(१)	ढोलामारूचौपई	कुशललाभ	१७५९	१–२३	
२७२	६४३८	ढोलामारवणीचौपई	वाचक कुशललाभ	१८वीं	२४	रचनाकाल सं. १६७३ स्थान–जैसलमेर, अमरसी पठनार्थ
२७३	५८९६	ढोलामारवणीरा दूहा, सचित्र		,,	६१–११४	रचनाकाल सं. १५३०, चित्र सं. ३३
२७४	७७४७	ढोलामारूनी वात	कुशललाभ		५६	रचनाकाल सं. १६१७, भंवरजी अजयसिंहजी पठनार्थ जैसलमेर में लिखित।
२७५	६७२०	ढोलामारूरा दूहा		१९वीं	४७	
२७६	४९२४(१३)	ढोलामारूरी चौपई	कुशललाभ	१७७०	१–३४	
२७७	७७४८	तर्कप्रबन्ध	सरूपदास	१९वीं	५७	
२७८	७००७	ताजिकसार	हरि भट्ट	१८५०	२९	
२७९	४८७५	तुरकशकुनावली (रमलग्रन्थ)		१७९९	३	लि.क. देवेन्द्र सौभाग्य
२८०	७५३५	तेजसिंहजीरा सवैया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२८१	४९१४(५०)	तेरहकाठिया		१८७७	२७९वाँ	
२८२	७६०४	तंडुलवेयालियंपइन्न	पाशचन्द्र	१८३३	४१	लि.क. ऋषि मोतीचंद डूंगरसी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	७२६५	थावच्चाचौपई सविवरण	सययसुन्दर	१८वीं	१८	रचनाकाल १६६१
२८४	४६०४(२)	थावरदेवतारी वात		१८६१	३५–६५	लि.क. कल्याणसौभाग्य
२८५	४०६८	थूलभद्रनवरसो	उदयरतन	१८४६	५	रचनाकाल सं. १७५९
२८६	४८३२	थूलभद्रनवरसो	,,	१८५२	८	लि.क राजविजय
२८७	६२५५	थूलभद्रनवरसो	,,	१८वीं	२	
२८८	७४४४(१४)	थूलभद्रनवरसो		१८८५	२५३–२६०	
२८९	७४२१	दण्डक सस्तवक		१९वीं	९	
२९०	६५३१	द्रौपदीरास	कनककीर्ति	१८वीं	४१	जैसलमेर में रचित
२९१	६३५९	द्रौपदीरास चौपई	,,	१८१५	४०	जयपुर में लिखित
२९२	६४१९	द्वादशभावफल		१९वीं	४	
२९३	७४४४(५)	दण्डकप्रकरण सटबार्थ		१८८५	१३६–१४३	लि.क. नेमविजय
२९४	६४४६(५)	दत्तलाल को कक्को	दत्तलाल	१९वीं	५–११	
२९५	४९१४(४९)	दर्शन बत्तीसी		१८७७	२७७–२७८	सं. १८५४ में रचित
२९६	६५४४	दशार्णभद्र चौढाळियो	दीप ऋषि	१९वीं	३	लि. स्थान–अहिपुर
२९७	६३९९	दशावली		,,	६	लि.क. उपाध्याय पद्मउदय गणि
२९८	६९४८	दादूजीका शब्द	दादूजी	१८००	७८	आद्यन्त पत्र शोभन
२९९	६९२६	दादूजीकी वाणी आदि गुटका	दादूजी आदि	१७८७	२९८	गुटके में विविधि कृतियों का संग्रह है
३००	६९४९	दादूजीकी साखी	,,	१८वीं	९६	
३०१	६९५०	दादूजीकी साखी	,,	१८६९	६७	लि क. लक्ष्मणदास
३०२	४३०८	दादूवाणी आदि	,,	१८वीं	४१०	विभिन्न सन्तों के ४४४० पदों का संग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०३	६९३७(१)	दादूवाणी आदि	दादूजी आदि	१८११–१८१६	१०९	लि.क. रामदास, निराणा ग्रामे
३०४	६९५४(१)	दादूशब्द	,,	१९वीं	६५	दादू, कबीर, सूर, मीरां आदि के पदों का संग्रह
३०५	४१४९	दाढाळारी वात		१८१७	२३	
३०६	५४३६(९)	दानशील तपभावना			४४वाँ	
३०७	५४३६(११)	दानशील तपभावना	दशार्ण भद्रराज		४६–५९	
३०८	६८४५	दानशील तपभावनासंवाद	ऋषिकुशलशिष्य	१९वीं	४५	
३०९	५९९७	दानादिकसंवाद	समयसुन्दर वाचक (?)	१६६२	५	सांगानयर मंझादि
३१०	५४१८(१७)	दानाधिकार	समयसुन्दर	१९वीं	१२४–१३४	
३११	७७२०(२४)	दिल्लीपातसाहीरो विवरो		१८वीं	१२–१८	
३१२	४०१७	दिवालीकल्प बालावबोध	जिनसुन्दर	१९वीं	२६	
३१३	४४५२(२८)	दूहा	कवि ज्ञान	,,	२६वाँ	पुरुष-शृंगार और स्त्री-शृंगार के १६-१६ दूहा
३१४	७७२१(१३)	दूहो श्रीमहाराज जसवन्तसिंहजीरो	म. जसवन्तसिंहजी	१९३१	२००वां	हदिरस की प्रशंसा में रचित
३१५	६०१५	देवकीरी चौपाई		१९वीं	९	
३१६	४४५२(७९)	देवीचक्र		१८वीं	१२३वाँ	
३१७	७३७३	देशना शतक		१७वीं	१९	
३१८	४८५५	दोषकेवली		१८वीं	१	लि.क. मानसिंह
३१९	४९१४(५)	दोहाशतक	रूपचंद	१८७१	१६२–१६५	
३२०	४९१५(१३)	धमाळ		१८८७	३८४–३८९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४४५२(५१)	धमाळ वसन्त		१८वीं	१०७ वाँ	
३२२	७३६६	धर्मबुद्धि चोपाई	लालचंद	१७६०	१६	लि.स्था. जैसलमेर
३२३	५४१८(१५)	धर्मबत्तीसी		१६वीं	११६–१२१	
३२४	७७५३(१२)	धर्मबावनी		१८३७	६०–६६	अपूर्ण
३२५	४०६६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चोपाई	लालचंद	१८२५	२५	र.का. सं० १७४२
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१६वीं	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२७	४८०८	धामनो वर्णन		,,	६	
३२८	५४३६(१२)	नरक रो चोढाळियो	गुणसागर		३	
३२९	६६५४(२)	नरसीमाहेरो		१८८८	६५–६६	६८वां पत्र अप्राप्त
३३०	५२०२(२)	नरसीजीको माहेरो	वसन्त	१८८५	८७–६१	
३३१	४०७०	नलदमयन्तीचौपई	समयसुन्दर	१८३६	२५	रचनाकाल सं. १६७३
३३२	६६१३	नवकारमंत्रदर्शन		१६वीं	१३५	
३३३	७६६७	नवकारवालीनो सज्झाय	लब्धिविजय	,,	१	
३३४	६४१२	नवपदपूजा		१८८५	१४	
३३५	५४६१	नसीहतनामा और देवीदासके कवित्त		१६वीं	१३८	स्फुट
३३६	४४५२(४)	नागदमण		१८वीं	७ से ६	
३३७	७०७३	नागदमणचौपई	साईदास	१८२४	६	
३३८	६३६०	नागदमण छंद		१८वीं	४	
३३९	४६२४(३)	नागदमणकथा		१७८७	१५–१८	
३४०	४४५२(२२)	नागमंतर		१८वीं	२३ वाँ	सर्प-विष उतारनेके २० मंत्र
३४१	५०६६	नागिला भवदेव रास	समयसुन्दर	१७४१	५	लि.क. पं. ईश्वर, अहमदाबादे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियाका सोरठा	नाथिया (?)	१९वीं	११	१४० सोरठे
३४३	६९३७(३)	नामदेवजीका सबद	नामदेव	१८११–१८१६	१८७–२०१	लि.क. रामदास, निरोणा ग्रामे
३४४	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१९वीं	१२	
३४५	७८१६(३)	नारायणलीला	माधवदास	१८३१		लि.क. कायस्थ भावसिंह
३४६	४४५२(५०)	नासिकाविचार		१८वीं	१०७वाँ	
३४७	६७४९(१)	नासिकेतपुराणकथा	वार्तिक नन्ददास	१९वीं	८८	
३४८	६११०	नासिकेतपुराण भाषा	नन्ददास	,,	५१	
३४९	४२९३	नासिकेतमहापुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	१८३७	४४	लि.स्था. लालुवास प्रतापसिंहराज्ये
३५०	५४१८(३३)	निर्वाणकांड		१९वीं	१७३–१७५	
३५१	४४५२(२५)	निसाणी	सूरज	१८वीं	२४वाँ	
३५२	५०७७(२)	नेमराजीमती सज्झाय	यशोदेवसूरिशिष्य	१८०२	१ ला	
३५३	४९१४(३४)	नेमिनाथनी साखी		१८७७	२५५–२५६	र.का. सं. १६७० सूरतबंदर
३५४	५३३०	नेमराजुलका सवैया		१९वीं	२५	
३५५	७३०३	नेमराजुल बारामास	कवियण (?)	,,	१	
३५६	६३०४	प्रत्येकवुद्धचौपई	समयसुन्दर	१८६७	२४	लिखितं जैपुरमध्ये
३५७	६५२९	प्रत्येकवुद्धचौपाई	,,	१८२५	२८	लि.क. परमानन्द शिष्य जैतसी
३५८	५२७०	प्रद्युम्नप्रबन्ध	कमलबंधु	१८१३	२८	र.का. सं. १७२२ चूड़ामणिने लिखवाया
३५९	५२७४	प्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दर	१७३९	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त पाटणमध्ये लिखित
३६०	५०६८	प्रदेशीरायचौपाई		१८९०	२९	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६१	६०३३	प्रबोधचिंतामणिचौपई	धर्ममंदिर गणि	१८५८	७७	लिखितं बीकानेरमध्ये
३६२	५१३७	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक		१९वीं	५७	
३६३	४९१५(१४)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला	मंगनीराम		३८९–३९५	र.का. सं. १८८६
३६४	५१०१	प्रहेली	जिनहर्ष	१९वीं	५	आद्य २ पत्र मसीप्लुत
३६५	५३२९	प्रश्नशकुनावली		,,	१२	
३६६	६३४९(१)	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	क्षमाकल्याण	१९०६	७०	लि.क. हरकचंद पांडे
३६७	६८५४	प्राकृतप्रबन्धसंग्रह	मोहनविजय	१८६८	११९	लि क. बख्तावर, बीकानेरमध्ये
३६८	४७९२	प्रास्ताविक दूहा	जसराज आदि	१८वीं	३	
३६९	५३६५	प्रास्ताविक दूहा		,,	६	
३७०	४८०९	प्रास्ताविक दोहरा	वृन्द आदि	१९वीं	३	
३७१	४८१५	प्रास्ताविक दोहरा	,,	१८३९	३	लिखितं राजपुरमध्ये
३७२	५३४५	प्रास्ताविक पत्र		१९वीं	८	पत्नी का पति के प्रति आदि
३७३	४४५२(९९)	प्रास्ताविक श्लोकदूहा आदि	उदैराज आदि	१८वीं	१३२–१३४	
३७४	४७९३	प्रियमेलकचौपई	समयसुन्दर	,,	७	ऋषि भीकमजीपठनार्थं
३७५	४८२१	प्रियमेलकचौपई	,,	१७वीं	६	
३७६	६८७५	प्रियमेलकचौपई	,,	१९वीं	८	लि.क. लब्धिकीर्ति गणि राणपुरमध्ये
३७७	५४१८(२८)	पंचगतिकी वेली	मुनि हर्षकीर्ति	,,	१६५–१६७	र.का. सं. १६२३
३७८	४८५०	पंचांगानयनविधि भाषा	मेघराज लब्धिविजयशिष्य	,,	२	र.का. १७२३
३७९	४९१४(५८)	पंचेन्द्रियकी वेली	ठाकुरसी	१८७७	३१३–३५	र. सं. १५८५
३८०	५२९५	पंचेन्द्रियचौपाई		१८७२	५	उज्जैनमध्ये लिखितं
३८१	५३४१(१)	पन्नावीरमदे वात		१९वीं	२ से ५७	लि.क. बोरा वीरानन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८२	४६१५(४)	पन्नावीरमदेरा वात	शेरसिंह	१८८७	७६–१३४	७८वां पत्र खंडित
३८३	७१६६(१)	पन्नावीरमदेकी वात		१९७७		गुटका
३८४	४८०७	पद्मिनीचौपई	हेमरतन	१८२७	५१	
३८५	४६१०	पद्मिनीचौपाई	हेमरतन	१६वीं	३१	
३८६	४६१४(१०)	पद	सकलकीर्ति	१८७१	२०७वाँ	
३८७	४६१४(३१)	पद		१८७७	२४८–२४९	स्फुट
३८८	४०७२	पदमसीपदमावतीचौपाई	मुनि माल	१८वीं	२२	
३८९	७७२१(५)	पनरबादशाशकुनावली		१८२५	११८–११९	
३९०	४६१६(६)	पनरमी विद्या		१८८१	८४–९६	
३९१	४४५२(४९)	पनरमी विद्या स्त्री-चरित्र		१८०५	१०३से१०७	लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य गणि
३९२	४०७९	परदेसीप्रबन्ध	ज्ञानचंद	१८४८	३१	
३९३	७४१२	परदेसीप्रबोधचौपई	,,	१७५५	२२	
३९४	४८२७	परदेशीराजारी चौपई		१८८५	२९	लि.स्था. बड़ली
३९५	५४१८(२९)	परमादि (प्रमाद)	गोपालदास	१९वीं	१६७–१६८	
३९६	४०७३	पलकदरियावरी वात		,,	३६	लि.क. अखुजी
३९७	४०७४	पांडवचरित्रचौपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	र.का. १७६७
३९८	७७२३	पांडवविजय	मलूकदास	१९२९	३७७	लि.क. जीताराम, फतेहपुर मध्ये
३९९	४६१४(५५)	पार्श्वनाथआदित्यवारकथा		१८७७	३०२–३११	सं. १६७० की प्रति से प्रतिलिपि की गई
४००	६४३३	पाशाकेवली	गर्ग ऋषि	१९६९		लि.क. रूपां साध्वी
४०१	७६७०	पाशाकेवली		१९वीं	५	जोधपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०२	५१२३(३)	पाशाकेवली अबजदी		१८वीं	१२–१९	
४०३	६२८२	पाशाकेवली अबयद		१९वीं	१६	
४०४	७८२३	पिङ्गलरो समीयो	चन्द (?)	१८वीं	८	चित्र सं.७ ग्रं. सं. ५४५७ के साथ संयुक्त।
४०५	४४५५	पिङ्गलशास्त्र टीका		१८७१	२३	थानलानगरे, मालवदेसे लिखितं
४०६	७१४३	पुण्डरीककुडरीकनी ढाळ	मुनि हर्ष	१९वीं	५	
४०७	५११९	पुण्यसारचरित्र	हर्षचन्द्र गणि	१८७५	३	र.का. सं. १६६२ सांगानेर में रचित
४०८	७५३०	पुण्यसारचौपाई	पुण्यकीर्ति	१८वीं	५	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४०९	६४३७(१)	पुरन्दरकुंवरकथा	मालदेव	,,	४८	
४१०	४८२६	पुरन्दरकुंवरचौपई	रतनविमल	१९वीं	२१	
४११	४६७६	पूर्णिमाविचार		,,	४	
४१२	५३३२	पूर्वदेशचैत्यप्रवाड़ी		,,	३	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४१३	४६०३	पृथ्वीराजरासो	चन्द कवि	,,	१२६	
४१४	७१२८	पृथ्वीराजरासो	,,	१७४७ से १७५३	९९	,,
४१५	७१५०	पृथ्वीराजरासो	,,	१८वीं	१६२	जीर्ण गुटका
४१६	७१६४	पृथ्वीराजरासो (पद्मावतीको समो)	,,	१९४१	७९	लि.क. चिरञ्जी मुफसलाल केकड़ी निवासी
४१७	७१६८	पृथ्वीराजरासो आदि		२०वीं	११८	कई रचनाओं का संग्रह
४१८	७१६९	पृथ्वीराजरासो आदि		,,	,,	
४१९	७१६६(२)	पृथ्वीराजरासो (महोबाको समो)		१९७७	,,	
४२०	४९१४(१९)	पोस्तीनोरास	ज्ञानभूषण	१८७१	२१८–२२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२१	४०७५	पोस्तीरा रासो	बखतो	१८८२	४	
४२२	७७२२(१२)	फुटकर औषध		१८वीं	११६-१२५	बधिरता, बायगांठ आदि रोगों की औषध
४२३	४९२४(१८)	फुटकर कवित्तादि		१८वीं	२७-२९	
४२४	४९२४(७)	फुटकर ज्योतिष		१७९३	१४-१५	पन्द्रह तिथियों के दोहे आदि
४२५	५२७२	फूलकुंवर फूलकुंवरीरी वात		१९१२	१४	र.का. सं. १८५२
४२६	५०८१	फूलकुंवर फूलकुंवरीरी वात		१८९०	७२	चित्र सं. ४५; र.का. सं. १८३०
४२७	५५००	फूलजी फूलमतीरी वात		१८४६	२६	अन्त में चौढाळिया आदि
४२८	४९१४(३७)	ब्रह्मजिणदासनी वीनती	ब्रह्म जिणदास	१८७७	२५८-२५९	
४२९	७७४३(३)	ब्रह्मनिरूपण	राजसिंघ	१७८४	४६-५३	लि.क. बाई सिरेकंवरी
४३०	५८६७	बगसीराम प्रोहित हीरांकी वात	कवि तेण	१९वीं	६५	*
४३१	७७५३(७)	बांमणवाड़रो स्तवन	कमलकलश शिष्य (?)	१८३७	३९-४१	
४३२	४९१४(६२)	बाई जतन नै लीलवणनी विगत		१८७१	३२१ वां	
४३३	७१३९	बाईस परीक्षाकी चौपाई	ऋषि रायचन्द्र	१८२२	४	र.का. सं. १८२२
४३४	४३२०	बातसंग्रह		२०वीं	५२२	राजस्थानी भाषा की चौबीस प्रकीर्ण वार्ताओं का संग्रह,
४३५	७८१७	बादशाही हाल		१९वीं	८-५०	
४३६	४९१४(२७)	बारह अनुप्रेक्षा	चन्द्रकीर्ति	१८७७	२४४-२४६	
४३७	४७२१	बारह पुनमरो विचार		१९वीं	१	
४३८	४७३७	बारह भवनफळ		१८४०	५	लि.क. सुमतिसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३९	७४४४(१५)	बारहभावना	जयसोम शिष्य	१८८५	२६०–२७०	जैसलमेर में रचित
४४०	७७५४ (१,२,३)	बारहमासीसंग्रह		१९२२	१५	भरतराजाका बारह मासा र.का. सं. १८९०
४४१	४२८७(१५)	बारहमासो	रामचंद्र	१८वीं	११६–१२७	
४४२	७६२१	बालचन्द्रबत्तीसी	बालचन्द्र	२०वीं	७	
४४३	४१४२	बुद्धिसेणचौपाई	तिलक सूरि	१९वीं	६६	
४४४	७५४२	बोलविवरण	आचार्य केशवजी (?)	१७वीं	६२	
४४५	७७५३(१०)	भंमरागीत	महमद	१८३७	४५–४६	
४४६	५८८५	भक्तसार	शालिग्राम	१९वीं	२२	
४४७	७७२१(१)	भङ्गीपुराण	हरदास	१८२५	१–२५	र.का. सं. १८५५ शिव-स्तुति, कई स्थानों पर चित्र भी हैं।
४४८	७७४४(४)	भजनसंग्रह	चैना	१७५८	१८–२२	
४४९	५१२३(७)	भड्डुली	भड्डु कवि	१८वीं	२९–४१	लि.क. चैनकुंवरी
४५०	४४५२(१७)	भडलीदूहापचीसी	,,	,,	१९ वाँ	
४५१	६७२८	भडलीपुराण		१८८१	१२	
४५२	५१२२	भडलीरा दूहा	भड्डु कवि	१८२८	३	
४५३	४४५२(९८)	भडलीवाक्य	,,	१८वीं	१३२ वाँ	
४५४	५८००	भड्डुलीवाक्य	,,	१९१३	१४	१५ दूहा लि.क. व्रजवासी, अलवर
४५५	७६३०	भरताधिकार		१७९३	५३	लि.क. त्रीकमजी, वढवाणमध्ये
४५६	४८३०	भवानीछन्द		१९वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५७	४७६६(२)	भाषा लीलावती (पद्यानुवाद)	लालचंद	१७७५	१ से १५	म. रायसिंह, बीकानेर के अमात्य कोठारी नेणसी पुत्र जैतसी की प्रार्थना से उनके गुरु द्वारा रचित
४५८	७४१०	भुवनद्वारविचार		१९वीं	२०	
४५९	७७२२(१०)	भैरव आदि की बोलीविचार		१८वीं	१०७-११४	
४६०	६७०२	भोगलपुराण (उमामहेश्वरसंवाद)		१७७२	३०	लि.क. टीकूदास
४६१	४८२५	मच्छोदरचौपई	शान्तिहर्ष	१८४८	२३	लि.क. क्षमा सौभाग्य
४६२	४७९८	मदनवार्ता	खुश्यालचंद जालंधरी	१८वीं	१०	
४६३	४४५२(१)	मदनशत (अपूर्ण)		,,	२	
४६४	४३१५	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास कायस्थ	१८८८	८१	लि.क. तुलसीराम कनौजिया, सवाई जैनगर
४६५	४९११(१)	मधुमालतीकथा	,,	१८३२	१ से ४१	
४६६	५४५७	मधुमालतीकथा (सचित्र)	,,	१९वीं	२-८७	चित्र सं. ८७
४६७	५०७८	मधुमालतीकथा (सचित्र)	,,	१८८१	२१६	चित्र सं. २२३ लि.स्था. पालनपुर
४६८	५०७९	मधुमालतीकी वात		१८वीं	८८	चित्र सं. ९०
४६९	४०८४	मधुमालतीचौपई	चतुर्भुजदास	१९वीं	६०	लि.क. सेसमल्ल, कापरड़ा नगर
४७०	५०८०	मधुमालतीरी कथा	,,	१८वीं	१२५	हाड़ोती कलम के २७० चित्र
४७१	४९१५(८)	मधुमालतीरी वात	,,	१८८७	१४१-१९९	लि.क. हररूप, जालोर
४७२	५४१८(१२)	मनभंवरा गीत	कवि माल	१९वीं	११३-११४	
४७३	४९१४(२९)	मनोरथमाला		१८७७	२४८ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७४	७७२२(४)	मयण भट्ट दूहा		१९वीं	४८-५२	३० पद्य
४७५	४९१४(४४)	मरुदेवीनो सुखड़ी		१८७७	२७२-२७४	
४७६	५४२७(५)	मलयासुन्दरीचौपई	गोपालदास		६४-१४८	र.का. १६९९
४७७	४४५२(१८)	महादेवजीरो छन्द	गाङ्गला	१८वीं	१९ वाँ	
४७८	४९१४(५३)	महापुराणनी वीनती	गङ्गदास पर्वतसुत	१८७७	२८८-३००	
४७९	६८५१	महाबलमलयसुन्दरीरास		१९वीं	२१	
४८०	४७४३	महाराजा दौलतसिंहजीजन्मोदाहरण		१८वीं	८	
४८१	५४३६(५)	महावीरजीरो पारणो		१९वीं	३३-३६	
४८२	७३५९	महावीर दशोठण जीमणवार विगत		१७६८	२	
४८३	७०५८	महासती सीताचरित्र	पुन्ह कवि	१८७१	८८	लि. स्था. अयोध्यापुरी र. का. १७७३ (?)
४८४	४४५२(१०)	माताजीरी चरचा		१८वीं	१३ वाँ	
४८५	४४५२(१२)	माताजीरो गीत		१८०८	१६ वाँ	लि.क. प्रीतसौभाग्य
४८६	४४५२(११)	माताजीरो छन्द	बीकाजी	१८०७	१४-१६	लि.क. प्रीतसौभाग्य, वणेडा ग्राम
४८७	४४५२(८५)	माताजीरो छन्द	कवि सारंग	१८वीं	१२६ वाँ	
४८८	७७२१(११)	माताजीरो छन्द	चानण खिड़ियो	१९३१	१७७-१७९	लि.क. अमरसिंह खिड़ियो
४८९	४९११(४)	माधवानल कामकन्दळाचौपई	कुशललाभ	१८३०	६	विजयपुरमध्ये लिखित
४९०	४९२४(१६)	,,	,,	१७९२	१-२२	
४९१	५११८	मानतुङ्गमानवतीचौपाई	मोहनविजय	१८वीं	२१	अणहलपुर पाटण, दुर्गादास राठोड़ राज्ये रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९२	६१३८	मानतुङ्ग-मानवती रास	मोहनविजय	१८०९	४४	र.का. सं० १७१०
४९३	६१३९(१)	मानतुंग मानवती रास (सचित्र)		१८७८	९५	चित्र सं० ८८
४९४	६२९७	मानतुंग मानवती रास	,,	१९१४	३६	
४९५	६३३५	,,	,,	१८२४	५०	लि.क. आलमचंद मकसूदाबाद, अजीमगंजमध्ये
४९६	६५३४	,,	,,	१८७९	७९	
४९७	७३९९	,,	अभयसोम	१८२८	११	र.का. सं. १७२०
४९८	७५२८	मानवतीरास	मोहनविजय	१८९२	८४	
४९९	७५५७	,,	,,	१७९७	३५	र.स्था. अणहिलपुर पाटण
५००	४४५२(८०)	मासंधिचक्र		१८वीं	१२३ वां	बोलने के फलाफल का विचार
५०१	६५२६	मुनिपति चरित्र (गद्य)		१९वीं	२१	
५०२	६३५५	मुनिपति चरित्र बालावबोध		१७६६	३१	
५०३	५४३६(४)	मुनिमालिका			२६–३३	
५०४	६२७२	,,	कल्याण	२०वीं	२०	र.का. सं. १६३६
५०५	५८९१	मृगलेखाचौपाई (सचित्र)	मुनि सागरचन्द्र	१८३८	५३	चित्र सं. ४८
५०६	६७४५	मृगाङ्कलेखाचौपाई (सचित्र, अपूर्ण)		१९वीं	३९	चित्र सं. ४२
५०७	७०५७	मृगावतीचरित्र	समयसुन्दर	१८वीं	३८	र.का. सं. १६२८,प्रथम पत्र अप्राप्त
५०८	४०८६	मृगावतीचरित्र चोपई	,,	१८वीं	२४	र.का. सं. १६६१ (?)
५०९	६५३३	,,	,,	,,	२३	
५१०	६२५०	मृगावतीचौपाई	,,	,,	१३	
५११	६८३८	मेघकुमार चौढाळियो आदि		१७३८–४९	५३	जीर्ण प्रति, १२ कृतियोंका संग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१२	४२८२	मेघमाला		१९वीं	५	लि.क. भगवानदास
५१३	४९१४(१६)	मेरुजयमाला		१८७१	२०९वाँ	
५१४	४४५२(६०)	मेषसंक्रांति आदि		१८वीं	११७वाँ	
५१५	६९२२	मैणरेहा चौपई		१९४९	७	लि.क. मुनि केशरीचंद
५१६	५१०२	मोती कपासिया वाद	श्रीसार	१८वीं	५	लि.क. मुनि निश्यसागर खेड़ामध्ये
५१७	७०७७	मौनएकादशीकथा (गौतममहावीर-संवाद)		१८२४	५	
५१८	६७६२	मोहमरदराजाकी कथा (पद्य)		१९५३	१३	लि.क. गरीबदास
५१९	५६०१	मोहविवेक चौपाई	धर्ममन्दिर	१७९९	६६	लि.क. भीमविजय
५२०	६४००	योगदृष्टिस्वाध्याय	नयविजय	१९वीं	५	दीमक से कटे जीर्ण पत्र
५२१	५४१८(१८)	योगसारके दोहे	योगचन्द मुनि	,,	१३४–१४०	१०७ दोहा
५२२	५४५०	योगासनमाला (सचित्र)		१८४६	११०	लि.क. स्वामी शोभाराम खातीपुरामध्ये
५२३	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसुन्दर	१८वीं	११	
५२४	४०८७	रत्नचूड़ चौपई	कनकनिधान	१८१४	१२	र.का. सं, १७३८
५२५	४८१९	रत्नपालरास	मोहनविजय, बुधरूपविजयशिष्य	१८६७	५४	लि.क. हितसौभाग्य क्षमा–सौभाग्यशिष्य
५२६	६०५७	,,	सूरविजय	१९००	७६	
५२७	४९१४(३०)	रत्नत्रय		१८७७	२४८वाँ	
५२८	६५३२	रतनपालरास	सेवक सूर	१८२७	३२	र.का. सं. १७३२, छोटी खाटू-मध्ये, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२९	४८३३	रतन महेशदासोतरी वचनिका	खडियो जगो	१७४१	७	लि.क. प्रमोद मुनि, रोहितासपुरे
५३०	४९१५(३)	रतनाहमीररी वात (पद्यबद्ध)	कवियण (?)	१८८७	४२-७५	२०० पद्य, लि.क. प्रभुदान
५३१	५४१८(२६)	रविकथा	तिहुरा गिरिनिवासी गर्गगोत्रीय म लूकपुत्र (?)	१९वीं	१५४-१६३	लि क. रामसागर
५३२	५४१८(२७)	,,	भानुकीर्ति	,,	१६४-१६५	
५३३	७४४४(१६)	रागपदबहोत्तरी	आनन्दघन	१८८५	२७०-२९४	लि.क. नेमविजय
५३४	४२८७(९)	रागपदसंग्रह		१८वीं	१७-२८	
५३५	५१००	,,		१९वीं	३	
५३६	५४१८(३४)	रागरासाष्टक		,,	१७५-१७६	
५३७	७७२०(२३)	रागानामोपरि विरहसुभाषित		१७६५	९-११	
५३८	४९०६(२)	राजसभारंजन	रसिक (?)	१७९८	१-२५	* र.का. सं. १७५९, ३७० दोहा
५३९	४९१५(१७)	राजाचंचरी बातरा दूहा		१८८७	४०६-४१०	
५४०	४९१६(२)	राजाभोज, माघपंडित नै डोकरीरी वात		१८७५	४५-४६	लि.क. सौभाग्य गणि
५४१	७७२१(६)	राजा रतनरी वचनिका	खिड़ियो जगो	१८२५	११९-१४१	
५४२	७७२०(२१)	राजावली			७ वां	सं. १२९७ से १७७० तक के सीसोदिया राणाओंका वंशपरिचय
५४३	४७९९	राणांरी वंशावली		१८वीं	१	नागधरानरेश से अमरसिंहपुत्र संग्रामसिंह तक
५४४	४९१४(८)	राजुलपचीसी बारहमासी	राजुल	१८७१	१६७-१६८	
५४५	५४१८(३५)	राजुलपच्चीसी	आनन्दचंद	१८०६	१-६	लि.क. दयानिधि

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४६	७१४४	राजुलपचीसी	लालचंद	१८५८	४	लि.क. सरूपा, आगरामध्ये
५४७	७२४३	राजुलपचीसी	,,	१९वीं	२	
५४८	५१०४	राठोड़ रतनमहेसदासोतर वचनिका	खिड़ियो जगो	१८०२	३७	लि.क. धर्मसुन्दर, प्रथम पत्र अप्राप्त
५४९	४४५२(११)	राठोड़ांरी वंशावली		१८वीं	१२९ वाँ	१११ राजाओं के नाम
५५०	४८३४	राठोड़ नाहरखानरो छन्द	गाडण माधोदास	१९वीं	१	*
५५१	६४४६(७)	राधाजीकी बारहखड़ी		,,	१४–१६	
५५२	७७४४(३)	राधाविलास		१७५८	८–१७	
५५३	४४५२(१९)	रामकिशनजीरो छन्द		१८वीं	१९ वाँ	
५५४	५६०३	रामकृष्णचौपाई	लावण्यकीर्ति	१७११	३०	र.का. सं. १६७७
५५५	६४६७	श्रीरामचन्द सवारी (गद्य)	रामनाथ	१९वीं	६	
५५६	७८१०(२)	रामचरणदासजीका कृतिसंग्रह	रामचरणदास	१८वीं	२६–२३०	७ कृतियों का संग्रह
५५७	६८५३	रामजसरसायन		१८९४	११४	र.का. सं. १६८७
५५८	७७४४(१)	राममञ्जरी	गोविन्ददास	१७५८	१–२	
५५९	६३५७	रामयशोरसायन	केशराज	१७९४	८९	
५६०	६७४९(२)	रामरक्षाभाषा	रामानन्द	१९वीं	८८–९२	
५६१	७६०९	रामरक्षामंत्र	,,	,,	३	लि.क. केशवदास
५६२	४९२४(५)	रामगुणरासो	माधोदास दधवाड़िया	१७८८	१–३२	लि.क. जयसौभाग्य गणि
५६३	७७२१(२)	रामरासो	,,	१८२५	२५–९९	
५६४	७७३५	रामरासो	,,	१८वीं	८१	गुटका, अपूर्ण
५६५	७१४०	रायप्रश्नश्रेणीमध्ये ईग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	
५६६	७७२२(८)	राव सत्रसालरो गीत		१८वीं	१०५ वाँ	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६७	४४५२(७५)	रासभचक्र		१८वीं	१२३ वाँ	गधे के विषय में शकुन-विचार
५६८	४४५७	रात्रिभोजन चऊपई	धर्मसमुद्र	१७२३	७	लि.क. भक्तिविशाल
५६९	४९१४(४३)	रात्रिभोजन रास		१८७७	२६८–२७२	
५७०	४९१४(४१)	रात्रिभोजन सज्झाय		१८७७	२६६ वाँ	
५७१	४९१४(४२)	रात्रिभोजन सज्झाय	कवियण	१८७७	२६७–२६८	
५७२	४९०५(१,२)	रीसालुकुंवररी बात स्फुटदोहा	नर्बदो चारण	१८७५	१–२५	लि.क. अनूपविजय
५७३	७१२२	रुक्मिणीमंगळ(कृष्णको व्याहलो)		१९वीं	१२–४२	अपूर्ण
५७४	६९७५	रुक्मिणीव्याहलो		१८६७	१३२	गुटका, सं. ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त
५७५	४०७६	रुक्मिणीवेली (सबालावबोध)	मू. पृथ्वीराज, टी. कुशलधीर गणि	१८२६	४३	लि.क. जीवणदास, रेवां ग्राम
५७६	४०७७	रुक्मिणीवेली (सस्तवक)	मू पृथ्वीराज, टी. लब्धिविज्ञान शिवनिधान	१७८९	२८	
५७७	७१६५	रुक्मिणीवेली, नागदमण आदि		२०वीं	गुटका	जीर्ण
५७८	४०७८	रुक्मिणीवेली (राजस्थानी अर्थसहित)	पृथ्वीराज	१८वीं	२७	
५७९	५२२१	रुक्मिणीहरण रास		१९वीं	१५	पत्र १, १२ अप्राप्त
५८०	५८९४	रूपसेनकुमार रास (सचित्र)		१८वीं	१३	लि.क. साध्वी मेरुश्री, चित्र सं.१६
५८१	६९३७(४)	रैदासके पद	रैदास	१८११–१८१६	२०१–२०९	लि.क. रामदास, निराणाग्राम
५८२	४०२७	रोहिणीतपस्तवन आदि	श्रीसार, राज आदि	१८वीं	२२	
५८३	६११९	लीलावती चौपाई	लाभवर्द्धन	१७४२	१४	पत्र १ से ३ अप्राप्त
५८४	६३७८	लीलावती चौपाई	,,	१९वीं	३६	
५८५	६०५६	लीलावती भाषा	लालचन्द	१७८३	२०	र.का. सं. १७३६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८६	४८३६	लीलावती रास	उदयरतन	१८०७	१६	लि.क. मुनि जेठा
५८७	५२८६	लीलावती रास	,,	१९वीं	१२	र.का. सं. १७६७
५८८	४९१४(२५)	लूंकामतनिराकरण प्रतिमास्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४ से २४२	
५८९	४०८८	वच्छराजहंस चौपाई	जिनोदय	१८६१	३३	लि.क. रूपविजयजी, बातानगर
५९०	४७८१	वंध्याकल्प		१८१४	४	
५९१	७७२६	वंशभास्कर	सूर्य्यमल्ल	१९४३	१८४	लि.क. बारहठ बालाववसजी, ग्राम हणूत्या, काशी ना. प्र. सभा में ग्रन्थमाला के संस्थापक
५९२	७७२७	वंशभास्कर	,,	१९४०	१८४	
३९३	७७२१(३)	वमेकवारतारी नीसाणी		१८२५	९९-११०	लि.क. श्वेताम्बर पञ्चायण
५९४	७१५१	वर्षाऋतुका कवित्त आदि		१८७६	७५	लि.क. भैरूंदास, जोधपुरमध्ये
५९५	४७१६	वर्षोत्पत्ति		१९वीं	२	
५९६	५३७६(२०)	वारसेनमुनिकथा			२२९-२४२	
५९७	६७३८	विक्रमखापरा चौपई	अभयसोम	१९वीं	१६	खण्डित
५९८	६४१४	विक्रमचरित्र (वैतालपचीसी)	हेमानन्द	,,	२७	
५९९	६९१५	विक्रमचरित्र (चौबोलीसतीचौपई)	उभयसोम	१८९५	११	र.का. सं. १७२४
६००	७०१४	विक्रमादित्यभूपालपञ्चदण्डकचरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र.का. सं. १७२८
६०१	६४१५	विक्रमादित्य लावणी	धर्मदेव (?)	१९७७	६	लि.स्था. देवगढ़
६०२	७६२०	विजयसेठ विजयासेठाणीलावणी	लालचंद	२०वीं	३	र.का. सं. १८६१
६०३	६१११	विद्याविलास चौपाई	जिनहर्ष	१८२९	१८	
६०४	४०९९	विनयभट्ट श्रेष्ठिपुत्रकथा	ऋषभसागर	१९वीं	७०	र.का. सं. १८१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०५	४९२४(६)	वभेक (विवेक) वाररी नीसाणी	केशवदास	१७९३	१–१४	लि.क. जयसौभाग्य, आठपहररा दूहा आदि भी हैं।
६०६	४४५२(४१)	विमलशाहजीरो सिलोको	शांतिविमल	१८वीं	४५–४८	
६०७	४१४५	विमलसाहाको सिलोको	पंडित विमल	१९वीं	१४	
६०८	४४५२(५३)	विषहरा विचार		१८वीं	१०९वाँ	
६०९	४९१४(४)	विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	१८७१	१६०–१६१	
६१०	६३३४	विषापहार स्तोत्र		२०वीं	१३	
६११	७७२२(१४)	वीरम देईडरिया आदिके कवित्त		१८वीं	१५२–१५६	* लि.क. आणंदराम
६१२	७७६९(१)	वीरमदे पन्नीरी वार्ता (सचित्र)		१८५६	१–३७	चित्र सं० १८
६१३	४१३९	वीरसेन राजकथा आदि		१९२४	८	लि.क. पं० जीवो
६१४	४४५२(६२)	वृद्धजुवानको झगड़ो		१८वीं	११८वाँ	लि.क. पं० प्रीतसौभाग्य
६१५	७७४३	वेदस्तुति भाषा	राजसिंघ	१७८४	३३–४६	* लि.क.बाई सिरेकंवरी, सायरगढमध्य
६१६	५३६८	वैतालपच्चीसी		१९वीं	४०	लि. स्था. –जोधपुर
६१७	६४४३	वैतालपच्चीसी	म. अनूपसिंह	१८९१	४४	लि.क. पुरुषोत्तम व्यास
६१८	७०४४	वैतालपचीसी	शिवराम	१७२६	५२	६१ कवित्त
६१९	७७२२(२)	वैतालपचीसीरा कवित्त		१९वीं	३७–४५	
६२०	७४४४(८)	श्रावक अतिचार		१८८५	१८०–१९०	
६२१	७१२२	श्रावक कथाकोश भाषा (अपूर्ण)		१९वीं	२१	
६२२	७७५३(८)	श्रावकरी सज्झाय	जिनहर्ष	१८३७	४२–४४	
६२३	७८१६(१)	श्रीधरलीला		१८३१से १८३३	४८	
६२४	६०२४	श्रीपालकथा	रत्नशेखर	१७२७	२९	लि.क. शान्तिलाभ, जेतारणमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२५	६२०५	श्रीपालचरित्र चौपाई	परमल्ल	१८५८	१००	लि.क.ब्राह्मणगुलाब, भगवंतगढ़मध्ये
६२६	४००२	श्रीपाल चौपाई	जिनहर्ष	१८२३	२५	
६२७	६९१९	श्रीपालचरित्र	सुजसविजय	१९२८	७८	लि.क. मंगूमल,प्रथमपत्र अप्राप्त
६२८	६३५१	श्रीपालचरित्र भाषा		१९१७	१०२	
६२९	६५२७	श्रीपाल चौपाई	ग्यानसागर	१७९१	३४	र.का. सं० १७२६
६३०	४१३८	,,	जिनहर्ष	१८९४	३५	
६३१	७२४८	श्रीपाल नरेन्द्रकथा		१९वीं	३१	
६३२	७०८९	,,	हेमचन्द्र, रत्नशेखरशिष्य	१८२३	१३७	लि.क. गोडीचन्द्र
६३३	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	र.का. सं० १७२६
६३४	६५२८	,,	विनयविजय	१८५७	५५	र.का. १७३८
६३५	६७४६	,,		१८७७	गुटका	र.का. १७३८
६३६	५३७३(५)	श्रीपाल रास (अपूर्ण)		१८०९	१०९–११८	
६३७	४४५२(७७)	श्वानचक्र		१८वीं	१२३ वाँ	कुत्तेके कान फड़फड़ानेके विषय में फलाफल-विचार
६३८	६८६३	शकुनदीपिका चौपई		१९वीं	८	
६३९	४४५२(६२)	शकुनरा कवित्त तथा जैसिंह सवाई-बखतेसयुद्ध		१८वीं	१२० वाँ	
३४०	४४५२(३०)	शकुनरी चौपाई (अपूर्ण)		१८वीं	३१–३२	
६४१	४४५२(७)	शकुनविचार		,,	११ वाँ	
६४२	४१६०	शकुनावली		१७वीं	२	४ यंत्रों का फल
६४३	५१२३(४)	,,		१८वीं	१९–२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४४	४६८६	शतसंवत्सरी		१९वीं	९	
६४५	४७२५	,,		१९वीं	४६	
६४६	४४५२(६५)	शनीसररो गुणछन्द	हेम कवि	१८वीं	११९ वाँ	लि.क. प्रीतसौभाग्य
६४७	४१६९	शनैश्चरकथा (स्नेहलीला) आदि		१८४०	२१	लि.क. गोपाल-मिश्र, पीरागपुरा वाला
६४८	४७८८	शनैश्चर कथा		१९वीं	६	
६४९	४८२४	,,		१८३६	२	आसोपनगरे लिखितम्
६५०	६३०७	शनैश्चर छन्द		१९वीं	२	
६५१	६३८९	शत्रुञ्जयउद्धार	भानुमेरु	१६६७	६	* र.का. सं० १६३८
६५२	५४३६(२)	शत्रुञ्जय रास		,,	५–१७	
६५३	६५३८	शत्रुञ्जयोद्धाररास	नयसुन्दर	१८वीं	६	लि.क. दानविजय, श्राविका लाडमरेपठनार्थम्
६५४	५८९०	शान्तिनाथ रास		१८५४	२२०	१०४, १०५ पत्र अप्राप्त
६५५	७७२०(७)	शारदाष्टक		१८वीं	४५ वाँ	
६५६	४०२४	शालिभद्र चरित्र	मतिसार	१८वीं	१२	र.का. सं० १६७८
६५७	४८०४	शालिभद्र चौपई		१८वां	१२	
६५८	५०६५	शालिभद्र चौपाई		१८४३	१८	लिखितं सवाईजयपुरमध्ये
६५९	६१३१	,,		१७७५	२५	लिखितं ग्वालियरमध्ये
६६०	६१४०	,,		१८१८	४८	
६६१	६५४३	,,	,,	१८५१	२३	लि.क. शिवदत्तसागर
६६२	६८४६	,,	,,	१८२८	१७	लि.क. खुश्यालचंद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	७५६३	शालिभद्र चौपाई	मतिसार	१७७२	१३	लि.क. ऋषि चांपो
६६४	७५६४	,,	,,	१८०६	२६	लि.क. खुशाल, बेगमपुरमध्ये
६६५	५४५८(५)	शालिभद्र श्लोक		१८५६	१–१०	
६६६	४७७७	शालिहोत्र		२०वीं	६०	
६६७	६८२६	,,		१६१५	१०५	पत्र १ से ३ अप्राप्त
६६८	७७३०	शालिहोत्र ग्रंथ (गुटका)		१६४३	३४	लि.क. राव जयसिंह दनोर, फतहबुर्जमध्ये
६६९	७७६७	शालिहोत्र (सचित्र गुटका)		१९वीं	१३६	चित्र सं० ११८
६७०	७८३७	शालिहोत्र (सचित्र)	महाराज नकुल पंडित	,,	६–७२	चित्र सं० ४८
६७१	७७२२(१३)	शिवरात्रि कथा		१७२७	१२५–१५२	लि.क. कासटीहा
६७२	५२९६	शीयलबावनी		१९वीं	२	५८ दोहे
६७३	४०७१	शीलरास (नेमिनाथ रास)	विजयदेव सूरि	१७६२	७	लि.क. लब्धिसागर
६७४	५४१८(२३)	शीलरासा	कवि जैत	१९वीं	१४९–१५०	
६७५	४०१०	शकबहोत्तरी	देवीदान	१८९९	४७	लि.क. विजयसमुद्र, जेसलमेर
६७६	४४१९	,,	देवदत्त	१७६०	५०	प्रथम पत्र अप्राप्त
६७७	७०१८	षट्पञ्चाशिका भाषा	मूल-पृथुयशा, टी. उत्पल भट्ट	१७६९	१५	
६७८	५३७६(६)	षोडश कारण कथा	शुद्धकीर्ति	,,	९०–९४	
६७९	५३७६(१७)	,,		,,	२०६–२११	
६८०	५३७६(१६)	षोडश कारण रासा	सकलकीर्ति	,,	२०३–२०६	
६८१	६९३७(६)	सर्वंगी	दादूजी	१८१६	२९३–४३०	
६८२	६५३९	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१७२४	१९	लि.क. मुनि सुन्दरसौभाग्य कृष्णदुर्गमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८३	७४०१	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१६७३	३१	लिखितं आर्या मरूपठनार्थम्
६८४	४९१८(२)	सावलिगा सदैवच्छकी वात		१७९९	२१–५२	लि.क. प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का
६८५	७१७३	सावलिगारी वात		१९७६	२७	लि.क. मथुरालाल
६८६	७७२२(५)	सावलिगासूरेरी वात		१९वीं	५३–५६	६८ पद्योंमें रचित
६८७	५४५८(२)	सदैवच्छसावलिगारी वात (सचित्र)		१८३८	१–५४	चित्र सं० ७
६८८	४९२४(१)	सदैवच्छ सावलिगारी वात		१७८७	१–८	जीर्ण प्रति
६८९	४९१६(४)	,,		१८७५	५४–७२	लि.क. सौभाग्य गणि
६९०	४१४७	,,		१८१९	३९	
६९१	६९८९	,,		१८५६	१९–१०८	लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
६९२	७७२०(२०)	,,		१८वीं	१–७ १९-२५	
६९३	७७६८	सदैवच्छ सावलिगारी वात (सचित्र-गुटका)		१८५४	७५	चित्र सं० ७७
६९४	७८४५	,,		१८४८	७–८४	चित्र सं० १४
६९५	५२०२(७)	सदैवच्छ सावलिगारी वात (अपूर्ण)		१८८५	१२३–१४१	
६९६	४९१५(११)	साहजादा कुतुबुदीनरी वात		१८८७	३६१–३७६	
६९७	४४५२(९६)	सिखामण		१८वीं	१३१ वाँ	७३ शिक्षाके वाक्य
६९८	७२४७	स्थूलभद्रस्वाध्याय	सिद्धिविजय	१९वीं	१	
६९९	४९२४(१४)	स्थूलभद्र सज्झाय	,,	१८वीं	३५–३६	
७००	७४४४(१२)	स्नात्रविधि	देवचन्द्र	१८८५	२१२–२४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०१	४४५२(७४)	स्यालचक्र		१८८५	१२३वाँ	सियार के बोलने का शुभाशुभ विचार
७०२	५१२३(८)	स्फुटज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१–४९	गोरखचक्र, धातुचक्र आदि
७०३	७७५३(१५)	स्फुटपद्य		१८३७	८९–१०६	सोरठ, राजुल आदिके दूहा, पद आदि
७०४	४४५२(८२)	संक्रान्तिफलचक्र		१८वीं	१२४वाँ	
७०५	४६७५	संक्रान्तिविचारआदि		१९वीं	५	
७०६	४६८५	,,		१८वीं	५	
७०७	७३३२	संस्तारकप्रकीर्णकसबालाबोध		१७वीं	१६	
७०८	४९१५(१२)	सज्जनप्रेमदूहा		१८८७	३३७–३८४	११० दूहा हैं
७०९	७४४४(१)	सज्झायसंग्रह		१८८६	३२७–३७३	
७१०	७५३८	,,		१८वीं	४	लि.क. ऋषि रामाजी
७११	६२८६	सत्तरभेदीपूजा	साधुकीर्ति	१८५३	१४	
७१२	७४८०	सत्तरीशयठाणप्रकरण		१९२३	४०	
७१३	४०५४	सतीगुणावलीचोपई	गजकुशल	,,	१२	र.का. सं० १७१४
७१४	७८१०(१)	सन्तदासकीवाणीआदि	सन्तदास	,,	४–२६	आद्य ३ पत्र अप्राप्त
७१५	६७४७	सन्तवाणीगुटका		१८९४	९९७	जीर्ण प्रति
७१६	७०९०	सन्ध्याप्रतिक्रमणविधि		१९वीं	१४	
७१७	४४५२(६)	सन्यासीरादशनाम		१८वीं	१०वाँ	
७१८	५११६	सनत्कुमारप्रबन्धचौपई		१८४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
७१९	४९१४(५१)	सम्बोधसन्तानूं दूहा	वीरचन्द लक्ष्मीचन्दशिष्य	१८७७	२७९–२८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२०	४७२४	समयरे राजारो फळ (वर्षप्रतिफल)		१९वीं	१	
७२१	५३७६(१५)	समाधि रास		१७६१	२०२–२०३	
७२२	४९१४(३)	सम्मेद शिखर निर्वाणकांड		१८७१	१५८–१६०	
७२३	४८०२	सरस्वती छन्द		१९वीं	३	
७२४	४२८७(१६)	सवाई जैंसिंघजीकीजोधपुर चढ़ाई		१८वीं	१२७–१३०	
७२५	४४५२(८३)	सवैयासंग्रह	श्याम, काशीराम आदि	,,	१२४ वाँ	
७२६	७७५३(१३)	सवैया		१८३७	७० वाँ	
७२७	४२८७(३)	सवैया इकतीसा	बनारसीदास	१७२६	१२–१३	स्वयं बनारसीदास के अक्षरों में लिखित ५ पद्य
७२८	४०८१	सवैयाबावनी	राजसी	१९वीं	५	
७२९	४९०६(४)	,,	राज कवि	१७९८	२५–३४	लि.क. केवलसौभाग्य
७३०	४४५२(१४)	सवैयासंग्रह	प्रताप, ब्रह्मगुलाल आदि	१८वीं	१७ वाँ	लि.क. प्रीतसौभाग्य
७३१	४४५२(२०)	सवैया, सपखरो आदि		,,	२० वाँ	
७३२	५५२४	सत्रह भेद पूजा	साधुकीर्ति	१८६४	६	र.का. १६१८, लालमण ढोलीरी पोशाळमध्ये
७३३	५४१०	साठी संवच्छरी आदि		१८वीं	८३	प्रश्नावली और मुहर्रम के चांद आदि का फल
७३४	४९२४(१२)	सात वारांरा बिघड़िया		१७९०	१३–१४	लि.क. जयसौभाग्य गणि
७३५	४९२४(११)	सात सखीरो संवाद		१७९३	१२–१३	
७३६	४४५२(९४)	सात सखीरो संवाद (प्रहेली)		१८वीं	१३० वाँ	
७३७	७३०५	सिद्धान्तबोल		१६१०	४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३८	७५४६	सिद्धांतसारोद्धार		१७७६	५९	अन्तिम तीन पत्र त्रुटित
७३९	६३८३	सिरी सांतणी भास	लावण्यसमय	१८वीं	२	सा. चन्द्रावलि पठनार्थं
७४०	४००६	सिंहलसुत चौपई	समयसुन्दर	१७९४	६	लि.क. कुशलहर्ष
७४१	४८२८	सिंहलसुत चौपई	,,	१७वीं	६	
७४२	६५३६	सीताराम चौपाई	,,	१८वीं	६२	
७४३	७७५३(२)	सीतासज्झाय	जिन हर्ष	१८३७	३०-३१	
७४४	५३७६(१)	सुदर्शनसेठकी कथा	नन्द (?)	१७६१	१-३१	र.का. सं० १६६३
७४५	४००७	सुदर्शनसेठरा कवित्त	दीयो कवि	१८८०	२१	लि.क. ऋषि इन्द्रभाण
७४६	४०८९	सुदर्शनसेठरा कवित्त	,,	१८८४	२०	लि.क. बाई चंपा
७४७	६२७४	सुबाहुचरित्र आदि		१९वीं	८	
७४८	६३८८	सुबाहुचरित्र	जिनमाणिक्य सूरि	१८वीं	६	र.का.सं. १६००, जैसलमेरमध्ये
७४९	४००८	सुभद्रासतीरो चौढालियो	मानसागर	१८७९	५	लि.क. स्थाविरजी श्रीचैन-रामजी
७५०	४९१२	सुभाषित		१९वीं	४	९५ पद्य हैं
७५१	५४१८(३)	सुरतपंचमी कथा	वनवारीदास	१९वीं	१-८७	
७५२	५९३०	सुरसुन्दरी चौपई	धर्मवर्धनदास	१८४२	२८	
७५३	५९७५	सुरसुन्दरी चौपाई	,,	१७८२	२५	पत्र सं० २० से २३ अप्राप्त
७५४	४००९	,,	शुभशील	१९वीं	१७	लि.क. नेमचन्द
७५५	७२४४	,,	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
७५६	४८०१	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१९८८	२६	लि.क. राघवकेशव, राजकोटमध्ये
७५७	७३७४	सूक्तिमुक्तावली	केशरविमल गणि	१९वीं	२५	लि.क. इष्टहंस

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५८	६४१८	सूरजजीरो सलोको		,,	२	
७५९	७७२५	सूरजप्रकाश	करणीदानजी	१८४१	३००	र.का.सं. १७८७ लिपिस्थान–बदनोर
७६०	६७५२	सेऊसमनकी परश्री	गोविन्दराम (?)	१९२९	३	
७६१	४०११	सोमवती अमावसरी वार्ता		१८४३	३	लि.क. जीवणराम
७६२	७७२२(३)	सोरठरा दूहा		१८वीं	४६–४८	४३ दूहा
७६३	५४१८(२२)	सोलह कारण का रासा		१९वीं	१४७–१४९	
७६४	४९१४(४५)	सोलह स्वप्न वीनती		१८७७	२७४ वां	
७६५	६३५८	सौभाग्यपंचमी चौपई	जिनरंग	१८वीं	२५	
७६६	५८९२	हंसराज वच्छराज चौपई (सचित्र)	जिनोदय सूरि	१८३५	४४	र.का. सं० १६८०, चित्र सं. १०३
७६७	५४३१(२)	हंसराज वच्छराज चौपई (अपूर्ण)		१६१०	६४ से ९६	१४३ पद्य
७६८	७४०२	हंसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	१८६६	३४	लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द
७६९	६५३५	,,	,,	१९वीं	४२	
७७०	७२२७	हंसराज वत्सराज रास	,,	१८८३	४६	र.का. सं. १६८०
७७१	५२०९	हंसवत्स चौपई (सचित्र)		१८वीं	६२	चित्र सं. ६५
७७२	५४३१(१)	हंसावली (अपूर्ण)		१६१०	१५–६४	
७७३	४४५२(७०)	हणमंतरो छन्द		,,	१२० वाँ	
७७४	७७२१(१४)	हनुमान छन्द	नरहरदास	१९३१	२०१–२०२	
७७५	४९०२	हम्मीर रासो	कवि महेश	१७८७	५९	लि क. पांडे नाथूराम गौड़
७७६	५३८४(१)	,,	,,	१९४४	१–७०	लि.क. मनसाराम ब्राह्मण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७७	७१६७	हमीरहठ वार्ता		१८९७	९६	गुटका
७७८	६४४६(४)	हरजस		१९वीं	१–४	
७७९	४०१२	हरिचंद रास	जिनहर्ष	१८८२	२५	लि.क. पं. क्षेमाब्धि
७८०	४८२९	,,	कनकसुन्दर	१८८५	१७	र.का. सं. १६९७
७८१	७७२१(९)	हरिजस नाममाळा	रतनूंहमीर	१८२५	१४४–१६५	
७८२	४९०५ (१०,११,१२)	हरियालीरा दूहा आदि		१९वीं	३६–३८	
७८३	४९२४(८)	हरिरस	ईसरदास	१७९३	१–१०	अंतिम पत्र पर सोलह शृंगारों की सूची
७८४	७७२१(१२)	,,	,,	१९३१	१८०–१९९	लि.क. फूलगिरि
६८५	७७५०(१)	,,	,,	१८६०	१–२१	लि.स्था. वीरधार
७८६	५३४३	,, आदि	,,	१८वीं	५	
७८७	४९१४(२)	हरिवंशपुराणनो रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	७–५७ १७१–२०१	लि.क. चंद्रकीर्ति, एहमदाबाद-नगरे
७८८	४४५२(९२)	हाथियांरा वखाण	नाहरखांन राजसिंहोत	१८वीं	१३० वाँ	रोमकंद छन्दों में वर्णन
७८९	४९२४(९)	हाथीरा बणाव		१७९३	११वाँ	
७९०	४४५२(२४)	हिंगुलाष्टक		१८वीं	२४ वाँ	
७९१	७४१७	हिंडोलण आदि	रामसरण (?)	१७वीं	१	लि.क. पं. खेतसी
७९२	४१६८	हीर रांझ्या को तमासो		१९५४	३२	लि.क. नाथूनारायण शर्मा
७९३	४८३९	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर सूरि	१७८२	७१	पत्र सं. १,२ अप्राप्त, जैसलमेरनगरे लिखितं
७९४	७३६७	,,		१७वीं	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६५	७४०३	क्षेत्रसमास		१८५१	६	र.का. सं. १५३६
७६६	७५२३	„ गणित		१८३६	१२	ताजिब ग्रामे लिखितं
७६७	४४२४	„ चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	र.का. सं. १५६४
७६८	४०२	„ प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखराचार्य	१८२१	२०	र.का. सं. १६८६ (?) उदयपुर नगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४५२(१०२)	अकडमचक्र	हीर	१८वीं	१३६वाँ	
२	४०३८	अंगद वसीठी सवैया	कवि भान	१९वीं	३	अंगद रावण संवाद का वर्णन है
३	७७२०(६)	अध्यात्मछत्तीसी	बनारसीदास	१८वीं	४३-४५	
४	४९१४(६)	अध्यात्मबत्तीसी	,,	१८७१	१६६-१६७	
५	७७२०(५)	,,	,,	१८वीं	४२-४३	
६	५३९२	अध्यात्मरामायण भाषा (बालकांड)	भगवान अर्जुन नागा शिष्य	१८वीं	३२	रचनाकाल सं० १७४१
७	५३९३	अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकांड)	(निरंजनी)	,,	४८	
८	५३९४	अध्यात्मरामायण भाषा (वनकांड)	,,		३७	
९	५३९५	अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किधाकाण्ड)	,,	,,	३१	
१०	५३९६	अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकांड)	,,	,,	२१	
११	५३९७	अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड)	,,	,,	६५	
१२	५३९८	अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड)	,, ,,	१७८३	३९	* रचनाकाल सं० १७२८ लि.क. मेघा, नागपुरमध्ये
१३	४२१६(३)	अनेकार्थी	नन्ददास	१८५९	१६२-१६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	६७५३	अमृतधारा	भगवानदास निरंजनी	१८२२	५६	
१५	४८०३	,,	,,	१९वीं	५२	अपूर्ण
१६	७४६१	अलङ्कारदीपक	शंभूनाथ मिश्र (सुखदेव शिष्य)	,,	२८	
१७	४०३७	अलङ्कारमाला	सूरत मिश्र	१८वीं	५	र.का. सं० १७६६ आगरा में रचित
१८	४२७०	अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय	१९वीं	६०	वंशीधर कवि की व्याख्या सहित
१९	६६५३	अष्टावक्र प्रकरण भाषा		१८९४	१४	लि.क. बुधराम दादूपंथी
२०	४२८७(१)	अक्षरबत्तीसी		१७२६	१–४	लि.क. रामचन्द्र
२१	४२८७(१२)	अक्षरबावनी	सुन्दरदास	१७२८	९३–९८	,,
२२	५६८०	आत्मप्रकाश	आत्माराम (दौलतरामजी शिष्य)	१९वीं	३६२	
२३	६२४०	आत्मानुशासन भाषा	गुणभद्र	१८८८	१३८	लि.क. ताराचंद ब्राह्मण डांगरवाड़ा का, नगर महुवा मध्ये
२४	७७२०(१७)	आत्माराम गीत		१८वीं	५१ वां	
२५	५४१८(९)	आदीश्वर के रेखते		१९वीं	१०५–१०९	
२६	४६१७	आनन्द विलास	महाराजा यशवन्तसिंह	१७४३	११	
२७	६७२१	इतिहाससमुच्चय भाषा	लालदास	१८१२	८९	
२८	४२६३(३)	इश्क दरियाव	रसराशि	१८८२	९–१६	कवि जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह का आश्रित था
२९	४२६३(४)	इस्कफंद	,,	,,	१७–१९	
३०	४९२४(१७)	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	१८वीं	२२–२७	लि.क. जयसौभाग्य गणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६३२३	उपदेश बावनी	कृष्णदास	१९वीं	१०	र.का. सं० १७७२
३२	५१९९	उपाख्यान सहित दश लीला		१९२१	३–२६	लि.क. ब्राह्मण बालमुकुन्द, मथुरा मध्ये
३३	४३१३	ऐन पचीसी	लाला सुन्दरलाल	१८९७	८	जयपुर में रचित
३४	५४०१	कर्मविपाक		१६०७	२५	लि.क. हरिदास
३५	७७४४(५)	करुणाभरण नाटक	कृष्णजीवन लच्छीराम	१७५८	२३–५१	लि.क. चैनकुंवरी
३६	७७५६(२)	कालको अंग	सुन्दरदास	१९वीं	२२–३१	
३७	४४५२(२७)	कवित्त कुण्डलिया	केशव, गङ्ग	१८वीं	२६वाँ	
३८	४४५२(२१)	कवित्त बावनी	खेमचंद आदि	,,	२१–२२	
३९	५३७४	कवित्त संग्रह	आनंदघन	१८४६	५९	५३२ कवित्त हैं
४०	५३८२	,,	जगदीश कवि	१८६३	१९३	* १००० कवित्तों का संग्रह
४१	४२१७(२)	कविप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पत्र सं० ७६ से ८४ अप्राप्त
४२	५३८०(१)	,,	,,	१८४६	९६	
४३	७०६४	,,	,,	२०वीं	१६६	
४४	६९७६(२)	काव्य सिद्धांत	सूरति मिश्र	१८६०	७४–८८	
४५	४१४०	,,	,,	१९०१	३१	लि.क ऋषि देवराज
४६	४२९४	किशोर कल्पद्रुम	शिव कवि	१८वीं	१९६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५२०१	किस्सा गुलबकावली		१९वीं	३–७६	
४८	७७४४(७)	कृष्णजीकी रसोई		१७५८	५७–६२	
४९	६८२८	कृष्णसागर		१९वीं	२००	
५०	५४१७	कृष्णायन कथा चौपई		,,	१७५	१८४६ पद्य। र.का. सं० १८३६ स्थान–आगरा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	५३७१(५)	केनोपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१–२४	
५२	५४२०(७)	कोकमंजरी		१९१२	१०७–१११	लि.क. इन्द्र मिश्र
५३	७७५२	,,	कवि आनन्द	१८१३	४१	लि.क. विजय गणि
५४	४१५८	कोकसार	आनन्द कवि	१९०९	११	लि. स्था. रतलाम
५५	४४५२(२९)	,,	,,	१८०४	२७–३१	लि.क. प्रीतिसौभाग्य गणि
५६	४९२२	खिल प्रकरण (योगवासिष्ठान्तर्गत)		१८५३	४८	
५७	५११०	खालिकबारी		२०वीं	३	
५८	५३७०	गङ्गा आगमन कथा	रस आनन्द	१८९३	९	स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
५९	६३४३(२)	गङ्गालहरी	पद्माकर	१८८९	१२–२७	
६०	५४०२	गणितसार	हेमराज	१७९४	७	कोटा में लिखित, त्रुटित
६१	५८७४	गणेशपुराण भाषा	मोतीलाल	१९वीं	१६	
६२	५४०६	गीतगोविन्द टीका	चिन्तामणि	,,	४०	चन्द्रकुलसंभूत पहाड़सिंहप्रीतये
६३	४२८८(४)	गीता भाषा (पद्यानुवाद)	हरिवल्लभ	१८८९	११३	
६४	७१७१	गीतामृत सार	मकरन्द	२०वीं	१७३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६५	४९०५	गुरुदेव को अंग	सुखसागर	१९वीं	२५–३१	
६६	६४४६(३)	गुरुस्तुति		,,	४१–४२	
६७	५८६६(३)	गुलजार इश्क अनवर इकबाल का किस्सा		,,	१२–८२	
६८	५२०४	गुसाईंजी की वन-यात्रा		,,	४१	
६९	४९०६(५)	गूढार्थ दोहरा	वृन्द आदि	१७९८	३४–४५	
७०	७७४४(८)	गोपाल लीला	तुलछीदास	१७५८	६२–६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१	६९८८	गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका		१९वीं	४२	जयपुर के गोपीजनवल्लभ मंदिर की निम्बार्कीय पूजा प्रणाली
७२	७७२०(१६)	गोरखवचनिका		१८वीं	५१वाँ	
७३	७७३४	गोवर्द्धननाथजी की प्राकटच वार्ता		१९२३	४८	बदनोरमध्ये लिखित
७४	५३६७	गोविन्दविलास	कृष्ण कवि	१८९७	११६	र.का. सं० १८९३, कवि गोपाल-सुत, ग्वालियर वासी
७५	५३८१	गोविन्दानन्दघन	गोविन्द नाटाणी	१९वीं	३०	कवि जयपुर वासी र.का. सं० १८५८
७६	५३८३	चकत्ता पातशाही की परंपरा		,,	१४१	
७७	५३४७(१)	चन्द्रमुकुट चन्द्रकिरण रानीकी बात		१८३७	१–३०	लि.क. लाला तुलसीराम सेनवंशी
७८	६३४६	चरनाई की पाटी आदि		१८८७	८५	
७९	५४३८(५)	चिन्तामणि माला	नन्ददास	१८९०	६२–६६	
८०	४९१३	चितावणी संग्रह	रामेश्वरदास आदि	१९वीं		र.का. सं० १८०८
८१	७७२०(१८)	चेतन सुमति गीत	बनारसीदास	१८वीं	५१–५२	
८२	७११५	चौरासी वैष्णवों की वार्ता		१९वीं	२७०	रूपनगर में उम्मेदकुंवर बांकावती ने लिखवाई
८३	५३८२(२)	छक पचीसी	जगदीश कवि	१८६३	१८९–१९३	लि.क. भट्ट श्यामसुन्दर
८४	५३७७	छद्मषोडशी	वृन्दावनहित	१८९०	७१	राधाकृष्ण लीला वर्णन, वृन्दावनमें लिखित
८५	६७६३	छन्दरत्नावली	हरिराम	१९२०	१०	र.का. सं० १८२५, पुरनगर में लिखित
८६	५८१६	छन्दलता	चिन्तामणि	१९०९	३१	लि.क. व्रजवासी, वृन्दावन मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	४२१३	छन्द विचार	सुखदेव मिश्र	१८७६	२५	लि.क. संगम कवीश्वर
८८	५३७६(२२)	ज्येष्ठजिनवर कथा		१८वीं	२४८–२५३	
८९	६३०३	जिनदत्तचरित्र चौपई	विश्वभूषण	१७९६	७१	
९०	७७४६(१)	जोग लीला	उदय (?)	२०वीं	१–७	
९१	४२८७(७)	तर्क चितावनी	सुन्दरदास	१७२८	२६–३३	लि.क. आनंदराम
९२	५३७१(२)	तैत्तिरीयोपनिषत् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट		३४	
९३	७७२०(१०)	दसदान		१८वीं	४६ वाँ	
९४	५४०७	दक्षनविलास	दक्षन कवि (अहमदउल्लाह, बहरियाबाद के)	१८९४	३७	र.का. सं० १७२२, राधाकृष्ण के शृंगार का वर्णन
९५	४३१६	दानलीला	कृष्णदास	१९२८	१४३–१५२	
९६	५४३८(४)	,,	परमानंददास	१८९०	५६–६२	
९७	४२६३(१५)	दुखहरण वेलि	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	३४, ३५	
९८	४३०६(१०)	,,	,,	१९वीं	१९, २०	
९९	७४४१(११)	,,	,,	१९१४	५९, ६०	
१००	५३९१	दोहासार		१८८४	१०३	संग्रह समय–१७२०, भरतपुर में लिखित, प्रथम पत्र अप्राप्त
१०१	५४५५(१)	ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१९वीं	१६	
१०२	६०८८	,,	,,	,,	५	
१०३	६३६४	,,	,,	,,	९	
१०४	४२८८(२)	ध्रुवचरित्र	गोपाल	१८८९	१७–४५	
१०५	५४१२(२)	,,	शशिनाथ माथुर (सोमनाथ)	१८५७	१–२०	र.का. सं० १८१२, कवि भरतपुर वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	७१५८	ध्रुवचरित्रादि		१८०५	८८	आद्य पत्र अप्राप्त
१०७	६३१९	धर्मपरीक्षा	मनोहरदास सोनी	१८६०	८७	र.का. सं० १८११
१०८	६३१६	धर्मसार चौपाई	पं० शिरोमणिदास	१९वीं	३४	र.का. सं० १७३२
१०९	६१४५	नयचक्र भाषा	विलास	१९०७	४७	र.का. सं० १८६७ करौलीमध्ये लिखितं
११०	७३५१	नयतत्त्वविचार सार्थ		१९वीं	११	
१११	७७६९(२)	नयनसुख (वैद्यमनोत्सव)	नयनसुख केशवपुत्र	१८५६	१–४४	चित्र सं० २
११२	७००९	नयनसुख	,,	१८८४	२६	
११३	६८३५(१०)	नवकारमंत्र		१८६९	३	
११४	७४४२(१)	नवतत्त्वभेद		१७६४	१–४६	
११५	७७२०(८)	नवदुर्गाविधान		१८वीं	४५ वाँ	
११६	७७२१(७)	नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	१८२५	१४१–१४२	
११७	६८३५(५)	नागोरीगच्छपट्टावली		१८६९	१	
११८	७७२०(९)	नामनिर्णयनिघान		१८वीं	४५–४६	
११९	६३४३(४)	नाममंजरी (मानमंजरी)	नन्ददास	१८८९	४२–६९	
१२०	७७९७	,,	,,	१८१३	१८	लि.क. उदयराम ब्राह्मण
१२१	६८३३(१)	नायिकाभेद		१८४८	२–५	अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२२	५४१६	नासिकेतकथा भाषा	नन्ददास	१८८५	४७	लिखितं जिगनीमध्ये
१२३	४५५७(१)	नीतिमंजरी	म. प्रतापसिंह	१९वीं	१–१३	लि.क. महात्मा ज्ञानीराम
१२४	७४४१(१)	नीतिमञ्जरी	,,	१९१४	१–२	लि. स्था. उदयपुर, सेठ गंभीरमल पठनार्थं
१२५	७७४९(१)	,,	,,	२०वीं	१–१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२६	५३७२	नेहनिदान	रस आनन्द	१८९६	१२	स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
१२७	४४५२(४०)	नैनबत्तीसी	वृन्द कवि	१८वीं	४४–४५	र.का. सं० १७४३
१२८	७७२१(८)	प्रकीर्ण कवित्त		१८२५	१४३–१४४	
१२९	७७२०(१९)	प्रकीर्ण पद	बनारसीविलासान्तर्गत	१८वीं	५२ वाँ	
१३०	५४०८	प्रतापविलास	वृन्द कवि	१९वीं	१६	काव्यप्रकाश पर आधारित रस-ग्रन्थ
१३१	६२६२	प्रबोधपंचाशिका	पद्माकर भट्ट	१८६३	२०	
१३२	४८०५	प्रबोधपचीसी	सुन्दर कवि	१९वीं	२	कवि खरतरगच्छीयशांतिदास-का शिष्य है
१३३	४२८८(३)	प्रल्हादचरित्र	गोपाल	१८८९	४२–८८	
१३४	५३७१(३)	प्रश्नोपनिषत् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	३५–६४	
१३५	७७२०(१२)	प्रास्ताविक सवैया		१८वीं	४७–४८	
१३६	५२२४	प्रास्ताविक सवैया (प्रश्नोत्तर)		१९वीं	६	५१ सवैया हैं
१३७	४३०९(१२)	प्रीतिपचीसी	म. प्रतापसिंहजी	,,	२३–२७	
१३८	७४४१(१६)	,,	,,	१९१४	७५–८०	
१३९	७७४९(६)	,,	रसराशि	२०वीं	१–५	
१४०	४२६३(११)	प्रीतिलता	म. प्रतापसिंहजी	१८वीं	१०–१६	
१४१	४३०९(६)	,,	,,	१९वीं	१०–१३	
१४२	७४४१(८)	,,	,,	१९१४	४६–५२	
१४३	४२६३(८)	प्रेमतरङ्गिणी	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	१–२३	कवि म. प्रतापसिंहका आश्रित था

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	४२६३(१२)	प्रेमप्रकाश	म. प्रतापसिंह	१८वीं	१७–२०	
१४५	४३०६(४)	,,	,	१९वीं	६–८	
१४६	७४४१(१३)	,,	,,	१९१४	६३–६६	
१४७	५३४७(२)	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	१८३७	३०–४०	र.का. सं० १७४२, म. कु. रतन-पाल, करौली प्रशस्ति परक
१४८	४७९४	पंचाध्यायी	नन्ददास	१८वीं	१७	
१४९	५२०२(६)	पंचाध्यायी (भाषानुवाद)	वंशीअली	१८८५	११४–१२३	
१५०	४२६५(१)	पंचाध्यायी	नन्ददास	१८४३	१०–२९	
१५१	७७५६(१)	पञ्चेन्द्रियोपदेश	सुन्दरदास	१९वीं	३१	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१५२	४२९२	पदमुक्तावली	श्रीनागरीदासजी	,,	९२	त्रुटित
१५३	५३७८	पदसंग्रह	किशोरीअली गोस्वामी	,,	२१२	जलविहार भ्रमर गीत, सांझी आदि से सम्बन्धित पद
१५४	५४४०	,,		,,	६६	निम्बार्क संप्रदाय सम्बन्धी पद हैं
१५५	६८४२	,,		,,	११०	जैन धर्म सम्बन्धी पद
१५६	७८१५	,,		१८८६	१२८	वल्लभ संप्रदाय के पद
१५७	७८३९	,,	रसनायक	१९वीं	५९	३०८ पद
१५८	५१७७	,,	नन्ददास आदि	१८वीं	५५	
१५९	७७३८	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१९२३	१३९	लि.क. पठान उमेदखां, बदनोर राज्ये
१६०	७७४२	,,	,,	१९१४	११२	लि.क. वैष्णव हरिदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१	७७३६	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१६४१	२६६	लि.क. वैष्णव सीतारामदास
१६२	६३३१	पातसाहनामोपरि रमल		१६१२	३	
१६३	६१७७	पार्श्वनाथपुराण भाषा	भूधर	१८०१	६५	र.का. सं० १७८६, आगरा में रचित
१६४	६६२१	,,		१६वीं	६४	पत्र सं० ४०, १५ अप्राप्त
१६५	७१०८	,,	भूधर बुध	१७२५	८६	र.का. सं० १७८२
१६६	५६६६	पारासोमल की क्रिया		१६वीं	६	रजत आदि धातुओं की निर्माण-विधि
१६७	६३४३(३)	पिंगलसार	मोहन	१८८६	२७-३८	
१६८	५२०५(१८)	पूजाविधि	श्रीवल्लभाचार्य	१८वीं	८८-६१	
१६६	७७४४(१०)	पूरणमासी कथा		१७५८	७२-११५	
१७०	४३०६(१३)	फागरंग ग्रन्थ	म. प्रतापसिंह	१८६६	२८-३१	
१७१	७४४१(४)	फाग रंग	,,	१६१४	३५-४०	
१७२	५११३(६)	फालनाम फारसी		१८वीं	२८-२६	
१७३	४२६४	फुटकर कवित्तसंग्रह	अनेक कवि	,,	११८	४२५ कवित्त हैं
१७४	४३०६(१५)	व्रजसिंगार	म. प्रतापसिंह	१६वीं	४५-५०	
१७५	४२६३(१०)	व्रजशृंगार	,,	१८वां	१-६	
१७६	७४६०	ब्रह्मविलास	भगवतीदास	१८४६	१२४	र.का. सं० १७५५, कर्ता आगरा-निवासी लालजी कटारिया का पुत्र
१७७	५३७१(१)	ब्रह्मसूत्र भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१-२७	लि.क. महात्मा श्योजी (शिवजी)

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	४७८५	बनारसीविलास	बनारसी गर्ग, अग्रवाल	१८वीं	११५	र.का. सं० १७७१, पत्र ८६ से ९६ अप्राप्त
१७९	७४४२(२)	बनारसीविलास भाषा	,,	१७६४	१–११६	
१८०	५४२८	बल्लभाख्यान	गोपालदास	२०वीं	५३	
१८१	५३८७	बहत्तरी	मोहनदास	१७९७	८	लि.क. नरसिंह अग्रवाल
१८२	५२०२(५)	बारहखड़ी	दत्तलाल	१८८५	१०९–११४	भाषा पर पंजाबी प्रभाव है
१८३	५४२०(४)	,,	,,	१९वीं	९७–१०३	
१८४	५४२६(१)	,,	विष्णुदास ठण्डीराम शिष्य	,,	१–१२	
१८५	५४२६(३)	,,	दत्तलाल	,,	२६–३५	
१८६	५४२६(९)	,,	भवानी	,,	४९–५३	
१८७	५४२६(११)	,,		,,	१–५	
१८८	५४२६(४)	,, प्रह्लादजी की		,,	३५–३८	
१८९	५४२६(५)	,, परमेश्वरजी की	कुशला	,,	३८–४२	
१९०	५४२०(६)	,, रामायण की	रामरत्न	,,	१०३–१०७	
१९१	५४२०(५)	,, विरह की (ब्रह्मस्नेह बारहखड़ी)		,,	१०३	
१९२	५४०३	बारहखड़ी सूरत की	सूरत, देवधरशिष्य	,,	८	
१९३	५४२६(६)	बारहमासी	मुरलीदास	,,	४२–४७	
१९४	५४२६(७)	,,	भवानी (अवधपुर वासी)	,,	४७–४९	
१९५	५४२६(८)	,,	सूरदास	,,	४९ वाँ	
१९६	४७९०	बावनी सवैया	जसराज	,,	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९७	४३०७(१)	बिहारीसतसई	बिहारी	१७८७	६६	लि.क. यति कुसला मालपुरामध्ये
१९८	४४१२	,,	,,	१८१२	५०-६१	लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि, खारिया ग्रामे
१९९	४६०७(३)	,,	,,	१८३७	३५-१३५	अंत में होराचक्र और स्फुट कवित्त हैं
२००	६३४२(४)	,,	,,	१९वीं		
२०१	४१४४	बिहारीसतसई सटीक	टी. कृष्ण कवि	१८०२	१३२	
२०२	४२१६(२)	बिहारीसतसई टीका		१८५९	७२-१६०	
२०३	६३१५	,,		१९वीं	५६	अपूर्ण
२०४	४४१२	बिहारीसतसया	बिहारी	१७६९	१५	लि.क. मुनि मनोहर
२०५	४२९१	बुद्धिसागर	कवि जान	१८९८	२००	लि.क. झूंझणू वासी बिरामण रामधन
२०६	५४२६(२)	भ्रमरगीत टीका, प्रेमरसपुञ्जनी	मुकुन्ददास		१२-२६	
२०७	६७२६	भँवरगीत		१९वीं	१७	प्रथम पत्र खण्डित
२०८	७७४९(५)	भँवरगीत	नन्ददास	२०वीं	१-९	
२०९	७७४४(६)	,,	रसिकराय	१७५८	५१-५७	
२१०	५४००	भक्तमाल टीका	मू. नाभादास, टी. प्रियादास	१९वीं	१६५	
२११	५४७६	भक्तमाल टीका रसबोधिनी	,,	१९००	३०६	र.का. सं० १७६५, बून्दी में लिखित
२१२	५४०९	भक्तमाल टीका	,,	१७६९	१४१	लिखायितं माजी जोधपुरीजी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६७५५	भक्तमाल टीका	लालदास	१८९३	१०४	लि.क. हेमदास, कबीरशाह को साधक
२१४	६६३९	,,	लालदास	१८७०	१९८	लि.क. गोपालदास अवन्तीमध्ये शेषशायीमन्दिरे
२१५	६५७१	,,	प्रियादास नारायणदासशिष्य	१८६४	११९	र.का. सं० १७६९ लि.क. रामकृष्ण महाजन
२१६	६०५४	भक्तमाल टीका रसबोधिनी		१८वीं	२०५	
२१७	६४४८	भक्तमाल सटीक		,,	२७६	
२१८	७७३२	,,	प्रियादास	१८२५	१६५	र.का. १७६९ लि. स्था० बदनौर
२१९	७८३१	,,	लालदास	१८५६	१३२	लि.क. शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर
२२०	६५७६	भक्तमालमाहात्म्य	कृष्णदास	१९वीं	४	
२२१	५४२४	भक्तितरङ्गिणी	चरणदास	१९४१	४०	लि.क. इन्द्र मिश्र, स्थान नगर
२२२	६८२९(१)	भक्तिपदार्थ		१९०२	१–१४४	अन्त में भजन हैं
२२३	५४१३	भगवद्गीता भाषा पद्य		१९००	८९	लि.क. हरिदास ब्राह्मण, वैराठ
२२४	७५०८	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद		१७७४	८८	लि.क. डालचंद ब्राह्मण, शाहगंज दिल्ली
२२५	६१४८	भद्रबाहुचरित्र चौपाई	किशनसिंह सांगानेर के	१८२७	४७	र.का. सं० १७७०, कई स्थानों पर प्राचीन पत्रों के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं
२२६	६१५१	,,	किशनसिंह सिंघवी	१९०६	३९	
२२७	६१५६	भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह	१९०६	४०	लिखितं अलवरसहरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२८	५४२०(३)	भर्तृहरिशतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	म. प्रतापसिंह	१९वीं	६५-९७	
२२९	४३०८(४)	भरथचरित्र	जनगोपाल (?)	१८वीं	४५६-४६७	१०५ छन्द हैं
२३०	६०१०	भविष्यदत्त चौपाई	ब्रह्म रायमल	१९वीं	४७	
२३१	६९३७(५)	भागवत, एकादशस्कन्धानुवाद	चत्रदास	१८११	२१०-२९३	लि.क. रामदास, निराणा ग्राम
२३२	४२५६	भागवतचरित्र नारायण लीला	माधवदास	१८वीं	३९	लि.क. जती जीवणसागर
२३३	७१७०	भागवत दशमस्कन्ध की भाषा	हरिवल्लभ	१९८०	९१	गुटकाकार
२३४	६८३०	भागवत भाषा	कविराय मोतीराम आणंदसुत	१९वीं	१०३	जीर्ण प्रति
२३५	६०९८	,,	हरिवल्लभ	१७८९	६५	लिखितं रूपावास मध्ये, ब्राह्मण केशवरायजी
२३६	६०९०	भागवतभाषानुवाद (द्वितीय स्कन्ध)	नागरीदास	१९वीं	३३	पत्र सं० ५, ६, १७ अप्राप्त
२३७	४२६५(२)	भावपञ्चाशिका	वृन्द कवि	१७९३	४-१४	लि.क. डालूराम
२३८	४८१३	,,	,,	१८३९	६	लि. स्था०-लींबड़ी
२३९	४९०६	,,	,,	१७९८	१३	र.का. सं० १७४३ लि.क. केवलसौभाग्य
२४०	५४३२	भाषाभरण	सरस्वती (वैरीसाल)	१९वीं	२५	
२४१	५०४८	भाषाभूषण	म. जसवन्तसिंह	,,	२९	लि.क. गोपाल ब्राह्मण
२४२	६९७६(१)	भाषाभूषण टीका	नन्ददास	१८६०	१-७३	
२४३	४२६३(६)	भाषासरोदय	रसराशि	१८८२	२५-२९	
२४४	५३०९	भास्करवंशप्रदीपिका	तेजसिंह	१८वीं	५३	
२४५	४०८२	भीषमबावनी	भीषम	,,	१०	
२४६	४१७६	भोगलपुराण		१९वीं	२०	
२४७	५४१८(५)	मङ्गल गीत	रूपचंद	,,	९१-९६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	४७२२	मतिचन्द्रिका		१९वीं	४	मोहर्रम और वारों का विचार
२४९	४३०९(१)	मनीरामपचीसी	मनीराम	१९०२	५१	
२५०	६८३५(७)	महावीरस्तवन		१९६९	१	
२५१	६८३५(११)	,,		,,	२	
२५२	७१५६	माखन लीला	नन्ददास	१९१४	४३	
२५३	५३७१(४)	माण्डूक्योपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१९वीं.	१-२०	
२५४	७६४८	मातृकाक्षरबावनी कवित्त-संग्रह	सार कवि	१८वीं	८	अन्तिम पत्र त्रुटित
२५५	४२१६(९)	मानमञ्जरी नाममाला	नन्दराम	१८५९	३६०-३७०	
२५६	४९१५(१)	,,	,,	१८८७	२-१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५७	४२६३(२)	मानमञ्जरी नौका	रसराशि	१८८२	२	
२५८	४२६३(५)	मालिकमुकाम	,,	,,	२०-२४	
२५९	७७२०(११)	मिथ्यात्ववानी		१८वीं	४६-४७	
२६०	४३०९(५)	मुरलीविहार	म. प्रतापसिंहजी	१८९९	८-९	
२६१	७४४१(१०)	,,	,,	१९१४	५७-५८	
२६२	४४५२(१५)	मुहूर्तचक्र		१८वीं	१८वाँ	लि.क. प्रीतसौभाग्य
२६३	५४१९	यदुराज विलास	रघुनाथ द्विज	२०वीं	२२५	र.का. सं० १९३३
२६४	७५९४	याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा	गुरुप्रसाद	,,	२१	लि.क. गोपीनाथ शर्मा
२६५	४३७१	योगवाशिष्ठसार भाषा पद्य	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१८वीं	२०	
२६६	४३०९(१६)	रंग चौपाई	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	५०-५६	
२६७	७४४१(१४)	,,	,,	१९१४	६६-६८	
२६८	६७७९	रत्नपरीक्षा	रत्नसागर	१९वीं	२१	र.का. सं० १७५५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६९	४३०९(८)	रमकझमक बत्तीसी	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	१५–१६	
२७०	७४४१(६)	,,	,,	१९१४	४२–४३	
२७१	४६६६	रमलज्ञानशकुनावली		१९वीं	४	
२७२	५४३४	रसकवित्तसंग्रह	शेख आलम	२०वीं	१५४	
२७३	५४२२	रसपीयूषनिधि	सोमनाथ आचार्य	१८५५	१३३	र.का. सं. १७९४
२७४	४९२३(२)	रसमंजरी	नन्ददास	१७२८	१८–२४	
२७५	६३३७	रसरतन काव्य	प्रधान पुहकर	१८५०	२३२	आद्य पत्र अप्राप्त, सं० १७२३ में रचित
२७६	४२१६(६)	रसराज	मतिराम	१८५९	२९४–३१८	
२७७	६३४२(२)	रसराशिपच्चीसी	रसराशि	१९वीं	१०–१६	
२७८	७०६२	रससमुद्र	चैनराम, (भोलानाथपौत्र)	१८९१	१३६	र.का. सं. १८९१, मूल प्रति
२७९	४४५२(२)	रसिकप्रिया	केशवदास	१९वीं	३–५	द्वितीय प्रभाव तक, अपूर्ण
२८०	४०१४	रसिकप्रिया	,,	१७९९	९८	र.का. सं. १६४८
२८१	५३८०(२)	रसिकप्रिया	,,	१८४६	१–६९	
२८२	७७२०(३)	रसिकप्रिया	,,	१७५९	१–४०	लि.क. लखमीचंद, गढ़ हर्णोरमध्ये
२८३	४९२५(१)	रसिकप्रिया, राजस्थानी भाषा में अर्थ सहित	,,	१८२६	१–१७५	
२८४	७०६३	रसिकप्रिया टीका जोरावरप्रकाश	जोरावरसिंह	१९२१	१५४	लि.क. कवि मन्नालाल
२८५	४२१६(५)	रसिकप्रिया टीका	,,	१८५९	१९२–२९४	
२८६	४२१७(१)	रसिकप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पृ. ७६ से ८४ तक अप्राप्त
२८७	४२६३(१)	रसिकपच्चीसी	रसराशि	१८८२	१–६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८८	५०९५	रागमाला	कल्याण मिश्र	१७६६	२	लि.क. उदयचन्द्र
२८९	६९४१	रागरत्नाकर	राधाकृष्ण	१८९९	९	र.का. सं. १८५३, उणियारा रावराजा भीमसिंहजी की आज्ञा से रचित
२९०	४२७२	रागरत्नाकर (अपूर्ण)	,,	१८७१	२४	आदि के ४ पत्र अप्राप्त
२९१	४२९३(९)	रागावली	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	२३–३१	
२९२	४२१६(७)	राजनीतिकवित्त	देवीदास	१८५९	३२०–३३२	
२९३	६७७४	राजाहरिश्चन्द्र कथा		१८४०	२३	
२९४	६४४६(८)	राधामाधवविलास (सचित्र)		१९वीं	१–८२	चित्र सं. ७१, पत्र संख्या २ से १०,१२ से १४,४१ से ४७,५५ से ६०,६२ से ६५,६८ और ७१ अप्राप्त
२९५	५४२०(१)	राधिकाप्रतीतिपरीक्षा (अपूर्ण)	बालकृष्ण	,,	४१–४८	
२९६	७६२६	रामचन्द्र बारहमासा	यशोदानंदन गुसांई	१८३५	७	
२९७	५३३३	रामचन्द्र बारहमासी	भवानी	१९२४	२	
२९८	५३८६	रामचन्द्रोदय (बालकांड)	श्रीकृष्ण कवि	१८०२	१२५	लि.क. लालचन्द्र पांडे, केर ग्रामे
२९९	५५०७	रामचरितमानस	तुलसीदास	१८४४–४५	६६७	
३००	६९९९	रामचरितमानस	,,	१८६७(?)	३४१	लि.क. तुलसी गोसांई (?)
३०१	७४९७	रामचरितमानस	,,	१७६२	२८	
३०२	६२१३	रामचरितमानस (बालकांड)	,,	१९वीं	१६४	
३०३	४१८७	,, ,,	,,	१८३०	९७	लि.क. उदयराम, शिवपुरी जयपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०४	४२२२	रामचरितमानस (बालकांड)	तुलसीदास	१८४०	१२५	लि.क. वैष्णव भगवानदास
३०५	६६२२	,, ,,	,,	१८०३	११३	लि.क. काशीराम, जयपुरमध्ये
३०६	७७६६	,, ,,	,,	१६वीं	१३१	
३०७	६२१४	,, (द्वितीय सोपान)	,,	१८६५	१३५	लि.क. ब्राह्मण तुलसीराम, वरीमध्ये
३०८	४२२३	,, (अयोध्याकांड)	,,	१८२८	१७८	लि.क. नरेन्द्र सौभाग्य
३०६	५१८८	,, ,,	,,	१८३८	६५	वृन्दावन में लिखित
३१०	६६२१	,, ,,	,,	१८०३	१०३	लि.क. काशीराम, जयपुरमध्ये
३११	७८००	,, ,,	,,	१८४४	८१	लि.क. मिश्र मोहनलाल
३१२	६२१५	,, (तृतीय सोपान)	,,	१८६५	३६	
३१३	६२३४	,, ,,	,,	१६वीं	२७	
३१४	६२६७	,, ,,	,,	१८४६	३३	लि.क. सहजराम मिश्र, कुम्हेरमध्ये
३१५	५४६४(१)	,, (अ.कां. से सु.कां.)	,,	१८७०	६३	लि.क.महात्मा बकसीराम,जयपुर
३१६	६२१६	,, (सु.कां.)	,,	१८६५	२८	
३१७	६६२३	,, (अ.कां. और सु.कां.)	,,	१८०३	४७	लि.क. काशीराम, जयपुर
३१८	४२२४	,, (अ.कां.)	,,	१८११	३८	
३१६	५१८६	,, ,,	,,	१८३८	२७	
३२०	४१५६	,, ,,	,,	१८८१	२८	प्रथम पत्र त्रुटित
३२१	५२८०	,, ,,	,,	१८००	५०	लि.क. गोविन्ददास, भरतपुर का विरक्त अखाड़ा
३२२	७८०१	,, ,,	,,	१८४४	२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२३	४१२७	रामचरितमानस (कि.कां)	तुलसीदास	१८६६	४६	लि.क. परमानन्द कायस्थ
३२४	५१९०	,, ,,	,,	१८३८	१८	
३२५	४२२५	,, (सु.कां)	,,	१८३२	२४	लि.क. नरेन्द्र सौभाग्य
३२६	६२००	,, ,,	,,	१९१०	१७	
३२७	६७३१	,, ,,	,,	१९वीं	४३	लि.क. हरदयाल
३२८	७८०२	,, ,,	,,	१८५५	२४	मिश्र मोहनलाल
३२९	६०७२	,, (लं.कां.)	,,	१९वीं	६२	दो प्रकार की लिखावट है
३३०	६३२१	,, ,,	,,	१७८०	९८	लि.क. सरदारसिंह विद्यार्थी
३३१	६६२४	,, ,,	,,	१८०३	३९	लि.क. काशीराम व्यास, भीखा की पोथी सूं
३३२	७८०३	,, ,,	,	१८४४	७२	लि.क. मिश्र मोहनलाल
३३३	६२१७	,, (यु.कां.)	,,	१८९५	६३	
३३४	४२२६	,, ,,	,,	१८२१	७८	लि.क. कृपाराम पुरोहित जयनगरे
		,, (उ.कां.)	,,			
३३५	६२१८	,, ,,	,,	१८९५	६८	
३३६	६२४५	, ,,	,,	१९११	४८	
३३७	४२२७	,, (उ.कां.) चातकसोलसी	,,	१८२७	७६	लि.क. वैष्णव भगवानदास
३३८	४२२८	,, (उ.कां)	,,	१९वीं	६५	
३३९	६६२५	,, ,	,,	१८०३	३८	लि.क. काशीराम अंतिमपत्रत्रुटित
३४०	६९९९	,, ,,	,,	१८८३	६९	लि.क. बलदेव
३४१	७६२३	,, ,,	,,	१८७९	१२५	

ऐसे मति मंद तुलसीदासहू ॥ पायौ परम विश्राम राम समान प्रभु नाही कहू ॥ दोहा ॥
मो सम दीन न दीन हित तुम सम आन रघुवीर ॥ अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम
भव भीर ॥ कामिहि नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ॥ तिमि रघुनाथ
३३८ निरंतर प्रिय लागो मोहि राम ॥ १३० ॥ इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कलि कलु
ष विध्वंसने श्री विमल भक्ति संपादनो नाम सप्तमो सोपानः ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥
इति श्री उत्तरकांड समाप्त ॥ यह सपुस्तकं दृष्टा तादृसं लिखितं मया ॥ यादृशु
द्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ अथ शुभ संवत्सरा १७३७ समये मार्गशिर मा
से कृष्णपक्षे पंचम्या सोमवासरे हस्ताक्षर उपाध्या वलि भट्ट स्वयं पठनार्थं ॥ ३३८

ग्रन्थसंख्या ७७६८   रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड)

(संवत् १७३७ में लिखित)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उ.कां.)	तुलसीदास	१८४८	४०	लि.क. मिश्र मोहनलाल, यह प्रति ग्रन्थाङ्क ७७९८ की, बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, सं० १७३७ की प्रतिलिपि है
३४३	७७९८	,, ,,	,,	१७३७	३७	* लि.क. बलभद्र उपाध्याय
३४४	७५७१	,, वैराग्यसंदीपन नाम द्वितीयसर्ग	,,	१८८६	५	लि.क. मिश्र आनन्दनारायण
३४५	४२५७	राम चरित्र	सुन्दरदास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामनखशिखवर्णन	माधोदास	,,	३	
३४७	६०७१	रामनौरत्नसार संग्रह	रामचरण	१९वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थों से संग्रहीत
३४८	४८४५	रामविनोद	रामचंद्र मुनि	१७६३	७८	र.का. सं. १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित
३४९	६१३६	रामविनोद वैद्यक		१८३२	८६	
३५०	४२७१	रामविलास काव्य	कालिदास	१९व	१०	कृति के अंत में 'हनुमान छंद" है
३५१	५४११	रामस्तवराज भा.टी.	रामप्रसाद सीतापतिशरण	२०	९९	र.का. सं. १९०१
३५२	४२४३	रामस्तुति गीत	तुलसीदास गोस्वामी	१८वीं	४	
३५३	४२४२	रामस्तुति पद	,,	,,	२	
३५४	५३६२	रामायण (यु.कां.)	मनोहर, कविकलानिधि	१८२०	२९३	लि.क. युगलकर्ण मिश्र
३५५	५३८९	रामायण (यु.कां.)	,,	१८३७	३४१	* प्रतापसिंहाज्ञया निर्मित लि.क. रामसेवक, पत्र १–७९, २१०–२३१ अप्राप्त
३५६	७११३	रामायण (यु.कां.) सीताराम रामायण	कश्चित्, शंभसिंह निर्देशित	१९वीं	१३८	५० पत्र रिपुपुरदाह और ८८ पत्र युद्धकांड सम्बन्धी हैं

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५७	६३७३	रामाज्ञा	तुलसीदास	१८वीं	३६	
३५८	७७४६(७)	"	"	२०वीं	१–२१	
३५९	६८२८(२)	राव हमीरकी वारता		१९वीं	७	
३६०	४२६३(१७)	रासको रेखता	म. प्रतापसिंहज	१८वीं	४०–४२	
३६१	४३०९(९)	"	"	१८९९	१७–१८	
३६२	७४४१(१२)	"	"	१९१४	६१–६३	
३६३	५२०२(६)	रासपञ्चाध्यायी	वंशीअली	१८८५	११४–१२३	
३६४	५३९९	"	नन्ददास	१९४३	१२	
३६५	४९२३(१)	रूपमञ्जरी	"	१७२८	१–१८	* लि.क. मुरलीधर मिश्र ३०० पद्य हैं
३६६	५२०२(४)	रेखता		१८८५	१०८–१०९	भाषा पञ्जाबी प्रभावित है
३६७	५४२६(१०)	रेखता लैलामजनूका			५३–५९	
३६८	६८३५(२)	लघुचाणक्य		१८६९	२	
३६९	७७२८	लीलाललितविनोद	डेडराज (जनराज)	१९०४	२७७	लि.क. ऊंकारनाथ व्यास, रामद्वारा उदेपुरमध्ये
३७०	५८६६(२)	लैलाभजनुका किस्सा	कवि खेतसी	१९वीं	१–११	*
३७१	७७४४(९)	व्रजनागरी		१७५८	६६–७२	
३७२	६९७८	व्रजविलास (सचित्र)	व्रजवासीदास		१६३	चित्र सं. १७
३७३	७४४१(१५)	व्रजभृङ्गार	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	६८–७५	
३७४	६०१६	व्रतकथाकोश भाषा	श्रुतसागर	१९२३	९२	* भाषाकार सुन्दर के पुत्र खुशालचंद्र, लक्ष्मीदासका शिष्य है
३७५	४१४३	वृन्दसतसइया	वृन्द	१८८१	४६	लि.क. मनसुख कंदोई, बीकानेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७६	४२१६(४)	वृन्दसतसई	वृन्द	१८५९	१६७-१९१	
३७७	४९१९	वनपर्वकी कथा		१८६९	१३	
३७८	६२३२	वरांगनृपतिचरित्र भाषा	नथमल, शोभाचंद का पुत्र	१८२७	७४	
३७९	५२०५(१)	वल्लभाचार्यविज्ञप्ति और स्तोत्र नामावली		१८वीं	२-३२	
३८०	६०७८	विक्रमविलास	गंगेश मिश्र	१८९६	१०२	* र.का. सं. १७३९
३८१	५४१५	विक्रमादित्यचरित्र (पंचदंडकथा)	वैद्यनाथ, कवि सोमनाथका वंशज	२०वीं	५-३३	र.का. सं. १८८४ आद्य ४ पत्र अप्राप्त
३८२	६९५२	विचारमाला		१८९३	५	र.का. सं. १७२६
३८३	६१५७	विजयमुक्तावली(महाभारतअनुवाद)	छत्रसिंह श्रीवास्तव	१८९५	२३१	अटेरपुर (भदावर) के राजा कल्याणसिंह के राजमें सं. १७५७ में रचित
३८४	५३७५	विजयसुधानिधि	कविवर रामलाल	१९०३	१४१	कर्णपर्व से आगे पद्यानुवाद है व्रजेन्द्र बलवन्तसिंह के लिए रचित
३८५	६३४१	विदुरप्रजागर	कृष्ण कवि	१८९५	६४	सं. १७९८ में राजा आयामल्ल की आज्ञा से रचित, म.भा. उद्योग पर्व का अनुवाद
३८६	७७४०(१)	विदुरप्रजागर भाषा	गणपति मिश्र	१९३७	१-४६	
३८७	७५९२	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	१९१४	८२	लि.क. हरिदास कबीरपन्थी, बदनोरमध्ये
३८८	६०८९	,,	,,	१९वीं	८१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८९	६२१९	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	१८९०	५८	
३९०	६२३३	"	"	१८९४	१०६	लि.क. वैष्णव गोविन्ददास लस्करी, स्थान विरक्त अखाड़ा, भरतपुर
३९१	५२०३	विरहगुलजार इश्क अन्नवर कथा अपूर्ण		१९वीं	४२	
३९२	७४४१(१७)	विरहपदकी टीका	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	८०–९६	
३९३	४२६३	विरहसलिता	,	१८वीं	३६–९३	
३९४	४३०९(११)	"	"	१९वीं	२१, २२	
३९५	६९७३	विविधसंग्रह		"	८८	रामचरित चौपाई, गुरुमहिमा, सुदामाबारहखड़ी, नारद गीता आदि
३९६	४२८७(८)	विवेकचितावनी	सुन्दरदास	१७२८	३३–३८	लि.क. आनन्दराम
३९७	४९२५(२)	वृन्दविनोद (वृन्दसतसई)	वृन्द (वरदराज)	१८२६	१७५–२०७	६९४ दोहे हैं
३९८	७४४१(१८)	वृन्दसतसई	"	१९१४	९७–१३४	
३९९	४२८८(१)	वृन्दावनशत		१८८९	१७	
४००	५२०२(३)	"	माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य)	१८८५	९१–१०८	र.का. सं. १७०७
४०१	५२०९	वैद्यकसार		१८वीं	९१–१५१	
४०२	५४२३	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख, केशव मिश्रसुत	१९वीं	६८	
४०३	६६३७	"	"	,	४०	
४०४	६०२२	वैद्यरत्न	जनार्दन गोस्वामी	१८८४	३६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०५	४३६६	वैद्यविनोद, (शार्ङ्गधर भाषा)	रामचन्द्र	१८११	६६	र.का. सं. १७३६ र. स्था०-मरोटकोट
४०६	७७२०(१३)	वेदनिर्णयपञ्चाशिका	बनारसीदास	१८वीं	४८-५०	
४०७	६६४३	वेदान्तपरिभाषा	मनोहरदास निरञ्जनी	,,	२०	र.का. सं. १७१७
४०८	६७७०	वेदान्तमहावाक्य भाषा	,,	१८५२	२०	र.का. सं. १७१७
४०९	४५५७(३)	वैराग्यमञ्जरी	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	२४-३८	
४१०	७४४१(३)	,,	,,	१९१४	२२-३५	
४११	७७४९(३)	,,	,,	२०वीं	१३	
४१२	९१०७	वैराग्यशतक भाषानुवाद	हरदयाल	१९५४	९०	लि.क. प्रोहित दीनानाथ
४१३	६७२५	शतकत्रयभाषानुवाद	म. प्रतापसिंहजी	१८९५	१२०	लि.क. मङ्गाविष्णु
४१४	७८३८	शतकत्रयमञ्जरी (सचित्र)	,,	१९वीं	६५	चित्र सं. १
४१५	६७६८	शतप्रश्नोत्तरी भाषा	मनोहरदास निरञ्जनी (?)	१८५२	२४	
४१६	४१६४(२)	शनिकथा	मुंता रामदान	१९२९	१०-१३	पद्यबद्ध कथा है
४१७	५४२५	शब्दावली (अपूर्ण)		१८७१	६-४५	सन्त-शब्द-वाणियों का संग्रह
४१८	५३६६	शिखनखवर्णन	रसानंद	१८९३	२४	* र.का. सं. १८९३, स्वयं कवि के हस्ताक्षरों में लिखित
४१९	४५४७(२)	शृङ्गारमञ्जरी	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	१३-२४	
४२०	७४४१(२)	,,	,,	१९१४	१२-२२	
४२१	७७४९(२)	,,	,,	१९वीं	१३-२४	
४२२	६४९१	षट्प्रश्ननिर्णय	मनोहरदास निरञ्जनी	१८२६	३३	लि.क. सेसराम, कुम्हेरमध्ये
४२३	६७६९	,,	,,	१८५२	७५	लि.क. महात्मा जयदेव जोबनेर-वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२४	५४३९	सिखनखवर्णन	बलभद्र	२०वीं	२४	
४२५	५४२१(१)	सिद्धान्तके पद	वृन्दावनदास	१९वीं	१–२५	
४२६	७४४१(७)	स्नेहबहार	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	४३–४६	
४२७	४४५२(३१)	स्नेहलीला	,,	१८वीं	३३,३४	
४२८	५२३४(१)	,,	कवि गिरिधरराय	१९११	१–१०	* लि क. बद्रीनाथ व्यास
४२९	५४३८(३)	,,	विष्णुदास	१८९०	४०–५६	
४३०	६७४९(३)	,,	,,	१९वीं	९२–१०५	
४३१	७४४१(९)	स्नेहसंग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	५२–५७	
४३२	४९२३(३)	स्फुट कवित्त आदि			१–१४	
४३३	४२२९	स्फुट कवित्त, रेखता आदि		१९वीं	३३	
४३४	६३४२(१)	स्फुट कवित्त		,,	१०	
४३५	६३४३(१)	स्फुटोक्ति		१८८९	१२	
४३६	६९९२	स्फुट पदसंग्रह	सूर आदि	१७४२–१७४४	६८	
४३७	६८३३(६)	स्फुट राग पद		१८५२	३५–३७	
४३८	७७५३(६)	स्फुट सवैया		१८३७	३८–३९	
४३९	४२६३(१३)	स्नेहसंग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१८वीं	२७–३०	
४४०	४३०९(२)	,,	,,	१९वीं	१–३	
४४१	४२६३(१४)	स्नेहबहार	,,	१८वीं	३१–३३	
४४२	४३०९(३)	,,	,,	१९वीं	४,५	
४४३	६३२८	स्मरणदर्पण	रामचन्द्रदास	,,	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४४	७१३३	स्वरोदय	गोरक्षोक्त	१६४६	११	लि.क. प्रभु पुरोहित नागोर का
४४५	५७१७	स्वरोदय भाषा		१८वीं	१४	
४४६	५६५७	स्वरोदय टीका	लालचंद्र	१६वीं	६	
४४७	५७८५	संग्रामदर्पण	सोमनाथ, नीलकण्ठात्मज	१६१५	३४	र.का. सं. १७८६, ग्रन्थान्त में कविकुल-वर्णन है
४४८	७७३६	संग्रामसार, द्रोणपर्वका अनुवाद	कुलपति मिश्र	१६५७	१६५	म. रामसिंह की आज्ञा से निर्मित लि.वा. कृष्णचंद्र, बूंदी
४४९	७७३७	,, ,,	,,	१६वीं	१५२	
४५०	७८१६	संगीतदर्पण भाषा	हरिवल्लभ	१८३१	३–७६	आद्य २ पत्र अप्राप्त
४५१	४००५	संयोगद्वात्रिंशिका	मानकवि	१८४८	४	
४५२	६४१७	संयोगबत्तीसी	,,	१६वीं	२	
४५३	७७२१(४)	,,	,,	१८२५	१११–११८	
४५४	५३४६	सत्यनारायणव्रत कथा	हरिदास	१८२५	२४	र.का. सं० १६२२, लि.क. प्रताप मिश्र,
४५५	५२४२	सत्यनारायणकथाका अर्थ		१६वीं	१४	
४५६	७८१६(२)	सर्पमन्त्रादि		१८३१	६	
४५७	६६८६	सदाशिव भट्ट प्रशस्तिपरक पद्य		१८४१ से पूर्व	७	फतहचंद्र, गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य
४५८	५३८४(२)	सनेहलीला	मनोहरदास	१६०४	७०–८२	
४५९	७६०७	सनकादिबीजमंत्र		१६वीं	१	लि क. केशवदास
४६०	४६०८	सभासार आदि	रघुराम कवि	१८५२	११४	लि.क. मगनीराम ब्राह्मण, मांडळगढ़मध्ये
४६१	४००३	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४५	२०	रा.का.सं. १७५७ स्था. सारंगपुर, अहमदाबाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	४०२८	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४२	१६	* लि.क. ऋषि किशोर, सोभ्रत प्रथम पत्र अप्राप्त
४६३	५४२१(२)	समयप्रबन्ध	वृन्दावनदास	१९वीं	१–३११	
४६४	४४५२	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८१२	६२–८४	लि.क. प्रीत सौभाग्य
४६५	४७९१	,,	बनारसीदास	१८वीं	६९	र.का.सं. १६९३
४६६	४८१६	,,	बनारसीदास	१८०२	१३६	
४६७	४८१२	,,	,,	१८६०	१२५	
४६८	६४४२	,,	,,	१८२४	६०	लि.क. मोहन, रचना स्था० आगरा।
४६९	७७२०(२)	,,	बनारसीदास, आगरानिवासी	१७२५	१–५४	लि.क. मतिवर्द्धन, हमीरगढ़मध्ये दोसी श्री थावा पठनार्थम्
४७०	६३५३	समयसार नाटक भाषा	,,	१९	८६	
४७१	६८४४	समयसार भाषा नाटक	बनारसीदास	१७५३	११७	र.का. सं० १६९३
४७२	५३७३(२)	समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा			४–७३	
४७३	५३७६(१२)	,, ,,			११२–१९७	
४७४	७४४२(३)	समयसार भाषा	बनारसीदास	१७६४	१–७१	
४७५	७४४३	समयसार नाटक भाषा	,,	१९१३	१३२	लि.क. दवे अमरचंद
४७६	५३८०(२)	समरविजय		१८४६	१९	प्रल्हाददास वैष्णव पठनार्थ
४७७	६७६६	सरसरस	राय शिवदास	१९वीं	१५	
४७८	६८३५(३)	सवा सौ सीख			४	
४७९	४४५२(२३)	सवैया	बालपुरी	१८वीं	२३ वाँ	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८०	४४५२(३३)	सवैया	चंद कवि आदि	१९वीं	४० वाँ	
४८१	४४५२(६३)	,,		,,	११८ वाँ	लि.क. प्रीत सौभाग्य
४८२	६२२७	सियरघुवीरविवाह	तुलसीदास	,,	९	
४८३	५०३५	सिंहासनबत्तीसी (अपूर्ण)		१८९९	६३	लि.क. काशीराम पंचोली
४८४	५८६५	,,	कृष्णदास	१९वीं	१०२	*
४८५	६०११	सीताचरित्र चौपाई	चन्द कवि	१७४७	१२३	जीर्ण प्रति
४८६	६१४६	सीताचरित्र चौपाई	कवि बालक (चन्द ?)	१८९८	१००	र.का.सं. १७१३
४८७	७७५९(१)	सीताराम ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१८६४	१–२३	
४८८	६९३१	सीताराम रामायण (अयो. कांड, वनवास कांड)		१९वीं	१५६	गोगावत कुलावतंस, शंभूसिंहाज्ञया प्रणीत
४८९	६९३२	सीताराम रामायण (आर. कांड, सीतापहरण कांड)		,,	५९	
४९०	६९३३	सीताराम रामायण (कि. कां. कपिमित्र कां.)		,,	५९	
४९१	६९३४	सीताराम रामायण (सु.कां. रिपुपुरदाह कां.)		,,	६२	
४९२	७१५५	सुखदेव लीला	मुरलीदास	,,	४७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९३	६४४६(६)	सुदामाकी बारहखड़ी		,,	१२–१४	
४९४	५४१२(१)	सुदामाचरित्र	नरोत्तमदास	१८९३	१–१३	
४९५	५८८७	सुदामाचरित्र (कक्का प्रणाली)	खुशाल शांडिल्य विप्र	१८वीं	१२	
४९६	६९४६	सुन्दरदासकी साखी	सुन्दरदास	१८८९	५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९७	६९४७	सुन्दरदासजीके शब्द	सुन्दरदास	१८८९	४५	लि.स्था. फतेहपुर
४९८	४३१३(२)	सुन्दर भक्तिविलास	लाला सुन्दरलाल	१८९७	९-७१	लि.स्था. जयपुर
४९९	४२१६(८)	सुन्दरशृंगार	सुन्दरदास	१८५९	३३३-३५९	
५००	४३०७(२)	,,	,,	१८३७	८७	लि.क. वेणीराम
५०१	४८१४	,,	सुन्दरदास	१८१३	२३	लि.क. त्रीकमजीशिष्य डाह्याजी
५०२	४८३५	,,	,,	१७८९	२१	लि.क. मुनीलाल सूरत बन्दरे
५०३	४०२९	,, व द्वादशमास वर्णन	,,	१७४२	२२	र.का.सं. १६८८
५०४	६३१७	,,	सुन्दर कवि	१९वीं	४०	र.का.सं. १६८०
५०५	६९४४	सुन्दरसवैयासंग्रह	सुन्दरदास	१८८३	७६	लि.स्था. फतेहपुर
५०६	६९४५	,,	,,	१८०४	४४	लि.क. प्रेमदासशिष्य भिखारीदास
५०७	७७२०(१९)	सुमतिकुमतिसंवाद (कहरामामाकी चाली)		१८वीं	५०वाँ	
५०८	४३०९(७)	सुहागरैन	म. प्रतापसिंहजी	१९वीं	१४,१५	
५०९	७४४१(५)	,,	,,	१९१४	४०-४२	
५१०	५४३५	सूरजपुराण		१८९२	२२	पद्मपुराणोक्त लि.क. मनसाराम कायस्थ
५११	६३४२(३)	सूरसागर पद	सूरदास	१९वीं	१६-२४	
५१२	७७२२(१)	सूरसारङ्ग (अपूर्ण)	,,	१८वीं	१-३६	१७२ पद हैं
५१३	५८६६(१)	सौदागर बच्चेका किस्सा		१९वीं	१-१०	
५१४	६२०२	हनुमानबाहुक	तुलसीदास	१९१७	१४	
५१५	७७३१	हयगुणप्रकाश प्रश्नोत्तर	लक्ष्मणदान बारैठ	२०वीं	५२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१६	७८११(५)	हरबोलचिंतावणी	सुन्दरदास	१८वीं	१८–१६	
५१७	४२६३(७)	हरिकीर्तनमाला	रसराशि	१८८२	३०–४४	
५१८	४४६५	हरिनाममाला		१६वीं	१	
५१९	४२८७(६)	हरिबोलचितावनी	सुन्दरदास	१७२८	२३–२५	लि.क. आनंदराम
५२०	६३४०	हरिवंश भाषा		१६वीं		आदि के १५३ पद्य त्रुटित
५२१	५३६०	हरिवंशपुराण भाषा	लालचंद	१७१६	१५४	लि. स्था. अंबावती, पत्र १ से ७ अप्राप्त
५२२	६१५८	,,	सालवाहण	१७८४	५८	पत्र ४ से ६,७,१६,१७,३०,३४ ४२ से ४६ नहीं हैं
५२३	६१७५	,,	खुशालचन्द	१८४२	१६७	
५२४	७१३४	हितहरिवंश जन्मोत्सव	व्यास हरिलाल	१८३७	७	लि.क. स्वयं रचयिता, वृन्दावन मध्ये
५२५	५३७६	हितामृतलतिका	राम कवि	१६वीं	१३३	व्रजेन्द्र बलवन्त सिंहाज्ञया रचित
५२६	४२१६(१)	हितोपदेश टीका	विष्णु शर्मा	१८५६	३७०	
५२७	४०१५	हितोपदेश पंचाख्यान	,,	१८५६	७२	लि.क ऋषि टेकचंद्र
५२८	४३१६(१)	हितोपदेश भाषानुवाद	,,	१८६४	१५८	
५२९	४६१५(६)	हितोपदेश भाषा		१८८७	२००–३४७	लि.क. मुंशी पन्नालाल, जोधपुर
५३०	५०८२	हितोपदेश (सचित्र)		१८वीं	१७६	* चित्र संख्या ४७, कोटा कलम
५३१	६३४४	हितोपदेश (पद्यानुवाद)	कोविद मिश्र	१८८८	७८	बुन्देलखंड के महाराजा पृथ्वीसिंह की आज्ञा से रचित
५३२	४२६५(३)	हितोपदेश (चतुर्थ तंत्र तक)	विष्णु शर्मा	१८०१	१५–१६७	लि.क. डालूराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३३	७७४०(२)	हितोपदेश भाषा पद्यानुवाद		१९३७	४६–१२५	लि.स्था. लोचनपुर (बूंदी)
५३४	६२५६	हिम्मतिप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१९०८	४५	र.का.सं. १७३०, प्रथम पत्र अप्राप्त
५३५	४३०९(१९)	होरीबहार पद टीका	सवाई प्रतापसिंह	१९वीं	३२–४४	
५३६	६३४५	हृदयाभरण कवित्त	व्रजजीवन	१८६१–६२	१८२	
५३७	६९५१(२)	ज्ञानचरणवाचिका		१८९१	२०	
५३८	६२०६	ज्ञानप्रकाश	कृष्णदास	१८८०	४	गोपालदासजी पठनार्थम्
५३९	४९१४(७)	ज्ञानपचीसी	बनारसीदास	१८७१	१६७–१६८	
५४०	७७२०(४)	,,	,,	१८वीं	४१–४२	
५४१	६९५१(१)	ज्ञानमञ्जरी	मनोहरदास निरञ्जनी	१८९१	२०	लि क. दूल्हेराम मिश्र, हस्तेड़ा मध्ये
५४२	६७६७	ज्ञानमञ्जरी भाषा	,,	१९वीं	२६	र.का.सं. १७१६
५४३	४०६५	ज्ञानवचनचूर्णिका	,,	१८५५	१८	लि क. सहजराम दादूपंथी
५४४	६७७१	,,	,,	१८५२	२२	
५४५	४०५७	ज्ञानशृङ्गार	सुमति रंग	१८५०	२२	र.का सं. १७२२ मुलताणमध्ये
५४६	६९०८	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	१९०७	३१	लि.क. बलदेव ब्राह्मण
५४७	४३०८(२)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१८वीं	४१०–४४६	६०० छन्द हैं
५४८	६८३७	,,	,,	,,	६१	र.का.सं. १७१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६०६	अंतरिक्षपार्श्वना छन्द	भाव विजय	१८४५	३	लि.क. हर्षविजय
२	५०७०	,,	,,	१८११	२	
३	४१४६	,, स्तव	,,	१६वीं	७	
४	४३४६	अजितशांतिस्तव सबालावबोध		१७वीं	४	
५	४६१४(३६)	आराधना	सकलकीर्ति	१८७७	२६२–२६४	
६	५६६०	,, चौपई		१५६२	१८	
७	७७५३(६)	इलापुत्रस्तवन	लब्धिविजय	१८३७	४४–४५	
८	४३६२	एकादशगणधर स्तवन		१७वीं	५	
६	४४५२(६८)	ऋषभजिनस्तवन	भावकवि	१८वीं	१२० वाँ	
१०	४६१४(२३)	ऋषभनाथजीनो छन्द		१८७१	२३०से२३१	
११	४६१४(६०)	,,	मूला मयारामसुत	१८७७	३१७से३२०	
१२	७३७२	ऋषभदेवजीरो छन्द	धर्मसी	१६वीं	१	
१३	४६१४(१७)	ऋषिमंडलस्तोत्र		१८७१	२१०से२१२	
१४	७५५०	कल्याणमन्दिरस्तोत्र (राजस्थानीटबार्थसहित)		१७५७	१२	लि.क. धनजी
१५	५३७३(१)	,, मूल		१८वीं	१–३	
१६	५६८२	,, (सटीक, त्रिपाठ)	कुमुदचंद्र	१७वीं	१२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७	६२५६	,,	हर्षकीर्ति	१८४८	२५	लि.क. हेतराम यती अमीचंद की पोथी सूं राजराजा रणजीतस्यंघजी ने लिखी
१८	७३६८	,, (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१८वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९१४	कल्याण मंदिर स्तोत्र राजस्थानी भाषार्थ सह		१७८२	१८	
२०	४०३०	कायस्थिति स्तोत्र (सबालावबोध)	साधुकीर्तिगणि	१७वीं	३	लि.क. समयकीर्तिमुनि
२१	५०६९(७)	गौडीयपार्श्वस्तुति		१९०६	१३ वां	
२२	५०६९(१)	गौडीयपार्श्वनाथ चौढ़ालियुं	लावण्यविजय	१९०६	१९३	
२३	५०६९(४)	,, छन्द	कुशललाभ	१९०६	१० से १२	
२४	५०७७(१)	गौडीपार्श्व स्तवन	कीर्तिविलास	१८०२	१ला	पत्र का कोण कटा हुआ है
२५	४३६३	गौतमदीपाली का स्तवन	सकलचंद्रसूरि	१६८५	६	
२६	४३६६	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसंक्षेपवृत्ति	सोमप्रभाचार्य	१५२४	५	लि.क. धीरमूर्ति गणि शिष्य लि. स्था. श्री भृगुपुर महानगर
२७	६३२९	,, स्तुति		१७८२	६	लि. स्था. मसूदा
२८	७२७५	,, (सावचूरि, पंचपाठ)	बप्पभट्टिसूरि	१६वीं	४	
२९	४२८७(५)	चतुर्विंशतिस्वयंभूस्तोत्र		१७२६	१९-२२	
३०	४९१४(३२)	चैत्यवंदन चौपाई	वीरचंद्रमुनि	१८७७	२४९से२५१	
३१	४९२४(४)	,,	लावण्यसमयमुनि	१७८७	१	
३२	५४३६(१)	,,		१८५३	१ से ३	लि.क. दौलतराम मुनि लि. स्था. मारोट
३३	५४४१	चैत्यवंदनादि जिनस्तवनसंग्रह		२०वीं	२४२	
३४	७४४८	,,		१९१५	१२६	लि.क. अमरचंद ? स्तवविषयक ३१ कृतियों का संग्रह
३५	५०७२	चौवीस जिनस्तवन	गुणविजय	१८वीं	५	
३६	७५९९	,, भाषा	महानन्द मुनि	१९वीं	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	७४४४(१)	चौबीसी	आनन्दघन	१८८५	१–५३	इस गुटके में १९ कृतियों का संग्रह है
३८	४९१४(३८)	चौरासी लाख जीवयोनिवीनती	ज्ञानभूषण	१८७७	२५९से२६२	
३९	४९१४(५९)	,,	हर्षकीर्ति	१८७७	३१५से३१७	
४०	७३६६	जयतिहुयण (सावचूरि)	अभयदेव	१८८२	५	लि. स्था. जैसलमेर
४१	७४०९	,, (सबालावबोध)	,,	१६९५	६	लि.क. भुवनसुन्दर
४२	५४३६(१८)	जिणकुशलसूरिवृद्धिस्तवन		१९वीं	३	दो स्तवन हैं
४३	५४३६(१९)	जिणकुशलसूरिलघुस्तवन		,,	१	
४४	६३८५	जिननमस्कार	जिनकीर्तिसूरि	१८वीं	४	
४५	४२८७(११)	जिनाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	,,	७८से९२	
४६	४९१४(४०)	जीवदया छन्द	भूधर	१८७७	२६५–२६६	
४७	६१८०	जैनचैत्यस्तव (सरस्वतीस्तोत्र)		१९वीं	५	
४८	५३७३(४)	जैनशतक	भूधरदास	१८वीं	९७से१०९	रचना सं० १७८१
४९	५४१८(८)	तिरेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	१९वीं	१०१से१०५	
५०	५४१८(१४)	,,		,,	११६से११९	
५१	४९१४(५६)	तिरेपन क्रिया वीनती	प्रभाचंद्र	१८७७	३११–३१२	
५२	५४३६(६)	तीर्थावलीस्तवन		१९वीं	३६–३८	
५३	७०८४	दण्डकविचारषट्त्रिंशिकासूत्र सटिप्पण	गजसारसाधु धवलचंद्र महोपाध्यायशिष्य, टि.क. यशःसोम	१८वीं	१०	
५४	५४३६(१७)	दादेजीरा स्तवन		१९वीं	११	
५५	५४३६(८)	नवकारमंत्रमहिमालघुस्तवन			४०–४३	
५६	७२९०	नवकारमहामंत्रस्तवन	जयवल्लभसूरि	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५४३६(१४)	नवकारमहिमास्तवन			३	
५८	५४२७(१)	नवस्मरणस्तवन		१९वीं	१–३१	
५९	४९१४(२१)	नीगोदनी वीनती		१८७१	२२९–२३०	
६०	४८३७	नेमनाथसिलोको	उदयरतन	१८७१	४	लि.क. फतेचंद्र लाधड़ामध्ये
६१	४९१४(१२)	प्रभाती	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वाँ	
६२	७२५७	प्राचीनकर्मस्तवटीका	गोविंदगणि	१७वीं	१७	
६३	५४३६(१३)	पंचकल्याणस्तवन			२	
६४	४९१४(१)	पंचकल्याणीक	रूपचंद	१८७१	१–७	
६५	४२९८	पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ	समयराज मुनि	१६३५	४	श्रीपार्श्वनाथसमसंस्कृतस्तव भी साथ में हैं, लि.क. नयनकमलगणि
६६	६२९९	पंचमंगलस्तवन	रूपचंद	२०वीं	८	
६७	४९१४(१५)	पंचमेरु-अष्टक	सुदर्शनविजय	१८७१	२०८–२०९	
६८	५४३६(१५)	पंचसंवरस्तव			२	
६९	५०६९(५)	पद्मावतीछन्द	हर्षसागर	१९०६	१२–१३	
७०	४९१४(४६)	पद्मावतीवीनती (१)	पुंजराज	१८७७	२७५ वाँ	
७१	४९१४(४७)	,, (२)	,,	,,	२७५–२७६	
७२	४९१४(४८)	पद्मावतीस्तोत्र (अष्टक)	जिनसागर देवेंद्रकीर्तिशिष्य	,,	२७६–२७७	
७३	५१३१	पद्मावतीस्तोत्र		१९वीं	२	
७४	७४४४(१७)	पनरे तिथिरी थुई		१८८५	२९४–३०२	लि.क. नेमविजय मानविजयशिष्य गोघूंदा नगर में लिखित
७५	७४४४(९)	पाँच तिथिरी थुई		,,	१९०–१९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७२६४	पार्श्व जिन यमकमयस्तुति		१७वीं	१	
७७	५४३६(१०)	पार्श्वनाथजिनलघुस्तवन			४४–४६	
७८	४६१४(५२)	पार्श्वनाथजीनो छन्द	भुवनकीर्ति	१८७७	२८३से२८८	
७९	४४५२(६६)	पार्श्वनाथजी पाढगत छन्द	अभयसोम	१८०५	११९ वां	लि.क. प्रीतिसौभाग्य, लि. स्था. नींबेड़ा
८०	७४०४	पार्श्वनाथ तथा साधारण जिनस्तवन	प्रेमविमल	१९वीं	१	र.का. वि० १५३५
८१	६९८४	पार्श्वनाथस्तवन		१८वीं	७	
८२	७७५३(५)	पार्श्वनाथस्तवन	कीर्तिप्रभ	१८३७	३७–३८	
८३	७५६५	पुद्गलपरावर्त्त स्तवन सबालावबोध		१७वीं	१	
८४	५४३६(१६)	बीसबहिर्मानस्तवन		१९वीं	१	
८५	७१३८	बीससंस्थानकस्तुति		२०वीं	१८	
८६	५२९८	भक्तामर बालबोध टीका	हरिदास	१८वीं	१८	कमलमपुरमध्ये रचित
८७	५४१८(२)	भक्तामर भाषा	मानतुंग (हेमराज)		८	४९ पद्य
८८	७१०९	भक्तामर भाषा कालभैरवाष्टकादि		१८वीं	८८	इस गुटके में आबूस्तवन, स्थूलभद्र सज्झाय, साधुवन्दना मंगलाष्टक, चतुर्विंशतितीर्थंकर स्तव सरस्वती अष्टक आदि विविध रचनाओं का संग्रह है
८९	६३४७	भक्तामर महाचरित्र भाषा	विनोदीलाल	१८२८	२९३	र. का. सं० १७४७
९०	५४२७(२)	भक्तामरस्तोत्र		१९वीं	३१से४५	
९१	४०२५	,, प्राकृत वार्तिक सहित	मानतुंग सूरि	१६८९	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि.क. शिवदास वसताणी, स्था. देशलहरान, श्रीफतेपुरमध्ये
९२	४३६०	,, सबालावबोध	,,	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९३	७२७१	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग सूरि, बाला. मेरुसुंदर	१७००	१४	
९४	७४०८	,,	मू. मानतुंग	१८२६	१९	लि.क. रूपचंद
९५	५९०५	भक्तामर टीका	गुणाकर	१६वीं	३२	
९६	४२८७(२)	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	१७२६	५-११	लि.क. रामचंद्र
९७	६०००	भक्तामरस्तोत्र पंचपाठ	अमरप्रभ सूरि	१७वीं	७	लिपि सुन्दर है
९८	६०३९	,, सार्थ	भा. विनयसुन्दर	१८वीं	१६	
९९	६२७१	,, भाषा टीका	मू. मानतुंग, भा. अखैराज श्रीमाल	१७८४	२४	लि. स्था. तूंगा
१००	६२७७	,, भाषा	हेमराज	१९४१	१६	लि. स्था. अमदा नगर
१०१	७४५०	भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियाँ		२०वीं	२३२	* कृतियों के नाम परिशिष्ट में देखिये
१०२	६२८९	भक्तामरस्तोत्र सटीक	मानतुंगाचार्य	१८वीं	६	
१०३	६३६१	भक्तामर सटीक त्रिपाठ	टी. कनककुशल	१९२८	२४	लि. स्था. विराट नगर
१०४	७१८४	,, (सुखबोधिका)	टी. अमरप्रभ	१७वीं	५	
१०५	७३८१	,, वृत्ति (सुबोधिका)	वृ.का. समयसुन्दर	१८२१	७०	रचनाकाल-सप्तवसु शृंगावसंति १३८७ (?) पत्तने नगरे
१०६	७७६४	भवारिवारणस्तोत्र सटीक पंचपाठ	जिनवल्लभ सूरि	१७वीं	५	
१०७	४९१४(११)	मंदिरस्वामीनी वीनती	सकलकीर्ति	१८७१	२०७-२०८	
१०८	५४३६(२०)	मरोटकोटमंडण, दादेजी श्रीजिन-कुशल सूरिजीरी नीशाणी		१८५३	८	
१०९	५०७१	राणपुर मंडन वीरजिनस्तवन		१८वीं	२	लि.क. दौलतराम मुनि
११०	७८२७	लघुशांतिस्तव सटीक	मानदेव आचार्य	,,	१६	र.का. १६११

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	७४३७	ललितविस्तरा पञ्जिका (चैत्यवन्दना वृत्ति)	मुनिचंद्रसूरि	१५वीं	४०	
११२	७३५५	वर्धमानस्तुति	कनककुशलगणि विजयसेन सूरिशिष्य	१६५७	१	लि.क. साह हरष (ख), ग्राम–हालीवाड़ा
११३	५०७६	वासुपूज्यस्तवन	प्रेमविजय	१६वीं	७	
११४	४३४४	वीतरागस्तोत्र	हेमचन्द्रसूरि	१७वीं	८	
११५	५६३५	वीतरागस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ	हेमचंद्र सूरि	१६वीं	६	सहजातिशयनामक द्वितीयस्तव
११६	५६३६	,,	,,	,,	१०	आगीस्तवे विंशतिप्रकाशः
११७	५४१८(११)	वीरजिणन्द		१६वीं	११२–११३	
११८	५०७४	वीरस्तवन सस्तबक	वीरविजय शुभविजयशिष्य	१८५८	१०	
११९	६४४६(२)	वीरस्तुति			४०–४१	
१२०	७३७६	वीस विहरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय	जिनसागर सहजसागर	१८वीं	६	लि.क. खेमधर्म, लि. स्था. पीपाड़-नगरे
१२१	५०६९(३)	वद्धचैत्यवन्दन	मूला वाचक	१९०६	८–१०	
१२२	४३४५	श्रीऋषिमंडलस्तवन	धर्मघोष सूरि	१७वीं	११	
१२३	४१५९	श्रीदेवीछंद शनैश्चरस्तुति		१९वीं	३	
१२४	५०७५	शंखेश्वरपार्श्वछंद	हर्षरुचि	,,	३	
१२५	७७५३(४)	शांतिनाथस्तवन	गुणसार	१८३७	३४–३६	
१२६	७७२०(१५)	शांतिनाथ त्रिभङ्गी छन्द	बनारसीदास	१८वीं	५०–५१	
१२७	५३८५(७)	शीतलनाथस्तोत्र	सिंहनन्दि	१६वीं	१८९वाँ	
१२८	४५११	शोभनस्तुति		१७वीं	६	
१२९	७४७२	,, पंचपाठ	धनपाल पंडितबान्धव	१६३४	१०	लि.क. पूरणमल माथुर कायस्थ लि. स्था. गढ़ रणथम्भोर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३०	७२७८	शोभनस्तुति सटीक	शोभन	१६वीं	११	
१३१	४८४०	स्तंभनपार्श्वनाथस्तवन जम्बूकुमार स्वाध्याय	कुशललाभ कवियण हरिविजय-शिष्य	१८२८	३	
१३२	६८३९	स्तंभन पार्श्वनाथस्तुति आदि		१९वीं	७२	* लि. स्था. सांगानेर, इस गुटके की अन्य कृतियों का विवरण परिशिष्ट में देखें
१३३	४९१४(१३)	स्तवन (मुजरा)	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वां	
१३४	६१६०	स्तवन (स्वयंभूस्तोत्र)	समंतभद्र स्वामी	१८वीं	१६	इस प्रति में २४ स्तोत्र हैं
१३५	७५६८	स्तवन (शांतिजिन)		,,	३	
१३६	७४४७	स्तवनसज्झाय पदसंग्रह		१९१६	१७०	लि.क. अमरचंद्र, सेठ गंभीरमल-पठनार्थम्
१३७	७४४९	,, आदि		१९११	२००	*
१३८	७४४४(१०)	स्तुतिस्तवन		१८८५	१९४–२०५	इसमें पजूसणरी थुई, सेत्रुंजाजीरी थुई, पांचमरो तवन, आठमरो तवन, इग्यारसरो तवन हैं
१३९	६८२५	स्तोत्रसंग्रह		१९वीं	४	* इसमें ५ स्तोत्र हैं, नाम परिशिष्ट में देखिये
१४०	७४४४(६)	सप्तस्मरण		१८८५	१४४–१६८	
१४१	५४२७(३)	,,	नानू ऋषि		४५–४९	
१४२	४९१४(३६)	सात वसणनी वीनती	ब्रह्महंस	१८८७	२५७–२५८	
१४३	७३६४	साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि)	जयानन्द, अव. वानर ऋषि	१७५८	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	५०७७(३)	साधारण स्तवन	मोहनविजय रूपविजयशिष्य	१८०२	१ला	
१४५	५४१८(२१)	साधुवन्दना	बनारसीदास	१९वीं	१४५–१४७	
१४६	५११४	सीमंधरवीनती		१८वीं	२१	
१४७	४९१४(२२)	सीमंधरस्तवन		१८७१	२३० वां	
१४८	७७५३(३)	,,	भक्तिलाभ	१८३७	३२–३४	
१४९	६८४०	,, आदि (विंशतिविहार स्तवनादि)		१९वीं	२२६	फुटकर ढाल, भक्तामर, तथा घंटाकर्ण स्तुति आदि कृतियां हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७२५८	अन्तकृद्दशाविवरण तथा अनुत्तरोपपातिकविवरण		१७वीं	११	संस्कृत-प्राकृत
२	७६४०	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र		,,	१२	प्राकृत
३	७५३४	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र (प्रा० राजस्थानी-भाषार्थसहित)		१७९९	६२	प्रा. रा. लि.क. ऋषि त्रीक्रम, राणङ्गपुरे
४	७२५४	अन्तगडदशा (राजस्थानीभाषार्थ-सहित		१९३९	३८	अ. प्रा., लि. कर्त्री-जियां अमरांजीशिष्या
५	७४६४	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१८वीं	१०	प्राकृत., लि.क. ऋषि हरजी
६	७६३८	अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थसहित		१७७३	१६	प्रा. रा., लि.क. ऋषि धनजी
७	७२१२	अनुत्तरोववाइसूत्र		१६वीं	४	प्रा. अ.
८	७२०२	अनुयोगद्वारवृत्ति	श्रीहेमचन्द्रसूरि मलधारी	१६६६	१०४	संस्कृत, लि.क. गुणनन्दन मुनि विशालकीर्ति, लि. स्था. पुष्करिणीनगरी (पोहकरण)
९	७४११	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७वीं	१०१	प्रा. रा.
१०	७४१५	,, ,,		१९वीं	६९	,,
११	७५५१	,, ,,		१७२७	५६	,, लि.क. मुनि मनोहर लि. स्था. वीरमग्राम
१२	५९३२	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	बा. पासचन्द साधुरत्नशिष्य	१५८९	१४२	प्रा. रा., लि.क. रतनभट्ट गुजरगौड़ लि. स्था. सोमलपुर, आद्य पत्र अप्राप्त
१३	५९३१	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	,,	१७६६	८१	प्रा.

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	७३५८	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध राजस्थानीभाषार्थसहित)		१६२३	६५	प्रा. रा., लि.क. गोडा अमरदत्त
१५	७५४०	आचाराङ्गनिर्युक्ति		१७वीं	१४	प्राकृत
१६	७२४०	आचाराङ्गप्रदीपिका	श्रीजिनहंससूरि	१६६५	२१६	स. प्रा.
१७	७२२२	आचाराङ्गवृत्ति	शीलाङ्क	१६वीं	२८१	,,
१८	७२७४	आचाराङ्गसूत्र		१७वीं	११५	प्राकृत
१९	७४२९	आवश्यकनिर्युक्ति		१६वीं	६१	,, प्रथम पत्र अप्राप्त
२०	७४३६	,, ,,		,,	४७	प्राकृत
२१	७४४०	,, ,,		१६२२	८१	,, लि.क. ऋषि बाथा
२२	७७६६	,, ,,		१६वीं	११९	प्राकृत
२३	५९४६	आवश्यकनिर्य्युक्तिसूत्रम्		१५४९	१२७	,, लि. स्था. अणहिल्लपुर-पत्तन
२४	७२०४	आवश्यकबृहद्वृत्ति	श्रीहरिभद्रसूरि (?)	१६३१	४०५	संस्कृत, लि.क. लक्ष्मणमुनि लि. स्था. जैसलमेर
२५	७४००	,, ,,		१७वीं	५४९	संस्कृत, प्रति में ५४७, ४८, ४९वें पत्र खण्डित हैं
२६	७३३४	आवश्यकसूत्र (सटीक, बृहद्वृत्ति)	हरिभद्रसरि	,,	२०१	संस्कृत
२७	४३५८	आवश्यकसूत्र (सबालावबोध)		,,	१९	* प्रा. रा.
२८	७५५४	आवश्यकसूत्र		,,	४	प्राकृत, लि.क. पं० धर्मकीर्तिमुनि
२९	७१८८	आवश्यकसूत्रनिर्य्युक्ति (सचित्र)		१५०१	६८	प्रा., चित्र संख्या २, लि.क. जिनदास, लि. स्था. माण्डली नगर
३०	७२१६	उत्तराध्ययनसूत्र		१५४८	३५	प्राकृत, अद्येह श्रीघोघावेलाकूले माणिक्येन लिखितम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	७३१४	उत्तराध्ययनसूत्र		१६४७	६५	प्राकृत, लि.क. पं. उदयतिलक
३२	७३६१	,, ,,		१६वीं	१७६	प्राकृत
३३	७४८७	,, ,,		१७वीं	१३६	,,
३४	७७६५	,, ,,		,,	७५	संस्कृत
३५	७२८०	उत्तराध्ययनसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित)		१८१८	१६८	प्रा.रा., लि.क. लोकवल्लभ वाचक,उदरामसर(बीकानेर)मध्ये
३६	७३१३	,, ,,		१८३२	१६१	प्रा.रा., लि.क. हस्तिसागर एवं विमलसागर, प्रति का अर्द्ध-भाग संवत् १८३२ से भी प्राचीन है
३७	७३४१	,, ,,		१८३५	२३१	प्रा.रा., लि.क. दौलतसौभाग्य, श्रीबीलाडा नगरे
३८	७३६२	,, ,,		१८५२	२६०	प्रा.रा., लि.क. कुसवगतसागर, तांतोटी नगरे, ठाकुर गुलाब-सिंहजी कँवर सवाईसिहराज्ये
३९	७४२८	,, ,,		१७२७	१६२	प्रा.रा.
४०	७५७०	,, ,,		१८वीं	११६	प्रा.रा.
४१	७६५५	,, ,,		१६वीं	१५७	प्रा.रा., अपूर्ण
४२	४४१८	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)		१६३७	३८३	* प्रा.रा.सं., १६५, १६८, १६६ तथा २१७-वें पत्र अप्राप्त
४३	६६१६	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तवक)		१७वीं	२२८	प्रा.रा., प्रति जीर्ण-शीर्ण तथा त्रुटित है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	७७६२	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तवक)		१७६२	२४३	प्रा.रा., प्रति के आद्यन्त पत्र शोभन हैं, लि.क. धनजी, राज्ञपुरग्रामे
४५	७३१२	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		१७वीं	३१७	प्राकृत-अपभ्रंश
४६	५९०९	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१६वीं	१४६	प्रा. सं., प्रति अति सुन्दर लिखित है, इसके स्वामी का नाम ऋषि तेजपाल, गोवर्धन, आशकरण है
४७	७२८२	उत्तराध्ययनसूत्र (सटीक)	टी. कमलसंयम, जिनभद्रसूरिशिष्य	१६५६	३०२	प्रा. सं., लि.क. पं. तेजपाल, देवराजपुर
४८	६८४९	उत्तराध्ययनसूत्र-परीसहाध्ययन-कथा		१८वीं	५९	प्राचीन राजस्थानी, आद्य तीन पत्र चिपके हुए हैं तथा प्रति जीर्ण-शीर्ण है
४९	७३४०	उत्तराध्ययनसूत्रसुबोधावृत्ति		१६६७से पूर्व	२६३	प्रा. संस्कृत
५०	४३५७	उत्तराध्ययनावचूरि		१४९७	४७	* संस्कृत, लि.स्था. चित्रकूट
५१	७३९३	,, ,,		१६१२	६४	संस्कृत-प्राकृत, र.का. १४८५ (रत्नगजमदमितेऽब्दे) लि.क. गोपी, आचार्यवेणसुत, सारङ्गपुर-मध्ये
५२	७४३४	उपासकदशाङ्ग (सटीक)		१७वीं	४१	प्रा. सं.
५३	७४३८	,,		१६१२	३०	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४	७२८६	उपासकदशाङ्गविवरण		१६४७	२०	संस्कृत, लि.क. मुनि लखमन, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये
५५	५२२६	उपासकदशाङ्गसंग्रह	शिवचन्द (कल्याणसूरिशिष्य)	१७१३	४७	रा.प्रा., लि.क. छीतर (शिवचन्दशिष्य वैराठदुर्गे, आसन्दी ग्रामे, पांचवां पत्र अप्राप्त
५६	७३१८	उपासकदशाङ्गसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थ सहित)		१७५२	५३	प्रा.रा., लि.क. लालसागर
५७	७६३४	,, ,,		१६८०	६६	प्रा.रा.
५८	७२२८	उववाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ-सहित)		१८९९	८९	प्रा.रा., लि.क. ऋषि हुकमचंद, राणावासनयरमध्ये
५९	७४१९	उवाइसूत्र		१६८४	९५	प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त
६०	७४८५	ओघनिर्युक्ति		१६वीं	२३	प्राकृत
६१	७५५३	औपपातिकोपाङ्गसूत्र (सस्तबक)	स्त. पार्श्वचन्द्र (सोधुरत्नशिष्य)	१७वीं	११५	प्रा.रा.
६२	६८५२	कल्पवार्ता		१९वीं	१५२	रा., अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३९ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त
६३	४३१८	कल्पसूत्र (सचित्र)			१३१	प्राकृत, चित्र सं. ३४
६४	५३५६	,, ,,		१९वीं	८५	सं.प्रा., राजस्थानी कलम के चित्र९
६५	५३५७	,, ,,		१५वीं	७२	प्रा., चित्र सं. १९
६६	५३५८	,, ,,		,,	५३	प्रा., चि. सं. १४
६७	५३५९	,, ,,		१५०२	९१	प्रा., चि. सं. ४०
६८	७८४१	,, ,,		१४वीं	१३३	प्रा., चि. सं. ३६



ग्रन्थसंख्या ७८४९ कल्पसूत्र

(सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य श्रीसोमसुन्दरसूरिके उपदेशसे सं० १४८५ में सुलेखित सचित्र प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	७८४२	कल्पसूत्र (सचित्र)		१४वीं	१०३	प्रा., चि. सं. ८
७०	७८४६	,, ,,		१५५० से पूर्व	५०	प्रा., चि. सं. २८
७१	७८४७	,, ,,		१५३१	१०	प्रा., स्फुट पत्र, चित्र सं. १०
७२	७८४९	,, ,,		१४८५	९	प्रा., त्रुटित, चि. सं. ३, सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य सोमसुन्दरसूरिके आदेश से आलेखित
७३	७८५०	,, ,,		१४६०–१४९० के मध्यवर्ती	३६	प्रा., त्रुटित, चि. सं. ७
७४	७८५१	,, ,,		१५५० के लगभग	४	प्रा., प्रति में पत्र ८, १७, २३ व ८२वें ही प्राप्त हैं
७५	७३८९	कल्पसूत्र		१८९५	५४	प्रा., लि.क. सन्तोषचन्द्र मुनि, नागोरमध्ये
७६	७३९०	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३३	१७२	प्रा.रा. १ से १० पत्र अप्राप्त, लि.क. ऋषभविजय, बृहत्सप्तच्छदी (बड़ी सादड़ी, मेदपाटदेशे ?) नगरे
७७	७४१३	,, ,,	भा. गुणविजय	१८वीं	१३१	प्रा.रा., प्रति के अन्त में जिनधर्मप्रवर्त्तक विद्वानों की जन्मतिथि, विभिन्नगच्छों की स्थापना, नामकरण का समय एवं विविध आचार्यों की कृतियों का परिचय लिखित है, अन्तिम पत्र अप्राप्त
७८	७४२६	,, ,,		१८४५	१७५	प्रा.रा., प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७९	७३६१	कल्पसूत्र (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१८३९	१३६	प्रा.रा., लि.स्था. फलौधी
८०	७५५५	,, ,,		१७२९	८८	प्रा.रा., लि.क. मुनि मनोहर, बलूदा ग्रामे
८१	४४१३	कल्पसूत्र (सस्तबक)	स्त. सोमविमल	१६७२	१०९	* प्रा.रा.
८२	७५२६	,, ,,		१७२६	६१	प्रा.रा., लि.क. मनोहरऋषि, अहमदपुरमध्ये
८३	७०७५	,, (सटिप्पण)		१८वीं	९९	प्रा.अ., अपूर्ण प्रति किन्तु प्रदर्शनीय
८४	५३५४	,, (सावचूरि, सचित्र)		१५६३	१३६	प्रा.सं., चि. सं. ३६, भिन्नमाल में लिखित
८५	७८४०	,, ,, ,,		१५२३से पूर्व	१०५	प्रा., चि. सं. २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को सं. १५२३ में आचार्य को भेंट करने का उल्लेख है
८६	७४८९	,, (सावचूरि)		१४१६	१११	प्राकृत-संस्कृत
८७	७८४४	,, ,,		१६२१	६५	,, ,,
८८	५३५५	,, (सटीक, सचित्र)	टी. सुमतिहंससूरि	१७३४	११५	प्रा.सं., चि. सं. ८६, सोजत में लिखित
८९	७२४१	कल्पसूत्रकिरणावलीटीका	टी. धर्मसागरगणी	१६७६	३२२	सं.प्रा., प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. कमलसी, महंतवसीसुत, ईदलपुरा (अहमदाबाद) स्थाने
९०	७२२६	कल्पसूत्रटीका		१९वीं	११८	संस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
९१	७५५६	कल्पसूत्रटीका	लक्ष्मीवल्लभ (लक्ष्मीनिधि)	१९वीं	१११	सं. प्रा. रा.
९२	६०३२	कल्पसूत्रबालावबोध	शिवनिधान	१७९४	१२८	राजस्थानी, लि.क. पं. हरराज, श्रीशोभनगरे
९३	७५५८	,, ,, (सप्तमवाचना)		१७१२	२२	प्रा.रा., लि.क. मानविजय, मालपुरामध्ये
९४	६९१७	कल्पसूत्रभाषा		१९३३	१२७	राजस्थानी, लि.क. ऋषि केशरीचन्द्र, विक्रमपुरमध्ये
९५	६८४८	कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना		१९५७	१९९	राजस्थानी, १-२ पत्र कीट-विद्ध, लि.क. ऋषि लक्ष्मीचन्द सरूपचन्द, रेवासी (पालणपुर, गुजरात) मध्ये
९६	७३१०	कल्पान्तर्वाच्य		१६९२	५४	प्रा.सं., लि.क. सौभाग्यविमल, श्रीसिरोहीनगरे, रचनाकाल १५७० (?)
९७	७२६०	कल्पान्तरवाच्यटीका		१७वीं	५०	प्रा.सं.
९८	७४६६	चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र		,,	३९	प्राकृत
९९	४३०४	चित्तसंभूति (ऋषीश्वराध्ययनानन्तरम्)		१५वीं (?)	७	प्रा.रा.
१००	७२०१	जीवाभिगमवृत्ति	वृ. श्रीमलयगिरि	१६वीं	२६२	प्रा.सं.
१०१	७२१४	ठाणाङ्गसूत्र		,,	७७	प्राकृत
१०२	७२२९	ठाणाङ्ग (स्थानाङ्ग) सूत्रवृत्ति		१९०८	१८२	प्रा.रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७२३२	दशवैकालिकसूत्र		१७वीं	२७	प्राकृत
१०४	७४२४	,,		१८७८	२०	,, लि.क. अखु
१०५	७४८८	,,		१६६६	२६	,, लि.क. हरजी (ललित प्रभशिष्य)
१०६	७६३६	,,		१७७७	२५	प्राकृत, लि.क. ऋषि धनजी, कालावडनगरे
१०७	७३१७	दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१७वीं	५८	प्रा.रा.
१०८	७५५२	दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि)		१६२३	३७	प्रा.सं.
१०९	४४५९	,, (सटवार्थ)		१८वीं	५४	प्रा.रा., ३९वाँ पत्र अप्राप्त
११०	७३२३	दशवैकालिकसूत्रटीका	टी. सुमतिसूरि (बोधकशिष्य)	१७वीं	५४	संस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है
१११	७४७४	दशवैकालिकसूत्रटीका (शिष्य बोधिनीनाम्नी)	हरिभद्रसूरि	१६१७	१२४	संस्कृत, लि.क. जिनचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने
११२	७२८७	दशवैकालिकसूत्रावचूरि		१५वीं	१६	संस्कृत
११३	७६५४	दशाश्रुतस्कन्ध		१६७०	२६	प्रा., लि.क. मुनि महावजी, खीरपुरनगरे
११४	७४८४	नन्दीसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११५	७२५९	निरयावलिका (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८९७	६२	प्रा.रा., लि.क. मूल० सुमतिहंस, भाषा उमदहंस, कोसाणामध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११६	७३०७	निरयावलिकासूत्र				
११७	७३९५	निशीथसूत्र (लघु) (राजस्थानी		१६६५	२६	प्रा., लि.क. वच्छा
		भाषार्थ सहित)		१८३२	७७	प्रा.रा., लि.क. कपूरविजय,
११८	७४८१	निशीथसूत्र				हरचन्द, पीपाड़नगरे
११९	७५४१	,,		१७वीं	१६	प्राकृत
१२०	७०८५	प्रतिक्रमणसूत्र		,,	२३	,, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२१	७४४४(७)	,,		१९वीं	२३	प्रा., अपूर्ण, १६वाँ पत्र अप्राप्त
१२२	७४४५	,, आदि		१८८५	१६८–१८०	प्राकृत
				१८८७	४६१	* विविध भाषा, जरी के कपड़े के जिल्दबन्ध गुटके में आठ कृतियों का संग्रह है
१२३	७४४६	,, ,,		१९२२	९६	* वि.भा., सुन्दर जिल्दबन्ध गुटके में १० कृतियोंका संग्रह है
१२४	५९७३	प्रतिक्रमणसूत्रबालावबोध	सहजकीर्ति			
१२५	६८५६	प्रश्नव्याकरण		१८८९	९१	प्राचीन राजस्थानी
१२६	७२५६	,,		१५९८	४३	प्रा., द्वितीय पत्र अप्राप्त
१२७	७२११	प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका	अभयदेवसूरि	१७वीं	२६	प्राकृत
१२८	७३४५	,, ,,	,,	१६०२	८३	संस्कृत
१२९	७५४७	प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्र (सबालावबोध)		१५वीं	४८	* संस्कृत
१३०	७३१५	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र		१७वीं	९५	प्रा.रा.
		(सबालावबोध, पंचपाठ)		१६५४	११२	प्रा अपभ्रंश
१३१	७३४९	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५९	७३	प्रा.रा., लि.क. ललितहंस तत्वहंस शिष्य, सप्तसदी नगर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	७१८१	प्रज्ञापनासूत्र		१७वीं	३२०	प्राकृत
१३३	७५४५	,,		१६५६	२२७	,, १–२ पत्र अप्राप्त
१३४	७१६७	प्रज्ञापनोपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ)	मू. श्रीश्यामाचार्य ? टी. श्रीमलयगिरि	१७वीं	४२६	प्रा. संस्कृत
१३५	७२८३	प्रज्ञापनोपांगसूत्र		,,	१७१	प्राकृत, १–२ पत्र अप्राप्त
१३६	७६६८	पाक्षिकसूत्र		१९वीं	१४	प्राकृत
१३७	७४८३	पिण्डनिर्युक्ति		१७वीं	३२	,,
१३८	७२३३	भगवतीसूत्र		१६२५	४५७	प्राकृत, संवत् १६ आषाडादि २५ वर्षे फाल्गुन वदि द्वादशायां-तिथौ भगवतीसूत्र लिखितम्
१३९	७२८९	भगवतीसूत्र		१६०२	३०४	प्राकृत, लि.स्था. अणहलपुर
१४०	७२०३	,, टीका	अभयदेवसूरि	१७३०	३४२	संस्कृत, लि. स्था. जैसलमेर राउल श्रीअमरसिंहजीराज्ये
१४१	७२२०	,, वृत्ति	,,	१६वीं	४१०	संस्कृत. लि. क. ब्राह्मण जीवा
१४२	७५६६	राजप्रश्नीयसूत्र		१६७०	८३	प्राकृत, लि. क. मोढज्ञातीय जोशी कुलसी
१४३	७६३५	,, (राजस्थानीभाषार्थसहित)	भा० मेघराजवाचक	१७वीं	२०९	प्रा. रा.
१४४	७३००	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सटीक, पञ्चपाठ)		१४१५	८१	प्रा. सं, प्रदर्शनीय प्रति
१४५	७२८४	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		१७०२	७७	प्रा. रा., लि. क. मुनि मानसिंह
१४६	७५२९	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी-भाषार्थसहित)		१७वीं	१३९	प्रा. रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४७	७६३१	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५६	६२	लि.क. मुनि मनोहर, बोटादग्रामे
१४८	७२२५	,,	भा० मेघराज वाचक	१६१२	११८	प्रा. रा., ऋषि रूपचन्द, पीहीमध्ये
१४९	७३१६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्रवृत्ति	वृ. मलयगिरि	१७वीं	७७	संस्कृत
१५०	७१८५	व्यवहारसूत्र		१७वीं	१९	प्राकृत
१५१	७४६६	,, ,,		१७वीं	१४	,,
१५२	७१८७	विपाकसूत्र (सटिप्पण)		१५१३	२४	,, लि. क. वाछाक
१५३	७७६३	विपाकाङ्गसूत्रटीका	टी. अभयदेवाचार्य	१५६१	१६	प्रा. सं.
१५४	७३८४	श्रमणसूत्र (सबालावबोध)		१८वीं	८	प्रा. अ., लि. क. मुनि मिरकू झांझणजीशिष्य
१५५	७२३८	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	श्रीरत्नशेखरगणि	१६५५	१८५	प्रा.सं., संशोधनकर्त्ता श्रीलक्ष्मीभद्र
१५६	६१३५	षडावश्यकबालावबोध	बा. हेमहंस	१८वीं	१२१	अ. सं.
१५७	७४२३	षडावश्यकसूत्र		१६८८	१३	प्राकृत
१५८	७२९६	स्थानाङ्गसूत्र		१६७२	७७	,, लि. स्था. शुजाउलपुर
१५९	५९७८	स्थानाङ्गसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१७८७	२०९	प्रा. रा. लि. स्था. बीकानेर
१६०	७२२३	समवायाङ्गवृत्ति	अभयदेवसूरि	१६१८	८४	* सं. प्रा., रचनाकाल ११२० वि०
१६१	७१८३	समवायाङ्गसूत्र		१६५८	५०	प्रा. पातशाहअकबरराज्ये लिपीकृतम्
१६२	७२१५	,, ,,		१६६७	३३	प्राकृत
१६३	७४६५	,, ,,		१६वीं	५०	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६४	७४६७	समवायाङ्गसूत्र		१६६२	६८	प्राकृत
१६५	७५६१	,, ,,		१८१४	१६५	प्रा. रा., लि.क. हीराचन्द भावचारी, लींबड़ीमध्ये
१६६	६४४५	सूत्रकृताङ्ग (सटीक)		१८वीं	७३	प्रा. सं., अपूर्ण
१६७	७१७८	सूत्रकृताङ्गसूत्र		१६वीं	५७	प्रा., लि.क. माणिक्यचन्द्र, नागेन्द्रगच्छे
१६८	७२०७	,, ,, (द्वितीय स्कन्ध, सस्तबक, पञ्चपाठ)	स्त. पाशचन्द्र (श्रीसाधुरत्नशिष्य)	१६५०	४८	प्रा. रा., लि.क. लूणिया-पोमसी पुत्रेसासूरताण, जैसलमेर–मध्ये
१६९	७२०९	सूत्रकृदङ्गटीका	शीलाचार्य (वाहरिगणसहायेन)	१६वीं	२४५	प्रा. सं.
१७०	७४३९	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध		१७वीं	३५	प्राकृत
१७१	५९९६	सूत्रकदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (सबालावबोध)		१६०१(?)	५१	प्रा. रा.
१७२	७४३३	,, ,, (पञ्चपाठ)		१७वीं	३४	,, ,,
१७३	७५३१	सूत्रकदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राजस्थानी भाषार्थसहित		१६५३–१६६७	७३	,, ,, मू. १६५३, भाषा–१६६७, लि.क. ऋषिभाण
१७४	७५३२	,, ,,		१६६८	८४	प्रा. रा.
१७५	७३०१	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग		१६७५	१८९	प्रा., लि.क. ऋषिवणायग पुंजा, केसीयामध्ये
१७६	७३५६	,, ,, (राजस्थानीभाषार्थसहित)	भा. प्रेमजीगणि	१८४८	२२७	प्रा. रा., लि.क. जीवनराम, नागोरमध्ये
१७७	७३९८	,, ,,		१८६९	२९८	प्रा. रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	७४३५	ज्ञाताधर्मकथाङ्गवृत्ति	वृ. अभयदेवसूरि	१६३८	७०	प्रा. सं., प्रथमपत्र अप्राप्त
१७९	७१९२	ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र		१६वीं	१३६	प्राकृत
१८०	७२३४	,, ,,		१७वीं	१५०	,,
१८१	७४७८	,, ,,		१४८३	९४	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१२५	अङ्गचूलिया		१८वीं	२१	अपभ्रंश
२	७५६१	अन्तसमाधि		१६०६	७	राजस्थानी
३	७२६७	अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात्र-पंचाशिकावृत्ति)	माणिक्यसुन्दरसूरि	१६४८	४०	संस्कृत, रचनाकाल १४८४, लि.स्था. अणहल्लपुरपत्तन
४	७५२५	अष्टांन्हिकव्याख्यान (पर्य्यूषणादि)		१८८८	१०	संस्कृत
५	७५३७	आगमवाणी आदि	आगमसारोद्धारगत	१८वीं	१४	राजस्थानी
६	६१६२	आगमसार	देवचन्द्र (खरतरगच्छीय)	१६वीं	५६	हिन्दी-रा., र.का. १७८३ लि.क. मुनि दुर्गदास, जालोरमध्ये, पत्र ५६–७६ तक भिन्नलिपि है
७	७०१६	आगमसारोद्धारभाषा	देवचन्द्र	१८६०	७६	* हि.रा. र.का. १७७६ लि.क मथेन जसकरण, कृष्णगढ़नगरमध्ये
८	७३३१	आगमसारोद्धाररास	,, मुनि	१८३२	२८	हि.रा., लि.स्था. पुष्पावतीनगरे
९	७२७३(३)	आदिनाथदेशनोद्धार		१७वीं	१२–१६	प्राकृत
१०	४७६६	आदिपुराण	सकलकीर्तिभट्टारक	१८वीं	२०४	संस्कृत, अन्तिम पत्र अप्राप्त
११	७११०	आराधनासूत्र (सार्थ)		१७३६	६	प्रा.रा., प्रथम पत्र अप्राप्त, अन्त्य पत्र शोभन
१२	५६३४	उपदेशबालावबोध	सोमसुन्दर	१७वीं	७६	सं. प्रा.
१३	७३०८	उपदेशमाला (सावचूर्णि)	श्रीरत्नशेखर	,,	२३	प्राकृत-संस्कृत
१४	४०१८	उपदेशमालाप्रकरणकथा (सबा-लावबोध)	धर्मदासगणि (वृद्धिविजय ?)	१८५६	२१८	प्रा.सं.रा., लि.क. विजयचन्द्र स्थविर, पाल्लीदुर्गे
१५	५६६०	उपदेशमालासूत्र (सटिप्पण)		१६६३	३६	प्राकृत, लि.क. मुनि कल्याण-सुन्दर, लिपि सुन्दर व प्रदर्शनीय

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३०२	ऋषभपंचाशिका	.	१७वीं	७	* प्राकृत
१७	७४६३	ऋषिमण्डलप्रकरण		,,	१२	प्राकृत
१८	७२६८	,, ,, (सावचूर्णि पञ्चपाठ)		,,	१६	प्रा. सं.
१९	७२४२	ऋषिमण्डलवृत्ति	शुभवर्द्धनगणी, (श्रीसाधुविजय-गणिशिष्य)	१८वीं	३५३	,, लि.स्था. रामगढ़
२०	७३०६	कर्म्मग्रन्थपञ्चकावचूरि		१६वीं	४३	सं. प्रा.
२१	७२८८	कर्म्मग्रन्थषट्क (स्वोपज्ञटीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि (?), मलयगिरि	१७वीं	२६२	,, १ से ५ तक स्वोपज्ञटीका तथा ६ठे की मलयगिरिकृत टीका है
२२	७२३९	कर्म्मग्रन्थषट्कसूत्रवृत्ति (स्वोपज्ञ, सटीक, त्रिपाठ)	देवेन्द्रसूरि, मलयगिरि	१६४९	२२५	,, ,,
२३	७२६७	कर्म्मप्रकृति	नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक	१६०२	१२	प्रा., लि.क. लक्ष्मीरत्न
२४	५४१८(१०)	कर्म्मपचीसी		१९वीं	१०९-११२	हिन्दी
२५	५०९०	कर्म्मविपाक (सटिप्पण, सप्ततिका पर्यन्त)		१८वीं	४७	अपभ्रंश
२६	६८८०	कर्म्मविपाकग्रन्थव्याख्या	मतिचन्द्र (गुणचन्द्रशिष्य)	१९वीं	५६	सं. प्रा. रा.
२७	७८५५	कालकसूरिकहाणयं (सचित्र)		१६वीं	९	प्राकृत, चि. सं. ६
२८	५३६१	कालकाचार्यकथा (सचित्र)		१५वीं	१२	,, ,, ५
२९	७८४८	,, ,, ,,		१५३१	६	,, ,, ३, त्रुटित, अपूर्ण
३०	५३६०	कालकाचार्यकथानक (सचित्र)		१५वीं	२५	,, ,, १२, पत्र ७९-१०३ तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४२२	कालिकाचार्यकथा		१७वीं	१६	प्रा. रा.
३२	७२५१	गुणस्थानकवृत्ति	रत्नशेखरसूरि	१६८८	१४	संस्कृत
३३	७३६४	गुणस्थानविचार	,,	१६वीं	३	,,
३४	५४२७(६)	गुणसंख्या (१०८ गुणोंकी संख्या)		१९वीं	१४८-१४९	प्राकृत
३५	६०२८	गुर्वावली	क्षमाकल्याणमुनि	१८७२	२८	संस्कृत, रचनाकाल १८३०
३६	६३३८	गुरुचारगूढाषट्पंचाशिका आदि		१८वीं	६२	हिन्दी, गुटका
३७	७७४१(४)	गौतमपृच्छा		१७वीं	३८-४१	प्राकृत
३८	७२४६	गौतमपृच्छावृत्ति	मतिवर्द्धन	१७५७	३१	प्रा. संस्कृत, र.का. सिद्धौरामे मुनौचन्द्रे (१७३८) लि.क. ऋषि रत्ना
३९	७५२७	,, ,,	,, (पाठक)	१८वीं	४३	प्रा. सं.
४०	७३०४	चउसरण (सबालावबोध)		१७वीं	१०	प्रा. अ.
४१	७३८५	चउसरणप्रकीर्णक		,,	६	प्रा., मोढ़जातीय जोशी माहव (माधव) लिखितम्
४२	७१२६	चतुर्दशस्थानकविचार		१७७५	१९	अ., लि.क. निहालचन्द्र, पाडलीपुरे, पत्र १५-१८ तक अप्राप्त
४३	५०९२	चतुर्विंशतिदण्डकसूत्रम् (सबालावबोधम्)	गजसागरगणी (धवलचन्द्रशिष्य)	१६९८	५	प्रा.अ., लि.क. सौभाग्यगणि शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये
४४	७५९०	चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति		१९०४	७	सं.प्रा., लि.क. हमीरविजय, कृष्णगढ़मध्ये
४५	७४६८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र		१७वीं	११	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६	६१०४	जम्बूअध्ययन (जम्बूचरित्र)		१६८७	१६	अपभ्रंश, प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५३२७	जिनदर्शन (जिनरक्षितजिनपालको चौढालियो)		१६३६	२	संस्कृत
४८	५१३६	जिनप्रतिमापूजापद्धति		१७वीं	२६	सं.प्रा., अपूर्ण
४९	७१८९	जीतकल्पवृत्ति	तिलकाचार्य	१६वीं	४०	संस्कृत
५०	७१८६	जीवविचार (सस्तबक)		१७५८	१०	प्रा.अ., लि.क. मोहनविमल
५१	७२३०	जीवविचार (सटीक)		१५८१	२	प्रा.सं., लि. स्था. शमीग्राम, सौभाग्यनन्दिसूरिविजयराज्ये
५२	६८४३	जैनपूजाविधि, स्तुति आदि		१९वीं	२३७	विविध भाषाके इस गुटकेमें तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि, आरती, स्तुति, क्षेत्रपालपूजादि संगृहीत हैं
५३	५३३४	तत्त्वार्थाधिगमसूत्र		१९०१	२५	सं., लि.क. देवचन्द्र
५४	६३०२	,, ,, (सटिप्पण)	उमास्वामि	१८वीं	७	,, ,, विमलदास
५५	४९१४(९)	,, ,, (सार्थ)		१८७१	२०१-२०७	सं. रा.
५६	७७६१	तत्वार्थाधिगमसूत्रटीका	सिद्धसेन	१६३१(?)	४४४	संस्कृत
५७	७७६०	तत्वार्थाधिगमसूत्रभाष्य	उमास्वाति (मि)	१६३१	६६	,, लि.क. पं. नाइया, श्री अचलगच्छेश्वर श्रीधर्ममूर्त्ति सूरीश्वर विशदोपदेशात्
५८	६२६९	तत्वार्थाधिगमसूत्रभाषाटीका		१८वीं	१०४	सं.रा., ऊपरके पत्र पर 'सुत्राजीकी टीका' लिखा है
५९	६०३५	द्रव्यसङ्ग्रहवृत्ति	मू. नेमिचन्द्र, वृ. ब्रह्मदेव	१६३१	६१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०	६२७६	दीपमालिकाकल्प	जिनप्रभसूरि	१८२३	२२	सं., प्रतिका शोधनकर्त्ता ऋषि सुखदेव है
६१	७६३२	दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प बालावबोध		१८११	२०	सं.रा., र.का. 'शरयुग शिखिशशिवर्षे (१६४५)' लि.क. कृष्णाजी ध्रांङ्‌धड़ामध्ये
६२	७३६२	दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प)	जिनसुन्दरसूरि (सोमसुन्दरसूरि-शिष्य)	१८वीं	१५	सं., लि.क. हेमविजय 'संवत्सरेऽग्निद्विपविश्वसंमिते'
६३	६०३६	दीपोत्सवकल्प		"	६	अपभ्रंश
६४	५४२७(४)	देवमहिमादि		१६वीं	४६–६४	सं.रा.अ., प्रतिमापूजन एवं स्तवन भी लिखित है
६५	५६४६	धर्म्मप्रश्नोत्तरमहाग्रन्थ	सकलकीर्तिभट्टारक	१६१३	७४	सं. इसमें १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है।
६६	४५६२	धर्म्मोपदेशश्लोक (सार्थ)	महावीरभगवदुक्त. अ. भीमविजय	१८४६	८०	प्रा.र., पादलिप्तनगरे शत्रुञ्जयतीर्थे लिपीकृतम्
६७	४५६६	धर्म्मोपदेशश्लोकाः	जैनपुराणोक्त	१६वीं	६	* संस्कृत
६८	५३७६(१६)	न्हवणकथा (स्नपनकथा)		१७६१	२१८–२२६	संस्कृत
६६	४०१६	नवकारबालावबोध		१८२१	४	प्रा.रा., लि. स्था. जैसलमेर
७०	६३२०	नवकारमन्त्र आदि		१६वीं	६१	हि, इस गुटके में जिनदर्शन, श्रीपालदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, बारहभावना जैनशतक' भक्तामरबालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है।
७१	७४४४(४)	नवतत्त्व (सटबार्थ)		१८८५	१२६–१३६	प्रा.रा., लि.क. नेमविजय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२	४०१६	नवतत्त्व (सबालावबोध)	पद्मचन्द्रशिष्यःकश्चित् (खरतर-गच्छीयः)	१८०३	५२	सं.प्रा.रा., र.का. १७६६, लि.क. ऋषिदेवचन्द्रादि,लि.स्था आगरा
७३	४०६१	,, ,,	मेरुतुङ्गसूरि (श्रीगच्छेश)-शिष्यः कश्चित्	१६५२	७१	प्रा.रा, लि.क. केशराज, श्रीरामपुर
७४	४४६२	,, ,,		१७वीं	१०	प्रा.रा., लि.क. हंसविजयगणि
७५	७६५६	,, ,,	बा. पार्श्वचन्द्र	,,	८	प्रा.रा.
७६	७५२१	नवतत्त्वटीका		१८७७	६	सं.प्रा., लि.क. नेमचन्द्र, फलौधीग्राममध्ये
७७	७५३६	नवतत्त्वप्रकरण (सबालावबोध)		१८०७	१३	प्रा.सं., लि.क. विजयगणि, रामसेणनगरे
७८	४४२३	नवतत्त्वविचार (सबालावबोध)		१६वीं	६	प्रा.रा.
७९	६२३०	नेमिपुराण		१८८६	२१२	सं., लि.क. हेतराम
८०	७४७९	प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि	सोमसुन्दरसूरि	१६वीं	२३	प्रा.सं.
८१	७४७६	प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ)	मू. देवेन्द्रसूरि, अ. सोमसुन्दरसूरि	१६५७	१९	प्रा.सं.
८२	७५४४	प्रत्येकबुद्धचरित्र		१७वीं	१०	,, लि.क. धर्मकीर्ति
८३	७८२४	प्रतिष्ठाकल्प		१८वीं	१५	सं.प्रा.
८४	७२००	प्रबोधचिन्तामणि	जयशेखरसूरि	१५३३	७२	*संस्कृत, र.का.–१४६२
८५	७३२१	प्रवचनसारोद्धार		१७वीं	४४	प्राकृत
८६	७३४७	,, ,, (सटीक)	सिद्धसेन	१६५०	३७९	*प्रा.स.
८७	७२७६	पञ्चनिर्ग्रन्थिप्रकरण (सावचूरि, पञ्चपाठ)		१७वीं	५	,,
८८	७३०९	पञ्चनिर्ग्रन्थिसूत्र (सावचूरि)	मू. अभयदेवसूरि	१७८०	७	,, लि.क. पं. कल्याणचन्द्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	७१६३	पञ्चपरमेष्टिपूजनप्रकार		१९वीं	३६	संस्कृत, अपूर्ण
९०	६२८७	पञ्चेन्द्रिय चौपाई		१८५३	९	हि. र.का. १७९१
९१	५१३०	पद्मावतीकल्प		१७वीं	२	संस्कृत, त्रुटित एवं आद्य पत्र अप्राप्त
९२	६४०१	पर्य्यन्ताराधनासूत्र	सोमसूरि	१७४०	७	प्रा.सं., लि.क. ऋषि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिश्रीरंग-विजयराज्ये
९३	७७४१(३)	परमात्मप्रकाश		१७वीं	१२–३८	प्राकृत
९४	७१५९	पार्श्वनाथपूजाद्यभिषेकान्त आदि		१९वीं	१२१	सं.हि.रा., अभिषेकनामक कृति अभयनन्दि द्वारा रचित, र.का. १५९७, इस गुटकेमें तत्वार्थाधिगमसूत्र, भक्तामरस्तोत्रादि अनेक कृतियां भी लिखित हैं।
९५	७१८२	पिण्डविशुद्धि (सावचूरि, पञ्चपाठ)	मू. जिनवल्लभ, वृ. श्रीचंद्रसूरि	१७वीं	१२	प्रा.सं.
९६	७२०६	पिण्डविशुद्धि		१६वीं	४	प्रा. प्रति के कोण भग्न हैं।
९७	६९०९	पूजाविधि (जैनतीर्थङ्करपूजाविधि)		१९वीं	११३	विविधभाषा के इस गुटकेमें चौबीस एवं बीस तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि तथा दशवैकालिक, तत्वार्थाधिगमसूत्र एवं विविध स्तोत्रादि संगृहीत हैं।
९८	७४१८	पोषधादिविधि		१८७५	९	प्राकृत, लि.क. कवीन्द्रसागर
९९	७५२२	बृहच्छान्तिटीका आदि		१९०१	२७	संस्कृत, इसमें लघुशान्तिटीका, दण्डकवृत्ति, नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एवं विद्याविलासकथा लिखित है।
१००	४३०१	बृहदाराधना		१५९०	१३	प्रा.रा., लि.स्था. श्रीनारदपुरी, लि.क. गुणलाभगणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१	५२८७	भक्तामरपूजापद्धति		१९वीं	१८	संस्कृत
१०२	७३३९	भगवत्यङ्गबीजक		१७वीं	६	प्राकृत
१०३	६०५०	भद्रबाहुसंहिता		१९वीं	९९	संस्कृत
१०४	७१९६	भवभावना (मूल)		१५९८	१८	प्राकृत
१०५	७१९९	,,	श्रीहेमचंद्रसूरि	१७वीं	२६	,,
१०६	७२८५	भवभावना (मूल)	हेमचन्द्रसूरि मलधारी	,,	९	प्राकृत
१०७	७३२०	भवभावनामूलप्रकरण	,,	१८६७	२५	,, अन्तिम पत्र अपेक्षाकृत नवीन है, उसी पर उक्त संवत् लिखा है, किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है
१०८	७२५२	भवभावनासूत्रप्रकरण		१७वीं	३७	प्राकृत
१०९	७२७३(२)	भववैराग्यशतक		,,	६-१२	,,
११०	५४१८(६)	भवसिन्धुचतुर्दशी	रूपचन्द्र	१९वीं	६६-९७	हिन्दी
१११	४०८५	मङ्गलकलशचोपाई	लक्ष्मीहर्ष	१८१९	२७	* ग्र. प्रा., लि. स्था. खींवसर-ग्राम, रचनाकाल १७१९, स्था.—काकंदीनगर
११२	५१२०	मङ्गलकलश तथा द्वितीयवाचना	मं. कनकसोम	१७वीं	१०	प्रा. द्वितीयवाचना पत्र १-५ तक में लिखित है, मङ्गलकलशका र.का. १६४९ है, उक्त दोनों ही प्रतियां अपूर्ण हैं
११३	५३०१	महापुराणसंग्रह	गुणभद्राचार्य	१९वीं	१३८-१८१, १८४-२५८	संस्कृत, अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	७१०५	मौनएकादशी		१८वीं	३	सं. प्रा.
११५	७२९३	मौनएकादशीकथा		१७वीं	२	संस्कृत, लि.क. पं० सोमनन्दन
११६	५०८७	लोकनालाख्यबालावबोध	नयविलास (जिनचंद्रसूरिशिष्य)	१८वीं	५	,,
११७	७२९४	वन्दारुवृत्ति		१५५९	७८	,, अन्तिम पत्र के अक्षर उड़ गये हैं
११८	७३४३	वनस्पतिसित्तरीअवचूरि	प्रज्ञापनापाङ्गसूत्रगत	१९वीं	३६	प्राकृत
११९	६०३४	वर्द्धमानदेशना (गद्यबन्ध)	कीर्तिगणि	१८९०	१०९	संस्कृत
१२०	६२२०	वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति	१७९८	१४६	,, लि.क. गुणविजय
१२१	४२९९	विंशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह	जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य)	१७वीं	६६	* प्रा.सं., प्रथम पत्र अप्राप्त, र.स्था. वीरग्राम, र.का. १५०२
१२२	७४७७	विचारामृतसंग्रह	कुलमण्डनसूरि	१५वीं	३१	* सं.प्रा., र.का. १४४३
१२३	७१७९	विवेकविलास	जिनदत्तसूरि	,,	२१	संस्कृत
१२४	७०७९	विशेषणवती	जिनभद्राचार्यगणि क्षमाश्रमण	१८वीं	९	प्राकृत
१२५	६१८३	श्रावकातिचार		१५५८	१०	अपभ्रंश
१२६	५९७०	शतकर्म्मग्रन्थबालावबोध	देवेन्द्रसूरि	१८वीं	१८	,, लि. क. ऋषि विश्राम परगरायपुरे
१२७	४०२६	शीलोपदेशमालाबालावबोध	मू. जयकीर्त्ति, बा. मेरुसुन्दर	,,	१५०	* प्रा. रा., लि.क. गुणपति-सागर
१२८	४०३३	,, ,,	,, ,, ,,	१६११	१६५	प्राकृत
१२९	७३३०	षडशीतिकशतककर्म्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-टीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि	१६५४	११०	संस्कृत
१३०	७४१६	षष्टिशतक		१९वीं	४	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१	५६८६	षष्टिशतकबालावबोध		१८वीं	१६	प्राकृत
१३२	७३५३	स्थविरावली		१६वीं	४१	प्रा. सं.
१३३	६३२७	स्वर्णाचलमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित (हर्षसागरात्मज)	१८४७	६७	सं., लि.स्था. भरथपुर
१३४	७२२१	सङ्ग्रहण्यवचूरि	देवभद्रसूरि	१४६६	२०	संस्कृत
१३५	७३२५	,,	श्रीचन्द्रमुनि (हर्षपुरीय)	१६वीं	२३	,,
१३६	६१३३	सङ्ग्रहणी		१६२४	१७	प्रा., लि.स्था. अलवर, प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१३७	७४०५	,, (मूल)		१८६६	४०	प्राकृत, लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द्र, चूरूनगरमध्ये
१३८	७५४६	,,		१७२२	८	प्रा., इसमें दण्डक भी लिखित हैं। लि.क. यशःसागरमुनि, सादड़ीमध्ये
१३९	७४७५	,, (सटीक, त्रिपाठ)	श्रीचन्द्रसूरि, श्रीदेवचन्द्रसूरि	१६६०	५१	प्रा.सं., लि.क. नयनगणि जीवकलशगणिशिष्य
१४०	७५६२	सङ्ग्रहणीप्रकरण (सस्तबक)	स्त. वच्छराज	१७१०	३१	प्रा. रा.
१४१	७६३३	सङ्ग्रहणीप्रकरण	उत्तमऋषि	१८वीं	३५	,, रचनाकाल अष्टचतुरशीतिके आगराख्ये महानगरे
१४२	४३५६	सङ्ग्रहणीबालावबोध	शिवनिधानगणि	१८३७	८५	* प्रा. रा., लि.क. ऋषि आनन्दचन्द्र, श्री बेनातटपुर
१४३	५६७२	,, ,,	,,	१८३६	६२	प्रा. रा., लि.क. शिवराज, श्रीबलभा (भी) पुर
१४४	७३२६	सङ्ग्रहणीवृत्ति	देवभद्रसूरि (श्रीचन्द्रसूरिशिष्य)	१८७७	१०१	संस्कृत, ३४ वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	४००४	सङ्ग्रहणीसूत्र (संघेणनो रासछन्द)	मतिसार	१८४५	२५	* राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. प्रमोदतिलक, राजनगरे
१४६	४०३१	सङ्ग्रहणीसूत्र (सस्तबक)	लेख(श)सूरि	१६९२	२७	* प्रा.अ., लि. कर्त्री-आर्याश्री ५ सज्जनजीरी शिष्यना आर्यसू-वट, बीलाड़ाग्राम
१४७	५३५३	,, (सचित्र)		१८वीं	९७	प्रा.रा., चि. सं. ३२
१४८	६१४१	,, ,,		१८३०	४७	हि.रा.अ., लि.स्था. डीडवाना
१४९	७१७५	,, ,,		१८२१	६४	प्रा. अ., चि. सं. ३५
१५०	७८४३	,, ,,		१६७५	२४	प्रा., चि. सं. ५
१५१	७२७७	सङ्ग्रहणीसूत्र		१७वीं	२०	प्राकृत
१५२	७३२४	,,		१८६०	२२	,, लि.क. सुन्दरहंस, राणा-वासमध्ये
१५३	७३२७	,, (सबालावबोध, पञ्च-पाठ)	देवभद्रसूरि	१६७८	३१	प्रा. अ.
१५४	७४४४(२)	,, (सटवार्थ)		१८८५	५४–१२०	,, लि.क. नेमविजय, गोघु-न्दाग्राममें लिखित, टिप्पणीका नाम रूपाली है
१५५	४१४३	सप्ततिशास्त्रबालावबोधविवृति	मतिचन्द्रमुनि	१७वीं	९२–१८३	सं.,अ.रा., प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है
१५६	६२०७	सप्तव्यसनकथासमुच्चय	भारामलसंघी (परसरामसुत)	१८७८	६२	हिन्दी, लिखितं महाचन्द्र. श्रीमालवासी पापडदाका पटवारी
१५७	७५४३	सप्तस्मरणसूत्र (राजस्थानीभाषार्थ-सहित)		१८४३	३६	प्रा. रा., लि.क. रूपसोम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५८	७०१५	सप्तमव्याख्यान		१८वीं	१७	सं.अ., इसमें ऋषभदेव, आदिनाथ आदिके चरित्रका व्याख्यान है, प्रतिके पन्ने चिपके हुए हैं
१५९	७६६९	सम्बोधसत्तरीप्रकरण		१९वीं	७	प्राकृत
१६०	६२०३	सम्मेदशिखरमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित	,,	८१	* संस्कृत
१६१	७११८	समवस्तुतिपूजा		,,	४०	,, अपूर्ण
१६२	७२१७	समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्र	१६६५	२५	* ,, लि क.-पं केशव
१६३	७१९३	साधुसमाचारी		१८वीं	६	प्रा.अ , लि.क. कमलविजय साध्वी श्रीसौभाग्यश्रीपठनकृते, प्रति सुन्दर व चित्रित है
१६४	७२१८	सार्द्धशतकवृत्ति	धनेश्वरसूरि	१६वीं	७०	सं.अ., आद्य ४ पत्र अप्राप्त, प्रतिके कोण खण्डित
१६५	५१३४	सारोद्धार (पंचखाणा, सटिप्पण)		१७वीं	४०	प्रा. अ.
१६६	७३८२	सिद्धान्तसार		१७६३	६५	प्रा.स.रा., लि.क. लालसागरगणि
१६७	६१४७	सिद्धान्तसारप्रदीपक	सकलकीर्ति	१८११	१२६	सं., लि.क. पं. मयारुचि, जयसिंहपुरामध्ये (माधवसिंहराज्ये)
१६८	७२६९	सिद्धिदण्डिका		१६वीं	४	प्रा.
१६९	७५३९	सूर्यप्रज्ञप्ति		१७वीं	९२	,,
१७०	६१०९	संस्तारकप्रकरण (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		,,	१०	अपभ्रंश
१७१	५९११	हरिवंशपुराण	जिनसेनसूरि	१६वीं	२९९	* संस्कृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७४१(१)	अपभ्रंशस्फुटपद्य		१७वीं	१०–१२	
२	७७४१(५)	,,		,,	४२–४३	
३	६०२५	इग्यारसितपसुव्रतकथा		१८वीं	४	अपभ्रंशमें
४	५२०७	औदुम्बरवंशपरिचय		१९०८	१	यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितों एवं राजगुरुओंकी मूल सम्मतियां अंकित हैं।
५	६८२७	औषधसंग्रह आदि		१९वीं	१६३	इस गुटकेमें औषधिके नुस्खे, यंत्रमंत्र, शकुन आदिका संग्रह है
६	७७२२(९)	,,		१८वीं	१०६	इसमें अदृष्टव्रणकी औषधि द्रष्टव्य है
७	५१२३(१)	गंगास्तोत्र		,,	१	प्राचीनसंस्कृतमिश्रित हिन्दी
८	४४५२(४२)	चण्डिकादेवीचित्र		,,	४९ वाँ	
९	४४५२(४३)	,,		,,	५० वाँ	
१०	४४५४	चन्द्रायणा, कवित्त		,,	१	२३ दोहे, २ कवित्त राजस्थानी एवं व्रजभाषा
११	७१७७	जन्मपत्र (सचित्र गोलक)				नवग्रहोंके सुन्दर चित्र अंकित हैं
१२	६९९०	जयपुरराज्य एवं सदाशिवभट्टसे सम्बद्ध टिप्पणियां आदि			प्रकीर्ण पत्र	कामदारी लिपिमें इतिहास
१३	७०६०	ढाईद्वीपका पटचित्र				
१४	७०५९	,,				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	७८०९	तांत्रिकयन्त्र (भूगोलपटचित्र)		१९वीं	१	
१६	४८१०	तारतम्य (गद्य)		,,	६	श्रीकृष्ण विषयक व्रजभाषागद्यमें
१७	१५०६	द्वात्रिंशदपराधाः, दशमहापराधाः, माघमासोत्सवादि		,,	४	संस्कृत, राजस्थानी इसमें वसन्त पञ्चमी के दिन भगवत्प्रतिमा के शृङ्गार की विधिद्रष्टव्य है
१८	५३७६(५)	दशलाक्षणिककथा	शुद्धकीर्ति	१८वीं	८७–९०	प्राकृत
१९	७७४१(७)	प्रकीर्णपद्यानि		१७वीं	८०	संस्कृत अपभ्रंश
१०	७०००	प्राकृतगाथाकोशटीका	मू. शालिवाहन टी. गङ्गाधरभट्ट	१९वीं	१६	प्राकृत संस्कृत अपूर्ण
२१	७३३८	पुष्पमालाप्रकरण	सोमतिलकसूरि	१५वीं	१४	प्राकृत
२२	४४८१	बृहत्क्षेत्रसमास		१७८५	१९	विषय ज्योतिष, लि क. दौलत-सागरगणि
२३	६३९८	बलिदानपद्धतिः		१९	६	तन्त्रोक्त
२४	६८५५	भागवत (मराठी अनुवाद)		१९वीं		प्रकीर्ण पत्र एकादशस्कंध पर्यन्त
२५	४०८३	मजलस		१८५२	३	प्राचीन हिन्दीगद्य, जिनसुखसूरि प्रशस्ति, लि क. पं. गोड़िदत्त स्थान पालीग्राम
२६	१४५४८(१)	मोक्षखेड़ा	बनारसीदास	१९वीं	१–३	पंजाबी में
२७	५४८४	रामविजयमहाकाव्य	श्रीधर	१८५२	५६४	र.का. शक सं. १७१७, मराठी भाषा में, लि.क. बालाजी भीखाजी, रेवातटे राजराजेश्वर सन्निधौ
२८	५५५०	,,	,,	१८वीं	९८	आरंभसे लेकर दशम अध्याय तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	७११६	,,		१८६१	३६७	र.का. १६२५ शाके(१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक सं. ५५५० और ७११६ की प्रतियोंको मिलाकर ग्रंथ पूर्ण हो जाता है
३०	५३७६(११)	रोसहकीजयमाला		१७६२	१११–११२	लि.क. डालचन्द नथमलसुत लि.स्था. दरियाबाद
३१	६०९२	विष्णुमहोत्सवमाला	केसरीकवि बालकृष्णभट्टसुत	१८९५	२४	
३१	५२३७	वैराग्यशतक		१७४५	१५	प्रा. रा. गु., लि. क. मनोहर इन्द्रजीत शिष्य
३३	६९७७	षट्चक्रनिरूपणखरड़ा		१९००	१	
३४	५२३९	त्रैलोक्यसाधना		१६७९	१२	लि.क. धर्मकीर्ति उपाध्याय मांगलोर मध्ये
३५	७१७६	ज्ञानबाजीकापटचित्र		१९वीं	१	

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१—स्तुतिस्तोत्रादि

८. ४२३४[1] अहल्यास्तोत्र

आदि— ॐ ततो दृष्ट्वा रघुश्रेष्ठं पीतकौशेयवाससम्,
धनुर्बाणधरं रामं लक्ष्मणेन समन्वितम् ।

अन्त — ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयी सुरापोऽपि च
भ्राता रा [ग्रा] मविहिंसकोऽपि सततं भोगैकवीधा (वद्धा) तुरः
नित्यं स्तोत्रमिदं जपन् रघुपतितं भक्त्या हृदिस्थं स्मरन्,
ध्यायेन्मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ त्वाचारयुक्तो नरः ।। २८

इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे बालकाण्डे अहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

९. ४२५४ अज्ञानविमोचनस्तोत्र

आदि— ॐकारे आदिरूपे सुकृतवहुविधे श्वेतपीते च कृष्णे
नीले रक्ते कपोते तदुपरि रहिते सर्ववर्णे विवर्णे ।
प्राणापाने समाने विपरितकरणे व्यान उद्यानपीठे
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीयः ।

अन्त— ध्याता ध्याने विज्ञाने जयविजयकरे भावभावे विभावे
रामारामेति रामे अमृतविषमये लुब्धचन्द्रे अलुब्धे
स्वर्गे नर्के अनर्के अखिलखिलमये चेतिचेते अचेते
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीयः ।।१०

इति श्रीनन्दीपुराणे नारायणकृत अज्ञानविमोचनस्तोत्र संपूर्ण ।

४८. ७१४८ गुरुस्मरणाष्टक (स्तोत्रसंग्रह)

पत्र– १, १४, १६, १८, १९ वां अप्राप्त

(१) प्रोतस्तव (२) गोपालमंत्रध्यान (३) राधिकाशतनाम (४) कृष्णशरणागतिस्तोत्र (५) दशश्लोकी (६) राधाष्टक (७) चतुःश्लोकी (८) आदित्यस्तोत्र (९) निवेदनाष्टक (१०) नारदशरणचतुष्क (११) निम्बार्कशरणागतिचतुष्क (१२) आचार्य पंचकस्तोत्र (१३) पंचश्लोकी (१४) राधास्तव (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निंवादित्यलघुस्तव (१७) युग्मषोडशनामस्तव (१८) यमुनाष्टक (१९) गोपालस्तवराज (२०) हरिव्यासाचार्याष्टक (२१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

---

१ प्रथम संख्या क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क - सूचक है ।

१३६. ६७०१ यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतियां।

श्री वल्लभाचार्य रचित—१ यमुनाष्टक. २ बालबोध. ३ सिद्धांतमुक्तावली. ४ सिद्धान्तरहस्य. ५ नवरत्नस्तोत्र. ६ अन्तःकरणप्रबोध. ७ विवेकधैर्याश्रय. ८ कृष्णाश्रय ९ चतुःश्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा. ११ भक्तिवर्द्धिनी. १२ जलभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि. १४ सन्यासनिर्णय. १५ निरोधलक्षण. १६ सेवाफल. १७ पंचश्लोकी। (विट्ठलेशरचित). १८. यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक. २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक. (वल्लभाचार्य) २२. भागवत्तसारसमुच्चयेनामसहस्रम् २३. नामावलीत्रिविधलीला २४. सेवाफलविचार. २५ पूतनामोक्ष. २६ गोपालाष्टक. २७ नवनीतप्रियाष्टक. २८ शरणाष्टक २९ दैन्याष्टक. ३० बलदेवाष्टक ३१ गिरिधार्यष्टक. ३२ गोकुलेशाष्टक. ३३ जन्मवैकल्यनिरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक. ३५ स्वामियुगलाष्टक. ३६ पंचाक्षरगर्भितस्तोत्र. ३७ वल्लभशरणाष्टक. ३८ सप्तश्लोकी भागवत. ३९ स्वामिन्यष्टक. ४० स्वस्वामिनीस्तोत्र ४१. आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्ठलेश) ४३. आर्या (रघुनाथ) ४४. शिक्षाश्लोकी ४५. दैन्याष्टक ४६. भुजंगप्रयाताष्टक ४७. अष्टाक्षरमन्त्रार्थ ४८ स्फुट पद्य।



३—कर्मकाण्ड

२६. ५७३९ कुण्डकल्पद्रुम

आदि— ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघं तत्सद्हृदन्तःस्थितं,
नत्वा सौति विभर्ति विश्वमखिलं यस्मिन् पुनर्लीयते।
शास्त्रं वीक्ष्य समुद्धराम्यथ सतां श्रीमाधवोऽहं सुधी-
र्निर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफलदं श्रीकुण्डकल्पद्रुमम्॥ १

अन्त — आसीत् काश्यपवंशजः क्षितितले श्रीमानुदीच्याग्रणी-
र्गोविन्दःश्रुतिवित्तदात्मज इहाभूत·········नारायणः।
तत्सूनुर्निगमक्रियासु निपुणः कूकाभिधस्तत्सुतः
शुक्लो माधवसंज्ञको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम्॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणिताटवीषु फलाशयादौ विकलाश्च तेषाम्।
कृते सुखेनेष्टफलः शिवाग्रे 'तापीपुरे'ऽरोपि सुकल्पवृक्षः॥
संवर्द्धितो यः कृपया शिवेन फलप्रदोऽसाविति बालकानाम्।
शिवः प्रसन्नो भवतीह येषां तेषां फलाप्तिर्नहि संशयोऽत्र॥
पद्यं सबाधं यदि मत्कृतो चेद् ग्राह्यं च तत् साधुजनैर्विशोध्य।
स्वर्वाहिनीसङ्गमतः कुवीथ्याः कुनिम्नगायाश्च यथैव तोयम्॥
रविघनमितवर्षे विक्रमार्के प्रयाते (१७१२)
नगनगतिथितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैषशुक्ले॥
परिणतिथियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत्।

२७. ४६६० कुण्डतत्त्वप्रदीप

आदि– नत्वाऽच्युतब्रह्ममहेशमूर्तीरिष्टेपु पूर्तेपु यदङ्गमाद्यम् ।
सांगं समं कुण्डमनेकभेदं ब्रूतेऽखिलं तद्बलभद्रसूरिः ॥ १

अन्त– कल्पे श्वेतवराहनाम्नि विदिते वैवस्वते सप्तमे
सन्मन्वन्तरकेऽष्टविंशतितमे प्राप्ते कलौ सम्प्रति ।
अन्हि स्वे प्रथमेऽखिलक्षितिपतिश्रीविक्रमार्कप्रभो-
र्वर्पाशीतिसहैव पोडशशतातीते च काले त्विह ॥
श्रीमदभूपतिशालिवाहनशकात् पञ्चाब्धितिथ्यन्विते
श्रीसूर्ये गतसौम्यदिश्यथ वसन्ततौ च चैत्रे शुभे ।
शुक्ले (गच्छति) पूर्णमासि हिमगौ सावित्र्यधिष्ण्ये धृतौ
कन्यास्थे हिमगावथावनियुते मेषे बुधे मीनगे ॥
सिंहे देवगुरौ सिते मकरगे कर्के शनौ संस्थिते
कन्यायां तमसि प्रकेतुषु झषं संस्थे च पुण्येऽहनि ।
सुव्यष्ट्यां करणे च सन्मिथुनके लग्नेऽभिजित्के मुहू-
र्तेसत्कुण्डविचारणार्थमुदितो दीपः प्रकाशं प्रयात् ॥
श्रीमत्स्तम्भसुपत्तने (स्थित) महेन्द्राम्भोधियोगे वसन् ।
नानाशास्त्रविचारणे पटुमतिः श्रीगौड़रत्नाकरात् ॥
जातो वत्सकुलाब्धिशीतकिरणः सत्कुण्डतत्वं स्फुटं
शुक्लस्थावरसूनुरत्नवलभद्राख्यः प्रवक्ति स्वयम् ॥
यः पूर्वं सुहिरण्यगर्भमतुलं रूपं दधन् वाग्विदाम्
मध्ये भट्टसमाख्ययाऽभवदसौ वेदान्वितत्त्वं स्वराट् ।
भूयः श्रीजयदेवदीक्षितमणिः सम्राट् सुविस्तारितुं
साङ्गं कर्मपथं चरन् विजयते श्रीमन्नृसिंहात्मभूः ॥
येन श्रीभगवान् मखैर्बहुविधैः सन्तर्पितः शाश्वतो
येन द्वादशसौत्यकाग्निचयनैः सद्वाजपेयादिभिः ।
इष्टं तेन सुशास्त्रवेदविदुषां तत्वोपदेशाथ चा–
ज्ञप्तेनायमगाधसागरजलात् पूर्णेन्दुवत्काशितः ॥

२८. ४६७८ कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)

रचना– 'रसगगनतिथिप्रमाणवर्षे गतवति विक्रमभूमिका [पा] लात्'
लि.क. सदाशंकर, अम्बिकेश्वरसुत महाशंकरपौत्र, जागेश्वरपठनार्थम् ।
टोडा निवासी ।

३३. ४१२८ कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)

आदि– कृष्णात्रिगोत्रोद्भवबूवसिन्धोः समुद्गतः विट्ठलपूर्णचन्द्रः ।
तस्यात्मजः श्रीरघुवीरविज्ञः करोति कुण्डार्कमरीचिमालाम् ॥१

अन्ते– शाखाः सप्तभिरावेष्टच वेदी पंचभिरेव च ।
कलशं तु त्रिरावेष्टच स्थापायेद्देवताक्रमात् ।। इति श्री०

४१. ४१८५ ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त– त्रिशरगजकुसंख्ये (१८५३) विक्रमातीतकाले
रवितिथिबुधवारे माधवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूपं खेटशान्तिप्रकारं
सुमतिभिरवलोक्यं योद्धराजाह्वयेन ।। १ ।।

इति श्रीग्रहशान्तिप्रकारः समाप्तिमगात् ।

लिपिकर्ता—पं० नाथूरामपुरी वचूणी[1]मध्ये ।

१००. ४६४९ मूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त– व्योमाचलावसुनिशाकरनाम्नि' वर्षे
पक्षे सिते तपसि रमाधवाह्निवारे ।
विधौ जयपुरे च गुरोर्निदेशात्
प्रालेखि पुस्तकमिदं गिरधारिशर्मा ।। १ ।।

११३. ४९६४ रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त– संवद्विक्रमभूपस्य तर्कचन्द्रशते गते । (१६५७)
पञ्चरागोत्तरे वर्षे कार्तिक्यां च प्रकाशके ।।
औदीच्यज्ञातिविप्रेण श्रीत्यगलाख्यसूनुना ।
मालजिना कृता चेथं महारुद्रस्य पद्धतिः ।।



४–तन्त्रमन्त्रादि

१७. ४३२६ कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्व भूतेश सर्वात्मन् सर्वसंभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणाकर ।।१।।
त्वयानुकम्पितेवाहं भूयोप्यद्यानुकंपय ।
त्रैलोक्यमोहनोमंत्रस्त्वया मे कथितः प्रभो ।। २ ।।

---

१ यह ग्राम विचूण ज्ञात होता है जो जयपुर से पश्चिम उत्तरमें १६ कोस पर है ।

अन्त– अथ वक्ष्यामि भर्गाख्यं मुनेश्वरि तमद्भुतम् ।
भुज्य नाम्नो मुनेः सोऽभूत् पुत्रः कनकसप्रभः ॥
तस्यास्यादचला भक्तिर्हरौ गोपालरूपिणि ॥२५२॥

इति संमोहि (ह) नी (न) तंत्रे श्रीकृष्णचरितं समाप्तं ।

२४. ६२४७ गंधोत्तमानिर्णय

अन्त– सन्दिग्धसन्देहविनाशमुद्गरं चक्रे स ग्रंथं गुरुसेवको मुदे ।
एनं सुधीश्रीगुरुजकुलधरे नाकश्वरः कौलवतां प्रपद्य इ॥ १ ॥

सिंहस्थे द्युमणौ गुरौ घटगते मासे नभस्याभिधे ।
मंदे ब्रह्मतिथौ विधौ तिमिगते पक्षे शुभे मेचके ॥
शाके विक्रमभूपते परिमिते द्व्याभ्राद्रिजैवातृकै-
(१७०२) विप्रप्रार्थनयासमाप्तिमगमद् गन्धोत्तमानिर्णयः ॥
इति श्री कालेत्युपनामकगुरुसेवक कृतं गंधोत्तमा निर्णयः ।
गुर्जरच्चुन्नीलालेन कुंभावत्यां लिपीकृतम् ॥
बहुशास्त्रान्वितो ग्रंथो कौलग्रन्थविनिर्णयम् ।

३२. ४८९७ तंत्रलीलावती

आदि– कुंजे मञ्जुलमंजरीपुलकिते भृंगांगनासंगते ।
माद्यत्कोकिलकाकलीविलपिते मन्दान (नि) लान्दोलिते ॥
सानन्दव्र [ब्र] जसुन्दरीभिरभितो निःशेषमालिंगिते ।
वन्दे सान्द्रपयोदसुन्दररुचिं श्रृंगारिणं माधवम् ॥१॥
..... श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधिः सत्कीर्तिचंद्राकरः
ख्यातो विक्रमकेसरी जगति यो दारिद्र्यनागांतकः ।
नानाशास्त्रविचारकेलिचतुरश्रीकर्णभूमि-
पतिर्द्धीरः संतनुते मितेन वचसा श्रीतंत्रलीलावली ॥६॥
आलोक्य तंत्राणि विचार्य सारं निष्कृष्य यत्नादिह साधकानाम्
विनोदहेतोर्गुरुवक्त्रगम्यं सिद्धेर्निदानं प्रकटीकरोति ॥७॥

अन्त– होमादावप्यशक्तश्चेद्गुद्विणं जपमाचरेत् ॥
इदं तु पञ्चाङ्गपुरश्चरणविषयम् ।
अन्यत्र होमादीनामनुक्तत्वात् ।

इति श्रीतंत्रलीलावत्यां तृतीयः पटलः समाप्तः ।

३३. ७७११ तन्त्रस्थहृदय

आदि– श्रुतीनां तंत्राणां बहुलकथनात्पन्नगपुरे
समायाते मोहे द्विजवरगणानां च विदुषाम् ।
अतस्तैः सम्पृष्टे हरिहरविरिंच्यादि चरणे
स्तुवन् काशीनाथो रचयति हि तंत्रस्थहृदयम् ॥ ४ ॥

अन्त – सुखजनकं साधूनां बालमुकुन्ददीक्षितः स्वार्थम् ।
व्यलिखत् परार्थमेतत् हृदयं यत् सर्वतंत्राणाम् ।। १
शिष्यकल्पतरुकल्पितकल्पं वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
शुद्धमार्गपरमं व्यलिखित् श्रीकृष्णदीक्षितसुतःस्वपरार्थम् ।। २

४४. ७७०८ परशुरामकल्पसूत्र

अन्त– इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलकालान्तकरेणुकागर्भसम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नारायणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचितं कल्पसूत्रं समाप्तम् ।

७३. ४२९६ महाविद्यादशश्लोकीविवरण

आदि– अपक्षसाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ।।
साध्यवद्वृत्तितायुक्तं साद्ध्यते साद्ध्यवर्जिते ।।१।।

अन्त– तदर्थमाकाशान्येति । तथापि द्रव्यत्त्वेन व्याघातस्तदवस्थ एव तदर्थमनित्यनित्यावृत्तीति तथापि न विवक्षितसिद्धिरिति ।

७९. ४११८ रामपद्धति

आदि– श्रीगणेशाय नमः । ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।। १ ।।
अन्त– सर्पं दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकंपिताः ।
ऊर्ध्वपुण्ड्रं कृतं तद्वत्कम्पन्ते यमकिंकराः ।। ५९ ।।
इति श्रीरामानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता सम्पूर्णा ।
लिपिकर्ता—विप्रजयराम ।

८३. ६७४२ रामपूजापद्धति

रचना काल—'इन्दुबाणरसोर्वीभिर्वत्सरे याति वैक्रमे ।। (१६५१)
कार्तिकमासिशुक्लायां द्वादश्यां भौमवासरे ।
काश्यां कृताऽनवद्येयं रामोपाध्यायसूरिणा ।।
राम एवार्पिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ।। १ ।।

९३. ५२३६ वसुधारा

आदि– संसारद्वयदैन्यस्य प्रतिहंत्रिदिवावहे ।
वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्यं कृपामए [यि] ।।

९४. ५२२५ वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि– संसारद्वयदैन [न्य] स्य प्रतिहंत्रिदिनवहे ।
वसुधारे सुधाधारे नमः तुभ्यां कृपामए (यि) ।।१।।

अन्त– वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारयं इदमेवोचद्भगवान्नात्तमनाः आयुष्मान् नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिसत्त्वा सालसवति परिषत् सदेवमानुषासुरगंधर्वाश्च लोको भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ।। इति श्रीवसुधारानामधारणीसमाप्ता ।

११३. ४४६६ **शिवपंचाक्षरी न्यासविधि**

आदि– ऋषय ऊचुः–कथं पंचाक्षरीं विद्यां प्रभावो वा कथं वद ।
कथं क्रमो महाभाग श्रोतुं कौतूहलं हि तः(नः) ॥
सूत०॥ पुरा देवेन रुद्रेण शिवेन परमेष्ठिना ।
पार्वत्याः कथितं पूर्वं प्रवदामि समासतः ॥

अन्त– गृहे जपं समं विद्याद् गोष्ठे शतगुणं भवेत् ।
नद्यां सहस्रगुणितं अनन्तं शिवसन्निधौ ॥
इति शिवपंचाक्षरन्यासविधिः समाप्तः ।

११६. ४२०५ **सिंहसिद्धान्तसिंधु**

आदि– यस्यांघ्रिद्वयपूजनेन निखिलाः सिद्धीर्लभन्ते नरा
वृद्धीः प्राप्य वसंति वेश्मसु परास्तेषां समाः संपदः ॥
भक्तस्वान्तनितांतमोहदलने दक्षं विपक्षं वरं
विघ्नानां प्रणमाम्यनारतमहं तं श्रीगणाधीश्वरम् ॥ १

इति गोस्वामिश्रीजगन्निवासात्मजगोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-
विरचिते सिंहसिद्धान्तसिंधौ द्विनवतितमस्तरङ्गः ।

अन्त– चंद्रवन्हितुरगैकसंमिते वत्सरे सहसि शुक्लपक्षतौ ॥
शीतरश्मिसितवासरे शुभे ग्रंथ एष परिपूर्णतामगात् ॥ २

संवत् १८२५ वर्षे राजाधिराजश्रीमज्जयसिंहतनूजश्रीमन्माधवसिंहोपण्हरेण स्वात्मावलोकनार्थं लिखापितं पुस्तकमिदं श्रीमज्जयसिंहनिर्मिते जयनगराख्ये शुभपत्तने लेखोयं लेखकत्रयाणाम् श्रीः श्रीः ॥

५–धर्मशास्त्र

१५. ४११३ **आशौचदशक सभाष्य**

आदि– मातुर्गर्भविपत्स्वद्यं त्रिदिवसं मासत्रयेतो यथा
मासाहं त्रिषु सूतिकावधिरतः स्नानं पितुः सर्वदा ।
ज्ञातीनां पतनादिजातमरणे पित्रोर्दशाहं सदा
नाम्नः प्राक् तदपैति सूतकवशाद्भ्रातुर्दशाहं परम् ॥ १
भाष्यादौ– विज्ञानेश्वरविरचितमुनिजनवाक्यैर्मिताक्षरामध्यात् ।
आशौचदशकवृत्ति वदति हरिर्हरिहरो नत्वा ॥ २

अन्त– "शूद्रो धन्यः कलिर्धन्य इति व्यासवाक्यात् । शूद्रधर्मसंस्काराणामादृतः । धन्यः शब्दो मंगलवाचक इति । इत्याशौचदशकभाष्यं हरिहरविरचितं सम्पूर्णम् ।"

२४. ४३५१ कालनिर्णयसिद्धांत सटीक

आदि– प्रणम्यैकरदं देवं, शारदां गुरुमेव च ।
कालनिर्णयसिद्धान्तं व्याकुर्वे विशदोक्तितः ।। १

अन्त– एतादृशे समये भुजनगरे द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थस्येयं व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेद्यग्निहोत्रिश्रीजयरामसुतरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धांतः सटीकः समाप्तिमगमत् ।

२५. ६२४६ कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल– भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ वि०) माघकृष्ण गहरौ रविवारे ।
ग्रन्थपूर्तिमकरोत् किल रामः श्रीरमापतिसमर्पणबुद्ध्या ।।

प्रति पर पुस्तकके स्वामीका पश्चाल्लेख इस प्रकार है—

"श्रीवीसलनगरवास्तव्यनागरज्ञातीयत्रिपाठीकालात्मजग्रहलासूनुहरनाथतदात्मज भा. श्रा. तत्सूनुत्रि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनसूनु त्रि० प्राणनाथात्मजवालकृष्णस्येदं पुस्तकम् । श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ संवत् १७५६ ।"

३२. ४१२६ तिथिनिर्णय

आदि– सा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकैककलावृद्धयवच्छिन्नः कालः शुक्लतिथिः तत्क्षयावच्छिन्नः कालः कृष्णतिथिः ।

अन्त– योऽनन्तदेवकृतमंथनसन्निबन्ध–
क्षीराब्धिजोथ कमलापतिना धृतो यः ।।
नित्यं निजे हृदि सतां प्रमुदे तु तस्य
तिथ्याख्यदीधितिरियं स्मृतिकौस्तुभस्य ।।

इति तिथिनिर्णयः समाप्तः ।

४०. ४६८४ दानवाक्यसमुच्चय

आदि– पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य बुधैः सह ।
पुरुषोत्तमेन क्रियते दानवाक्यसमुच्चयः ।।

४३. ४६०५ धानतपद्धति

आदि– धानत इति भविष्योक्तेः । जातः कंसब(व)धार्थायेत्यस्य परभागोऽत्र न संगृहीतः ।
अन्त– ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेणादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थः ।। ४३ ।। इति समाप्तम ।

४६. ४१८४ प्रायश्चित्तमयूख

आदि– नमामि भास्वत्पदपंकजंतच्छ्रीनीलकंठोऽहमथ प्रकुर्वे ।
स्मृत्वोपदेशान् गुरुशंकरस्य विनिर्णयं पापविशुद्धिहेतुम् ।। १

अन्त– निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत् ।
त्रिकालसंध्याकरणात्तत्सर्वं प्रविणश्यति ।।

५४. ४४४६ **मदनपारिजात**

आदि– प्रवालादिप्रस्थद्युतिनिचयपर्य्यायवपुषे
नमो विघ्नश्रेणीविघटनवरिष्ठाय महसे ।
जगत्प्रादुर्भावस्थितिलयनिरायासरचना–
विनोदासक्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुवे ।। १
सोऽयं कौशिकवंशभूषणमणिश्रीभट्टविश्वेश्वरो ।
वेदस्मार्तमते नयेच सय(प)दे वाक्ये कृती वर्द्धते ।। २

अन्त– ''मतिर्येषां शास्त्रे प्रकृतिरमणीया व्यवहृतिः
परा शीलं श्लाघ्यं जगति ऋजवस्ते कतिपये ।
चिरं चित्ते तेषां मुकुरतलभूते स्थितिमिया–
दियं व्यासारण्यप्रवरमुनिशिष्यस्य भक्ति रिति ।।''

इति पण्डितपारिजातकहरिमल्लेत्यादिविरुदराजीविराजमानस्य श्रीमदनपालस्य निवन्धे मदनपारिजताभिधाने नवमः स्तवकः समाप्तः ।

५६. ४४४४ **महाव्रतभाष्य**

आदि– मधुसूदनं गुरुं वन्दे देवमातं त्रयीविदम् ।
कृष्णं विनायकं रामं हरिरामं हलायुधम् ।। १
सप्त चैतान्गुरून्नत्वा तेषां वै पादपांसवः ।
भाष्यं महाव्रतस्याहं कुर्वे गोविंदसंज्ञकः ।। २

अन्त– चातुर्विंशकान् पुच्छानीत्पुच्छसंस्थे चातुर्विंशकानीत्यादिद्विरभ्यास्तेध्यायपरिसमाप्त्यर्थः ।· इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टादशोऽध्यायः ।।

६२. ४५१६ **मानवधर्मशास्त्रसंहिता**

आदि– स्वयम्भुवे नमस्कृत्य ब्रह्मणेऽमिततेजसे ।
मनुप्रणीतान् विविधान् धर्मान् वक्ष्यामि शाश्वतान् ।। १

अन्त– इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रोक्तं पठन् द्विजः ।
भवत्याचारवान्नित्यं यथेष्टां प्राप्नुयाद्गतिम् ।। १२६

इति श्रीमानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां द्वादशोऽध्यायः ।

७६. ४३५० **रत्नसंग्रह**

आदि– नत्वा रामं घनश्यामं शारदां च महेश्वरम् ।
बालबोधाय गोविंदः कुरुते रत्नसंग्रहम् ।। १

अन्त– धर्माधिकारिरामस्य निर्ममे तनुजः कृती ।
निबंधान् वीक्ष्य निर्व[रब]ध्नाद् गोविंदो रत्नसंग्रहम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितरामसुतश्रीमद्गोविंदपंडितकृतौ ज्यौतिषरत्नसंग्रहः समाप्तः ।

८८.   ४५३३   शांखशास्त्र

आदि– स्वयम्भुवे नमस्कृत्य सृष्टिसंहारकारिणे ।
चातुर्वर्ण्यहितार्थाय शंखः शास्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त– शंखप्रोक्तमिदं शास्त्रं योऽधीते द्विजपुङ्गवः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ॥

इति शांखे धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्यायः ।

८९.   ४४४७   शांखायनसूत्र भाष्य

आदि– ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नमः । ओम् । पुरुषस्य बुद्धिपूर्वकारिणोऽभ्युदयनिःश्रेयसमुपादित्सितं तच्च विशिष्टक्रियासाध्यं, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या काचित् कुत एतत् इत्यादि ।

अन्त– शांखायनकसूत्रस्य समं शिष्यहितेच्छया ।
वरदत्तसुतो भाष्यमानर्त्तीयोऽकरोन्नवम् ॥

इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोध्यायः समाप्तः ।



६–पुराणकथामाहात्म्यादि

७७.   ४२३०   भागवत

१. भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ० १ से ३८ तक ।
२. नारायणकवच पृ० ३९ से ५६ तक
३. सप्तश्लोकी गीता पृ० ५७ से ६० तक
४. चतुश्श्लोकी गीता पृ० ६१ से ६३ ,,
५. एकश्लोकीरामायण पृ० ६४ से ६५ ,,
६. भारतसावित्री पृ० ६५ से ६७ ,,
७. रामरक्षाकवच पृ० ६८ से ८१ ,,
८. रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र पृ० ८२ से ९९ ,,
(पद्मपुराणांतर्ग)
९. नारदगीता पृ० १०० से १०१ तक, और
१०. इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ० १०२ से ११३ तक हैं ।

९७. ६४८५ भागवतक्रमसन्दर्भटीका

अन्त– इति कलियुगपावनस्वभजनविभजनप्रयोजनावतारश्रीश्रीभगवच्चैतन्यदेवचरणानुचरणाचार-विश्ववैष्णवराजसभाजनभजनरूपसनातनानुशासनभारतीगर्भे श्रीभागवतसंदर्भे क्रमसंदर्भो नाम सप्तमः सन्दर्भः, समाप्तश्चायं भागवतसन्दर्भः ।

१३३. ६४८८ भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भः प्रथमः

आदि– जयतां मथुराभूमौ श्रीलरूपसनातनौ ।
यौ विलेखयतस्तत्वं ज्ञापिकौ पुस्तकामिमाम् ।। ३
कोऽपि तद्बान्धवो भट्टो दक्षिणद्विजवंशजः ।
विविच्याऽव्यलिखद्ग्रन्थं लिखिताद्वृद्धवैष्णवैः ।। ४
तस्याद्यं ग्रन्थमालेख्यं क्रान्तव्युत्क्रान्तखण्डितम् ।
पर्य्यालोच्याथपर्य्यायं कृत्वा लिखति जीवकः ।। ५

७–वेदान्त

२. ४५६४ अन्तःकरणबोध सविवृतिक

अन्त– पितृपादाब्जपरागधनिना मया श्रीवल्लभेन रचिता वि(वि)वृतिः पूर्णतामगात् ।

३. ४२४४ अनुस्मृति

आदि– शतानीक उवाच–
ॐ महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।
अक्षीणकर्मबंधस्तु पुरुषो द्विजसत्तम ।। १

अन्त– ननु ध्यायति यो देही कथयामि च तत्सुखम् ।
सर्वबन्धविनिर्मुक्तः परंपदमवाप्नुयात् ।। ७३

इति श्रीमहाभारते विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृतिः सम्पूर्णा ।

२३. ४१४१ आत्मबोध सटीक

आदि– टीका– शतमखपूजितपादं शतपथमनसाप्यगोचराकारम् ।
विकसज्जलरुहनेत्र(त्रं)उमाछायाङ्कमाश्रयं शम्भुम् ।। १

मूल– तपोभि[:]क्षीण[य]माना[णा]नां शान्तानां वीतरागिणाम् ।
मुमुक्षूणामपेक्षोयमात्मबोधो विधीयते ।। १

अन्त– दिग्देशकालाद्यनपेक्षसर्वगं शीतादिहृन्नित्यसुखं निरञ्जनम् ।।
यः स्वात्मतीर्थं भजते विनिः क्रियः यः सर्ववित् सर्वगतोऽमृतो भवेत् ।। ६७

टीका– शीतादिद्वन्द्वदुःखानि हरतीति शीतादिहृत् नित्यसुखं मोक्षानन्दप्रापकत्वाद्। इतरतीर्थेसु तद्विपरीतं द्द(द्र)ष्टव्यम् तस्मादात्मतीर्थे स्नातस्य न किंचिदवशिष्यत इति भावः।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यगोविन्दभगवत्पूज्यपादश्रीमच्छंकराचार्य-
विरचितात्मबोधप्रकरणं समाप्तम्।

५८. ६०६१ नाटकद्वीपाख्याव्याख्या

श्रीगणेशाय नमः॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनीश्वरौ।
अर्थो नाटकद्वीपस्य मया संक्षिप्य वक्ष्यते॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य निःप्रयूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षणं मङ्गलमाचरन् मन्दाधिकारिणामनायासेन निःप्रपञ्चब्रह्मात्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्यारोपापवादाभ्यां निःप्रपञ्चं प्रपञ्च्यते शिष्याणां बोधसिद्ध्यर्थं तत्वज्ञैककल्पितः क्रमः इति न्यायमनुसृत्यात्मन्यध्यारोपं तावदाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्णः पूर्वं स्वमायया।
स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवरूपतः॥ १
देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत्।
मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितो भजति देवताम्॥ २

अन्त– न तत्र मानापेक्षास्ति स्वप्रकाशस्वरूपतः।
तादृग्व्युत्पत्त्यपेक्षाचेच्छ्रुतिं पठ गुरोर्मुखात्॥ २५
यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धियं व्रज।
शरणं तदधीनोन्तर्बहिर्वैषोनुभूयताम्॥ २६
इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशमः॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्ष्या (य) यत्किञ्चित् प्रमाणमपेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वस्फूर्तौ मानं नापेक्ष्यत इति व्युत्पत्तिसिद्धये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह तादृगिति॥२५॥ एवमुत्तमाधिकारिणः आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाधिकारिणस्तं दर्शयति यदि सर्वेति बुद्धिशरणत्वे किं फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिकल्पयते वाह्यमभ्यन्तरं वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तथैवानुभूयतामित्यर्थः॥२६॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्य्यकिङ्करेण श्रीरामकृष्णाख्यविदुषा विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशमः॥१०॥

११–ज्यौतिष

५. ४४४२ अद्भुतसागर

इति श्रीपाकसमयाद्भुतावर्त्तः ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्शंकशंकरश्रीमद्बल्लालसेनदेवविरचित अद्भुतसागरः समाप्तः ।

पुस्तकके अन्तमें इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न मानसिंहादि राजाओंका वंशवर्णन है ।

लिपिकर्ता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भैरूंसिंघजीपठनार्थम् ।

लिपिस्थान—शिवपुरी ग्राम । संवत् १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६. ४६३० अद्भुतसागरी प्रथम खण्ड

पूर्ण ग्रंथकी पत्र संख्या ऊपर ३६० लिखी है किन्तु यह प्रति अपूर्ण है । प्रतिमें ऊपर "पुस्तकमिदं शुक्लसदासुखजीकस्य" ऐसा लेख है ।

७. ४३१४ (अयनांशादिकरणविधि)

इस गुटके में उपर्य्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त शीघ्रबोध करणकुतूहल, शनिचारफल, वंध्याभेद, सन्तानार्थ औषधविधिके दोहे व यन्त्र बीच बीचमें दिये हुए हैं । दोहे उपयोगी हैं । २४ पृष्ठ तक अयनांशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठ से ७५ पृष्ठ तक शीघ्रबोध है । इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४. ७०६१ आकाशपुरुषचित्र

यह सुषुम्णाचक्र है, जिसमें पुरुषाकारमें सुषुम्णा नाड़ीमें नक्षत्रमालाकी स्थापना करके बताया गया है । चित्र अध्येतव्य है ।

५०. ४१०४ ग्रहणपद्धति

आदि– श्रीमद्गोवर्द्धनधरं नत्वा सौरमतानुगाम् ।
स्वल्पानल्पार्थयुतां कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त– नखधृतिविक्रमवर्षे काम्यकवनवासिनन्दरामेण ।
रचितोपरागपद्धतिरियमतिहृद्या ग्रहज्ञानाम् ॥ २४

इति श्रीमिश्रनन्दरामविरचिता ग्रहणपद्धतिः समाप्ता ।

रचनाकाल—१८२० संवत् । स्थान—काम्यकवन ।

६१. ४३६२ गणितनाममाला

आदि– गणितस्य नाममालायां वक्ष्ये गुरुप्रसादतः ।
बालानां सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजाग्रणीः ॥ १

अन्त– कुण्डलज्ञानविप्रेण हरिदत्तेन धीमता ।
नाममाला कृता श्रेष्ठा देवगुर्वोः प्रसादतः ॥ ३०

श्रीश्रीपतिसुतेनैषा बालानां बुद्धिवृद्धये ।
गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रसंग्रहे ॥ ३१

इति श्रीज्योतिषनाममालेयं संपूर्णा ।

६३. ४७७१ (१) गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१६७० शाके विभवनासंवत्सरे वसन्ततौं वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्यामिन्दुवासरे सप्तर्षिक्षेत्रमध्ये लिखितम् ।

ग्रंथके प्रारम्भमें मराठी भाषामें गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र हैं ।

७८. ४६७२ चमत्कारचिन्तामणि

अन्त– दधीचे पुरे लाटहासे पुराणां गणांच्छ्रीहरेः स्थापितः स्थानपालः द्विजोऽचीकरात्सुन्दरालं द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीयः ।

लिखितं देराश्री लीलाधर पुरुषोत्तमसुत कंकनपुरमध्ये ।

९६. ४२८६ ज्योतिषरत्नमाला

आदि– प्रभवविरतिमध्यज्ञानवन्ध्या नितान्तं
विदितपरमतत्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।
तमहमिहनिमित्तं विश्वजन्मात्ययाना–
मनुमितमभिवन्दे भग्रहैःकालमीशम् ॥ १
विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीतं
वराहलल्लादिप्रपंचशास्त्रम् ।
दैवज्ञकण्ठाभरणार्थमेषा–
विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ॥ २

अन्त– सुवृत्तया श्रीपतिदृब्धयानया
कंठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।
अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यलं
सभासु भूम्नां गणको विराजते ॥ १३

इति श्रीश्रीपतिविरचितायां ज्योतिषरत्नमालायां प्रतिष्ठाप्रकरणं विंशतितमम् ।

९७. ४४०५ ज्योतिषरत्नमाला

अन्त– आमदषंडे चन्द्रा उत्तरउ श्रीदुर्गाजीराज्ये रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावालगच्छे भट्टारक श्रीगोइंदपतपट्टे आचार्य श्रीकान्हाउपाध्यायशिवदासलिखितं स्वशिष्यपरंपरावाचनार्थं तथा स्वकार्यार्थं तथा च परोपकारार्थं उच्छकेन लिखिता ।

१०८. ४४०७ ज्योतिषसार संग्रह

आदि– लग्नं लग्नपतिर्बलान्वितवपुः केन्द्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपतिः ध्रुवम् ।

सच्छीलं विभवान्वितं गतरुजं मुक्तातपत्रान्वितम्
जातो निम्नकुले विभूतिपुरुषं शंसन्ति गर्गादयः ।।

अन्त- सत्वेन जायते सिद्धि रजसिद्धिगुणं फलम् ।
तामसे फलता नास्ति शिवस्य वन्दनं तथा ।।

१०६. ४४१० **ज्योतिषसारसंग्रह**

आदि- यदा मेषे गुरुरुदयं करोति तदा दुर्भिक्षमनावृष्टिः ।

अन्त- देशा मार्गे पुरे ग्रामे मंत्र औषध देवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत् ।।

११८. ६३६६ **जन्मपत्रीप्रकार:**

यह ग्रंथ मारवाड़में रचित है क्योंकि चरखंडे जोधपुर, जालोर, सोजत आदि स्थानों के दिये गये हैं ।

१२०. ५२१५ **जन्मपत्रीपद्धति**

यह प्रति राजस्थानमें ही लिखी गई है । कारण यह है कि राजस्थानके प्रायः सभी नगरोंके अक्षांश इसमें विद्यमान हैं ।

१७४. ६४२० **ताजिकसारवृत्ति**

वर्षे शैलहयाङ्गभूपरिमिते मासे तथा फाल्गुने
पक्षे शुभ्रतरे तिथौ दशमिते श्रीखेरवातत्पुरे
श्रीमति विष्णुदासनृपतौ वैरीभवृन्दे हरौ
वृत्तिः[त्तिः] श्रीगुरुहर्षरत्नकृपया सामन्तनामाऽकरोत् ।

१६१. ५८३० **नरपतिजयचर्या**

पूर्णामित्रर्क्षभौमे दिनपतिवृषभे माधवे शुक्लपक्षे
नन्दानन्दाष्टचन्द्रे गमयति तदा सोमवंशावतंसः ।
देशेऽलर्काक्षमध्ये विदितखरपुटीराममिश्रो लिलेख
पाठार्थं पाठयोग्यं कलयति तदा श्रीजयपालसिंहः ।

१६६. ४८५१ **नवरोजप्रकाश**

आदि- हैय्यतजीजमिजस्तिरोमकयवनादिगदितशास्त्राणाम् ।
मतमवलोक्याशेषं वक्ष्ये किंचित्फलं रम्यम् ।।

अन्त- श्रीगौरोपतिनगरे यवनेशोत्साहमानदं सुफलम् ।
शिवलालपाठकेन प्रकाशितं शिष्यजनतुष्ट्यै ।।
अर्द्धोदयेब्दे भूतायां माघशुक्लैनिवासरे ।
सम्पत्तिरामतोषाय मणीरामः समालिखत् ।।

२०१. ७०८८ **नष्टोद्दिष्टविधि**

अन्त- विसमजसकिरणधवलिय महियल सुरनिवहममिपय
पयजुअलं तिहुअणसिरिवर कुलहर मणहर गुणनिलय जिणजयहि ।

२०६. ७०१०   नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—सारसामध्ये महोपाध्यायगुणसुन्दरशिष्यकर्मचन्द्रशिष्य चिरं० दौला-पठनहेतवे ।

२०७. ४३५२   नारचंद्रयंत्रकोद्धार सटिप्पण

आदि– अर्हंतं जिनं श्रीनं नत्वा नारचन्द्रेण धीमता ।
सारमुद्धियते किंचित् ज्योतिषक्षीरनीरधेः ॥ १

अन्त– इति नारचन्द्रटिप्पनके श्रीसागरचन्द्रसूरिकृते द्वितीयं प्रकीर्णकं समाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्रस्योभयप्रकीर्णके शतकसार्द्धशत १५० यंत्रकाणि समाप्तानि ।

२२८. ४१८३   प्रश्नमार्ग

आदि– श्री गुरुभ्यो नमः । मध्याटव्यधिपं दुग्धसिन्धुकन्याधवं धिया ।
ध्यायामि साध्वहं बुद्धेः शुद्धयै वृद्धयै च सिद्धये ॥ १

अन्त– कुम्भपूर्तितिथिभानुचन्द्रमोवृद्धिरिप्फरिपुचन्द्रमंददृक् ।
धान्यवृद्धिशुभदत्रवृत्तिका शकुनक्वणिकायराशयः ॥ ३६
बिंदुसंल्लिपिविसर्गवीचिकाशृंगवंद्विपदहीनदूषणं ।
हस्तवेगजमबुद्धिपूर्वकं क्षन्तुमर्हति समीक्ष्य सज्जनः ॥

श्रीसांबशिवार्पणमस्तु । इति प्रश्नमार्गस्समाप्तिमगमत् ।

२५५. ४४५२   पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि– अभिवंद्य महादेवं सर्वशास्त्रविशारदम् ।
भविष्यदर्थबोधाय पप्रच्छुर्मुनयो मुदा ॥ १

अन्त– भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनंच स्वप्ने ।
मृत्येषु वर्षं सुखता विचार्या कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

ग्रन्थाङ्क ५५५६ 'पञ्चपक्षी' में यह श्लोक निम्नप्रकार है—

भुक्ते तु मासं गमने तु पक्षं राज्ये क्षणानीत्ययनंच स्वप्ने ।
मृतेषु वर्षं शकुनाख्यया च कालप्रमाणं मुनयो वदन्ति ॥

२६८. ४८६३   पद्धतिप्रकाश

आदि– नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽयं ग्रन्थो रवेः पादयुगप्रभावात् ।
शाके नगाम्भोधिशरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचां प्रबंधान्यभिभाष्य सम्यक् ॥१०४

२८२. ४६७८   पैतामही सारिणी

अन्त– आसीत्पार्थपुरे वरे द्विजन(व)रः श्रीगोपिराजाभिधः ।
सिद्धान्ताभिनवोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणिः ॥
तज्जः श्रीपतिरग्रणीः कृतिविदां सिद्धान्तपारंगमः ।
तत्सूनुर्मधुसूदनाख्यगणकः पैतामहीं निर्ममे ॥

२८९. ४२७७ बालावबोध

अन्त– अर्द्ध प्रहरकः त्याज्यः चतुर्थः सप्तमस्तथा
द्वितीयः पंचमो षष्ठः षष्ठो रविपूर्वकः ॥

आदि– उदयाचलपर्यन्तामस्ताचलमहीमिमां ।
विख्यातो बालबोधोऽयं मुञ्जादित्यो ॥
पूर्वसागरपर्यन्ता पश्चिमोदधिसंयुता
बालमाक्रमते नित्यं समां तु दिनेश्वरः ॥

इति श्री मुंजादित्यविरचितं ज्योतिश्शास्त्रे बालावबोधाख्यम् ।

२९४. ७११२ बालबोध

अन्त– इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवेदाङ्गपाठदक्षिणहिसारनगराधिवासश्रीसुन्दर-शर्महृदयानन्द–श्रीहरिकर्णकृते बालबोधमकरन्दपद्धतिमणौ ग्रहाणामुदयाधिकारः पंचमः ।

२९६. ६२१२ बीजवासनाभाष्य

अन्त– इति श्रीमन्मार्तण्डात्मजप्रकटस्थगोकुलग्रामनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य-मण्डितोद्दण्डपण्डितमण्डलीमण्डनबलभद्रभट्टात्मजमाधवभट्टसुतव्रजनाथभट्टसूनुना गणकमण्डली-मण्डनेन ज्योतिर्विन्नितांततोषहेतवे विरचितं बीजवासनाभाष्यं सफ(क)लसन्देहापनोदनवसं श्रीमत्प्रचण्डप्रतापसार्वभौमरामसिंहराज्येऽम्बावत्यां अम्बिकेश्वरपुर्यामंकाभ्रनृप १६०९ मिते शाके चैत्रशुक्लपक्षे गुरौ सप्तम्यां समाप्तिमगमत् । संवत् १७७६ शाके १६४१ प्रथम आश्विनकृष्णा १२ सोमे लि० इन्द्रमणिना ।

२९८. ४१८६ बृहज्जातक

आदि– मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्मा पुनर्जन्मना–
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजनां (तां) भर्ता महः ज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौ ।
वाचं नः त्वनेककिरणास्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥ १

अन्त– दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदं ।
शास्त्रमुपसंग्रहां नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ १०

इति वराहमिहिरकृतौ बृहज्जातके उपसंहाराख्यः षड्विंशोध्यायः ।

३३९. ४२८४ मयूरचित्र

आदि– अथ मयूरचित्र लिख्यते ।
यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोपि ।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्रः स जयति धाम्नां निधिः सूर्यः ॥

३४९. ४२८३ माससारिणी

आदि– सूर्ये स्पष्टअवधि ५२ ।

४ ८ ८ १
अन्त– वेदाष्टगजभूराज्याद्‌गता विक्रमवत्सरा ।

शालिवाहन
मार्गशीर्षे सिते पक्षे नष्टेन्दुचन्द्रवासरे ।
मासानां सारिणीश्रेष्ठं बालानां शीघ्रबुद्धिदम् ।। २

४२२.　५१६५　　　रमलनवरत्न

नगरसवसुचन्द्रे (१८६७) वत्सरे विक्रमार्के ।

शिववाटिकायां अवन्त्यां सीतारामपुत्रेण अनूपदेव्याः सुतेन परमसुखसनाढ्येन रचितमिदम् ।

३३२.　४७६९　　　रमलसार

(लक्ष्मीनृसिंहभट्टसुतगोकुलवास्तव्यश्रीपतिविरचित ।)

आदि– यः सिद्धनदपुर्यां स मे हरेत्युपनामकः
गुलाबरायो धर्मात्मा यशस्वी तत्तनूद्भवः ।। ३
गुरोर्गोविन्दरायस्य क्षात्रवंशशिरोमणेः
प्रसादात् कुरुते रम्लसारः श्रीपतिना मया ।। ४

४७०.　४३५५　　　वसन्तराजशाकुन

आदि– विरंचिनारायणशंकरेभ्यः शचीपतिस्कंदविनायकेभ्यः ।
लक्ष्मीभवानीपतिदेवताभ्यः सदा नवभ्योऽपि नमो ग्रहेभ्यः ।। १

अन्त– इति श्रीवसन्तराजशाकुने सदागमार्थशोभने ।
समस्तसत्यकौतुके कृतं प्रभावकीर्तनम् ।। विंशतितमो नयः ।। २०

इति भट्टवसन्तराजविरचितं दारिद्र्यविद्रावणं नाम सर्वशाकुनं समाप्तम् ।

६२३.　४४२७　　　क्षेत्रसमासावचूरि

आदि– श्रीवीरजिनेन्द्रं सर्वैकांततमोरविम् ।
नत्वा नव्यो लघुक्षेत्रसमासोह्यवचूर्ण्यते ।।
ऐदं युगीनान् संक्षिप्तरुचीनपेक्ष्य भगवद्भिः
श्रीसोमतिलकसूरीश्वरैर्विदधेयमति महार्थः ।। २

अन्त– एवं सर्वद्वीपसमुद्रादिसंख्या आनेयाः तथात्र मनुष्यक्षेत्रे सर्वाग्रे सर्वेऽपि शशिनोरवयश्च पृथक् प्रत्येकं द्वात्रिंशच्छतं तथा बहिर्मनुष्यक्षेत्रात् शशिनोरवयश्च स्थिरा अर्द्धप्रमाणाश्च ज्ञेयाः ।। ८७ ।।८८।। इति नरक्षेत्रविचार इति श्रीसोमतिलकसूरिविरचितायां नव्यक्षेत्रसमासस्यावचूर्णिः श्रीगुणरत्नसूरिविरचिता ।

१२–छन्दः शास्त्र

४. ४४३२ वृत्तमुक्तावली

आदि– सकललघुमपूर्वं तत्कृतीनां कवीना-
म्प्रभवति सुखहेतुः संश्रितायेन......।
······शुभगणाद्या व्याललोकावसान-
ङ्कलयति भवतीयं छन्दसां मालिनीव ।। १

अन्त– अतो मेरोरर्धाल्लगविषयणीजातिषुलादिकासुक्रमा-
देकद्व्यादिप्रमितिरचिराद्वात्ति रः को युतः स्यात् ।
तदङ्कैः स्यात्संख्या भवति यदि वा मिश्रितैरेकयुक्तैः
समुद्दिष्टाङ्कैः स्याद्द्विगुणवपुषा संख्ययैकोनयाध्वा ।।

इति श्रीमत्कविधुरन्धरमल्लारिविरचितायां वृत्तमुक्तावली(ल्यां) प्रस्तरादिनिरूणं नामाष्टमो गुच्छः ।।

लिपिकर्त्ता—वराहग्रामस्थ वम्मणभट्टात्मज कालिङ्ग ।

१५. ७५१३ वृत्तरत्नाकरवृत्ति

अन्त– शरबाणपर्व्वतैकेब्दे चैत्रके विशदे बुधे ।
एकादश्यां तिथौ रात्रौ व्यलेखि विक्रमे पुरे ।। १
भूतनाथप्रसादेन शर्मेशेन लिपीकृतम् ।
कल्याणमस्तु श्रेयोऽस्तु विजयोऽस्तु शमस्तु च ।। २
पुस्तिकेयं वदत्येवाविघ्नमस्तु प्रजासु च ।।

१३–संगीत

१. ६७४१ अनूप संगीतरत्नाकर

आदि– श्रीगुरुगणाधिपवटुकशारदाभ्यो नमः ।
श्रीमज्जनार्दनंनत्वा संगीतार्थफलप्रदं ।
तन्यते भावभट्टेन रागालापनमंजरी ।। १
त्रिंशत्तुग्रामरागास्यु नवोपरागका स्मृताः ।
रागाणां विंशति प्रोक्ता भाषा षण्णवतिः स्मृता ।। २

अन्त– इति श्रीमद्राठोडकुलदिनकरमाहाराजाधिराजश्री········हात्मजजयश्रीविराजमानचतुःसमुद्रमुद्रावच्छिन्नमेदिनीप्रतिपालनचतुरवदान्यताग्रेश (सर) निर्जितचिंतामणिरवि

प्रतापतापितारिवर्गधर्मावतारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपसिंहप्रमोदितश्रीमहीमहेंद्रमौलि-मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजहां सभामंडणसंगीतराजजनार्द्दनभट्टांगजानुष्टुप-चक्रवर्तिसंगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसंगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीयः समाप्तः ॥ २ छा॥ छा॥ ॥ छा॥ छा॥

२. ४१९९ रागमाला

आदि– नत्वा शम्भुपदाम्बुजं तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वंन्द्वं विघ्ननिवारकं च सततं तं वारणास्यं स्मरन् ।
रागाणां किलभैरवादिसुमनोमोदप्रदानां ब्रुवे
षण्णां लक्षणरूपगानसमयान् संगीतवित्तुष्टये ॥ १

अन्त– रागाणां भैरवादीनां षण्णां रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै व्रजनाथेन सूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्थव्रजनाथदीक्षितविरचिता हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला समाप्ता । लिपिकर्ता—पुरुषोत्तम आचार्य ।

१४–कामशास्त्र

३. ४४२६ रतिरहस्य

आदि– येनाकारिप्रसभमचिरादर्द्धनारीश्वरत्वं
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षुषेण ॥
इन्दोर्मित्रं सजयति मुदां धाम वामप्रचारो
देवः श्रीमान् भवरसभुजां दैवतं चित्तजन्मा ॥ १

अन्त– सुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूपः ॥
वेश्मनि विहितस्तेषां परस्परं प्रीतिमातनुते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोकक्कृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशमः परिच्छेदः ॥

४. ४७७५ रतिरहस्य

अन्त– शाके वेदनगेषुचन्द्रमितिगे संवत्सरे नन्दने
माघे मास्यथ धर्मदैवततिथौ सौरस्यवारे पुनः ॥
तापीतीरनिवासिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तकं ।
शिष्याणां पठनाय वामलधियां सौख्याय शैवेन यत् ॥

१५–काव्य नाटक चम्पू (१)

२. ४३७६ अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक

आदि– श्रीमहादेव उवाच– शतयोजनविस्तीर्णं समुद्रं मकरालयम् ।
लिलंघयिषुरानन्दसन्दोहो मारुतात्मजः ।। १

अन्त– यत्पादपद्मयुगलं तुलसीदलाद्यै-
स्संपूज्य विष्णुपदवीमतुलां प्रयान्ति ।।
तेनैव किं पुनरसौ परिरब्धमूर्ती-
रामेण वायुतनयः कृतपुण्यपुञ्जः ।। ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे सुन्दरकाण्डे पंचमः सर्गः ।

३. ४५२० अध्यात्मरामायणसेतु

अन्त– इति श्रीमत्सकलराजविपदुद्धारणसमर्थेत्यादिविरुदावलीविराजमानस्य हिम्मतिवर्मणः पुत्रस्य श्रीरामवर्मणः कृतावध्यात्मरामायणसेतावुत्तरकाण्डे नवमः सर्गः ।।समाप्तः।।

१०. ४३३१ अनर्घराघव

आदि– ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ।।
निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवतः कौमोदकीलक्ष्मणः ।
कोकप्रीतिचकोरपारणपटुर्ज्योतिष्मती लोचने ।।
याम्यामर्धविबोधमुग्धमधुरश्रीरर्धनिद्रायतो ।
नाभीपल्लवपुण्डरीकमुकुलः कंब्वाः सपत्नीकृतः ।।१

अन्त– दृष्ट्वा तुष्यत्पुलस्त्यो जगति विजयते जानकीजानिरेकः ।

इति निष्क्रांताः सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम षष्ठाङ्कः समाप्तः ।

१२. ६४०२ अन्यापदेश शतक

लिपिकर्ता—अभयराम दादूपंथी नागपुर—

लेभेऽयं शुभदा तपोभिरमलैः श्रीपद्मनाभात्सुतं ।
यद्वंशो मिथिलाखिलावनितलालंकारचूडामणिः ।।
तेनेदं मधुसूदनेन कविना विद्यावता निर्मितं,
श्लोकानां शतकं मुदे सुकृतिनामन्यापदेशाव्हयम् ।। १५

१४. ४३२५ अमरुशतक सटिप्पण

अन्त– प्रासादे सा दिशिदिशि च सा पृष्ठतः सा पुरः सा ।
पर्यंके सा पथि पथि च सा तद्वियोगातुरस्य ।।

हंहो चेतः प्रकृतिरपरा नास्ति मे कापि सा सा ।
सा सा सा सा जगति सकले कोऽयमद्वैतवादः ॥ १०२

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितममरुशतकं समाप्तिमगमत् ।

१८.　४३३०　ऋतुसंहार

आदि— प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः ।
सदावगाहक्षतवारिसंचयः ॥
दिनांतरम्योऽभ्युपशांतमन्मथो ।
निदाघकालः समुपागतः प्रिये ॥ १

अन्त— आलब्धचन्दनरसाः स्तनशक्तहाराः ।
कंदर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्याः ॥
मासे मधौ मधुरकोमलभृंगनादै-
र्नार्यो हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् ॥ २४

इति श्रीविशेषकाव्ये श्रीकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे वसन्तवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः समाप्तः तत्समासो समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

३०.　४३६५　कुमारविहारशतक

आदि— तेजः पुष्णातु पार्श्वो दुरितविजयि वः शाश्वतानन्दबीजं ।
संक्रान्तः सप्तरत्न्यां भुजगपतिफणाचक्रपर्यंकभाजि ॥
कर्माण्यष्टौ समन्तात्त्रिभुवन भवनोत्संगतानां जनानां ।
यश्चेत्तुं तुल्यकालं वहति निजतनुक्लृप्तसामान्यरूपाम् ॥ १

अन्त— आस्तां तावन्मनुष्यः प्रकृतिमलिनधीः शाश्वतालोकचक्षु-
र्वक्तुं वक्त्रैश्चतुर्भिर्विधिरपि किमलं तस्य सौन्दर्यलक्ष्मीम् ।
स्त्रीणां शेषाभिलाषः परमलयमयं स्थानमाप्तोऽपि यस्मि-
न्नास्थां श्रीपार्श्वनाथस्त्रिभुवनकुमुदारामचन्द्रश्चकार ॥ ११६

इति विहारशतकं समाप्तम् ॥छ॥छ॥

४१.　७७९४　कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त— शाके दृशश्वशक्रे नभसि नभोमणिदिने षष्ठ्याम् ॥
व्रजपतिसद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५.　५६०२　धर्म्मशर्म्माभ्युदयम्

आदि— श्रीनाभिसूनोश्चिरमंघ्रियुग्म-
नखेन्दवः कौमुदमेधयन्तु ॥
यत्रानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-
चूडाश्मगर्भप्रतिबिम्बमेणः ॥ १

अन्त– अभजदथ विचित्रैर्वाक्यसूनोपचारैः
प्रभुरिहहरिचन्द्राराधितो मोक्षलक्ष्मीम् ॥
तदनु तदनुयायी प्राप पर्यन्तपूजो-
ऽपचितसुकृतराशिः स्वंपदं नाकिलोकः ॥ १८५

इति महाकविश्रीहरिश्चंद्रविरचिते श्रीधर्म्मशर्म्माभ्युदये महाकाव्ये श्रीधर्मनाथनिर्वाणगमनो नाम एकविंशतितमः सर्गः पूर्णः । कविवंशवर्णनं तत्रैव–

मुक्ताफलस्थितिरलंकृतिषुप्रसिद्ध-
स्तत्रार्द्रदेव इति निर्मलमूर्तिरासीत् ॥
कायस्थ एव निरवद्यगुणग्रहस्स-
न्नैकोऽपियः कुलमशेषमलं चकार ॥ २
लावण्याम्बुनिधिः कलाकुलगृहं सौभाग्यसद्भाग्ययोः ।
क्रीडावेश्मविलासवासवलभीभूषास्पदं सम्पदाम् ॥
शौचाचारविवेकविस्मयमहीप्राणप्रिया शूलिनः—
शर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥ ३
अर्हत्पदाम्भोरुहचंचरीक-
स्तयोः सुतः श्रीहरिचंद्र आसीत् ॥
गुरुप्रसादादमला बभूवुः
सारस्वते स्रोतसि यस्य वाचः ॥ ४
स कर्णपीयूषरसप्रवाहः
रसध्वनेरध्वनि सार्थवाहः ॥
श्रीधर्मशर्माभ्युदयाभिधानं
महाकविः काव्यमिदं व्यधत्त ॥ ७

६६. ४०९२ **नलोदय टीका**

आदि– नत्वा हरिंकमलशंखगदासिपाणिं ।
लक्ष्मीनखांकविलसद्हृदयं दयाब्धिम् ॥
वागीश्वरीमथ गुरूंश्च परापरेषां ।
टीकां मनोरथकविः स्वधिया विधत्ते ॥ १
नलोदयपदाबोधाद्बुधाः खेदं विमुञ्चत ।
मनोरथकृतां टीकां शुद्धां सम्प्रति पश्यत ॥ २

अन्त– नलोदयमहाकाव्यटीका विबुधचंद्रिका ।
आचन्द्रतारकं यावद्भूयादानन्दवर्द्धिनी ॥ ३
एकेन यमकालापो निस्तरीतुं सुदुःशकः ।
तस्मात्सन्तो दयावन्तः स्निह्यन्तु मयि निर्भराः ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचितायां विबुधचन्द्रिकायां नलोदयमहाकाव्यटीकायां चतुर्थ आश्वासः ॥ ४ ॥ समाप्तः ॥

७४.   ४३८८   नृसिंहचम्पू

आदि– कनकरुचिदुकूलः कुण्डलोल्लासिगल्लः
शमितभुवनभारः कोऽपि लीलावतारः ।।
त्रिभुवनसुखकारी शेषधारी नृसिंहः
परिकलितरमांगो मंगलं नस्तनोतु ।। १

अन्त– इति श्रीमन्महाराजधिराजस्पृहणीयशौर्यौदार्याद्यनेकानवद्यपद्यगुणगणविराजमान-श्रीमदुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूकाव्ये पञ्चमः स्तवकः ।। ५ ।।

८९.   ६२४४   महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वंशवर्णनं यथा–
गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुणः शास्त्रप्रवाहागमे ।
तेषामात्मजरुद्रभक्तिनिपुणः ख्यातो हि शैवागमे ।।
सोऽयं लेखितग्रन्थमेत्र सुधियो गोवर्धनख्यातिवान् ।
पाठे चात्मपरार्थमेव सकलं तस्माच्छिवप्रीतये ।। २
अस्मत्पितामातुलपुण्यमूर्ते-
र्विख्यातनाम्ना हरजीति संज्ञे ।।
गोवर्धनोऽहं इदमाललेख
प्रसाद तेषां गुरुमातुलस्य ।। ३
वर्षातीते वेदगोभूपचेति ।
मासेऽषाढ़े पूर्णिमाभूमिजेति ।।
ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
तीर्थेपुण्ये क्षेत्र भूतेश्वरेति ।। ४

सं० १६९४ वर्षे आषाढ़मासे शुक्लपक्षे पौर्णमास्यां भौमवासरे च ठाकुरगोविंदसुतठाकुर-जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखितं इदं पुस्तकं मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८.   ६४७१   महाभारत कर्णपर्व

अन्त– हुताशनांगाद्रिकुभिर्मिते शके ।
श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ।।
त्रयोदशी भौमदिने समाप्त-
मिदं तु शास्त्रं हरिलालमिश्रात् ।।
लिखनत इति शेषः । दाँता मध्ये ।

११८.   ६१९६   महाभारत मोक्षपर्व

अन्त– मनरामेणालेखि नभोंत्यशरारे धृत्यब्दशके भारत्यां सेश जगति शमस्तु ।

१२५.   ४३९१   मुद्राराक्षस सटीक

आदि– सिंदूरारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भृंगिका ।
झंकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मंद्रेण च ।।

तत्तोर्यत्रिकरीतिमेति शिरसश्शश्वन्मदान्दोलनं ।
यस्य श्रीगणनायकः स दिशतु श्रेयांसि भूयांसि वः ।। १

अन्त– बाणाग्न्यर्तुमहीसंख्यामितेब्दे जयनामके ।
ढुंढ़िना व्याकृतं जीयान्मुद्राराक्षसनाटकम् ।।

रचनाकाल—शाके १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येदं पुस्तकम् ।

१३५. ४३९० **मेघदूत सटीक**

अन्त– आसीन्निर्मलवंश्यतरणिस्वाचार्रचितामणिः-
सद्विद्यासरणिर्भवाब्धितरणिः श्रीसोमनाथो द्विजः ।।
सूनुस्तस्य धनेश्वरो व्यरचयट्टीकां शिशून्दोधिनीं ।
काव्येऽस्मिन् सरसप्रवंधविषमे श्रीमेघदूताभिधे ।। १

१३६. ५१५६ **मेघदूत सटीक**

अन्त– श्रीवैकुण्ठाभिधगुरुवचोलब्धतत्त्वावबोधो ।
वाराणस्यां विबुधनिकरालंकृतायां यतीन्द्रः ।।
पूर्णानन्दश्चतुररचनां मेघदूतस्य टीकां ।
काव्यच्छन्दोनिगमनिपुणो बालबुद्ध्यै व्यतानीत् ।। १

१५६. ७३०२ **रघुवंशटीका**

अन्त– चन्द्रवसुसम्वतसमै वन्हिबाण परमानिये ।
आसोज सुदि एकादशी भृगुवार इह जानिये ।।

लि.क. खुशालसागरगणि मेदपाटदेशे वैराटमंडले संग्रामगढ़नगरे तथा टुकरवाडग्रामे ।

१६३. ७०८३ **राधाकृष्णप्रेमसम्पुटकाव्य**

अन्त– षट्शून्यर्त्ववनिभिर्गुणिते तपस्ये ।
श्रीरूपवाङ्मधुरिमामृतपानपुष्टः ।।
राधागिरीन्द्रधरयोः सरसोस्तटान्ते ।
तत्प्रेमसम्पुटमविन्दत कोऽपि काव्यम् ।।

१७१. ४४०० **रामहनुमन्नाटक**

आदि– श्रीरामे दशरथेन कैकेयी वाक्पात्रा वनं प्रति प्रेष्यमाणे लक्ष्मणस्य भावः ।
निर्यातमाकर्ण्य वनाय रामं ।
सौमित्रिरुत्तंभितकोपकम्पः ।।
विश्रान्तदृष्टिः किल चापयष्टौ ।
दध्यौ स वै लक्ष्यमिदं हृदन्तः ।। १

अन्त– रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।
मनः प्रसन्नतामेति रामनामाभिशंकया ।।

इति रामहनूमतं नाटकम् ।

२०२. ६०२० रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त– वाल्मीकिना विरचितं श्रीरामायणपुस्तकम् ।
लिखितं लक्ष्मणाख्येन समाप्तं भक्ततुष्टिदम् ।।

२१६. ७०८७ शिशुपाल ब(व)ध

अन्त– इति श्रीमाघवणिग्विरचिते महाकाव्ये श्रचंके शिशुपालवधो नामविंशति (त) मः सर्गः ।। सम्पूर्णं माघकाव्यम् ।। सं० १५५२ वर्षे चैत्रसुदिद्वादशीदिने सोमवासरे ब्रह्मश्री (षि) रतन पठनार्थे श्री माघकाव्ये लिखितं ज्योतिरणमल शुभं भवतु ।

२२१. ६१७६ शृङ्गारमाला

अन्त– श्री गुरुदेवः ।
संसारसर्पमुखमर्दनतार्क्ष्यरूपाः
विज्ञानभापटलपाटितमोहकूपाः ।।
येषां कटाक्षकलिताः फलिताः लसन्ति
गङ्गेशमिश्रगुरवः सततं जयन्ति ।। १

कविवंशवर्णनम् ।
पानीयप्रस्थात् परतस्तु मार्गो
षट्क्रोशमध्ये हि घटोत्कचस्य ।।
ग्रामो 'घरोडे'ति प्रसिद्धनामा
पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीयाः ।। १०
श्रीविष्णुदत्तस्स्वकुलाब्जभानु–
र्नारायणस्तत्तनुजो बभूव ।।
कौशल्यगोत्रो यजुषामधीता
माध्यंन्दिनीयो द्विजगौड़जोसी ।। ११
तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्यां ।
षड्दर्शिनीवैरमपुत्रमंत्री ।।
दामोदरो वैद्यकग्रंथकर्ता
श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमासीत् ।। १२
तुलसीमाधवगंगारामाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।
माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजैः ।। १३
साहित्ये रसग्रंथकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजातः कवि-
र्बाबूराय इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चार्गले ।।
तत्पुत्रेण कृता मया रसमयी माला रसोपासकाऽऽ-
ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितुं गुणैरपि युता कल्पारसब्रह्मणि ।। १४
सुखलालेन सुकविना रचिता शृंगारमणिमयीमाला ।
सा रसिकानां सगुणसुवर्णा विलासमातनुताम् ।। १५
सुधांशुव्योमवस्विन्दौ वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।
शुभा शृंगारमालेयं रविपुष्ये सुगुम्फिता ।। १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिकगौड़विप्रवरबाबूरायमिश्रसूनुसुखलालमिश्रेण विरचितायां श्रृंगारमालायां संकीर्णवर्णनं नाम तृतीयं विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथम विरचनम्—नायिकाभेदविवरणम् ।

द्वितीय ,, —शिखनखवर्णनम् ।

तृतीय ,, —षड्ऋतुवर्णनम् (संकीर्ण-विरचनम्) ।

२२३. ५३०३ **संवित्प्रकाश**

अन्त– श्रीगोविन्दकवीशमीशभजनप्राप्तं कवीशाग्रणीः ।
श्रीमत्कान्हकविः सुतं प्रसुषुवे श्रीकर्मदेवी च यं ॥
वेदान्ताम्वुजभास्वतार्थवहुलं संवित्प्रकाशाभिधं ।
काव्यं तेन कृतं समाप्तिमगमद्विद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४. ४१२६ **सप्तशती आर्यावृत्तबद्धा**

आदि– पाणिग्रहे पुलकितं वपुरैशं भूतिभूषितं जयति ।
अंकुरित इव मनोभूर्यंद्भस्मावशेषेऽपि ॥ १

अन्त– हरिचरणलीलाकविवरवचनवामनशीला वामन इव कविपदं निष्ठ्यः ।
अकृताचार्यः सप्तशतीमेकां गोवर्धनाचार्यः ॥ ७५०
इति गोवर्द्धनाचार्यकृता सप्तशतीयं समाप्तम् ।

संवत् १८०७ मिती माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । लीखतं जोसी परसरामेण । पर्व्वणीकरोपनामरघुनाथस्येदम् पुस्तकम् । लेखकपाठकयो शुभमस्तु ॥
॥ शुभं भवतु कल्याणम् भव ॥

२२५. ६०६३ **सुन्दरमणिसन्दर्भ**

अन्त– मधुराचार्यनाम्नैष गालवाश्रमवासिना ।
सुन्दराभिधसन्दर्भो भावशोधाय निर्मितः ॥



१६–रसालङ्कार

२. ४३६६ **अलंकारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)**

आदि– अनुचिंत्य महालक्ष्मीं हरिलोचनचन्द्रिकाम् ।
कुर्वे कुवलयानन्दसदलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

अन्त– असौ कुवलयानन्दश्चन्द्रालोकोत्थितोऽपि सन् ।
प्रतिष्ठां लभते नैव विनाऽलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणज्ञतत्सद्रामभट्टात्मजवैद्यनाथकृतालङ्कारचन्द्रिकाख्या कुवलयानन्दटीका ।

४. ५६८३ काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि– विमृश्य वाङ्मयं ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।
काव्यकल्पलताख्येयं कविशिक्षा प्रतन्यते ।।

अन्त– इति श्रीजिनदत्तसूरिशिष्यमहाकविचक्रचूड़ामणिश्रीमदमरसिंहविरचितायां काव्यकल्पलताकविशिष्या(क्षा)वृत्तौ अर्थसिद्धिप्रताने तुर्ये(तुरीये) समस्यास्तवकः सप्तमः समाप्तः ।

१३. ६०७३ चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त– इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसकलशास्त्रारविन्दप्रद्योत्तमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे शरदागमे दशमो मयूखः समाप्तः ।

२४. ६४६८ रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी

वर्षाभ्रांकसुधांशुभिश्च मिलिते संवत्सरे भाद्रके ।
पक्षे मेचकसंज्ञके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ।।
व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिकां गोविन्दशर्मा द्विजो ।
राज्ये भारतपत्तने च बलवत्सिंहस्यपुण्यात्मनः ।।

प्रति के आदि २½ पत्रों में काशिराज श्रीचंद्रभानु के वंश का विस्तार से वर्णन है । (सं०)

३४. ४३०६ वाग्भटालंकारवृत्ति

आदि– श्रियं दिशतु वो देवः श्रीनाभेयजिनः सदा ।
मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ।। १

व्याख्या–श्रीनाभेयजिनो वो युष्मभ्यं श्रियं दिशतु ददातु किंविशिष्टः श्रीनाभेयजिनः देवः दीव्यति क्रीड़ते परमानन्दपदे इति देवः यस्य भगवतः आगमपदावली सिद्धान्तपदपरम्परा सतां सत्पुरुषाणां मोक्षमार्गं ब्रूते सिद्धेः पंथानं वदति । अन्यापि पदावली मार्गं ब्रूते ।। १

अन्त– अनुमानमाह–
प्रत्यक्षाल्लिगतो यत्र कालत्रितयवर्तिनः ।
लिंगिनो भवति ज्ञानमनुमानं तदुच्यते ।। ३८

व्याख्या–लिंगतोहेतोरतीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिनः सलक्षणस्य लिंगिनो ज्ञानं भवति तदनुमानम् ।। ३८ ।। इत्यादि ।

४२. ५६०३ श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि– अर्हं ।। ॐ ।। नमो वीतराग ।
हेरम्ब क्व किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चांद्रीकला
कृत्यं किं शरजन्मनोक्तमनया दन्तान्तरं स्यादिति ।
तातः कुप्यति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्यां कला-
माकाशं जयति प्रसारितकरस्तम्बेरमग्रामणीः ।।
यः साहित्यसुधेन्दुर्नरहरिरल्लालनन्दनः ।
कुरुते स श्रवणभूषणाख्यां विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ।।

अन्त- इति श्रीनरहरिभट्टविरचितायां श्रवणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः। मंगलं जैन्यधर्मो उदेवसंवेगमंगलं। मंगलं गच्छसंघेन लेखके मंगलं भव ।। श्रीश्रमणसंघाय ।। श्रीविदग्धमुखमण्डनवृत्ति ।।

१७-सुभाषितादि

२. ७२७२ एकषष्टियुतप्रश्नशत

अन्त- अचलावेदवार्द्धीन्दुवत्सरे श्रीरिणीपुरे।
विद्याविलासगणिना लेखीदं कृति हार्दकृत् ।।

३. ४३४७ कर्पूरप्रकर सावचूरि

आदि- कर्पूरप्रकरः शमामृतरसे वक्त्रेंदुचंद्रातपः
शुक्लध्यानतरुप्रसूननिचयः पुण्याब्धिफेनोदयः।
मुक्तिश्रीकरपीड़नेच्छसि च यो वाक्कामधेनोः पयो
व्याख्या लक्ष्यजिनेशपेशलरदज्योतिश्चयः पातु वः ।। १

अन्त- श्रीवज्रसेनस्य गुरोस्त्रिषष्टि-
सारप्रबंधस्फुटसद्गुणस्य।
शिष्येण चक्रे हरिणेयमिष्टा-
सूक्तावली नेमिचरित्रकर्त्रा ।। ७८

इति श्रीजिनवर्धनसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिपट्टालंकारभाग्यसौभाग्यसारश्रीजिनसागरसूरिवरेणकर्पूरप्रकराभिधसुभाषितकोशस्यावचूर्णिः समासतः कृता ।। १४००

१०. ४४५२ (३४) नीतिशतक

आदि- यां चिंतयामि० इति ।। १

अन्त- भर्तृहरिभूपतिना रचितमिदं नीतिरीतिविज्ञेन।
ज्ञाते यत्र न मुह्यति धीरोऽधीरः प्रमाणं स्यात् ।।
इति श्रीभर्तृहरिकृतं नीतिशतकं सम्पूर्णम् ।।

१४. ४४१५ प्रश्नोत्तरषष्टिशतक

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव फणामणिसप्तकदीप्तयः ।।
निखिलभीतितमःशमनाय किं
सपदि पार्श्वजिनं विनवीमितम् ।। १

अन्त- किमपि यदिहाश्लिष्टं क्लिष्टं तथा चिरसत्कवि-
प्रकटितपथानिष्टं शिष्टं मया मतिदोषतः ।।

रिणीपुर को तारानगर कहते हैं जो कि बीकानेर डिवीजन के चूरू जिले (राजस्थान) में है। (सं०)

तदमलधिया बोध्यं शोध्यं सुबुद्धिधनैर्मनः-
प्रणयविशदं कृत्वा धृत्वा प्रसादलवं मयि ।। ६१
इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरषष्टिशतककाव्यं समाप्तम् ।

१७. ४४८२ रत्नकोश

आदि- वैशंपायन उवाच-
रत्नकोशं प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।
पृथिव्यां यानि रत्नानि तेषामुद्धरणं प्रभो ।। १
कथयिष्ये महाराज शृणु त्वं पांडुनन्दन ।
सर्वशास्त्रमयं दिव्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् ।। २
अल्पग्रंथं सुबोधार्थी रत्नकोशं समभ्यसेत् ।। ३

अन्त- पंचविधा गतिः नरकगतिः । तिर्यक् । मनुष्य । देव । मोक्षगतिः ।
इति श्रीरत्नकोशरत्नाकरं सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्हीराम ।

२५. ६१२७ शतकत्रय

अन्त- पुष्पिका- इति श्रीबोधमते गोतमरिपीशिष्यअमरसिंहतच्छिष्यरूपचंदविरचिते मानुष्यबोधे त्यन्नबोधमतसम्पूर्णं । संमत १४३४ वर्षे आषाढ़शुक्ल १५ काशीनगरमध्ये लिषतं श्रीवाड़ीगुजरातीवंशे हरीशर्मभिट्टतत्पुत्रविष्णुभट्टशर्मा लिपीचक्रे लिषायतं महाराष्ट्रभट-रांमकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रंथ ५१७५ सर्वः ।

४१. ४४५६ सिंदूरप्रकरसटीक

आदि- श्रीमत्पार्श्वजिनं नत्वा स्वोवशीयसकारकम् ।
सद्यः संस्मृतिमात्रेण प्रत्यूहव्यूहकारकम् ।। १
श्रीचंद्रकीर्तिसूरीणां सद्गुरूणां प्रसादतः ।
सिंदूरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्षकीर्तिना ।। २

अन्त-सिंदूरप्रकरस्यव्याख्यायां हर्षकीर्तिभिः सूरिभिः विहितायांतु सामान्यप्रक्रमोऽजनि ।। १ तपागणे नागपुरीयपूर्वे । श्रीचंद्रकीर्त्याह्वयसूरिराजा । तेषां विनयहर्षकीर्तिसूरिश्वरो वृत्तिमिमामकार्षीत् ।। इति श्रीसिंदूरप्रकरस्यटीका समाप्ता ।

५७. ४३४८ सुभाषितसूक्तावली

आदि- दानं सुपात्रे विशुद्धं च शीलं ।
तपो विचित्रं शुभभावना च ।।
भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।
धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति ।।

५८. ५६८४ सुभाषितार्णव

आदि- चंद्रनाथं जिनं नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।
सुभाषितार्णवं वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ।। १

६१. ४४१४ सूक्तालो

आदि– वीरं विश्वगुरुं नत्वा कृत्वा यत्नेन संग्रहम् ।
सदोपकारसूक्तालो स्वान्यपाठाय लिख्यते ।। १

अन्त– आराधयेद्धर्ममनन्यकर्मा प्रायः प्रसादावधिरेव सर्वः ।
आराद्धुमेनं तत्कृतप्रसादं कस्यापि विस्फूर्ति निर्यात्ति चेतः । १८३४

लि.क. शुभसुन्दरगरिण । लिपिस्थान—वृद्धग्राम ।

५५. ४३४६ सुभाषितसंग्रह

पत्र २३वें में पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है—

इति श्रीमदाचार्यजी श्री ६ केशवजीकृतानि काव्यानि समाप्तानि । लिपिकृतं पूज्यऋषि-श्री ५ सामजी तच्छिष्य पू०ऋषि श्री ५ महिराजी तत्सिष्य पू० ऋषिश्री ५ टोडरजी-तत्सिष्य पू०पवित्रात्माश्री ५ भीमजी तच्छिष्येण मुनीदामाख्येणालेखि शुभं श्रेयः संवद्वसुगगन-समुद्रचंद्रवर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे लिपिकृता प्रतिरियं शुभं श्रेयः ।



१८–कथा-चरित्र-आख्यानादि

१. ४३३२ अंबड़चरित्र

आदि– ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
धर्मात्सम्पद्यते लक्ष्मीर्धर्माद्रूपमनिन्दितम् ।
धर्मात्सौभाग्यदीर्घायू धर्मात्सर्वसमीहितम् ।। १

अन्त– इत्थं गोरखयोगिनो वचनतः सिद्धोम्बड़ः क्षत्रियः
सप्तादेशवराः सकौतुकभरा भूता न चाभाविनः ।
द्वात्रिंशन्मितपुत्रिकादिचरितं यद्गद्यपद्येन त-
च्चक्रे श्रीमुनिरत्नसूरिविजयी तद्वाच्यमानं बुधैः ।।

इति श्रीमुनिरत्नसूरिविरचिते गोरखयोगिना दत्तसप्तादेशकरअंबड़कथानकं सम्पूर्णमिह ।
लिपिकर्ता—ज्ञानसुन्दर । स्थान—सवाला ।

७. ४३३५ उत्तराध्ययनकथा

आदि– प्रणम्य श्रीमहावीरं नम्राखण्डलमण्डलम् ।
आरभ्यंते कथाः कर्त्तुमुत्तराध्ययनस्थिताः ।।

अन्त– गङ्गामुत्तीर्य साधुसमीपे प्रव्रजितः अग्रगः सम्बन्धः सूत्र एव प्रोक्ताः । इति पंचविंशा-ध्ययनकथाः समाप्ताः ।

कथाः कृताःपण्डितपद्मसागरैः
स्वशिष्यवाक्यप्रणयेन संस्कृताः ॥
पिपाड़िपुर्यां जिनपार्श्वनायक-
प्रसादतः सत्कुशलाय सन्त्विमाः ॥

रचनाकाल—१६५७ । पीपाड़ग्राम ।

१६. ४३८७ चित्रसेनपद्मावतीकथा

आदि– कल्याणकमलागेहं निःसन्देहं सहोदयम् ।
कल्याणविलसद्देहं वंदेऽहं वृषभप्रभुम् ॥

अन्त– नभरसरसचंद्राब्दे श्रावणसितपंचमीतिथौ सोमे ।
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु बुद्धिविजयकृता ॥ ५६४
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णा ।

१६. ४३६८ चित्रसेनपद्मावतीचरित्र

आदि– नत्वा जिनं प्रतीमाद्यं पुण्डरीकं गणाधिपम् ।
शीलालंकारसंयुक्तां साश्चर्यां तत्कथां ब्रुवे ॥ १

अन्त– शिष्यस्तदीयो महिमानिधानः
चरित्रपात्रैः स्वगुणैः प्रधानम् ॥
पद्मावतीशीलगुणस्य कीर्तने
कथाऽकरोत् पाठकराजवल्लभः ॥ १२१४
श्रीनयोविजयशिष्यै भक्तिनास्ति बुकार्थ ए ।
चरित्रं चित्रसेनस्य पुण्यार्थे चाहं निर्मितम् ॥ १२१५

इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहासतीचरित्रं सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—रामविजयगणि । लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२२. ४४३५ देवकुमारकथा

आदि– ॐ नमः सिद्धम् ।
पुरा अभूत्कुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वरः ।
विरोधिध्वंसकरप्रसरसुन्दरः ॥ १

अन्त– चिरमंत्रिपदं भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
प्रपाल्य स्वर्ययौ मोक्षं गन्ता च कतिभिर्भवैः ॥ ३६२
पुत्रात्सुखं न भवति जनस्य जनकस्य च ।
राह्माश्चर्यमयी चोर्यव्रतपोषकरीकथा ॥ ३६३
इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।

लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोश्शिष्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।
देवकुमारकथानकमलिखच्च परोपकाराय ॥ १

२५. ४४३४ धर्मबुद्धिमंत्रिकथा

आदि– उद्वाहे प्रथमो वरः किल कलाश(शि)ल्पादिके यो गुरु-
भूपश्च प्रथमो यतिः प्रथमकस्तीर्थेश्वरश्चादिमः ।
दाताद्यःवरपात्रमाद्यमपरः सिद्धो पदं वादिमः
सच्चक्री प्रथमश्च यस्य तनयः सोऽस्त्वादिनाथः श्रिये ।। १
धर्मतः सकल मंगलावली धर्मतः सकलसौख्यसम्पदः ।।
धर्मतः स्फुरति निर्मलं यशो धर्म एव तदहो विधीयताम् ।। २

अन्त– आरोग्यं सौभाग्यं धनाढ्यता नायकत्वमानन्दः ।।
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जयो वांछितावाप्तिः ।। १
धनदो धनमिच्छूनां कामदः काममिच्छताम् ।
धर्म एवापवर्गस्य पारंपर्येण साधकः ।। २

इति पापबुद्धिनृपधर्मबुद्धिमंत्रिकथानकं सम्पूर्णम् ।

२७. ४३३३ युवराजऋषि-चरित

आदि– विशालास्तिपुरीजैनप्रासादैरतिसुन्दरा ।
जयन्ति(न्ती)स्वः पुरीमात्मधनधान्यसमृद्धिभिः ।। १

अन्त– एवं निशम्य युवराजऋषेश्चरित्रं ।
कर्पूरदीप्तिभिरचौरगुणैः पवित्रम् ।।
संसारवारिधितरीतुलिते प्रयत्नं ।
स्वाध्यायकर्मणि गुणिन् कुरु निःस्वपन्नम् ।। १३

इति श्रीजुवराजकथासमाप्तमिति । लि. स्था.—हर्षपुर ।

३९. ४४०२ रूपसेनकथा

आदि– देवाः स्युर्वशगा नवापि निधयश्चाष्टौ महासिद्धयः
गेहस्थाः सुरधेनुशाखिमणयो यस्य प्रभावान्नृणाम् ।
शष्टाभीष्टफलप्रदाननिपुणः श्रीवीतरागादितो
लोभव्याभवपारदप्रतिदिनं धर्मः समाराध्यताम् ।।

अन्त– यशो धर्म्मो गुणाः सौख्यं लक्ष्मीरायुः सुमंगलम् ।
सफलान्येतानि दत्ते च धर्मकल्पद्रुमोह्ययम् ।। १०१४

श्रीवीरदेशनायां धर्मकल्पद्रुमे शिखरोपमरूपसेननृपाख्यानवर्णनोनाम नवमः यत्नः समाप्तः ।। इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२. ४४५८ वरदत्तगुणमंजरीकथा

आदि– श्रीमत्पार्श्वजिनाधीशं फलवर्द्धिपुरसंस्थितम् ।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टार्थसाधकम् ।। १

अन्त– श्रीमत्तपगणगगनांगणदिनमणिविजयसेनसूरीणाम् ।
शिष्याणुना कथेयं विनिर्म्मिता कनककुशलेन ।। ५०
बुधपद्मविजयगणिभिःप्रवरैर्भीमादिविजयगणिभिश्च
संशोधिता कथेयं भूतेषुरसेंदुमिते वर्षे ।। ५१
गणिविजयसुन्दराणामभ्यर्थनया कृता कथा मयका ।
प्रथमादर्शे लिखिता तैरेव च मेड़तानगरे ।। ५३

इति कार्तिके सौभाग्यपंचमीमाहात्म्यविषये वरदत्तगुणमंजरीकथानकं सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४ शांतिनाथचरित्र

आदि– श्रेयो रत्नाकरोद्भूतामर्हल्लक्ष्मीमुपास्महे ।
स्पृहयंति न के यामेशेष श्रीविरताशयाः ।। १

अन्त– यस्योपसर्गाः स्मरणे प्रयांति
विश्वे यदीयाश्च गुणा न मांति ।।
यस्यांगलक्ष्मीः कनकस्य कांतिः
संघस्य शांतिं स करोतु शांतिः । ६२६

इत्याचार्यश्रीअजितप्रभसूरिविरचिते श्रीशांतिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठः प्रस्तावः । इति श्रीशांतिनाथचरित्रं सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१. ४३३६ शालिभद्रचरित्र

आदि– श्रीदानधर्मकल्पद्रुर्जीयात्सौभाग्यभाग्यभूः ।
पूर्वापश्चिमतीर्थेशलक्ष्मीभोगमहाफलः ।। १

अन्त– श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तमः प्रक्रमोऽभवत् ।। ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वार्थसिद्धिप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तमः प्रस्तावः समाप्तः ।
जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । ग्रन्थेन द्वादशशती चतुर्विंशतिसंयुता ।।



२०–राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७) अंकपाटी आदि गुटका

आरंभिक दो पत्रोंमें लघु चाणक्यनीतिके दूसरे अध्यायका अंतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित हैं। आगे १७ पत्रोंमें अंकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमें ऊपर अंक-संख्या और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं। उदाहरणार्थ—

'दानं दया दमोंद्रिणं दर्शनं देवपूजितं ।
दकारा पंचवर्तंते दूर्गतं नैव गछति ॥ १ (पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीष पीव, जो रषै अप्यांण ।
सर वैरीतर सायरां, अक्षर राज दुवांण ॥ १ (पत्र २)

अन्तके १६-१७वें पत्रमें—

दूहा ॥ काली तूं कोयल भली, जस मनषरो विवेक ।
अंब विहूणी अवरसुं, बोल न बोलै एक ॥ १ (पत्र १६वाँ)
गांम गोरमें होत है, जोय दूर मत जाय ।
वनी वणाइ पारसी, अरथ कह्यो इण मांय ॥ १ (पत्र १७वाँ)

॥ लीषतं । पींडत श्री ५ श्रीवालचंदजी लीषी छै । सं० १८३५ मीगसर सुद ५ वार मंगलवार अषसुरै जै सरूप गोठीरा छै ।

६ ६५२५ अंजनाचोपाई

आदि– ॥दं०॥ श्रीगणेशायनमः ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गौतम प्रमुष, एकादस अभिराम ।
मन वंछित सुष संपजै, नित समरंता नाम ॥ १
प्रथम उद्यम मै माडियो, मति दीसै अति मंद ।
तिण कारण पहिला नमुं, श्रीगणधर सुषकंद ॥ २
सेवकनें सानिध करै, देडचो अविरल वांणि ।
जिम वेगो सिद्धै चढै, कांइम राषिस कांणि ॥ ४

अन्त– तिणि गछ पींपल थापीयो, आठ साषा विस्तार ।
संवत रुद्रवाबीसमै, बीसमै हूई सुषकार ॥ १२
ते गछ दीसै दीपतो, साचौर नगर मझारि ।
वीर जिणेसर दीपतो, जिहां तीरथ प्रगट उदार ॥ १३
तास पाटै अनुक्रमै हूवा, श्रीलीषमीसागरसूरि ।
विनय करी कर्मसागर, वाचक देय सनूर ॥ १४
तास सीस पुण्यसागर, वाचक पभणै एम ।
अंजनासुंदरी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ॥ १५
संबत सोलसत्यासीइं, श्रावण मास रसाल ।
सुदि तिथि पंचमी निरमल, रिद्धि वृद्धि मंगल माल ॥ १६

सर्व गाथा ॥ इति श्रीअंजनासुंदरीचौपई संपूर्णः । संवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे तिथि १ भौमवासरे द्वीतीय प्रहरे लिषतं ऋषी नोलचंद पीही ग्रांमे उदावत राज्येः वाचनार्थं चीरं नद्यः श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥

३० ७७४३ अध्यात्मरामायण भाषा

आदि– श्री गुणेसाये नीम ।। सुरसती नीमो ।। श्री सीतारामजी सत छै जी ।। श्री रामाये नमा ।। कथेतं अधातम रामायने भाषा लीपतं रामह्रदय ।। राज श्रीराजैसंघजी सभापीत ।

चौपई– जवै भुव भार भयों दुष्टनतै । तब ही देव गये जाचन प्रभुनै ।।
चिदानंद सुंनी त्रदस वानी । परजापते असतुते ही ठानी ।। २
तीन सुप्त सन भेये भगवाना । चीदानंद यनकी सब जाना ।।
मेघ गिरा वानी जु वुचारी । सुनीक ब्रमा सते वीचारी ।। २

अन्त– दुहा ।। राम हीरदैको राजैदानीते प्रीते करतै वुचारै ।
सीय्याराम हीरदै बसैय्या समे नाहे बीचारै ।। ६५
राम हीरद भाषा अरथै कीनौ मते वुनमानै ।
सुनी कह रीजै न धारी है करीये मते अपमानै ।। ६६

ईती श्री अधातैम रामाणै रामै हीरदये भाषा अरथ सपुरन ।। कथेते म्हाराजे श्रीराजसीघजी ।। सुभ समुरथै ।

८५. ५२११ कछवाहोंकी वंशावली

आदि– ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ कुछावांकी वंशावली लिष्यते ।।
श्रीआदिनारायणतै कवलमै ब्रह्माजी ।।१।। मारीच ।।२।। कस्यप ।।३।। सूर्य ।।४।। ववस्वान ।।५।। मनु ।।६।। इष्वाक ।।७।। विकुषि ।।८।। पुरंजय ।।९।।

अन्त– महाराजाधिराज जन्म नांव मोहोनसिघ नरवलका राजाको वेटो सो राज पायो । जदि मानसिघजी नाव पड़चो । मीती पोस वदि ९ सं० १८७५ का । राज कीयो महीना ४ दिन ६।। माहाराजाधिराज श्रीसवाई जयसिघजी संवत १८७० कै साल श्रीजमत्रायजी पधारचा जाति देवा । सव माज्यां साथ पधारी मीती असाढ सुदि ८ संवत १८८४ कै साल ।

८७. ७७२० (२२) कपड़कुतूहल

आद्य अंश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारंभ इस प्रकार है—
......ढि पिलंग पर सुंदर ढोलियै वाय ।। १३
मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ ढोलिए बोलाय ।
माल मुंहुंगीधे लीजिये, सो माहरइ आवी दाय ।। १४
तन सपुकी साडी चणी, कंचु वण्यो सुचंग ।
रतन जडीत नीरषीः, सोनी सुंदर अंग ।। १५

अन्त– कचीयो पेम पछेवडो, कीधो सेज तीआर ।
तिण वेलां मंदिर गई, प्रीउ माणइ तिणि वार ।। ३१
प्रीआंग गंगदास सूत, नगर उदैपुर वास ।
कपडकुतूहल कीधा, वणी देहि दुवास ।। ३२
इति कपडकतुहल संपूर्णः ।।

९६. ४०२० कविकल्पलता

आदि– ।। र्द० ।। अथ श्रीसारकृत बावन्नी लिष्यतैं ।
ॐकार अपार पार तसू कोइ न लभ्यै ।
सबर कर सिरताज मंत्र धुरि कवियणभ्यै ।।
अरधचंद आकार उवरे मीडो जसु सोहै ।
जै ध्यावैं चित लाय तिकै तिहुयण मन मोहै ।।
साधक सिध जोगी जती जासु ध्यांन अहनिस करै ।
कवि सार कहै ॐकार जप कांइ सैण भुलो फिरै ।। १

अन्त– क्षिते मंडल क्षिति तिलक सहर पाली पुर सोहै ।
गढ मरु मंदिर महिल वाग वाडी सनमोहै ।।
राज करै जगनाथ सुर सामंत र सवायो ।
सोनगरे सुसमथ सुजस वसुधा वर तायो ।।
संमत सोलैनिव्यासियै आसु सुदी दसमी दिनै ।
श्रीसार कवित बावन कह्या सांभलिज्यौ साचै मनै ।। ५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृते संपुर्ण । सुभं भूयात् ।। श्री संवत १८७८ रा मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुरांजी श्रीवेनरामजी । लीषतां कु. इन्द्रभाण वाचनारथम् अणदपुरमध्ये ।

१०५. ४४१५ (१६) कागदरी नकल

इस गुटकेमें पत्र सं० ३९८से पत्र सं० ४०६ तक चार कागजों प्रेम(पत्रों)की नकलें दी हुई हैं, जो इस प्रकार हैं—

पहली नकल । आदि– कागदरी नकल ।

छंद नराच– मते हत सांभर नगरं सुधरं । प्यारी निज हाथ दियो पतरं ।
सूभ वांन कथानक सुंदरियं । छिव गात अनंत चित हरियं ।। १
सलिता सर निसर नीर वहै । नलनि सूंभ वास धरै र लहै ।
वहु वास निवास न कुप वनै । वनिता गनि तीर सूनीर थनै ।। २

अन्त– दिन जात वृथा तुम संग विना । कबहु सुष होत न आप बिना ।
कहता ज रजो समचार सवै । सु मिथ्या तन मांनहु भांम कवै ।। १७
न लिषे तुम पत्र सनेह घनौ । पय जावनकी तुम रीत गनौ ।
जुग रांम वसु ससि संवत यं । सुभ मास तथी सरस चरयं ।। १८ इति ।।

दूसरी नकल– [संवत् १८३४]

आदि– कागदरी नकल लीषते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुथाने सुकल सुभ ओपमा केलास वयारी, प्रेमरसप्यारी, चंदवदनी, मृगलोचनी, लगनरी लडी, जीवरी जडी, हीयारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी षीलार, चितरी ऊदार, हसतमुषी, सदा सुषी······ ।

अन्त– सव सरषी नारी नहीं, सव सरषी नहीं वांण ।
सव गुण एकणमें नहीं, दाषु ं चतुर सुजांण ॥ ६२
इती ओपमा लिषणरी, जथाजोग मत जांण ।
कहत दुलैमल चुप सु, रुप चुप परवांण ॥ ६३ ॥ संपुर्ण ।

तीसरी नकल–

आदि– सिध श्री प्यारी दिसे, जैपुर नगर जठेह ।
प्रीतम लिषत वणायकै, नित २ नवलै नेह ॥ १
चंदवदनि मृगलोचनी, चिता लंक सुचंग ।
गजगमणि रस जोग है, अतहि जांण सुचंग ॥ २
अन्त– बाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
हित कर लिषजो हेतसुं, दसकत अपणा पास ॥ २० संपुरण ॥

चौथी नकल–

आदि– सिध श्री सरवओपमा विराजमांन अनेक ओपमालायक गुणनिधांन बहोतर कलासुजांण, चवदै विध्यानिधांनं, सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चंद्रमा जेहा सितल, रूपा जेहा ऊजला······ ।

अन्त– मत किणहिसु लागजो, नैणाहंदो नेह ।
धुकै न धुवो नीसरै, जलै सुरंगी देह ॥ १८
सजन फलजो फूलजो, वड जुं विसतरजो ।
नालेरां जु लूंवजो, आंवां जु फलजो ॥ १९

इति श्रीपत्री संपुर्ण ।

२५७ ४६१४ (५४) जोगी रास

आदि– अथ जोगी रास लीषीते ॥ ॐ नमः सीध्येभचो नमः ॥
आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो ।
आदिजुगोत्तमो जोग पयसो, जय जय जय जगनाथो ॥ १
तास परंपर मुनिवर हुआ, दीगांवर सहिनाणी ।
कुदकुदाचरज[1] गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
अन्त– जोगीह रासो सीषहु श्रावक, दुष न कवहु लहिसो ।
जो जिणदासह त्रिविधि हि, सिधहु समरण कीजहू ॥ ४२

ईती जोगीरासो संपुरणमस्तु ।

२६१. ५४१८ (५४) टंडाणा गीत

आदि– टंडाणा टंडाणा वे, जियड़े टंडाणा टंडाणा ॥
इत संसारै दुश भंडारै, क्या गुण देषि लुभाणा छे ॥
जिन ठग ठगिया नादइ कालै, फिर तस जोग पत्याणा छे ॥

---

१. कुन्दकुन्दाचार्य ।

अन्त– करि उदिम आपन बल मंडी, भोगी अमर बिमाणा छे ।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा, निरमल धरम कराणा छे ॥
सुध सरीरु सहज लव लावहु, भावहु अंतर भा(णा) छे ।
जंपै बूचा तम सुष पावहु वंछै पद निरवाणा छे ॥

इति टंडाणा समाप्तम् ।

३३६. ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्ण)

आदि– ॥र्द०॥ श्रीसारदाय नमः ॥ अथ नागदमणि लिष्यते ॥

दूहा ॥ वलतो सारद विनवुं, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगां सरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया, देत वडाचा दंन ।
के पालणै पोढीया, के पय पान करंन ॥ २
कोइ न दीधो कांनवा, सुण्यो न लीला बंध ।
आप बंधावण उपला, बीजा छोडण बंध ॥ ३

अन्त– कलश ॥ सुणें गुणें सम वास, नंदनंदन अहिनारी ।
समुद्र पार संसार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनंतर आणंद सवे वषताप सुणावै ।
भगति मुगति भंडार, क्रशन मुगताह करावै ॥
रमीयो चरित राधारमणि·····॥

५३८. ४६०६ (२) राजसभारंजन

आदि– ॥र्द०॥ अथ राजसभारंजन लिष्यते ॥
गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारंजन कहों, मन हुलास रस लीन ॥ १
दंपतिरति नीरोग तन, विद्या सुधन सुगेह ।
जो दिन जाय आनंदमैं, जीतबको फल एह ॥ २

बीचसे कुछ उदाहरण—

साथ सहेट चल्यो चहै, मुग्धा तिय पिय छैल ।
पीसेमें कोडी न्हीं, चले बागकी सैल ॥ ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, कांम कलाकै साज ।
बाप न मारी मींडकी, बेटा तीरंदाज ॥ ७०

अन्त– छंद तीनसै साठ सब, व्यवहारै सुष देत ।
राज–सभा–रंजन सरस, कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
अंक बांन मुनि ससि (१७५९) समा, विक्रम सक नभ मास ।
उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रस-प्रकास ॥ ६८

सुषद भूमि संग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।
तहि कवि मन सुप्रसन्न अति, मति रतिसों अवगाह ।। ६९
जब लों सुष सज्जन कला, मेरु धराधर धांम ।
तब लों चिर जीवहु रसिक, पढत गुणत गुंन नाम ।। ७०
इति श्रीराजसभा-रंजन दोहा समाप्तं ।
संवत् १७९८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्रे लिपिकृतं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

५५०. ४८३४ राठोड नाहरषांनरो छंद

आदि– छंद राठोड नाहरषांनरौ गाडण माधौदासरौ कह्यौ ।।
आरज्या ।। उप्पन्ना पुरसांणी उडा । पांणी पंछा पापर होडा ।
ऐराकीग्रा रछ्छीस जोडा । नाहरषांन समप्पै घोडा ।। १
भाडंजी केवी मुगलांणी । षासा षेंग जिके पुरसाणी ।
वड पातां सुण अवरल वाणी । रेवंत रीझ दीयै राजाणी ।। २
अन्त– कलस ।। वहस तेज बहु सफल वहुत मोला वहु भोयण ।
धीरज तेज अनंत लोय दीप क्वहलोयण ।।
धड विसाल पैं करह गात उतंगह मैंगल ।
पवंग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ।।
वरहास वडा वड कवीयणां त्यागी द्यणं हरतै रवै ।
समपीया षांन राजांनकै कुंप करन्नह अभिनवै ।।
इति नाहरषांन घोडांरा दाताररौ छंदः संपूरणं ।।

६४१४ विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि– ।।र्द०।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।। प्रणम्य देवदेवं च वीतरागसुरर्चितं ।।
लोकानां हि विनोदाय करिष्येहं कथामिमां ।। १
नत्त्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूषिता ।
पद्मपत्रविसालाक्षी नित्यं पद्मासने स्थिता ।। २
अन्त– श्री विक्रमनें वेताल कथा कही चउवीस उदार ।
सोल छियालै भाद्रव मांस । हेमाणंद कहै उल्हास ।। ३९
इति श्रीवेतालपचीसी २४ कथा ।
दोहा– वलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिण ही डाल ।
मडग्रंधी कांधइ कीयो, तव बोलै भूपाल ।। १
विशेष– आगेका अंश अपूर्ण है ।

६०३ ६१११ विद्याविलास चोपाई

आदि– ।।र्द०।। श्री सरस्वत्यै नमः ।।
दूहा– सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणमेवि ।
जित तित थित थांनक अचल, सोभित दह दिसि देवि ।। १

कवियरण नरसां निधि करण, दूर हरण अगन्यांन ।
चरण सरण उपम धरण, उपावरण गुरण ग्यांन ॥ २

अन्त- वाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगरिण सुपसाया जी ।
इम जिनहरष पुण्य गुरण गाया, तीस ढाल सुष पाया जी ॥ १४
हिव राजानि सुणै गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचोपई संपूर्ण ॥ सं० १८२९ वर्षे मितिः आसाढ सुदि ७ दिने ।

६११. ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणेशाय न(मः) ॥
कवित्त- गढत लंक दईवत संक झंकत अहिराइण ।
धनत धीन अहि वेलत पांन पेधत षत्राइण ॥
अमरत आस माया तपास रस होइ महा जल ।
परमा वात सोवन धात चितत वेगागल ॥
अणराइ चाइ एकाणवै सालिहांतर दिठो सवे ।
त्रिहुं राइ तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त- कर परि जिण गिरवर धरचौ, मथुरा मारचौ कंस ।
रेषा रावस निरदले, जयकारी जदुवंस ॥ १०
श्रीठाकुरांरी साषी छै ॥ लिषतं मिश्र आनंदराम ॥ शुभमस्तु ॥

६१५. ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥श्रीरामजी॥ अथ वेदस्तुता भाषा लीष्यते ॥ राजश्री राजैसीघजी संभाषतं ॥
छंद- श्री भागौतं दसम सकंधं, बेद सतुत्स भाषा बंध ॥
अती आनंदं भव बंध छेदं, आवागमन मिटै भ्रम षेदं ॥
चोपई- श्रीसुषदेव ब्रह्म ततुवज्ञाता । वेदव्यासके पुत्र विष्याता ॥
तीनके पदबंदन मै करु । तीनको ध्यांन हीरदेमें धरु ॥

अन्त- नीतीप्रती पाठ जु जे करै, वुपजै ब्रम ज्ञान ।
तत पद नीहचै पाय है, राजै प्रम वीज्ञान ॥ ६०
ईति श्रीवेदसतुती भाषा अरथ सपुरण ॥ कथीतं म्हाराज श्रीराजैसीघजी ॥

६७५. ४०१० शुकबहोतरी

आदि- ॥र्द०॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वात सूवावहुत्तरी लिष्यते ।
दूहा- करि प्रणांम श्री सारदा, अपनी बुध परमांन ॥
सुक शप्त वार्ता उ करी, न्यायते देवी दांन ॥ १
विक्रम नगर सुहामणो, सुष संपतकी ठोर ।
हिंदू थांन ऽरु हिंदू धरम, अैसो सहर न और ॥ २

अन्त- ····हरदत्त सेठ होम करायौ तिहां सारिका पिण आई । ऊपरसुं दिव्यमाला पडी । उणरे दर्शन सेती सराप छूट शुकशारिका गंधर्व होय आपणै लोक गया ।

इति श्री बहुत्तर वार्त्ता सुध सूवाबहुत्तरी संपूर्णम् ॥ ७२ संवत् १८६६रा मिती श्रावण सुदी १ दिने लिषतं पं० विजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गे चतुर्मास्यां स्थिता ।

६७६. ४४१६ शुकबहोतरी । प्रथम पत्र अप्राप्त

आदि– ····दी कह्यो । पृथ्वीकै विषै बहुतरी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगें कहसी । सील रषावसी । तदि गंधमाद परवतकै विषै आविनै शुक सरीर छोडिकें मूलगौ शरीर पामी पांचसै मोहर ब्राहमणनै दांन देई । निपाप थाइस···।

अन्त– ···कवि देवदत कहै । शुकका वचन भेला करिकै आपकी बुद्धिकै अनुसारै बांधी छई ।

इति श्रीशुकबहोतरी कथा समाप्ता ॥ संवत् १७६० वर्षे आसोज वदि ६ षष्टी भोम वासरे पं० वनीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीसमाप्ता ॥

७२४. ४२८७ (१६) सवाई जैसिंहजीकी जोधपुर चढ़ाईका वर्णन

आदि– "संवत १७६७ का मीती सावण वदी ८ ने श्रीमाहराजा सवाइ जैसंघजी जोधपुर वुपर चढा । राजा अभैसंघरी हुकम पाँतसाह महमुदसाह का[सा]थे चढा । सो रोज पदरामै १५ जोधपुर जाइ लागा । त्ररफ मडोवरकी डेरा जाइ कीया । मुकाम १······

विशेष– आगे युद्धके खर्चे और जोधपुरकी तरफसे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो अपूर्ण है।

७७५. ४६०३ हमीररासो (हमीरायन)

आदि– श्री गनेंसाय नम । हमीराईन लीपतै ॥

कवीत– गवरीनंद आनंद चंद लीलाट वीराजैत ।
च्यार भुज कर फरस सरस भुपन अग राजत ॥
कर कमंडल जयमाल लाल वसत्र वोह सुहावै ।
मधुर स्वगंध स्वणमय रची ओर उदभाहन कीन ।
हो हय प्रसन सुधी वुधी धनी जी कथ कवीत प्रमा माण ॥ १

अन्त–कवीत: ॥ असी करीउ काहु करै नहीं, कोउ सो करी राजवी चक्र तल ।
वाईस वीक्रम राण वुयवीन षाईवयाभा: अजहु मध्यकी रोड रोले ।
दक्षीन भंडारा मदगल कहु हमेल करी ।
कदल रनथंभ गढ असी करै न कोई ॥

ईती श्रीहमरायन साको श्रीगार संपुरन समापती ।

छंद जाजाको: ॥ कुडलीयो माई मोहदे असीस काई जीवो वरस सो । याई मोह दे असीस छीत्री ई तोर जीवो । वारा ऊपर वीस भनैजा जन त्रीरम केह ।

लीपतं पांडे नाथुराम व्राह्मन गोड मी आसावी श्रम धर्ममुर्त्त गउ व्राह्मनका रक्षपाल राजा श्रीमलजीकूं: नाथुराम व्राह्मन गोङ सदारामको भतीजो टोडै रहै है पंकीजीको अप भीछुकको असीस वंचजोजी मीती पोस वदी ६ मंगलवार संवत् १७८७ जो पुस्तग वाचै जीकु राम राम वंचजोजी । जाद्रष्टं दस्वा ताद्रसं लीषते मा । जदी सुद्ध वीसुद्धं वा मम दोषे न दीयते ॥ शु० ॥

२१–हिन्दी

१२. ५३६८ **अध्यात्मरामायण**

आदि– ।। श्रीरामाय नम ।।

दोहा– जुधकांड पूरन भयौ, ब्रह्मज्ञानके भाइ।
उतरकांड कहत हौं, विधिसौं सबै बनाय ।। १

चौपई– जयति जयति रघुकुल उजिआरे। जयति राम कौसल्या प्यारे ।।
रावन दस सिर मारचौ यैंन। राम कमल दल निरमल नैंन ।। २

अन्त– संबत सत्रहसै इकताला। तीज जेठकी चंद उजाला ।।
पूरन भयौ मउ मैंदान। यहई जानौं थान मुकांम ।। ११०
ग्रंथ हीत भए बिघन सु भारे। हनुमान गनपवि सब टारे ।।
भगवान ग्रंथ यह पूरन गायौ। गुरकी कृपा सबै बनि आयौ ।। १११

छंद– भंग अक्षिर कटित, अर्थ बिपरजै होइ।
दुषनतैं भूषन करैं, कोविद कहिए सोई ।। ११२

इति श्रीब्रह्मांड पुराणे उतरषंडे अध्यातम रामायने उमा महेश्वर संवादे उतरकांडे नवमौ अध्याय ।। ९ ।। मूल ४४९३ ।। भाषा ५२६९ ।। इति श्री रामचरित्र भगवानदास निरंजनी कथिते संपूरण। सुभं मंगल। सुभ भवत। ग्रषे जेठ मासे बदि दसै रिबि वासुरे।। संवत १७८३ ।। जले रक्षत पेले रक्षित पेले रक्षे रक्षे सथ लाभ तवधानान मूरष हस्त न दातव्यं। रावे बधनात पुस्तकं ।। १ ।। मंगल लिषकानां पाठकांनाव मंगल मंगल सर्व्व देवानां भूमी भूपति मंगल ।। १ ।। सति निरंजन तुम सरना मंत्र सति राम ।। राम राम ।।

४०. ५३८२ कवित्त संग्रह

आदि– ।। श्री महागणपतये नम ।।

कवित्त– सील भरी सोंहैं, आन पतिकौं न जोंहैं,
कुल कांनि अरसोहैं तन जोति सरसाती हैं।
उदैनाथ भोंहैं कर तीन तीरछोहैं
रति भोंन लों चलों द्वार लों ना चलि जाती हैं ।।
बैंन कहिवेकों पति मोंनहीमें राषें प्रान,
ऐसी कुलवधू काहू कासों बतराती हैं।
रिस रचें मनमें तौ मनहीमें मेंटें,
जैसे जलकी लहरि जल मांझ ही बिलाती हैं ।। १

अन्त–

दोहा– सांवन सुदिकी तीजकों, करी पचीसी सार।
संवत अठ्ठारह सतहि त्रेपन थिर सनिवार ।। १०७८

इति छक पच्चीसी संपूर्णः ।। संवत १८६३ शाके १७२७ मिति फाल्गुण बुदि १२ गुरु-

वार । इंदं पुस्तकं समाप्तं । दसकत भट्ट शामसुदरका । रणजीत तत्सुत ब्रलदेव पठनार्थ ।। याहशं पुस्तकं दृष्ट्वा ताहशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।।रामः।।

३५५. ५३८६ रामायण, युद्धकांड

आदि– (प्रारंभिक पत्र अप्राप्त)
मनोहर कवि कलानिधि रच्यौ ।
तहां जुद्धकांडहिं नारदागम सर्ग बत्तीसौं सच्यौ ।। ३२

अन्त– व्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर गाजई ।
श्री रामचरन सरोज अलि परतापसिंघ विराजई ।।
तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिनैं रच्यौ ।
तहं जुद्धकांडहिं सतरू चौंतीस ग्रंथ फल वर्णन सच्यौ ।। १३४

लिख्यते लेषक रामसेवग लिखायतं ठाकुरजी श्रीमेदसिंहजी तस्य पुत्र पृथ्वीसिंह आत्म-पठनार्थ संवत १८३७ शाके १७०२ प्रवर्तमाने मासोतम मासे उत्यम मासे अश्वेन……।

३६५. ४९२३ (१) रूपमंजरी

आदि– श्रीगणेशाय नमः । अथ रूपमंजरी नंद कृत लिष्यते ।
दोहा– प्रथम हि प्रणाऊ प्रेममय, परम जोति जो आहि ।
रूप उपावन रूपनिधि, नित्य कहत कवि जाहि ।। १
अन्त–
दोहा– जदपि अगमते अगम अति, निगम कहति हैं जाहि ।
तदपि रंगीले पेमते, निपट निकट प्रभु आहि ।। ११७

इति श्री नंददास कृत रसमंजरी ग्रंथ संपूर्ण समाप्तं ।। श्रीरस्तु ।। शुभमस्तु । सम्वत् १७२९ चैत्र वदि तृतीया वुधवारे मोकाम रंगामाटी सबलसिंघ कुवरस्य पठनार्थं रसमंजरी ग्रथं मुरलीधर मिश्रेणमलेखि ।।

३७४. ६०१६ व्रतकथाकोश

आदि– ।। र्द० ॐ नमः ।। अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिष्यते ।
चौपई– आदिनाथ वंदू जिनरा [य] । कर्म कलंक रहित सुपदाय ।
धनुप पंच से जाको काय । वृषव लछ्य सोभै अधिकाय ।। १
अन्त–
छप्पै– श्री जिनंद गुण धाम जास वच सुणि चित धरिये ।
श्रावकको आचार पालि कर्मनिसौं लरिये ।।
दान सील तप भाव च्यारि वृष मुल विचारो ।
और सकल परिहारि चहू उत्तम उरि धारो
सुरगादि थान दाइक महा क्रमते सिवपदको कराहि ।
ताते पुस्याल अनिको अवै इनि विनि मनमें किम धरहि ।। २१

इति श्रीसूरिश्रुतसागर कृत व्रतकथकोशके अनुसारि भाषा श्रीपल्य विधानकी

समापिता ।। मिती मागसिर सुदि १३ पंचम्या तिथौ वार बृहस्पति वासरे संवत १९२३ का । श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।। श्री ।।

४६२. ४०२८ सभासार नाटक

आदि– प्रथम पत्र अप्राप्त
सैं पथरन भीजै पानी कब लौं विचारीयै ।।
जिहां बकवाद तिहां अंत न सवाद कछु,
आपै जो न सुधरै तो कौंनकौं सुधारिये ।
जोपै अति जोर तो बतांउं एक ठोर तोहि,
जानीये जगत जोपै एक मन हारीये ।। २६

दोहरा– सब लछन पहिलै सुनौ पुण्य सुसंगत पाय ।
मन चंचलतासूं बसै, नीच संग न सुहाय ।। २७

अन्त– सतगुरु सोही जो बतावै साचे मारगकुं,
साथी सतसंग जामै चलत ने हान है ।
कहत अरूप कोउ कोट काम केसै तेज–
पुंज धाम जाहि जैसी ही पहिचान है ।
ताहिमै मगन देहकों बिसर जान,
वेदको विचार यहै जान है सुजान है ।।
यहै पेम लछिना अनन्य भक्ति मुक्ति यह,
यत्र पदप्राप्ति विग्यान निरवान है ।। २७

दोहा– सब विध सब रस सोहियत, कहत यहै रघुराम ।
यह नाटिक सम सदा, भूषन भेद सुनाम ।। २८

छप्पै– यह नाटिक जो सुनै, ताहि हिय फाटिक पुलै ।
यह नाटिक जो सुनै, बुधबल कमल प्रफुलै ।।
यह नाटिक जो सुनै, ग्यान पूरन मन आवै ।
नाटिक सुनै सुजान, मरम मनुजको पावै ।।
विग्यान जान निरवानकै, जोग ध्यान धर धन लहै ।
पावत परमपुरुष गत, मति प्रमान कवि रघु कहै ।। ३२९

इति श्री कवि रघुराम विरचित सभासार नाटिक संपूर्णम् ।
संवत् गुणकृत वसु शशी, तपस्यपक्ष शिति जान ।
पक्षति छाया सुत दिवस, ग्रंथ चढचो परमान ।। १
ऋषि किसोर सोभत हुंते, रत्नचंद्रके मित्त ।
सभासारनाटिक लिख्यो, सकल रिझावन चित्त ।। २
निगम दिवसकी संख्यमै, सत्वरतें शषिरत्न ।
लिख्यो ग्रंथ वाचत सुनत, करीयो इनको यत्न ।। ३
।। श्रीरस्तु ।। सबनर ।। भद्रं भूयादिति ।। श्रीः ।।

४८४. ५८६५ **सिंहासन बत्तीसी**

आदि– ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ स्यंघासन बतीसी भोज प्रबंध हितौ उंपदेस कवि क्रस्नदाश क्रति लिषते ।

छैपा– प्रथम सुमरि गण इसनं गणनायक ।
विघ्नहरन मति राय काज सिधिकरण सहायक ।।
येक दंत मय मंन अंत नहि पाव पाव सुमति गति ।
फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ।।
कवि क्रस्नदास वंदत चरन, और सुमति दुस्तर तरन ।
रस सिंधु मीढ बिक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ।। १

अन्त– दीनो वरु बिक्रमकों सोय, सारिवाहन तन दाहन होय ।
तो लगि सो नृप आयो तहा, विक्रम वीर अंवि जहा ।। ४०
चंडी वाच तेरे हेत दहयो तन आय·········

विशेष– इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।



२२–जैनस्तोत्र

३. ४१४६ **अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव**

आदि– श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिष्यते ।

दूहा– सारदपाय प्रणमां करी, आपो अविरल वांणि ।
पुरसादाणी पास जिण, गास्युं गुण-मणि-पांणि ।। १
अद्‌भुत कौतुक कलियुगै दीसै एह अदंभ ।
धरतीथी अधर रहै, सदा अंतरीक थिर थंभ ।। २

अन्त– कीयो छंद आनंद वृंद मनमाहै आणी ।
सांभलतां सुषकंद चंद जिम सीतल वाणी ।।
श्रीविजयदेव गुरुराज आज तस गणधर राजै ।
श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ।।
गणधर दोय प्रणमी करि थुणियो पास असरण-सरण ।
भावविजय वाचक भणै जयो देव जय जय करण ।। ४६
इति श्री अंतरीक पार्श्वनाथ छंद संपूरण ।

४. ४३४६ **अजित शांतिस्तव (सबालावबोध) त्रिपाठ**

आदि– अजि अंजि असघ भयं संति च संत सब गय पावं ।
जय गुरु संति गुण करे दोवि जिणवरे पणिवयामि ।। १

अन्त– जइ इच्छह परम पयं अहवा कित्तिसवित्थडं भुवणे ।
ता तेलक्कुद्धरणे जिणवयणे फु आयरं कुणह ॥ ४०
इति श्रीअजितशांतिस्तवः ।

८. ४३६२ **एकादश गणधर स्तवन**

आदि– गोयम गणहर पढ़म संघयण ।
तित्थंकर वीर जिण पढ़मसीस सोन्नन समाणउ ॥ इत्यादि ॥ १

अन्त– इय समयज्जत्ति सव्यसत्ति चित्त भत्ति वन्निया ।
वैशाख सुदि इग्यारिसि दिनि वीर नाहइ थापिया ॥
ए सयलगणहर ए इग्यारसि जे आगहइ भाविया ।
एतवन भणसि भावै सुणसि ते लहइ सुख सपया ॥ ५
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री एकादशिदिनसम्बन्धि श्री एकादशगणधर स्तवनं सम्पूर्ण ॥

२०. ४०३० **कायस्थिति स्तोत्र**

आदि– श्री पन्नवणा भगवती माहि थकी उदार करी गीतार्थ पूर्वाचार्य कायस्थिति नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा—जहतु हदंसण रहिउ कायठिई भीसणे भवारन्ने ।
भमिउ भवभय भंजणा जिणिदत्तह विन्न विस्सामि ॥ १
जह कहतां जिम हे जिनेश्वर तुह दंसण रहिउ, ताहरइ···आदि ।

अन्त– बहु सो अनन्ती वार हिव घणइ पुण्य तणइ
उदय सांप्रत तुझ कुमइ दीवं उच्छइ ।
ता तस्मात्तिणि कारणि अकाय नहीं काया जिहां एहवा जे सिद्ध तेह तउ पद मुक्तिपद तेहती संपदा हे तीर्थंकर द मुनइ ॥ २४
इति श्रीकायस्थितिस्तवनबालावबोधः समाप्तः ।

२५. ४३६३ **गौतम दीपाली का स्तवन**

आदि– इन्द्र भूती गउतम भणइं तिसला कुखि निधान ।
ज्ञात पूतनूं पामीउ दइ मुझ सुगतिनो दान ॥ १

अन्त– देव गुरु भगत्यिमी सुगती वर अणुसरो ।
सकल कहि हीर गुरु गुण विचारो ॥ ७५
जिन वचन दीप दीपालिका राजती ।
इति श्री गउतम दिपालिकालि स्तवनम् ॥

२६. ४५६६ **चतुर्विंशति जिनस्तोत्र**

आदि– जाडयध्वंसकृते नत्वा नाभेयप्रमुखान् जिनान् ।
आत्मनः स्मृतये वक्ष्ये यमकस्तुतिवृत्तिकाम् ॥ १

अन्त– स्निग्धा अविरला चासौ विभा दीप्तिश्च अनच्छविभा अलकानां केशानां अन्ता यस्याः सा अनच्छविभालकांता ।।

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनसंक्षेपतो वृत्तिः समाप्ता ।

३७. ७४४४ (१) **चौबीसी**

इस गुटकेमें निम्न कृतियाँ हैं—१. आनंदघन चौवीसी. २ संग्रहणी सूत्र. ३ जीव-विचार प्रकरण. ४ नवतत्त्व. ५ दण्डक प्रकरण. ६ सप्तस्मरण. ७ प्रतिक्रमणसूत्र. ९ पांच तिथिरी थुई. १० स्तुतिस्तवन. ११ गोतम रासो. १२ स्नात्रपूजादि. १३ चौढालिया. १४ थूलभद्र नवरसो. १५ बार भावना. १६ आनंदघन बहोतरी. १७ पनरै तिथिरी थुई. १८ पंचसंधि (सारस्वत प्रक्रिया) १९ सिंदूरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५. ४२९८ **पंच-परमेष्ठि-नमस्कारार्थ**

आदि– श्री जिनाय नमः । नमो अरिहंताणं ।
माहरउ नमस्कार श्री अरिहंत भगवंत नइ हुउ । किसा छइ ते अरिहंत जीय अरिहंते राग द्वेष रूपिया अइरि वइरी जीता अनइ अठारे दोषे रहित । इत्यादि ।

अन्त– माहरउ नमस्कार पंचांग प्रणाम त्रिकाल वंदणा सदा हुइ ।

इति श्री पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थः सम्पूर्णः ।।

९१. ४०२५ **भक्तामर-स्तोत्र**

आदि– इनही पछइ आपणे घरे पाछा आवी राजानी सेवा करिवा लागा पूर्विली रीतइ आदि ।

अन्त– अन इन्वत्तिकरी मानतुंग सूरि इं रची, मई इस ताहरा स्तोत्र रूपिणी पुष्पमाला जे कठ कंदलि धरइ तेह नह लक्ष्मी स्वयंवर वरइ ।। ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवार्तिकवृत्ति समाप्तम् ।।

१००. ६२७७ **भक्तामर भाषा**

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।
जे नर पढ़े सुभाव सो, ते पावे सिव खेत ।।

इति श्री भक्तामर भाषा संपूर्ण ।

१०१. ७४५० **भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ**

इस गुटकेमें निम्न कृतियाँ हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १–१६. २ चौंसठ योगिनी नाम तथा घंटाकर्ण १७–२१. ३ कल्याणमंदिर भाषा २२–३२. ४ चैत्यवंदन २–४. ५ भक्तामर स्तोत्र ५–१७. ६ कल्याणमंदिर स्तोत्र सिद्धसेन कृत १७–२९. ७ लघु शांति २९–३३. ८ अजित शांति ३३–३६. ९ स्तोत्र संग्रह आदि १३ कृतियाँ ३६–८१. १० शक्ति मंत्र ८३–८४. ११ पदस्तवन ८४–८९. १२ वसुधारा ९०–११५. १३ सोलह पद ११५–१३०. १४ स्नात्र अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१–१९५. १५ वीस

विहरमान गीत १९६ वाँ। १६ अतीत अनागत वर्तमान चौबीसी १९७–२००। १७ बावन वीर नाम २००–२०२. १८ पदस्तवन (१२ कृतियाँ) २०२–२३२।

११४. ४६४४ वीतराग स्तोत्र

आदि– यः परात्मा परं ज्योतिः परमः परमेष्ठिनाम्।
आदित्यवर्णं तमसः परस्तादमनन्ति यम्॥ १

अन्त– तव प्रेष्योऽस्मि दासोस्मि सेवकोऽप्यस्मि किंकरः।
उमिति प्रतिपद्यस्व नाथ नाथ परं ब्रवैः॥ ८
श्रीहेमचंद्रप्रभावाद्वीतरागस्तवादितः।
कुमारपालभूपालः प्राप्नोतु फलमीप्सितम्॥ ९
इति वी० स्तोत्रे आशीस्तवो विंशः प्रकाशः॥ २०

१२३. ४१५९ श्रीदेवीछन्द, शनैश्चर स्तुति

आदि– सकल-सिद्धि-दातारं पार्श्वं नत्वा स्तविमहं।
वरदा सारदा देवी जगदानंददायिनी॥ १

अन्त– इच्छं बहु भक्ति भर अडल छंदन सधुं।
या देवी भगवई तुंम पसोइं होऊ सया संग कल्याणं॥ ४५
इति श्री देवीछंद संपूरण।

शनि स्तुति—आनंदन जग जयो रविसूत सांभलवान।
कोड कवित करो तुझ स्तव तुज गुण को हवें मान॥ १

अन्त– ए मंत्र धरी ऊंकार उक्षर सारह। ए मंत्र जपीय नर धारह॥
एणे मंत्रें उलट धरी विनतडी चीत आणिये॥
रिध वृध सहजें सदा, वली वली एम सनीसर वषाणीये॥ १६
इति शनीसर स्तुति॥ लिपिकर्ता—सुबुद्धिविजय गणी।

१२८. ४५११ शोभन-स्तुति

आदि– भव्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारि कर्म्मावली
रंभा सामजनाभिनन्दनमहा नष्टा पदा भासुरैः।
भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुषां संपादय प्रोज्झिता(स्थिता)
रंभा सामजनाभिनंदन महा नष्टापदा भासुरैः॥ १

अन्त– सरभसनातनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमांभोरुहे।
परमवसुतरागजारोवसंन्नाशितारातिभाराजिते भासिनी हारतारावलक्षा मदा।
क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकंठोद्धूटे संस्थिते।
संकटा भव्यलोकं त्वमंबांबिके परमंब सुतरां गजारोवसन्नासितारातिभा राजिते भासिनी हार तारावलक्षा मदा॥ ९६॥ २४॥ श्री शुभं भवतु॥

१३० ७२७८ शोभन स्तुति

आदि– आसी[द्]द्विजन्माखिलमध्यदेशप्रकाशसांकाश्यनिवेशजन्मा ।
अलब्धदेवर्षिरिति प्रसिद्धि यो दानवर्षित्वविभूषितोपि ॥ १
शास्त्रेष्वधीतो कुशलः कलासु बन्धे च बोधे च गिरा प्रकृष्टः ।
तस्यात्मजन्मा समभून्महात्मा देवः स्वयंभूरिव(वा) सुदेवः ॥ २
अब्जायतास्यश्लाघ्यस्तनूजो गुणलब्धपूजः ।
यः शोभनत्वंशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुषाप्यधत्त ॥ ३
कातन्त्रचंद्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धबौद्धार्हततर्कतत्त्वः ।
साहित्यविद्यार्णवपारदर्शी निदर्शनं काव्यकृतां बभूव ॥ ४
कौमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टां चिकीर्षन्निव रिष्टनेमेः ।
यः सर्वसावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५
एतां यथामति विमृश्य निजाम्बु (नु) जस्य
तस्योज्वलां कृतिमलंकृतवान् स्ववृत्या ।
अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणां
तेनैव सांप्रत कविर्धनपाल नामा ॥ ६

अन्त– इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थंकरस्तुतिवृत्तिः, कृतिरियं तस्यैव ।

१३२ ६८३९ स्तम्भ पार्श्वस्तुति आदि

इस गुटकेमें निम्न ५ कृतियाँ हैं—१ स्तंभ पार्श्वस्तुति, २ आत्मोपरि सज्झाय, ३ शांतिजिनस्तवन, दानशीलादि चौढ़ालियो, ५ जम्बूकुमार सज्झाय ।

१३४ ६१६० स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक
पूर्वं पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताडिता
पश्चान्मालवसिंधुटक्कविषये कांचीपुरे वैदुषे ॥
प्राप्तोहं कलहाटकं बहुभटैर्विद्योत्कटैः संकटं
वादार्थी विचराम्यहं नरपते सा(शा)दूर्लवत्क्रीड़ितम (क्रीडितुम्) ॥ १
काञ्च्यं नग्नाटकोऽहं मलमलिनतनुल्लाम्बुसे पाण्डुपिंडु ।
पुंड्रोड्रे शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट् ॥
वाराणस्यामभूवं शशिकरधवलः पांडुरांगस्तपस्वी ।
राजन् यस्यास्ति शक्तिः स वदतु पुरतो जैननिर्ग्रंथवादी ॥ २
इति समंतभद्रस्वामिविरचितं स्तुवनं ॥छ॥

१३६ ६८२५ स्तोत्रसंग्रह

इस गुटकेमें निम्न ५ स्तोत्र हैं—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र, ३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशांतिनाथ स्तोत्र, ५ संगीत बंध नमस्कार, ये पांच स्तोत्र हैं ।

२३–जैनागम

२७ ४३५८ आवश्यकसूत्र सबालावबोध

आदि– नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
नमो उवज्झायाणं नमो लोय सव्वसाहूणम् ॥ १

अन्त– समाईय पोसह, संठियस्म जीवस्स जाइजो कालो ।
सो सफलो बोधवो सेसो संसार फल हेउ ॥ १

इति श्री आउशक संपूर्णम्

४२ ४४१८ उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)

आदि– संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्य भिक्षुणो ।
विणयं पउ करिस्सामि आणुपुव्वं सुणोहमे ॥ १

अन्त– श्रीवर्द्धमानस्वामी परिनिवृतः निर्वाणं प्राप्तः किं० ।
उत्तराध्ययनभवसिद्धिका भव्यजीवाः तेषां समन्तात् ॥८२ छ॥
इति षट्त्रिंशत् श्रीउत्तराध्ययनबालावबोधः समाप्तः ॥

५० ४३५७ उत्तराध्ययनावचूरि

आदि– श्रीवर्द्धमानमानम्य बृहद्वृत्यनुसारतः ।
श्रीउत्तराध्यायनानामवचूरिं लिखाम्यहम् ॥ १

अन्त– योग उपधानादिरुचितव्यापारस्तदानतिक्रमेण यथायोगं गुरु० तच्चित्तप्रसन्नता
स्याद्धेतोरधीयेत न तु प्रमादं कुर्यादिति भावः ।

इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरिः ॥

८१ १०६ कल्पसूत्र (सस्तबक)

आदि– ॐ नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणमित्यादि ।

अन्त– श्रीमत्तपागणाधीशश्रीदेवविमलप्रभोः ।
श्रीसोमविमलार्हेन टबार्थो लिखितः स्फुटः ॥
टबार्थः कल्पसूत्रस्य मूर्खशिष्यस्य हेतवे ।
बृहद्वृत्यनुसारेण संशोध्यः सर्वधीधनैः ॥

१२१ ७४४५ प्रतिक्रमणसूत्र आदि

१. प्रतिक्रमणसूत्र। २. जयतिहूयणस्तोत्र। ३ श्रावककरणीस्वाध्याय-जिनहर्षकृत। ४. शत्रुञ्जयरास-समयसुन्दरकृत। ५. गोतमरास। ६. मुनिमालिका-वादिर्त्रसिंहकृत। ७. गोतमस्वामिस्तवनादि। ८. कालज्ञानभाषाचौपई—लक्ष्मीवल्लभगणिकृत।

१२२ ७४४६ प्रतिक्रमणसूत्र आदि

१. प्रतिक्रमणसूत्राणि। २. स्तुति-स्तवन। ३. शत्रुञ्जयरास। ४. गोतमरासो।

५. स्तवनादि ८। ६. जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित। ७. नवतत्वप्रकरण। ८. विचारषट्त्रिंशिका। ९ बावीस परिसह छंद। १०. बारहभावनास्वाध्याय।

१२७ ७३४५ प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका

अन्त– निर्वृत्तिककुलनभस्थलचन्द्रद्रोणाख्यसूरमुख्येन।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम्।

१५६ ७२२३ समवायाङ्गवृत्ति

वृत्तिरचनाकालः– एकादशशतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसभानाम्।
अणहिलपाटकनगणे(रे) रचिता समवायटीकेयम्॥

२४–जैनप्रकरण

७. ७०१६ आगमसारोद्धार भाषा

यह और संख्या ७३३१ वाली प्रति मिलती है, किन्तु इसमें निम्न दोहा अन्तमें विशेष है—

करची इहां सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त।
समभावन निज मित्त कौं, कीनौं ग्रन्थ पवित्र॥ १२

१६. ४३०२ ऋषभपंचाशिका

आदि– ॐ नमो वीतरागाय नमः॥
भत्तिभरनमिरसुरवरातिरीडं मणियंति कंतिकयसोहो।
उसभाइ जिणवरिंदाणं पायपंकेरुहे नमिमो॥ १
निज्जिय परीसहचमुं संभयुव सग्रवग्ररिउपसरम्।
संपत्तकेवलिसिरिं सिरिवीरजिणेसर वंदे॥ २

अन्त– इयभाणग्रपलीबियकम्मिधणं बालबुद्धिणा विमय।
भत्ती इषू उभयभयसमुद्दवो हिच्छवो हि फलम्॥ ५०
इति ऋषभपंचाशिका समाप्ता॥

१७. ४५६९ धर्मोपदेशश्लोकाः

आदि– दृष्ट्वा शत्रुञ्जयं तीर्थं नत्वा रैवतकाचलम्।
स्नात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते॥ १

अन्त– इति श्रीपुराणे कथिताः श्लोकाः।

८४. ७२०० **प्रबोधचिन्तामणि**

अन्त– यमरसभुवनमिताब्दे स्तम्भनकाधीशभूपिते नगरे ।
श्रीजयशेखरसूरिः प्रबोधचिन्तामणिमकार्षीत् ॥

८६. ७३४७ **प्रवचनसारोद्धार सटीक**

ग्रन्थान्ते– श्रीमानर्बुदपर्वतप्रभुरभूत् भूमान् सुरत्राणभूः,
सत्याव्हो भुवि राजसिंह इति यो रामावतारः परः ।
श्रीमानक्षयराजराजतिलकः प्रोद्यत्प्रतापानल-
स्तत्पुत्रोद्भूतभाग्यभूमिरधुना बालोऽपि पाति क्षितिम् ।
तस्य श्री·········सत्पुत्रद्वयीसंयुतो,
राज्यस्तम्भनिभः समस्तभुवनप्रख्यातकीर्तिव्रजः ॥ २
यात्रां श्रीविमलाचलस्य महता संघेन साडम्बरं,
द्वेधाभूततपागणस्य सुचिराद्द्रेरिवाश्चर्यकृत् ।
सन्धानं च मिथो विधाय भृतवान् यो बोधिलक्ष्म्याङ्गिनः,
स्वात्मानं सुकृतं श्रिया च यशसा द्यावापृथिव्यन्तरम् ॥ ३
तेन श्रीतपगच्छनायकगुरुश्रीहीरसूरीशितुः,
संघे श्रीमदुपासकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विक्रमतो रसावसुरसक्ष्मासम्मिते वत्सरे (१६८१)
चित्कोशे स्वकृते चिरं विजयतामेषा गृहीता प्रतिः ॥ ४

१११. ४०८५ **मङ्गलकलशचोपाई**

आदि– श्रीगुरुभ्यो नमः ।

दुहा– प्रह उठी नीत प्रणमीयइ, श्रीरिसहेसरदेव ।
नांम थकी नवनिध मीलइ, सिवपद आपइ सेव ॥ १
मंगलकलसइं दांनसुं, पामि परधल रिद्ध ।
राजलीला सुख भोगवी, देव तणी गति लीध ॥ ७

अन्त– तस सेवक नित्य हर्षगणि रे, सदा मन आणंद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहर्ष कहै रे, सवै नरनावृंद ॥ ५ ॥ दा०
सहैर काकंदीनयर भली रे, रह्या तिहां चोमास ।
श्रावक सदा सुखिया बसै रे, पुन्यै करी जस वास ॥ ६ ॥ दा०
सांभलवो करवो भावसू रे मनमें आंणी विनोद ।
धरम करै ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ॥ ६ ॥ दा०
इति श्रीमंगलकलशचउपी संपूर्ण ॥

१२१ ४२६६ **विंशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह**

ग्रन्थान्ते– विंशतिस्थानकाचारविचारामृतसागरः ।
गच्छेशश्रीजयचन्द्रसूरिशिष्येण निर्मितः ॥ २२

वीरग्रामाख्यपुरे युग्मव्योमेन्दुपञ्चभिः ।
प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३
ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभिः ।
लभन्ते प्राणिनः प्रौढ़ां श्रीजिनेश्वरसम्पदम् ॥ २४
ग्रन्थोऽष्टाविंशतिशतानुमितः सर्वसंख्यया ।
जीवेदयं बुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५
इति श्रीविंशतिस्थानकविचारामृतःसंग्रहः सम्पूर्णः ॥

१२२ ७४७७ **विचारामृतसंग्रह**

अन्त– सूरिः श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीआगमाम्भोनिधि
श्चक्रे चारुविचारसङ्ग्रहमिमं रामाब्धिशक्राब्दके (१४४३) ॥

१२७ ४०२६ **शीलोपदेशमालाबालावबोध**

अन्त– इति श्रीशीलोपदेशमालाबालावबोध श्रीखरतरगच्छमेरुसुन्दरोपाध्यायविरचित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रंथकार ग्रन्थनी समाप्ती भणी आपणउं नामगर्भित मंगलगाथा कहइं
ईय जईसिंहमुणीसरविनेयजयकित्तिणा कयं
एयं सीलोवएसमालं आराहिय लहइ बाहि सुहां ॥ ११५

व्याख्या—इणइं पूर्वोक्त प्रकारि करी जयसिंह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य शिष्य जयकीर्तिमुनि तीणइं ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलसूत्र कीधऊं······। इति श्रीशीलोपदेशबालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्थाग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागाब्धिचन्द्रो, वृद्धमासं त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो अरुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२. ४३५६ **संग्रहणीबालावबोध**

आदि– श्रीपार्श्वनाथं फलवर्द्धिकाख्यं गुरूंश्च श्रीमज्जिनदत्तसूरीन् ।
गीर्देवतां भाष्यसुधासमुद्रं क्षमाश्रयं श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

अन्त– इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिधानगणिविरचिते संग्रहणीबालावबोधे सामान्याधिकारः समाप्तः । इति श्रीलघुसंग्रहणी बालावबोधः समाप्तः ॥

१४५. ४००४ **संग्रहणीसूत्र (संघेणनो रासछंद)**

आदि– दशमइं ग्रहूं सातमीइं चौदश तर आटमइं । अधिके एकेकं तिहां थी तिमइं । २३॥

अन्त– (ढाल एह) अर्थ– निरुपम अमृत उपम सुण्यो श्रवणे सुख करी,
विचार करंता चित्त धरंता कर्मकोडिना दुःख हरें ।
तां रहु रास प्रकास उत्तम मेरू हूं शशि दिणयरू,
शासना देवी पसाउलि श्रीसंघ चतुर्विध जय करूं ॥ ५५०

इति श्रीसंग्रहणीसूत्रे परिपर्णता नाम सप्तमोल्लासः ॥ श्लोक संख्या ग्रन्थाग्रं ॥ ६४१

१४६. ४०३१ **संग्रहणीसूत्र सस्तबक**

अन्त– मलिहारि हेमसूरीणं सीस लेसेण सूरिणा रइयं।
संघयणिरयणमेयं नंदउ वीरजिणतिच्छं ।। ३०

इति श्री संग्रहणीसूत्रं संपूर्णमिति ।

१६० ६२०३ **सम्मेदशिखरमाहात्म्य**

ग्रन्थान्ते पुष्पिका– इति श्रीभगवँल्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूषणोपदेशाच्छ्रीमद्दीछितदेवदत्तक्र(कृ)ते श्रीसंमेदसिखरिमाहात्म्ये समाप्तिसूचको नाम एकविंसतिमोऽध्यायः ।। २१

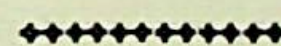
१६२. ७२१७ **समाधिशतकटीका**

अन्त– तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसंयुते (१७२७) सुवत्सरे,
तपस्यशुक्लपञ्चमीदिने च तक्षके पुरे।
समुद्धृतं सुपुस्तकं समाधिसाधिताशयम्,
सुवादिराजधीधनेन धारितं स्वधीगृहे ।।

१७१. ५९११ **हरिवंशपुराण**

अन्त– इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपादकमलवर्णनो नाम षट्षष्टितमः सर्गः ।

विशेष– श्रीवर्द्धमानपुरे श्रीपार्श्वालय नत्रराजवसतौ निर्मितम् ।



* श्री *

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

प

य

र

श

क्ष

त्र

ज्ञ



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१९६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह

राजस्थान सरकार के आदेश सं० २६१, दिनांक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढ़स्थित पोथीखाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थों की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य सरकार से उक्त संग्रह को इस संस्थान के संरक्षण में प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र सं० एफ. ६ (६२) एज्यू. बी. ५६, दिनांक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ़ से उस संग्रह को इस विभाग में प्राप्त कर लिया गया।

ठिकाना इन्द्रगढ़ (कोटा) का पोथीखाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री शिवसिंहजी के समय में 'सरस्वती भंडार' के नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा शिवसिंह स्वयं अच्छे विद्वान्, सुकवि एवं विद्याप्रेमी थे। इनके द्वारा निर्मित कितने ही ग्रंथ उपलब्ध होते हैं जिनमें से कुछ इस संग्रह में भी प्राप्त हुए हैं। शिवसिंहजी के सुपुत्र महाराजा हाड़ा संग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये बड़े ही विद्यारसिक एवं सुकवि थे। अच्छे-अच्छे पंडितों को पुरस्कृत करना एवं ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। इनके द्वारा निर्मित सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमें से भी अधिकांश इन्होंने अपने ठिकाने में शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्रायः अप्राप्त हैं। उक्त हाड़ा संग्रामसिंहजी के समय में इस संग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वतः अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरसिंहजी के निःसंतान अवस्था में अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर इस संग्रह की दुर्दशा होने लगी और ग्रन्थ भी इतस्ततः नष्टभ्रष्ट एवं जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस संग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप में रखा हुआ था। बहुत से ग्रन्थ गढ़ में धूल में दबे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट-विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था में पड़े थे जिन्हें प्राप्त करके इस विभाग के संग्रहालय में व्यवस्थित-रूप में संशोधकों के उपयोगार्थ रखा गया है। संप्रति इस संग्रह में २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमें बहुत से ग्रन्थ हाड़ा संग्रामसिंह एवं उनके पिता महाराजा शिवसिंहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।

राजवंशीय साहित्यकार हाड़ा संग्रामसिंह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानों का ध्यान नहीं गया है। उक्त संग्रह की पुस्तकों की प्रस्तुत सूची विद्वानों एवं सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कराई जा रही है।

—मुनि जिनविजय

परिशिष्ट ३

इन्द्रगढ़ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१	अलंकारमञ्जरी	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३२	१९११	त्रिमल्लभट्टकृत अलंकार-मञ्जरी का भावानुवाद
२	शालिहोत्र		राजस्थानी	आयुर्वेद	१३२	१८९५	लि. क. गुमानीसाह लि. स्था. इन्द्रगढ़
३	हनुमन्नाटक, सटीक (रत्नमञ्जूषा टीका)	मू. हनुमत्कवि, टी. मोहन-दास माथुर चतुर्वेद	संस्कृत	काव्य	१३०	१८वीं श.	
४	मधुमालती चौपई	चतुर्भुजदास	हिन्दी	,,	२२२	१९वीं श.	कामदारी लिपि, आरम्भ में 'स्वप्नावलि के ५ पत्र हैं। पद्य संख्या १४५४
५	छन्दःकौस्तुभ	संग्रामसिंह	,,	छन्दःशास्त्र	४३	१९३४	लि. क. वंशीधर गुजराती
६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	,,	रसालंकार	७६	१९२३	
७	पृथ्वीराजरासो (पद्मावती समय)	चन्दवरदायी	,,	काव्य	७४	१८२९	लि. क. चैनराम ब्राह्मण लि स्था. किला रण-स्तम्भवर
८	हिकमतग्रन्थ		फारसी, हिन्दी	आयुर्वेद	९४	२०वीं श.	हिकमत के फारसी भाषा के नुस्खे नागरी लिपि में लिखे हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
९	रूपकप्रभाकर	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	२८	१९वीं श.	
१०	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	,,	८५	१९२(?)	
११	पुरुषपरीक्षा	विद्यापति	संस्कृत	कथा	८७	१९१२	शिवसिंहनृपतिकारिता
१२	नाममञ्जरी	नन्ददास	हिन्दी	कोष	५८	१९१४	आदि में कुछ स्फुट कवित्त लिखे हैं।
१३	(क) हरिरस	ईसरदास	राजस्थानी	काव्य			चारों कृतियों के कुल ५८ पत्र हैं।
	(ख) नीसाणी विवेकवार्ता		,,	,,			
	(ग) नीसाणी ईसरदास		,,	,,			
	(घ) सूरदासके पद		हिन्दी	,,			
१४	सिखनख शृंगार सटिप्पण	बलभद्र	,,	,,	१५	१९२३	
१५	रसतरंगिणी	शम्भुनाथ मिश्र	,,	रसालंकार	४१	१९२४	अन्तिम प्रशस्ति में गुलाब कवि (अलवरवासी) ने स्वयम् को ग्रन्थकर्त्ता बताया है।
१६	रूप(क)रत्नावलि	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१२	२०वीं श.	
१७	रसार्णव	सुखदेव (?)	हिन्दी	कार	५७	,,	अपूर्ण, लि. क. धाभाई लक्ष्मण, शिवसिंहराज्ये
१८	केसोदासकी बाणी	केसोदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	३–२५४	१८८८	लि. क. भवानीराम शिवसिंहराज्ये
१९	काव्यरसायन	देवदत्त कवि	हिन्दी	रसालंकार	७८	१९३१	लि. क. रामवल्लभ गुजराती
२०	(क) जनकजुहार		राजस्थानी	काव्य	१–४	१९२९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) सुखमलरासो		राजस्थानी	काव्य	४–७	१६२६	
	(ग) कृष्णबालचरित्र		,,	,,	८–११	,,	
	(घ) तारातम्बोलको विस्तार		,,	इतिहास	१२वां	,,	
	(च) कोटाके महाराजाओं की सूची		,,	,,	१३वाँ	,,	
२१	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिकासटीक (रसाल-बोधिनी)	मू. स्वरूपदास, टी. रसाल	हिन्दी	काव्य	१४२	१६१७	लि. क. बगसीराम
२२	(क) विज्ञानसागर		राजस्थानी	वेदान्त	१–११	१६११	
	(ख) गङ्गास्तुति		,,	स्तोत्र	११–१३	,,	
	(ग) आश्चर्यनिधान		,,	वेदान्त	१–६	,,	
	(घ) भगतिचिन्तामणि		,,	,,	६–३२	,,	
	(च) चौदहरतन खेल		,,	,,	३२–५०	,,	
२३	पृथ्वीराजरासो	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	३१६	१६वीं श.	सुलिखित प्रति
२४	(क) कबीर की साखी		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१–४	१८३६	लि. क. खुशालपाण्डे
	(ख) हरिवंशपुराणभाषा		,,	काव्य	१–५७	,,	
२५	(क) रामचरित	तुलछीदासदादूपन्थी	,,	,,	१–१५४	१६वीं श.	
	(ख) सुदामाजी की बारहखड़ी		,,	,,	१५४–१६२	,,	
२६	(क) कविकुलकल्पतरु	चिन्तामणि	हिन्दी	रसालंकार	१२–१८	२०वीं श.	आद्य ११ पत्र अप्राप्त, अपूर्ण
	(ख) सूरजमलपं(पिं)गल	सूरजमल(?)	,,	छंदशास्त्र	१८–२२	,,	अपूर्ण
	(ग) सभाप्रकाश (दशमोल्लासान्त)	हरिचरणदास	,,	रसालंकार	१–२४	१६२६	लि. क. दीक्षित वृद्धिचन्द लि. स्था. इन्द्रगढ़, अपूर्ण
	(घ) रघुनाथरूपक मरुधरदेशभाषा	कविमंछ	राजस्थानी	काव्य	१–५	२०वीं श.	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
	(च) पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका तृतीय-मयूखान्त		हिन्दी	रसालंकार	१–१२	२०वीं श.	
	(छ) कविप्रिया	केशवदास	,,	,,	१२–३६	,,	अपूर्ण
	(ज) साहित्यानन्द, षोड़शस्कन्धान्त	ग्वालकवि	,,	,,	३७–२५३	,,	
२७	(क) इश्कचमन		,,	काव्य	१–१४	,,	अपूर्ण
	(ख) राजनीति कवित्त	देवीदास	,,	नीति	१–३५	,,	
	(ग) स्फुटकवित्तसंग्रह		,,	काव्य	१–७	,,	
२८	रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड	गो. तुलसीदास	,,	,,	१३३	१८६८	लि. क. लाला खुमानसिंह
२९	(क) गुरुपरिचय		,,	सन्तसाहित्य	१–७५	२०वीं श.	'श्रीगुरु बलदेवजी शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' आदि विभिन्न भाग हैं।
	(ख) ग्रन्थपरिचयअष्टांग		,,	,,	१–६६	,,	
३०	फुटकर गजल		,,	काव्य	८	,,	
३१	(क) धनञ्जयकोष (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त	धनञ्जय	संस्कृत	कोष	४–१५	१७५१	लि. क. पं. दयाराम, गुटके के आदि व अन्तमें स्फुट कवित्तादि हैं तथा दोनों कृतियों के मध्य छत्रबन्ध कवित्त आदि हैं।
	(ख) पृथ्वीराजरासो (नाहरराय समय	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	१–१३	१७६०	लि. क. चारण विहारीदास
३२	विहारीसतसई लालचन्द्रिका टीका	कवि लाल	,,	,,	५४	१९वीं श.	अन्तमें नृपस्तुति आदि हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
३३	गीतावली (कवितावली)	मोहनराय	हिन्दी	काव्य	३०६	१८८०	शिवसिंहजी द्वारा लिखाये गये गीत, लि. क. गुजराती 'मांधाता' लि. स्था. इन्द्रगढ़
३४	रसमहार्णव	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१०६	१९२६	लि. क. गुजराती वंशीधर
३५	चन्द्रालोकटीका (रसमयूख)		राजस्थानी	,,	३८	१९वीं श.	अपूर्ण
३६	भक्तिभूषण	संग्रामसिंह	,,	योग(भक्ति)	४०	१९२७	लि. क. गुजराती वंशीधर
३७	(क) रागचमनचौतीस्यो	,,	राजस्थानी	काव्य	१–१२	२०वीं श.	
	(ख) श्रृंगारतिलक	,,	हिन्दी	रसालंकार	१–५	,,	
	(ग) हठप्रदीपिका	,,	,,	काव्य	१–६	,,	
	(घ) स्फुट कवित्त	ग्वालकवि	,,	,,	१–७	,,	
	(च) राधाष्टक	,,	,,	,,	८–११	,,	
	(छ) सितारसिद्धान्त	संग्रामसिंह	,,	संगीत	१२–८१	,,	
३८	रामचन्द्रिका	केशवदास	,,	काव्य	१५५	,,	अपूर्ण
३९	(क) चेतनसिद्धान्त		,,	सन्तसाहित्य	२	,,	,,
	(ख) कविप्रिया (चित्रालंकारप्रकरण)	,,	,,	रसालंकार	१–१२	१९०६	
	(ग) वृत्तरत्नाकर(द्वितियाध्यायान्त)	केदारभट्ट	संस्कृत	छन्दःशास्त्र	१३–२५	२०वीं श.	
	(घ) सत्यनामप्रकाश	कबीरदास	हिन्दी	सन्तसाहित्य	८८	,,	
४०	वृन्दावनमाधवकथा (चारों मिलन)		,,	कथा	१–२४	१८११	लि. क. लाला छंदीराम
४१	स्वरोदय सटीक		संस्कृत,हिन्दी	ज्यौतिष	१–१८	२०वीं श.	अपूर्ण
४२	(क) निशानी (विवेकविचार)	केशवदास गाडण	हिन्दी	काव्य	१–२०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि समय	विशेष
	(ख) स्फुट साखियां (कवित्त आदि)		हिन्दी	काव्य	२०–२५	२०वीं श.	
	(ग) गुणनन्द्यास्तुति	ईश्वरदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	२५–४८	,,	अन्त में गीत व भौंरगीता हैं
	(घ) ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	हिन्दी	,,	४१–८१	,,	
	(च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह		,,	काव्य	८१–९४	,,	
	(छ) गुरुस्तुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ	गोरखनाथ	,,	सन्तसाहित्य	९४–९६	,,	अन्त के २२ पत्रोंमें कबीर, नामदेव, मीरां, सूर आदि की साखियां व दोहे हैं
	(ज) निसानी, केशवदास गाडण चारण की		राजस्थानी	काव्य	११८–११९		
	(झ) प्राणशांकली		,,	,,	१२०–१२१		
	(ट) शंकावलि		,,	,,	१२१–१२२	,,	
	(ठ) डूंगरसी बागड़ी को गीत		,,	,,	१२३–१२४	,,	
	(ड) वज्रशूच्युपनिषद्	शंकराचार्य	संस्कृत	वेदान्त	१२५–१३०	१८८२	आगे पत्र १५४ तक विभिन्न पद आदि हैं तथा कुछ औषधियों के योग हैं, लि. क. 'निहाल'
४३	विहारीसतसई टीकात्रय					१९२४	
	(क) कृष्णचन्द्रिका	कृष्णकवि	हिन्दी	काव्य	१२३–२७६	,,	र. का. १७८२
	(ख) हरिप्रकाश	हरिकवि	,,	,,	,,	,,	र. का. १८३४

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) अमरचन्द्रिका	बलदेव	हिन्दी	काव्य	१२३–२७६	१६२४	र. का. १८७३
४४	(क) सदैवत्ससावलिंगरी बात		राजस्थानी	वार्ता	१–७२	२०वीं श.	
	(ख) पन्ना वीरमदेकी बात		,,	,,	१–६२	१६१४	लि. क. चि. नूरीलाल
४५	डिंगल ग्रन्थ	संग्रामसिंह	,,	काव्य	२७	१६३०	
४६	कुलप्रकाश (हाड़ावंश के खरड़े)		,,	इतिहास	६४	२०वीं श.	
४७	शृंगारगुडो	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	७	१६३३	
४८	(क) भाषाभूषणटीका	मू. जसवन्तसिंह टी. हरिचरणदास	हिन्दी	,,	४१	१६३०	लि. क. वंशीधरगुजराती
	(ख) कविप्रियाव्याख्या (कविप्रिया-भरण,	मू. केशवदास टी. हरिचरणदास	,,	,,	२४२	१६२६	,, ,, लि. स्था. इन्द्रगढ़
	(ग) पिंगलकाव्यविभूषण	बक्शी सुमनेश	,,	छन्दःशास्त्र	१०२	१६१२	
	(घ) ध्रुवाष्टक नीति	विश्वनाथसिंहदेव	,,	काव्य	१०३वाँ	२०वीं श.	
	(च) पद्यामृततरंगिणी	भास्कर अग्निहोत्री	संस्कृत	,,	१–२७	१६३०	लि. क. वंशीधर गुजराती ब्राह्मण, लि. स्था. ग्राम सुनमानपुरा
	(छ) काव्यरसायन	देवदत्त	हिन्दी	रसालंकार	१–४	२०वीं श.	प्रति कीटविद्ध जीर्णशीर्ण
४६	हरिरस	बारहठ ईसरदास	,,	काव्य	१–१२	,,	
५०	बिहारीसतसई	बिहारीलाल	,,	,,	६८	१७८६	आगे पत्र ८५वें तक आयुर्वेद संबंधी कुछ स्फुट योग हैं। लि. स्था. इन्द्रगढ़

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
५१	शकुनावली		हिन्दी	ज्योतिष	६	२०वीं श.	अन्तमें १८ पत्रोंमें कुछ दोहे हैं
५२	(क) गीतगोविन्द	जयदेव	संस्कृत	काव्य	१–३८	,,	
	(ख) भजन-संग्रह	चन्द्रसखी मीरां आदि	हिन्दी	,,	१–५०	,,	
	(ग) फुटकर कवित्त		,,	,,	१–३४	,,	
५३	रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लंका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र)	गो. तुलसीदास	,,	,,	१२४	१८८४	अपूर्ण, बा.का. के केवल २ पत्र (३१वां व ३२वां है) इसी प्रकार अन्य काण्ड भी अपूर्ण हैं। बीच बीचमें पत्र नहीं हैं
५४	पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिकाटीका (बोधिनी)	रसाल	,,	,,	१६३	१९१७	लि. क. ब्राह्मण रामनाथ
५५	पृथ्वीराजरासो (एकादशखण्डान्त)	चन्दवरदायी	,,	,,	१३०	१८७१	लि. क. लच्छीराम भगत
५६	भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	,,	रसालंकार	२३	१९०२	
५७	हितहमेल (४२वां ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१००	१९२९	लि. क. रामनाथब्राह्मण, कांटो
५८	(क) रसराज सटीक	मू. मतिराम, टी. शिवदत्त	हिन्दी	रसालंकार	९३	२०वीं श.	
	(ख) शालिहोत्र	नकुल	,,	आयुर्वेद	७७	,,	
५९	(क) अजामिलचरित्र		,,	काव्य	१–१०	१८९८	अन्तमें ८ पत्रोंमें 'नाम महिमा' व 'दासजीकी नाममहिमा' है
	(ख) कबीरजीकी वाणी	कबीर	,,	सन्तसाहित्य	१–१२१	,,	
	(ग) नामदेवजीकी वाणी	नामदेव	,,	,,	१२१–१७५	,,	
	(घ) ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	,,	काव्य	१७५–१९६	,,	लि. क. ब्राह्मण भुवाना

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	हिन्दी	काव्य	१९६–२१४	१८९८	अन्तमें ८ पत्रोंमें नाम महिमा व दासजीकी नाम महिमा है। लि.क. ब्राह्मण भुवाना।
	(छ) भरतचरित्र	,,	,,	,,	२१४–२२१	,,	,,
	(ज) राजा मोहमदकी कथा		,,	,,	२२१–२२९	,,	,,
	(झ) सुन्दरदासजीके सवैया	सुन्दरदास	,,	,,	२२९-३१७	,,	,,
६०	(क) फुटकर कवित्त		,,	,,	१–३५	२०वीं श.	
	(ख) हाथीके लक्षण		,,	ज्यौतिष	३६–४७	,,	
	(ग) रागमाला		,,	संगीत	१–१९	,,	
६१	नखशिखवर्णन व कोकसार	आनन्दकवि	,,	कामशास्त्र	२९	१९०७	लि. क. रघुनाथसिंह
६२	(क) सुखसंवाद		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१–४६	२०वीं श.	अन्तमें पत्र सं. ५० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं।
	(ख) गणेशगोरखसंवाद			,,	१–१९	,,	अपूर्ण
६३	सतसई (डिंगल)	संग्रामसिंह	,,	काव्य	६३	१९३४	लि. क. रघुनाथसिंह, कीटविद्ध
६४	गीतबही (६८० गीतोंका संग्रह)		,,	,,	२२८	२०वीं श.	
६५	भगवद्गीता का अनुवाद		हिन्दी (व्रज)	वेदान्त	१८८	१९००	लि. क. ब्राह्मण भुवाना
६६	(क) विवेकविचार	शिवसिंह	हिन्दी	,,	४०	१८९७	लि. क. राव जुहार 'मताप (महताब) पुत्र,
	(ख) फुटकर रागसंग्रह		,,	संगीत	२०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६७	विवेकवार्ता	केशवदास गाडण	हिन्दी		२१०		जीर्णशीर्ण, कीटविद्ध, अन्त में १० पत्रों में स्फुट श्लोक, पद्य व राग हैं
६८	रघुनाथरूपक	कवि मनसाराम (कविमंछ)	राजस्थानी	काव्य	८८	१९२५	लि. क. ब्राह्मण रामनाथ
६९	यवनछंद (फारसी छंदों का वर्णन)	संग्रामसिंह	हिन्दी	,,	२८	२०वीं श.	'गणपतिचरणसरोजरज, घर हाड़ा संग्राम। यवन छंद रचना रचत, इन्द्र-दुर्ग निजधाम।'
७०	संगीतपयोनिधि (७९वाँ ग्रन्थ)	,,	,,	संगीत	११	१९३३	रामरामग्रहचन्द्रमा, दरश हरियाली रैन। इन्द्रदुर्ग निजधाम में, ये तो ग्रंथ लखैन। गुनसन्तियोग्रन्थ जो, यह रच्चौ संग्राम, यह सुधार सुध कीजियौ, जो सुकवि गुणधाम।
७१	(क) सुखसंवाद		,,	सन्तसाहित्य	२९	१८८४	लि. क. 'रामरतन', अन्त में ६ पत्रों में नक्षत्र राशि व वायुविचार आदि हैं।
	(ख) सन्तदासजीकी साखी	सन्तदास	,,	,,	१	,,	लि. क. रामरतन
	(ग) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	,,	,,	२–३२	,,	,,
	(घ) ध्रुवचरित्र	,,	,,	,,	३२–६३	,,	,,
	(च) फुटकर दूहा	अहमद	,,	,,	२	,,	
	(छ) ठीकरनाथजीकी भावना		,,	,,	२	,,	
७२	छन्देन्द्रकल्याणकल्पद्रुम	कल्याणदास भटनागर	,,	छन्दःशास्त्र	५५	१९वीं श.	कीटविद्ध, अपूर्ण, जीर्णशीर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७३	कोदण्डचन्द्रिका	संग्रामसिंह	हिन्दी	प्रकीर्ण	४७	१९वीं श.	जीर्ण
७४	बुधसिंहचरित्र	वंशभास्करगत	,,	काव्य	१९०	२०वीं श.	अपूर्ण
७५	नखशिखवर्णन	रसिकप्रियान्तर्गत (केशवदास)	,,	रसालंकार	१०	१८६७	लि. क. चि. नन्दराम लि. स्था. 'करवाड़'
७६	गुरुपरीक्षा		,,	काव्य	३८	२०वीं श.	
७७	ढोलामारूरी वार्ता		राजस्थानी	वार्ता	१३४	,,	अपूर्ण
७८	सदैवत्ससावलिंगारी वात		,,	,,	८६	,,	,,
७९	(क) भक्तिमुक्तिप्रश्नोत्तरी		हिन्दी राजस्थानी	वेदान्त	१–७०	१९११	
	(ख) तत्त्वसारगीता		,,	,,	७०–८७	,,	
	(ग) वर्णप्रभाकर		,,	धर्मशास्त्र	८७–१९०	,,	
	(घ) भक्तिपदार्थ		,,	भक्ति(योग)	१–१३	,,	
	(च) शिरोमणिसार		,,	वेदान्त	१३–२२	,,	लि. क. ब्राह्मण चि. चम्पालाल
	(छ) सहजानन्दभक्ति		,,	भक्ति(योग)	३२–५५	,,	लि. स्था. सेवागली मध्ये, चर्मण्वतीतटे
८०	कृष्णरुक्मिणीरीवेली सटीक	राठोड़ पृथ्वीराज	,,	काव्य	८७	१८१९	प्रथम पत्र अप्राप्त
८१	वंशभास्कर सटीक		,,	इतिहास	११७	२०वीं श.	अपूर्ण
८२	(क) चाणक्यदर्पण	चाणक्य	संस्कृत	नीति	१–२०	१८६४	
	(ख) नीतिशतक	भर्तृहरि	,,	,,	१–१९	,,	
	(ग) वृहज्जातक		,,	ज्यौतिष	१–११८	,,	अन्त में तीन पत्रों में नवग्रहदान लिखे हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
८३	नरसीजीका माहेरा		राजस्थानी	काव्य	४६	२०वीं श.	अपूर्ण
८४	कर्मविपाक		संस्कृत,हिन्दी	कर्मकाण्ड	६	,,	,,
८५	पातशाहीका किस्सा		हिन्दी	कथा	१२२	१६वीं श.	,,
८६	हाडोंके प्रशस्तिगीतके स्फुटपत्र		,,	काव्य	६३	२०वीं श.	
८७	स्फुटकीर्त्तनकवित्तसंग्रह		,,	,,	५०	,,	
८८	हरिदासजीके पद	हरिदास	,,	सन्तसाहित्य	४३	१८०७	लि. क. जोशी जीवराज गुर्जरगौड़, पृष्ठ ४१ वें व ४२ वें में देवाचारणके कवित्त लिखे हैं।
८९	गजलचन्द्रिका	संग्रामसिंह	,,	काव्य	४१	१९२८	
९०	अकारादिक्रमसे कवित्तसंग्रह		,,	,,	५८	१९वीं श.	कवित्त संख्या ११९ से ७७५ तक
९१	रसभक्तिपथ	शिवदत्त	,,	योग(भक्ति)	१२	१९३५	
९२	लीलावतीगणितभाषा		,,	ज्यौतिष	१४	१९वीं श.	अपूर्ण
९३	ताराविलास सटीक	विद्यानाथ	संस्कृत,हिन्दी	,,	१–९	,,	पृष्ठ सं. १० पर नक्षत्र-स्वरूपचक्र एवं पत्र ९ तथा १० के पृष्ठोंपर दोहा आदि लिखे हैं।
९४	(क) स्वरोदय	चरणदास	हिन्दी	,,	१–१३	,,	
	(ख) नामसार	फतेहसिंह राठौड़	,,	काव्य	१४–५४	,,	
९५	(क) स्वरोदय		,,	ज्यौतिष	४–१९	,,	
	(ख) तिथिकल्पद्रुम	संग्रामसिंह	,,	,,	१९–२४	,,	
९६	(क) सुमुखीपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलगत	संस्कृत	तन्त्र	समग्र १३६	१८२९	लि. क. आचार्य नगाद-दिच्य(?) लि.स्था. सांगोदा

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) रजःस्वलास्तोत्र		संस्कृत		समग्र १३६	१८२९	
	(ग) शिवमहिम्नःस्तोत्रादि	पुष्पदन्ताचार्य	,,	स्तोत्र	,,	,,	उच्छिष्टगणिपति व बटुक भैरवस्तवराज आदि भी हैं। अपूर्ण
९७	रामाज्ञा	गो. तुलसीदास	हिन्दी	काव्य	८१	१९१८	लि. क. चि. रामरतन ब्राह्मण
९८	ज्योतिषगन्थ		,,	ज्यौतिष	४१	१९०७	
९९	फुटकरवार्ता (ज्योतिष आयुर्वेद केयोग व मोकल विद्या)		,,	प्रकीर्ण	१७	२०वीं श.	
१००	स्फुटवार्ता (लौहगुणवर्णन आदि)		,,	,,	१०	,,	प्रतिमें तीन खुले पत्र हैं जिनमें लौह परीक्षा आदि लिखित है।
१०१	रमलोत्कर्ष	चिन्तामणिपंडित	संस्कृत	ज्यौतिष	२७	१८६८	
१०२	छायापुरुविधि और स्वरोदय (कबीरसाहबको)		राजस्थानी	,,	१४	१९वीं श.	
१०३	(क) ज्यौतिषसार (लघुजातकानुसार)		,,	,,	१–३१	१९१०	लि. क. द्वारका व्यास, आगे पत्र सं. ३६ तक ज्योतिष एवं जैनशास्त्र सम्बन्धी कुछ चक्र है।
	(ख) मेघमाला		,,	,,	३६–४०	,,	
	(ग) चमत्कारचिन्तामणि		,,	,,	४०–६१	,,	
१०४	सुभाषितपद्धति	शार्ङ्गधर, दामोदरसूनु	संस्कृत	सुभाषित	२७	२०वीं श.	अपूर्ण, हम्मीरभूपतिचौहान राज्यसभासदस्यराघवनाम्नः पौत्रः (ग्रं.क.)

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
१०५	जुबदा रमलभाषा, सोदाहरण		राजस्थानी	ज्यौतिष		१८७०	लि. क. ब्राह्मणनानूजी, गुर्जरगौड
१०६	व्यंग्यपंचपंचाशिका	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१७	१६३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०७	किष्किन्धाकाण्ड छप्पय	प्यारेराम	हिन्दी	काव्य	३१	२०वीं श.	आद्य १० पत्र अप्राप्त
१०८	विक्रमभूपकी कथा		,,	कथा (वार्ता)	२१	१८८३	
१०९	संवत्सरीफल		राजस्थानी	धर्मशास्त्र	८१	१९वीं श.	कामदारीलिपि
११०	सुन्दरपदमुक्तावली	सुन्दर	हिन्दी	काव्य	१०८	१९३४	लि. कि. व्रजवल्लभ लि. स्था. माधवपुर
१११	सेऊसमनजीकी परची	अनन्तदास	,,	,,	१०	१८८९	लि. क. भुवाना
११२	राशियोंकी किताब		उर्दू	ज्यौतिष	१२	२०वीं श.	फारसी लिपि
११३	दीवान मोजीज		,,	काव्य	१६८	,,	,,
११४	गुंचापरागकी किताब		,,	प्रकीर्ण	५५	,,	मुद्रित
११५	किताब खलायक मुहम्मदरफी उरूदीन		,,	,,	१२०	,,	फारसी लिपि
११६	किताब रमल		,,	ज्यौतिष	७४	,,	,,
१२७	किताब ताजबीबीका रौजा		,,	प्रकीर्ण	१४	,,	इस पुस्तकमें ताजमहल निर्माणका ब्यौरा दिया गया है। फारसी लिपिमें
११८	याफता		,,	,,	१३७	,,	फारसी लिपिमें
११९	वाकैराजपूताना		,,	इतिहास	८८३	,,	,, मुद्रित
१२०	वंशभास्कर		हिन्दी	,,	१४९	,,	जीर्णशीर्ण अपूर्ण
१२१	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	,,	काव्य	९	,,	अपूर्ण
१२२	मर्यादापरिपाटीसमाचार		संस्कृत, हिन्दी	धर्मशास्त्र	८६६से१०३२	१९३४	मुद्रित

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१२३	प्रेमरत्नाकर	राजकुमार, भैया रतनपाल	हिन्दी	काव्य	३३	१७४१	लि. क.–स्वामी खेमदास आगे १२ पत्रोंमें स्फुट कवित्त आदि हैं।
१२४	कबीरजीकी साखी	कबीर	,,	,,	२०२	२०वीं श.	आद्य ५ पत्र अप्राप्त। अपूर्ण
१२५	विरदप्रकाश	उमेदसिंह	,,	,	२७	१९१६	
१२६	गृहदर्पण, (३६वाँ ग्रन्थ) (यात्रा-विषयकवर्णन व स्टेशनोंके नाम)	संग्रामसिंह	,,	प्रकीर्ण	१४	२०वीं श.	
१२७	शालिहोत्र	नकुल	,,	आयुर्वेद	५८	१८९०	
१२८	मन उमंग अनुराग	संग्रामसिंह	,,	काव्य	१९	१९३५	लि. क. वंशीधर गुजराती-ब्राह्मण
१२९	(क) चैतन्यसिद्धान्त		,,	वेदान्त	२७	१९१३	आद्य दो पत्र अप्राप्त
	(ख) चतुरमहाबोध		,,	,,	११	,,	अपूर्ण
१३०	(क) व्यंग्यार्थचन्द्रिका	गुलाबकवि	,,	रसालंकार	१४	१९९२	
	(ख) पावसपचीसी	जगन्नाथकवि	,,	काव्य	१४–१६	,,	
	(ग) प्रेमपचीसी	गुलाबकवि	,,	,,	१७–१९	,,	
१३१	(क) अलङ्कार-मुक्तावली	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	३	१९१०	
	(ख) छन्दःप्रस्तार	,,	,,	छन्दःशास्त्र	३	,,	
	(ग) अलङ्कारदीपिका	,,	,,	रसालंकार	५	,,	
१३२	(क) आत्म-उद्धार	शिवसिंह	,,	वेदान्त	१–५३	२०वीं श.	छन्दःसंख्या ५२२
	(ख) आत्मप्रकाश	,,	,,	,,	१–२५	,,	
	(ग) युक्तिरत्न	,,	,,		२५–३२	,,	
	(घ) युक्तिरत्नत्रिधामणि	,,	,,	भक्ति(योग)	३२–४०	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रेमप्रभा	शिवसिंह	हिन्दी	काव्य	४०–४७	२०वीं श.	
	(छ) मुक्तिमंगल	,,	,,	वेदान्त	४७–५५	,,	
	(ज) स्नेहसार	,,	,,	काव्य	५५–५८	,,	
	(झ) ग्रन्थसंक्रान्ति	,,	,,	,,	५८–६७	,,	
	(ट) स्फुटकवित्त	,,	,,	,,	६७–७८	,,	
१३३	भर्तृहरिचरित	,,	,,	सन्तसाहित्य	४०	,,	
१३४	रामचरित	सेनापति	,,	काव्य	१८	,,	स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोंमें)
१३५	संग्रामसिन्धु ग्रन्थव्याख्या (व्यंग्यार्थ-मौक्तिकमाला)	संग्रामसिंह	,,	,,	४७	१९०८	
१३६	रामचरितमानस (बालकाण्ड)	गो. तुलसीदास	,,	,,	११७	२०वीं श.	अपूर्ण
१३७	पावसषोडशी (५०वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	,,	,,	१७	१९२६	
१३८	भूगोलप्रश्नोत्तरी (५९वाँ ग्रन्थ)	,,	,,	,,	१५	१९३१	
१३९	रससिरोमणि	महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसुत, नरवर-निवासी	,,	रसालंकार	३७	१८३०	लि. क.–लछमण धाभाई लि. स्था.–बड़ौदा
१४०	विहारीसतसई, सटीक	विहारीलाल	,,	काव्य	१८४	१८५६	
१४१	महाभारत उद्योगपर्व, ९ अध्याय, पद्यानुवाद	कृष्णकवि	,,	,,	८१	१९२७	र. का. १७९२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त
१४२	(क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण	पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिक्षेमप्रतापशिष्य)	,,	वेदान्त	३१८	१७३१	लि. स्था.–बूंदीपतिभाव-सिंह राज्ये
	(ख) ,, भक्तिभक्तसंप्रदाय		,,	भक्ति (योग)	३२८	,,	र. स्था. ,, ,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४३	(क) व्रजचरित		हिन्दी	काव्य	१–४	१८२६	र. का.–१७८१
	(ख) अमरलोकअखण्डधामवर्णन-लीला		"	"	४–७	"	
	(ग) धर्मजहाज		"	"	७–१७	"	
	(घ) गुरुचेलासंवाद अष्टांगयोग		"	योग	१७–३७	"	
	(च) पञ्चोपनिषद्, भाषा		"	वेदान्त	३७–४५	"	
	(छ) ज्ञानस्वरोदय		"	"	४५–५६	"	
	(ज) ब्रह्मज्ञानसागर		"	"	५६–६४	"	
	(झ) भक्तिपदार्थ		"	भक्ति योग	६४–७५	"	
	(ट) चारयुगवर्णन कुण्डलिया		"	काव्य	७५वाँ	"	
	(ठ) नायिका अंगवर्णनादि		"	वेदान्त	७६–१००	"	
	(ड) चौबीसगुरुपरीक्षा		"	"	१००–११५	"	
	(ढ) मोहछुड़ावनअंगवर्णन		"	"	११५–१२४	"	
	(त) सन्देहसागर		"	"	१२४–१२७	"	
	(थ) शब्दोंके मंगलाचरणदूहा		"	काव्य	१२७–१७५	"	
	(द) स्फुट कवित्त छन्द आदि		"	"	१७५–१८१		
१४४	शनैश्चरकथा		"	कथा	१८	१८१४	
१४५	इन्द्रजाल		"	ज्यौतिष	७	१९वीं श.	अपूर्ण
१४६	हरिलीलामृत		संस्कृत	तंत्र	१६	१८८८	लि. क.–मनीराम
१४७	(क) रसभृङ्गार		हिन्दी	काव्य	३	१९२०	प्रथमपत्र अप्राप्त
	(ख) पावसपञ्चाशिका		"	"	१–७	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) झमाल (दूसरी) आदि		हिन्दी	काव्य	७-१०	१९२०	
	(घ) शृङ्गाररत्न		,,	,,	१०-१३	,,	
	(च) अलङ्कारमञ्जरी	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१-११	१९२१	र. का.-१९११
	(छ) पावसषोडशी	,,	,,	काव्य	१-८	,,	
१४८	साहित्यबोध (काव्यप्रकाशानुवाद)		,,	रसालंकार	११	१९वीं श.	अपूर्ण
१४९	परिभाषाप्रकरण	सिद्धान्त पञ्चानन-भट्टाचार्य	संस्कृत	न्याय दर्शन	७	१७१८	लि. क.-लक्ष्मण, गंगारामात्मज, लि. स्था. काशी
१५०	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	,,	स्तोत्र	१२	१८४७	
१५१	शिवशतनामस्तोत्र		,,	,,	३	१९वीं श.	अपूर्ण
१५२	शृङ्गारप्रश्नोत्तरी, भाषा (६८वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३१	१९३१	
१५३	अलङ्कारमञ्जरी	त्रिमल्ल, वल्लभभट्टपुत्र	,,	,,	१३	१९वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त
१५४	वाजिचन्द्रिका (६३वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	,,	ज्योतिष	२१	१९३१	
१५५	आरामदर्पण (७४वाँ ग्रन्थ)	,,	राजस्थानी	प्रकीर्ण	१८	१९३४	आद्य दो पत्र अप्राप्त, लि. क.-रामनाथ
१५६	स्फुट कवित्त	पद्माकरभट्ट	हिन्दी	काव्य	१५	२०वीं श.	एक कवित्त वेनीका भी है
१५७	(क) ध्रुवचरित	परमानन्द	,,	,,	१-१२	१७९१	लि. क.-वखतराम
	(ख) मंगलाष्टक	कवि कालिदास	संस्कृत	,,	१२-१७	,,	
	(ग) गणेशजीकी स्तुति		हिन्दी	स्तोत्र	१७-२३	,,	
	(घ) गोरखनाथजीकी स्तुति		,,	,,	२३-३०	,,	
	(च) भोगलपुराण		,,	पुराण(कथा)	३०-४०	,,	
	(छ) रागचिन्तन		,,	संगीत	४०-४८	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ज) छीतमजीकी जकड़ी	छीतमराम	हिन्दी	काव्य	४१–५१	१७६१	
	(झ) कायस्थद्वादशनाम टीका	,,	,,	कथा (पुराण)	५१–५७	,,	
१५८	रसचन्द्रोदय	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	३५	१६१६	
१५६	रसचन्द्रोदय	,,	,,	,,	२०	१६१०	
१६०	राजयोग भाषा	राजा प्रथ्वीचन्द्र अनन्य	,,	वेदान्त	४	१६२१	लि. क.–श्रीलाल
१६१	बहुलाष्टमी कथा			कथा	५	२०वीं श.	
१६२	खींवरा बालेसराकी वारता		राजस्थानी	वार्त्ता(कथा)	१७	१८५४	लि.क.–घासीराम ज्यौतिषी (डाकोत) लि. स्था. गेणोली (बूंदी)
१६३	पद्मकोश राजस्थानीटीकासहित		संस्कृत राजस्थानी	ज्यौतिष	११	१६वीं श.	प्रथमपत्र अप्राप्त
१६४	(क) मासविचार (ज्येष्ठमाससे)		राजस्थानी	,,	१४–१६	१६०५	कीटविद्ध
	(ख) छायापुरुषविचार		,,	,,	१६–१७	,,	
	(ग) कबीरजीके रेखता		हिन्दी	सन्तसाहित्य	१८–२५	,,	
	(घ) आत्मप्रकाश	धर्मदास	,,	,,	२५–३०	,,	
	(च) बालबोधिनी चौपाई		,,	,,	३८–४६	,,	
	(छ) हरिबोल		,,	,,	४६–४६	,,	
	(ज) शब्द	कबीर	,,	,,	४६–५०	,,	
	(झ) कबीराष्टक		,,	,,	५१–५२	,,	
	(ट) अखण्डपरब्रह्मकी स्तुति	धर्मदास	,,	,,	५२–५३	,,	
	(ठ) आत्मदान आरती		,,	,,	५३वां	,,	
	(ड) सम्वत्सरको फल		,,	ज्यौतिष	५४वां	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ढ) गुप्तज्ञानगुदरी	कबीर	हिन्दी	सन्तसाहित्य	५५–५६	१९०५	
	(त) रामरक्षा	रामानन्द	संस्कृत,हिन्दी	,,	५७–५८	,,	
	(थ) मूलपांजीग्रन्थ		हिन्दी	,,	५८–६१	,,	अपूर्ण
१६५	विवेकमार्तण्ड	जालन्धरनाथ	संस्कृत	वेदान्त	७	२०वीं श.	,,
१६६	शृङ्गारसिन्धु (नवम कल्लोल)	भगवानदास	हिन्दी	रसालंकार	१४	,,	
१६७	(क) सिद्धान्तबोध	जसवन्तसिंह	,,	वेदान्त	५–३२	१८१०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
	(ख) सिद्धान्तसार	,,	,,	,,	१–२२	,,	
	(ग) गोरक्षशतक		संस्कृत	योग	२३–३०	,,	लि. क.–विश्वनाथ
	(घ) चौबीस अवतार		,,	प्रकीर्ण	३१वां	,,	
१६८	चौहाणोंकी वंशावली	गोविन्दराम बडवा, कोटा-निवासीकी पुस्तकसे	हिन्दी	इतिहास	१२	१८८३	
१६९	गीतबही	वेला चारण	,,	काव्य	१४	१९वीं श.	
१७०	गीतमध्याक्षरी	शिवसिंह	,,	,,	१	,,	खरड़ा
१७१	(क) आदित्यव्रतमाहात्म्य		संस्कृत	पुराण(कथा)	१–७	,,	
	(ख) नक्षत्रफल		,,	ज्यौतिष	८–३३	,,	
१७२	मानसदीपिका व्याख्या		हिन्दी	काव्य	५२	,,	
१७३	पञ्चाङ्ग		संस्कृत	ज्यौतिष	१३	१९१९	
१७४	सूर्यजीकी कथा (हिन्दी)	पद्मपुराणगत	हिन्दी	कथा (पुराण)	१४	२०वीं श.	
१७५	छत्रबन्ध		संस्कृत	रसालंकार	१	,,	
१७६	झमाल	गोरधा ढाढी	राजस्थानी	काव्य	२१	,,	
१७७	(क) कवित्तशतक	श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजाधिराज)	हिन्दी	,,	१–२८	,,	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ख) दोहाशतक	मोहनकवि	हिन्दी	काव्य	१–१४	२०वीं श.	
	(ग) स्फुटकवित्त		,,	,,	१–६	,,	
	(घ) विष्णुपद		,,	,,	१–४०	,,	
	(च) मोहननामपचीसी		,,	,,	१–२	,,	
	(छ) दोहासंग्रह		,,	,,	१–१२	,,	
१७८	(क) शृंगारचमन	संग्रामसिंह	,,	,,	१–६	१९३२	लि. क.–रामवल्लभ चौबे गुजराती, लि. स्था.-इन्द्रगढ़
	(ख) प्रेमचमन	,,	,,	,,	६–११	,,	,,
	(ग) रागसंयोग	,,	,,	संगीत	१२–२३	,,	,,
	(घ) दृष्टिकलानिधि (६८वाँ ग्रंथ)	,,	,,	रसालंकार	२४–२७	,,	,,
१७९	(क) छन्दःशास्त्र		संस्कृत	छन्दःशास्त्र	१–१०	२०वीं श.	अपूर्ण
	(ख) वृत्तरत्नाकरटीका	समयसुन्दरगणि	,,	,,	१०–२०	,,	
१८०	गणेशमहिमाकथा		हिन्दी	कथा	५१	१७८५	
१८१	संग्रामसिन्धु	संग्रामसिंह	,,	रसालंकार	१–९	१९०८	
१८२	गीतापरिचयटीका	शिवसिंह (महाराजा)	,,	वेदान्त	८–११६	२०वीं श.	लि. क.–व्यास कालूराम
१८३	चारणगीतसंग्रह—		राजस्थानी	काव्य	३४४	,,	इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतों का सङ्कलन है।
	१ कवित् हींगळाजकौ			कवित्तसंख्या१	१		
	२ कवित् बीजाशणिजीकौ			२	१		
	३ गीत नरसिंगजीका			२५	३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	४ दुहा सीरदुण			१	४		
	५ कवित राढ(ठ)			२९	४		
	६ गीत जाति श्रीबल			३०	४		
	७ कबित यंम्रतध्वनि			४७	५		
	८ नशाणीमीराछलतन(त)जीकी			५४	६		
	९ गीत हामाजीको			१	७		
	१० गीत घतग्रळोळ हनुमत-जीको			५१	८		
	११ गीत गोख डोढो देवजीको			५३	८–९		
	१२ गीतजोगारमां(रंम)			५६	९		५६वें गीत का प्रसङ्ग नहीं मिलता है।
	१३ कवित् चवाणकी उतप्ती			५६	१०		
	१४ गीत गोग(गोगा) चहवाण			५८	१०		
	१५ गीत राव कोलणको			५९	१०		
	१६ गीत हाळुजी को			६३	११		
	१७ गीत रों(गो)पाळजीको			६४	११		
	१८ गीत बैरसळ			६५	११–१२		
	१९ गीत लालाहाडाको			६६	१२		
	२० गीत भापो पशुकाळको			६७	१२		
	२१ गीत राव अरजनजीको			६८	१३		
	२२ कवित राव सुरजनकौ			६९	१३		
	२३ गीत रावसुरजमलजीको			७१–७९	१३–१६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२४ नसाणी राव सुरजनकी			८०	१६–१७		
	२५ नीसाणी राव दूदा भोजकी			८१	१७		
	२६ नीसाणी दूदाजीकी			८२–८३	१७		
	२७ गीत दूदाजीको			८३–८७	१८–१९		
	२८ राव भोजको गीत			८८–९८	१९–२३		
	२९ गीत पाड़गति			९९–१५८	२३–४०		
	३० राव भार्वासघजीका गीत			१५९–१६७	४०		
	३१ गीत भगोतसिंघजीको			१६८–१७८	४२–४६		
	३२ राव अमेद(उमेद) सींघजीका गीत			१७९–१८३	४६–४९		
	३३ ध(जोध)सिंघजी लार सती होई जीको			१८४–१९१	४९–५३		
	३४ गीत राव छत्रसाळजीको			१९२वां	५३वां		
	३५ गीत म्हांराजा ईद्रसालजीको			१९३–१९९	५३–५५		
	३६ गीत म्हाराजा सरदारसींघ-जीको			२००–२११	५५–५८		
	३७ गीत महाराजा मेघसिंघजीको			२१२–२२०	५८–६०		
	३८ गीत म्हाराजा छीत्रसिंघजीका (गीत चोसरो)			२२१–२६८	६०–७५		
	३९ गीत म्हाराजा देवसींघजीको			२६९वां	७५वां		
	४० गीत वेलियो सांणोर			२७०	७५–७६		इसमें इन्द्रगढ़महाराजाकी प्रशस्ति है
	४१ गीत त्रीकुटबंध			२७१	७६–७७		,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	४२ रूपैका महाराजाजी भगतरामजी का कवित			२७३–२७६	७७–७९		
	४३ गीत मुक्ताग्रह			२७७–२७८	७९		भगतेसनरेशकी प्रशस्ति है
	४४ गीत चोसरा			२७९	७९–८०		,,
	४५ गीत त्रिकुटबंध			२८०–३०४	८०–९०		
	४६ भाखड़ी			३०५–३६२	९०–१०४		इसमें स्फुटकवित्त भी हैं।
	४७ साखी म्हाराजा सरदारसिंघजीकी कही			३६३	१०४		
	४८ रूपक कवरजी सुनमानसिंघजी का गीत पंचसर			३६४–३६५	१०४–१०५		
	४९ गीत मुक्ताग्रह			३६६–३६७	१०५–१०६		सुनमानसिंह प्रशस्ति है।
	५० गीत सुपंखरो			३६८–३७८	१०६–१११		,,
	५१ गीत त्रीकुटबंध			३७९–३९५	१११–११७		,,
	५२ गीत (कु)वरजी अमानसिंघजीका			३९६–३९८	११७वां		
	५३ गीत म(प्र)तापसिंघजीको			३९९–४०६	११७–१२०		
	५४ गीत राव अजीतसींघको			१	१२०–१२२		पद्यसंख्या मूल पुस्तकमें केवल १ ही दी गई है। पुनः ४०४ से प्रारम्भ है।
	५५ रूपक माहाराजा अमरसींघजीका गीत वेलीयो			४०४–४०८	१२३–१२४		
	५६ गीत माहाराजा फकीरसींघजीकौ			४०९–४१०	१२४–१२५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	५७ माहाराजा जोगीरामजीका			४११–४१३	१२५–१२६		
	५८ गीत महाराजा सालमसींघजीका			४१४–४१६	१२६–१२७		
	५९ गीत घासीरामजीका			४१७–४१८	१२७		
	६० गीत महाराज प्रतापसिंघजीको			४१९	१२७–१२८		
	६१ गीत दलेलसींघजीको			४२०	१२८		
	६२ गीत महाराजा मरजादसिंघजीको			४२१–४२३	१२८–१२९		
	६३ गीत कँवर फतेसींघजी सुजाणसींघजी ईंद्रसालोतको			४२४–४२५	१२९–१३०		
	६४ गीत बरीसालोवताका			४२६–४३६	१३०–१३४		
	६५ कबित् रूपजी माहासीगोत			४३७	१३४		
	६६ माधोसीघजीको			४३८	१३४		
	६७ गीत मुकुनसिंघजीका सावझड़ो			४३९–४४६	१३४–१३६		
	६८ श्रीजी कसोरसींघजीका गीत			४४७–४५१	१३६–१३८		
	६९ गीत रामसींघजीका			४५२–४५५	१३८–१३९		
	७० गीत भीव(व) सींघजीका			४५६–४६५	१४०–१४३		
	७१ गीत स्यामसींघजीका			४६६	१४३–१४४		
	७२ गीत दुरजलसाल(दुरजनसाळ) जी का			४६७–४७८	१४४–१४८		
	७३ गीत जैराम बीयास (व्यास)			४७८–४८०	१४८–१४९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	७४ गीत मोहोणसिंघजीका			४८१–४८२	१४९		
	७५ गीत गोरधनसिंघजीका			४८३–४८४	१४९–१५०		
	७६ गीत अजीतसिंघजीका			४८५	१५०		
	७७ माहाराव छत्रसाळजी कबित्			४८६–४८९	१५०–१५१		
	७८ गीत प्रथीसिघजीका			४९०	१५१–१५२		
	७९ गीत नाहरसिघजीकौ			४९१	१५२		
	८० गीत नाथजीको			४९२	१५२–१५३		
	८१ गीत हरदैनारायेणकौ			४९३	१५३		
	८२ गीत दोलतसिंघ हरदावतको			४९४	१५३		
	८३ गीत भीवसींघ हरैदावतकौ			४९५	१५३–१५४		
	८४ जैतसिंघ हरदावत कबित्			४९६–४९७	१५४		
	८५ छीत्रसींघजी मेवाउता गीत			४९८–४९९	१५४–१५५		
	८६ फतेसीघ जैतसीघजीको कबित्			५००–५०१	१५५		
	८७ कसुबा(कसुंबां) बायको गीत			५०२–५०४	१५५–१५६		
	८८ गीत हाडा भीवसिंघजीको			५०५–५०६	१५६–१५७		
	८९ कबित् राव हमीरको			५०७–५०८	१५७वां		
	९० प्रथीयराजकी छप्पै			५०९–५१२	१५७–१५८		
	९१ गीत गोख डोढ़ो बरड़ोदको राणा भोजराज चहुंवाणको			५१३	१५८		
	९२ कबित् टोडरमल चहुवान नीमराणाको राजा			५१४	१५८–१५९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	९३ गीत बेदलाका ठाकुर वखत-सीघ चहुवाण को। सुपंखरो चोटीबंध			५१५से५१७	१५९–१६०		
	९४ गीत चहुवाणाको			५१८–५१९	१६०–१६१		
	९५ गीत सत्रसाळ देवड़ाको			५२०	१६१		
	९६ गीत अखसीघ देवड़ोको			५२१	१६१		
	९७ गीत सुरताण देवड़ोको			५२२	१६१		
	९८ गीत (वी)रमदे सोनगराको			५२३	१६२		
	९९ गीत राणगदे सोनगराको			५२४	१६२		
	१०० गीत जसो सोनगरको			५२५	१६२–१६३		
	१०१ गीत कुभा(कुंभा) खीचीको			५२६	१६३		
	१०२ गीत धीरतसीघ खीचीको			५२७	१६३–१६४		
	१०३ गीत नगा खीचीको			५२८–५२९	१६४		
	१०४ गीत फतेसींघ खीचीको			५३०	१६४–१६५		
	१०५ गीत अकबर पातस्याको			५३१–५३२	१६५		
	१०६ कबित साहिजादो दानसाहको			५३३	१६५		
	१०७ कबित् खांन खांन नवाबको			५३४–५३६	१६५–१६६		
	१०८ कबित् ओरंजे(ब) पातस्याका			५३७	१६६		
	१०९ गीत साहिजादाको			५३८	१६६–१६७		
	११० गीत दलिको			५३९	१६७		
	१११ गीत राणा कुंभाको			५४०–५४३	१६७		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	११२ गीत रायमल राणाको			५४४	१६८		
	११३ गीत राणा परतापसींघको			५४५–५४९	१६९–१६९		
	११४ गीत राणा अमरसींघको			५४९	१६९–१७०		
	११५ गीत राणा जगतसींघजीको			५५०	१७०		
	११६ गीत राणा राजसींघको			५५१–५५५	१७०–१७१		
	११७ गीत राणा परतापसींघजीको			५५६	१७२		
	११८ गीत राणा सगरांमसींघजीको			५५७	१७२–१७३		
	११९ गीत राणा सांगाको			५५८–५५९	१७३–१७४		
	१२० गीत जमल पताको			५६०–५६१	१७४–१७५		
	१२१ गीत रावळजीका			५६२	१७५		
	१२२ गीत रावळको			५६३	१७५–१७६		
	१२३ गीत अमरसींघ रावळको			५६४	१७६		
	१२४ गीत जेतसी रावलको			५६५	१७६		
	१२५ गीत सालमसींघ देवळको			५६६	१७६–१७७		
	१२६ कबित् सेवो रावलको			५६७	१७७		
	१२७ कबित् कावड़्या खेड़ीको भारतसीघजीको			५६८	१७७		
	१२८ गीत राणा भीवको			५६९–५७०	१७७–१७८		
	१२९ गीत उडणा प्रथीराजको			५७१–५७२	१७८–१७९		
	१३० गीत सागा मीणाको			५७३	१७९		
	१३१ गीत चोडो लाखाको			५७४	१७९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१३२ गीत सींही चलो			५७५	१७९–१८०		
	१३३ गीत देबीसींघ बेगुंका ठाकुरको			५७६	१८०		
	१३४ गीत दवारिकादास चोडावतको			५७७	१८०		
	१३५ गीत जसोतसींघ चोडावतको मुक्ताग्रह			५७८	१८०–१८१		
	१३६ गीत नरांयणदास सगतावतको			५७९	१८१		
	१३७ गीत गजगति नरांयणदास सगतावतको			५८०–५८१	१८१–१८२		
	१३८ गीत अ्रठतालो			५८२	१८२		
	१३९ गीत गोकलदास सगतावतको			५८३–५८६	१८२–१८४		
	१४० गीत परतापसीघ सगतावतको			५८७–५९३	१८४–१८५		
	१४१ गीत जगतसींघ सगतावतको			५९४–५९५	१८५–१८६		
	१४२ गीत लालसींघ सगतावतको			५९६	१८६		
	१४३ गीत सगतसींघ सगतावतको त्रीकुटबंध			५९७	१८६–१८८		
	१४४ गीत सुरतसींघ सगतावतको			५९८	१८८		
	१४५ गीत सगतावतको			५९९	१८८		
	१४६ गीत राणा संग्रांमसींघजीको			६००	१८८–१८९		
	१४७ रूपक म्होकमसी चंद्रावतको			६०१–६०४	१८९–१९०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१४८ गीत अमरसींघ चंद्रावतको			६०५	१९०–१९१		
	१४९ गीत भारत्तसींघ साहपुर			६०६–६०७	१९१वां		
	१५० गीत उमेदसींघ साहेपुर			६०८–६१२	१९१–१९४		
	१५१ गीत अदोतसींघको			६१३	१९४		
	१५२ गीत रामानंद नागाको			६१४	१९४–१९५		
	१५३ गीत केसरीसींघ सीसोदो			६१५	१९५		
	१५४ गीत सांवलदास डाबरको			६१६	१९५–१९६		
	१५५ गीत अचलसींघ राणाउतको			६१७–६१९	१९६–१९७		
	१५६ गीत जगमाल जाजपुरको ठाकुरको त्रीबंकड़ो			६२०	१९७		
	१५७ गीत देवलाका ठाकुरको तसर गीत			६२१	१९७–१९८		
	१५८ गीत जंगखोड़ो वेधुका रावत हरीसींघजीको			६२२	१९८		
	१५९ गीत बिहारीदास गलोतको			६२३	१९८		
	१६० गीत आनु गलोतको			६२४	१९८–१९९		
	१६१ गीत मुलराज सोलखीको मुक्ताग्रह			६२५	१९९–२०१		
	१६२ कबित् नाहारसिंघ सोळखीको			६२६	२०१		
	१६३ दोनु कबित् नाहारखीजीको छै। ऐक कबित नाहारखांजी को ऐक सुरजीको			६२७	२०१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१६४ कबित हरीजीको			६२८–६२९	२०१–२०२		
	१६५ गीत लालसींघ सोलै(लं)खीको			६३०–६३१	२०२		
	१६६ गीत कसनसींघजीको			६३२	२०२–२०३		
	१६७ गीत बीरमदे सोलखीको			६३३	२०३		
	१६८ गीत सीधराव जैसंगको			६३४	२०३–२०४		
	१६९ गीत मुळराज सोलखीको			६३५	२०४		
	१७० कवित नाथावताको			६३६	२०४		
	१७१ गीत देबीसींघ नाथावतको			६३७	२०४–२०५		
	१७२ कबित् करण नाथावतको			६३८	२०५		
	१७३ गीत गोयंदा सखराड़ाको			६३९–६४२	२०५–२०६		
	१७४ गीत अमरसिंघ भाटी जैसळमेरको			६४३	२०६		
	१७५ गीत सबळा भाई			६४४	२०७		
	१७६ गीत जादुको			५४५	२०७		
	१७७ गीत बिजासर बैंयाको			६४६	२०७–२०८		
	१७८ गीत करण सरबैयाको			६४७	२०८		
	१७९ दुहा जसा सरबैयाका			६४८	२०८–२०९		
	१८० गीत राठोड़ांका			६४९	२०९–२१०		
	१८१ गीत राजा गजसींघजीको			६५०–६५२	२१०		
	१८२ गीत राजा जसोतसींघजीको			६५३–६५६	२१०–२१२		
	१८३ गीत अमरसींघ राठोड़को नागोरको राजा			६५७–६५८	२१२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१८४ गीत राजा अजीतसींघजीको			६५६–६७२	२१२–२१४		६६७ से ६७० तकके गीत नहीं हैं ।
	१८५ गीत राजा अभ(य)सींघजीको			६७३–६७५	२१४–२१६		
	१८६ गीत बखतसींघको			६७६–६८१	२१६–२१९		
	१८७ गीत जीवा आपा दखणीको			६८२	२१९–२२०		
	१८८ गीत राजा बिजेसींघको । सुपंखरो			६८३	२२०–२२१		
	१८९ गीत राजसींघ रूपनगरको राजाको			६८४–६८६	२२१–२२३		
	१९० (गी)···त कुंपा राठोड़को			६८७–६९०	२२३–२२५		
	१९१ गीत नीबाको			६९१	२२५		
	१९२ गीत रतनको			६९२	२२५		
	१९३ गीत बलु चाँपावतको			६९३–६९५	२२६–२२७		
	१९४ सोनंग बलुको बेटो दोहा			१*	२२७		* यह दोहेकी संख्या है।
	१९५ गीत रामसींघ राठोड़को			६९६–६९७	२२७–२२८		
	१९६ गीत दोलतसींघ राठोड़को			६९८	२२८		
	१९७ गीत अमरसिंघ गरडवाको गीत नागेटो			६९९	२२८–२२९		
	१९८ गीत ईंद्रसींघ खैरवाका ठाकुरको			७००–७०१	२२९–२३०		
	१९९ गीत गोकलदास राठोड़को अमरसींघ नागोरका ठाकुरकै आंटे काम आयो			७०२	२३०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२०० गीत जतसीघ सुमीयांणको ठाकुर राठोड़को			७०३	२३०–२३१		
	२०१ गीत केसरीसींघ उदाउतको			७०४	२३१–२३२		
	२०२ गीत उदाउतको			७०५	२३२		
	२०३ गीत मोहोकम राठोड़को			७०६	२३२–२३३		
	२०४ गीत ब्रिजा राठोड़को			७०७	२३३		
	२०५ गीत हठीसींघ राठोड़को			७०८	२३३–२३४		
	२०६ गीत तेजसींघ राठोड़को			७०९	२३४		
	२०७ गीत कुसलसींघ चाँपावतको			७१०	२३४–२३५		
	२०८ गीत सेरसींघजी कुसल-सींघजीको			७११	२३५		
	२०९ गीत कुसलसींघ सेरसींघको			७१२–७१४	२३५–२३९		
	२१० गीत सेरसींघजीको			७१५–७१७	२३९–२४१		
	२११ गीत दुरगादास राठोड़को			७१८	२४१		
	२१२ गीत गोपालसींघ मेड़त्याको			७१९	२४१–२४२		
	२१३ गीत अरघ गोख कसनसींघ राठोड़को			७२०	२४२		
	२१४ गीत परसा राठोड़को			७२१	२४२–२४३		
	२१५ गीत चतुरा राठोड़को			७२२	२४३		
	२१६ गीत करण राठोड़को			७२३	२४३		
	२१७ गीत साहाबसींघ राठोड़को			७२४	२४३–२४४		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२१८ गीत करण राठोड़को			७२५	२४४		
	२१९ गीत सैंसमल राठोड़को			७२६–७२९	२४४–२४६		
	२२० गीत माधोसींघ राठोड़को			७३०–७३१	२४६–२४७		
	२२१ गीत जसोतसींघजीका उमरावाको			७३२	२४७		
	२२२ गीत अभैसींघजीका उमरावाको			७३३	२४७–२४८		
	२२३ गीत परथीराज राठोड़को			७३४	२४८		
	२२४ गीत ज(य)सींघ राठोड़को			७३५	२४८		
	२२५ गीत सेवो बादेलको			७३६	२४९		
	२२६ गीत घाणोराको ठाकुर पदम-सींघको			७३७	२४९		
	२२७ गीत सगतसींघ राठोड़को			७३८	२४९–२५०		
	२२८ गीत मोकम चांपाउतको			७३९	२५०		
	२२९ गीत अखैसींघ राठोड़को			७४०	२५०–२५१		
	२३० गीत कमो राठोड़को			७४१	२५१		
	२३१ कबित् राव बीकाको			७४२	२५१		
	२३२ गीत कल्याणसींघजीको			७४३	२५१–२५२		
	२३३ गीत प्रथीराज राठोड़को			७४४–७४५	२५२–२५३		
	२३४ गीत रायसींघको			७४६	२५३		
	२३५ गीत बीकानेरको मोणसींघका बेटाको			७४७	२५३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२३६ गीत सांणोर थाणबंध वेलीयो रामसींघको			७४८	२५३-२५४		
	२३७ गीत रायसींघ बीकानेरको			७४९	२५४		
	२३८ कबित् बीकानेरका राजा अनोपसींघको			७५०	२५४-२५५		
	२३९ गीत बीकानेरको पदमसींघको			७५१-७५४	२५५-२५६		
	२४० गीत केसरीसींघ बीकानेरको			७५५	२५६-२५७		
	२४१ कबित् राजा गजसींघजी बीकानेरको			७५६	२५७		
	२४२ गीत भींव राठोड़को			७५७	२५७-२५८		
	२४३ गीत दुदा राठोड़को			७५८	२५८		
	२४४ गीत लखधीर यींदा			७५९	२५८-२५९		
	२४५ गीत योक अखरो करण बीकानेरका राजाको			७६०	२५९		
	२४६ गीत आफुको			७६१	२५९-२६०		
	२४७ गीत भ्यागको			७६२	२६०		
	२४८ छप्पै राव भाराकी जाड़ो-चाकी			७६३	२६०		
	२४९ गीत जाड़ेजाको बीसर			७६४	२६०-२६१		
	२५० गीत हीरा मांगळयाको			७६५	२६१		
	२५१ गीत महेड़ जाड़ेचाको			७६६	२६१-२६२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२५२ गीत राव देसलको			७६७	२६२		
	२५३ दुरजनसाल सोडाको			७६८	२६२		
	२५४ गीत भोज काबाको			७६९	२६२–२६३		
	२५५ गीत घासड़ी सोड़ा चवाणको			७७०	२६३		
	२५६ गीत सोड़ा राठोड़ाकी चुकको			७७१	२६३–२६४		
	२५७ गीत सोड़ा भाटीकी चुकको			७७२–७७३	२६४		
	२५८ गीत राजा मानको			७७४–७७५	२६४–२६५		
	२५९ कबित बड़ो जैसींघको			७७६–७७८	२६५–२६६		
	२६० गीत बड़ो जैसींघको			७७९	२६६		
	२६१ गीत जगतसींघ श्रांम[ने]रका राजाको लहचाल			७८०	२६६		
	२६२ गीत राजा रांमसींघजीको			७८१	२६६–२६७		
	२६३ कबित् राजा बसनसींघको			७८२	२६७		
	२६४ गीत सीहि श्रोगान राजा सवाई जैसींघको			७८३–७८८	२६७–२७०		
	२६५ गीत बडा जैसींघजीको			७८९–७९०	२७०–२७१		
	२६६ गीत दुमेळ। मनोहर साखळो बड़ा जैसींघको उमरावको			७९१	२७१		
	२६७ गीत तलोकसींघ राजाउतको			७९२	२७१		
	२६८ कबित् कुशलसींघ नाथाउत चोमा[मूं]को ठाकुर			७९३–७९४	२७१–२७२		
	२६९ गीत गजैसींघ नाथाउतको			७९५–७९६	२७२–२७३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२७० गीत सोरठो उद(य)सींघ सेखाउतको			७९७	२७३		
	२७१ गीत दीपसिंघजीको			७९८	२७३–२७४		
	२७२ गीत दोलतसींघको			७९९	२७४		
	२७३ गीत सोसींघ सेखाउतको			८००	२७४–२७५		
	२७४ गीत कानसिंघ बलभदोत			८०१	२७५		
	२७५ गीत देवसींघ खंगारोतको			८०२	२७५–२७६		
	२७६ गीत अमरसींघ खंगारोत			८०३	२७६		
	२७७ गीत गोरधन कल्याणोत			८०४–८०५	२७६		
	२७८ गीत मानसिंघ कल्याणोत			८०६	२७६–२७७		
	२७९ गीत कमा कल्याणोतको			८०७	२७७		
	२८० गीत जैचंद कल्याणोतको			८०८	२७७		
	२८१ गीत फतेसींघ नागाको			५०९	२७७–२७८		
	२८२ गीत जैसींघ नरूको			८१०	२७८		
	२८३ गीत दोनु जैसींघ नरूकाका			८११	२७८		
	२८४ गीत सुजाणसींघ जैगनाथोतको			८१२	२७८–२७९		
	२८५ गीत साहेबखां भाखरोतको			८१३	२७९		
	२८६ कबित राजसींघ भाखरोतको			८१४–८१५	२७९–२८०		
	२८७ गीत राजसींघ भाखरोतको			८१६	२८०		
	२८८ गीत गुजरीका पेट(बेटा)को नरायणदासजीको दोलतखां बेटो छै जीको गीत छै			८१७	२८०–२८१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२८९ कबित् जैतसींघ मानसींघउत (बाकाउत)को			८१८	२८१		
	२९० दुहो बाकाउतको			१*	२८१		*यह दोहेकी संख्या है।
	२९१ गीत सपुतको			८१९	२८१–२८२		
	२९२ गीत कपुतको			८२०	२८२–२८३		
	२९३ गीत बेसरै मानसींघोताको			८२१	२८३		
	२९४ दुहा सवाई जैसींघजीको			१*	२८३		*यह दोहेकी संख्या है।
	२९५ गीत खंगार कछावाको। खंगारो ताको बड़ो सारा सु			८२२	२८३		
	२९६ कवित नाथाउत कछवावाको			८२३	२८३–२८४		
	२९७ गीत जंग खोडो राजा विठलदास गोड़को			८२४–८२७	२८४–२८५		
	२९८ गीत राजा अनाद (आनां?)को			८२९	२८५–२८६		गीतसं० ९२८ नहीं है।
	२९९ कबित राजा बीठलको डुंगरसी बाभड़ीका कहचा			८३०–८३२	२८६		
	३०० गीत राजा अनरद गोड़को			८३३	२८६–२८७		
	३०१ कवित् सावझड़ो			८३४–८३५	२८७		
	३०२ गीत राजा नरसं(ग)को			८३६–८३९	२८७–२८८		
	३०३ गीत जाति हंसमग			८४०	२८९		
	३०४ गीत अरट गोड़ांको			८४१	२८९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३०५ गीत अरजन गोड़को			८४२–८६०	२८९–२९६		
	३०६ गीत सुभरांम गोड़को			८६१–८६४	२९६–२९८		
	३०७ गीत राजा मनोरदासजीको			८६६	२९८–२९९		गीतसं. ८६५ नहीं है।
	३०८ गीत राजा उतमरामजीको			८६७	२९९		
	३०९ गीत वीरभद्र गोड़को			८६८	२९९		
	३१० गीत अरजन वीरभद्रको			८६९	२९९–३००		
	३११ गीत जोरावरसीघजी माहा-राजा छीत्रसींघजीका नावजीको			८७०	३००		
	३१२ गीत उद(य)भाण हरभाण गोड़को			९७१–९७२	३००–३०१		
	३१३ गीत सगता गोड़को			९७३	३०१		
	३१४ दुहो रासा(णा)सांगा उतमराव रतनको कह्यो			१*	३०२		*यह दोहेकी संख्या है।
	३१५ गीत थानसींघ सांगाउतको			८७४–८७५	३०२–३०३		
	३१६ गीत कसनसींघ गोड़को			८७६–८७७	३०३		
	३१७ गीत दलाझालाको			८७८–८७९	३०३–३०४		
	३१८ गीत राज कीरतसींघजी सादड़(ड़ी)का ठाकरांको			८८०	३०४		
	३१९ गीत नाथजी झालोताणाको ठाकुरको			८८१	३०४–३०५		
	३२० कुंडल्या जसोंत झालाका			८८२–८८९	३०५–३०६		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३२१ दूहो माधोसींघ झालाको			*१	३०६		*यह दोहेकी संख्या है।
	३२२ दूहो मदनसींघ झालाको			१-८९०	३०६-३०७		८९० कवित् सं. है।
	३२३ कबित् हमतेसिंघ झालो			८९१	३०७		
	३२४ मंत्र हेमतसींघ झाला उपर			८९२	३०७		
	३२५ गीत जालमसींघ झालाको			८९३	३०७-३०८		
	३२६ दूहो पुवांराको			*१,८९४	३०८		*१ संख्या दोहेकी है।
	३२७ गीत सादुल(सार्दुल) पुंवांरको			८९५	३०८		
	३२८ गीत रावत मयण उमटको			८९६	३०९		
	३२९ गीत परसरांम उमटको			८९७	३०९-३१०		कवित्तसंख्या के अतिरिक्त ४ दोहे और हैं।
	३३० दुहो मानधाता पुवांर बीजोल्यांका ठाकुरको			*१	३१०		*यह संख्या दोहे की है।
	३३१ गीत नंगा खातीको			८९८-८९९	३१०-३११		
	३३२ गीत नारंग देसतीको			९००	३११		
	३३३ गीत रजपुताका गाढको			९०१-९०४	३११-३१३		
	३३४ गीत अनोपसींघ कछवावो			९०५	३१३		
	३३५ गीत माधोसींघ कछवावो अजबगढ भानगढका ठाकुरको			९०६	३१३-३१४		
	३३६ गीत गोयंददास माधाणीको कछवावो			९०७	३१४		
	३३७ गीत कमा माधाणी कछवावो			९०८	३१४		
	३३८ कबित् सवाई जैसींघको			९०९	३१४-३१५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३३९ कबित् सताराका राजाका			९१०–९१९	३१५–३१७		
	३४० कबित् हरदसाह बुंदेलाका			९२०–९२१	३१७–३१८		
	३४१ कबित् आतमाराम रुघनाथ-सींघ गोड़ भाखरोत			९२२–९२३	३१८		
	३४२ कबित् तरवरसाह भाटको			९२४–९२५	३१८–३१९		
	३४३ कबित् धरती चकवहुवाको			९२६–९२७	३१९		
	३४४ कवित् रूपगाकी खोड़को			९२८	३१९–३२०		
	३४५ कबित् प्रसताई देबीदासका कह्या			९२९–९३६	३२०–३२२		
	३४६ कबित् कुडळया गिरधरका कह्या			९३७–९६६	३२२–३२९		
				इसके पश्चात् स्फुटपत्र हैं, उन्हीं पर क्रमशः पत्र-संख्या दी हुई है। अतः गीत संख्या क्रमशः नहीं है			
	३४७ गीत अमरसींघजी खातोली का ठाकुरको			३३०			
	३४८ गीत महाराजा भगतरामजी को छसर। भख्यारीदास वागड़ीको कह्यो			३३०			
	३४९ कबित खटदरसणका भाव-परी छप्पै			३३०			पत्र ३३१ से ३३४ तक स्फुट कवित्त दोहे हैं।
	३५० गीत डोढो अठताळो सदा-सोको			३३५			

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३५१ गीत सावझड़ो			३३६			
	३५२ गीत जाति अठतालो			३३८			
	३५३ गीत पदमसींघजी रहणावन को ठाकुरज्याकी ठुकराण्या मुथरामें काम आयी ज्याको			३४०			
	३५४ गीत देवो बागाको			३४४			
	३५५ नशाणी राव साडाकी			३४४			
१८४	उम्मेदचरित्र	वंशभास्करगत	हिन्दी	इतिहास	४–११९	२०वीं श.	अपूर्ण
१८५	गीतासार		,,	वेदान्त	१०	,,	
१८६	मदनकँवाररी कथा		राजस्थानी	कथा	३०	,,	अपूर्ण, कीटविद्ध
१८७	(क) वैराग्यशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	काव्य	८–१२	१८००	
	(ख) पोथी साठसम्वत्सररी		हिन्दी	ज्यौतिष	१–३३	,,	
	(ग) गोकुल नाथामल्ल अखाड़ांके युद्ध		,,	काव्य	१–६	,,	
	(घ) शाहजहाँका चारोंशहजादांकी कथा (पद्यबद्ध)		,,	,,	१–७	,,	
	(च) कुतुबरात		,,	,,	३९	,,	अपूर्ण
१८८	परिचय अष्टाङ्ग		,,	योग	३–८०	२०वीं श.	कीटविद्ध, अपूर्ण
१८९	भाषापिंगल		,,	छन्दःशास्त्र	६	,,	अपूर्ण
१९०	(क) कविकुलकण्ठाभरण		,,	रसालंकार	४१	,,	,,
	(ख) काव्यकौमुदी	संग्रामसिंह	,,	,,	१–१३	,,	
	(ग) सपखरो वसानोर गीत लक्षण		,,	छन्दःशास्त्र	३	,,	,,

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(घ) भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालंकार	१०	२०वीं श.	अपूर्ण
१९१	परमलोकपत्रिका		,,	वेदान्त	१०	१९०५	
१९२	यशःप्रकाश	कविजुहार	,,	काव्य	१२	२०वीं श.	
१९३	विदग्धमुखमण्डन (तृतीयपरिच्छेदान्त)	धर्मदास	संस्कृत	रसालंकार	१०	,,	
१९४	वीरसप्तशती	सूर्यमल्ल	हिन्दी	काव्य	१९	,,	जीर्णशीर्ण, अपूर्ण
१९५	महाकालभैरवकवच	गन्धर्वतन्त्रोक्त	संस्कृत	तन्त्र	३	,,	
१९६	भैरवकवच (त्रैलोक्यमङ्गलनामक)	रुद्रयामलोक्त	,,	,,	३	,,	
१९७	सुमुखीसहस्रनाम	रुद्रयामलगत	,,	,,	१२	१८९१	
१९८	अर्गलाकीलकस्तोत्र	सप्तशतीगत	,,	,,	४	२०वीं श.	
१९९	सुमुखीपटल (हनूमद्विषयक)	रुद्रयामलगत	,,	,,	१०	१८६०	
२००	गणेशकवच		,,	,,	३	१८६५	
२०१	क्षेत्रपालमन्त्र		,,	मन्त्रशास्त्र	३	१९वीं श.	
२०२	अमृतसञ्जीवनीकल्प		,,	तन्त्र	८	,,	
२०३	बालापूजनपद्धति		,,	मन्त्रशास्त्र	१४	,,	अन्तिमपत्र अप्राप्त
२०४	उड्डीशतन्त्र		,,	तन्त्र	८	,,	अपूर्ण
२०५	गर्गसंहितागिरिराजखण्डटीका	नाथूराम गुजराती	हिन्दी	पुराण	३३	२०वीं श.	
२०६	इन्द्रगढेन्द्रमहाराजसंग्रामसिंहविरचितग्रन्थोंकी सूची आदि		,,	प्रकीर्ण	२९	,,	

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

प्रकाशित ग्रन्थ

१—संस्कृत ग्रन्थ

१. **प्रमाणमंजरी**, तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्य,सम्पादक—मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम-शास्त्री, विद्यासागर। मूल्य—६.००

२. **यन्त्रराजरचना**, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित। सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित्। मूल्य—१.७५

३, **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक—म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। मूल्य—१०.७५

४, **तर्कसंग्रह**, अन्नंभट्ट, सम्पादक—डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी—एच. डी., मूल्य—३.००

५. **कारकसंबंधोद्योत**, पं० रभसनन्दी, सम्पादक—डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य—१.७५

६. **वृत्तिदीपिका**, मौनिकृष्ण-भट्ट, सम्पादक—पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—२.००

७. **शब्दरत्नप्रदीप**, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डॉ. हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य—२.००

८. **कृष्णगीति**, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए, पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५

९ **नृत्तसंग्रह**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५

१०. **शृङ्गारहारावली**, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका—डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—२.७५

११. **राजविनोद महाकाव्य**, महाकवि-उदयराज, सम्पादक—पं. श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—२.२५

१२, **चक्रपाणिविजयमहाकाव्य**, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य—३.५०

१३. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)**, महाराणा कुम्भकर्ण रचित,सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारीख, तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य—३.७५

१४. **उक्तिरत्नाकर**, साधुसुन्दर-गणी-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि। सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—४.७५

१५. **दुर्गापुष्पाञ्जलि**, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—४.२५

१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक–पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इसी ग्रंथकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित । मूल्य–१.५०

१७. ईश्वरविलास–महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक–श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य–११.५०

१८. रसदीर्घिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक–पं०श्री गोपालनारायण बहुरा, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य–२.००

१९. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक–पं० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य–४.००

२०. काव्यप्रकाशसंकेत, सोमेश्वर भट्ट कृत, सम्पादक–श्री रसिकलाल छो० परीख भाग १ मूल्य–१२.००

२१. ,, ,, ,, भाग २ मूल्य– ८.२५

२२. वस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह । मूल्य–४.००

२–राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

२३. कान्हड़दे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक–प्रो. के. बी. व्यास, एम. ए. । मूल्य–१२.२५

२४. क्यामखां रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक–डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा । मूल्य–४.७५

२५. लावारासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक–श्री महताबचन्द खारैड़ । मूल्य–३.७५

२६. बाँकीदासरी ख्यात, कविवर बाँकीदास, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य–५.५०

२७. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी एम.ए. । मूल्य–२.२५

२८. कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य–२.००

२९. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य–१.७५

३०. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक–उदैराजजी उज्ज्वल मूल्य–१.७५

३१. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची—भाग १ मूल्य–७.५०

३२. ,, ,, ,, ,, भाग २ मूल्य–१२.००

३३. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक–श्री बदरीप्रसाद साकरिया। मूल्य–८.५०

३४. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा कृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस मूल्य–८.२५

३५. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, सम्पादक–श्री मुनि जिनविजयजी । मूल्य–४.५०

३६. वीरवांण, ढाढी बादर कृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूंडावत । मूल्य–४.५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

१.	शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित	सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजयजी
२.	त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	,, ,, ,,
३.	करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित	,, ,, ,,
४.	बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित	,, ,, ,,
५.	पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित	,, ,, ,,
६.	वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक	,, एम. सी. मोदी
७.	नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक	,, ,, बी. जी. सांडेसरा
८.	चांद्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित	,, श्री बी. डी. दोशी
९.	वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित	,, ,, एच. डी. वेलणकर
१०.	कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक	,, ,, ,,
११.	स्वयम्भूछन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित	,, ,, ,,
१२.	प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित	,, मुनि श्री जिनविजयजी
१३.	कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथ विरचित	,, श्री एम. एन. गोरी
१४.	दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	,, ,, गङ्गाधर द्विवेदी
१५.	नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभा प्रणीत	,, डॉ. प्रियबाला शाह
१६.	भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित	,, श्री गोपालनारायण बहुरा
१७.	इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध	,, डॉ. दशरथ शर्मा

२—राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१८.	मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग २, नैणसी मुंहता	सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१९.	गोरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित	सम्पादक—श्री उदयसिंह भटनागर
२०.	राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज मूल लेखक श्री आर. एस. भण्डारकर	अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी।
२१.	राठोड़ांरी वंशावली	सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२२.	सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची	,, ,, ,,
२३.	मीरां बृहत् पदावली	,, विद्याभूषण स्व. पुरोहित हरिनारायणजी द्वारा संकलित
२४.	राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह वार्ता आदि)	सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
२५.	पुरोहित बगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं	,, श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

'राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमंजरी–तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.००। २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५। ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.००। ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण, मूल्य २.००। ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९. शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.००। १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००। २०. काव्यप्रकाशसङ्केत-भट्ट सोमेश्वर, भाग १, मूल्य १२.००, भाग २, मूल्य ८.२५। २१. वस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, मूल्य ४.००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान, मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५०। ५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६. जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५। ७. कवीन्द्रकल्पलता–कवीन्द्राचार्य, मूल्य २.००। ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। १०. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग २, मूल्य १२.००। १३. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न.पै.। १२. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा, मूल्य ८-२५ न पै.। १३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५०। १४. वीरवांण, ढाढी बादर कृत, मूल्य ४.५०।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित। २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र। ६. वसन्त-विलास फागु। ७. नृत्यरत्नकोश भाग २। ८. नन्दोपाख्यान। ९ चान्द्रव्याकरण। १०. स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि। ११. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १२. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १३. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १४. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १५. भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ। १६. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १७. हम्मीरमहाकाव्यम्–नयचन्द्रसूरि। १८ ठक्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुंहता नैणसी। २. गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. चंद्रवंशावली–कवि मोतीराम। ४ सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. राजस्थानी दूहा संग्रह। ६. राठोड़ांरी वंशावली। ७. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रंथ सूची। ८. देवजी बगड़ावत और अन्य वार्ताएँ। ९. बगसीराम और अन्य वार्ताएँ।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।
